CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Lucknow

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

511

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

डॉ० विशेश्वर प्रसाद सिंह
[illegible] पटना द्वारा समर्पित

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गुरु नानकदेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव

इं० विनेश्वर प्रसाद सिंह
उद्योग कालोनी पटना द्वारा प्रदत्त

डॉ० जयराम मिश्र
एम० ए०, पी० एच-डी०

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद—१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

●

© डॉ० जयराम मिश्र

●

तृतीय संस्करण :
१९८९

●

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य : ६०.००

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इं० दिनेश्वर प्रसाद सिंह

वक्तव्य

गुरु नानकदेव के सम्वन्ध में मेरा अध्ययन सन् १९५० से जारी है। उस अध्ययन के फलस्वरूप मेरे दो ग्रन्थ हिन्दी जगत् में आ चुके हैं। विद्वन्मण्डली द्वारा वे ग्रन्थ समादृत हुए हैं। गुरु नानक महाराज के प्रति मेरी श्रद्धा उत्तरोत्तर वढ़ती गई। उन्हें मैं युग-निर्माता पुरुष मानता हूँ। गुरु नानकदेव ने अपने को परमात्मा में पूर्णरूपेण निमज्जित कर दिया था। फल-स्वरूप उसमें स्पर्श-सिद्धि, वाणी-सिद्धि, त्राटक-सिद्धि, एवं समय-समय पर अन्य सिद्धियाँ प्रादुर्भूत हो जाती थीं। इसके अतिरिक्त उनमें अन्तर्यामित्व-सिद्धि भी विद्यमान थी। किन्तु उन सिद्धियों के प्रति उनका सदैव निरपेक्ष भाव रहा। वैसे सामान्य जीवन में वे सिद्धियों और चमत्कारों के विरोधी थे। वे इन्हें परमात्मा की भक्ति-प्राप्ति में महान् बाधक समझते थे। किन्तु परब्रह्म परमात्मा ने गुरु महाराज के माध्यम से जगत् कल्याण के निमित्त उन सिद्धियों का प्रयोग किया। आध्यात्मिक जगत् में ये सारी बातें सम्भव हैं, ऐसा लेखक का पूर्ण विश्वास है।

पंजाव विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के पंजावी विभाग के अध्यक्ष, डॉ० एस० एस० कोहली ने मुझसे कई वार गुरु नानकदेव की जीवनी लिखने का आग्रह किया। पहले तो मैंने हीला-हवाली की, परन्तु उन सन्त पुरुष का आग्रह मैं टाल न सका। अतः पुस्तक लिखाने का सारा श्रेय डॉ० कोहली को है। मेरे आग्रह से डॉ० साहव ने पुस्तक की प्रस्तावना लिखकर इसकी गरिमा और अधिक बढ़ा दी है। इसके लिए मैं उनका चिर आभारी हूँ।

जगद्गुरु शंकराचार्य, ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, गुरु नानक के प्रति ऊँचे भाव रखते हैं। वे पुस्तक-रचना में मुझे बलवती प्रेरणा देते रहे। अपने पूज्यतम पिताजी से भी मैं निरन्तर प्रेरणा पाता रहा। अतएव मैं दोनों महापुरुषों का चिर ऋणी हूँ।

मेरे भतीजे चिरंजीवि डॉ० विभुराम मिश्र, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर (वाराणसी), ने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि देखने में अत्यधिक श्रम किया है। स्वाभाविक ही वह मेरा स्नेह-भाजन है। लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद के संचालकों के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ कि उन्होंने पुस्तक को इतने सुन्दर ढंग से प्रकाशित किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी-भाषा-भाषियों के हाथ में 'गुरु नानकदेव' पुस्तक देने में मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा है। अन्त में मेरी यह शुभकामना है कि गुरु नानकदेव की जीवनी से हम सब प्रेरणा ग्रहण कर अपने जीवन को समुन्नत बनावें तथा राष्ट्र के उत्थान में सहायक हों।

शंकराचार्य आश्रम,
१५, अलोपीबाग, इलाहाबाद
मकर-संक्रान्ति, १९७२

—जयराम मिश्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तावना

सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानकदेव जी का ५०० वाँ प्रकाश उत्सव १६६६ में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस समय गुरुदेव के जीवन और दर्शन के सम्बन्ध में वृहत् साहित्य की रचना हुई। हिन्दी जगत् में गुरु नानकदेव जी के सन्देश को जनता तक पहुँचाने के लिए 'गुरु ग्रंथ दर्शन' के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० जयराम मिश्र से बढ़कर अन्य सुयोग्य व्यक्ति कौन हो सकता था? इसलिए उनसे इस सम्बन्ध में लिखने की विनय की गई थी। उन्होंने बड़े हर्ष से इस कार्य को स्वीकार किया। परन्तु इसे पूर्ण करने में अधिक समय लग गया। इसलिए उनकी यह पुस्तक 'गुरु नानकदेव—जीवनी, शिक्षाएँ, व्यक्तित्व एवं दार्शनिक सिद्धान्त' १६६६ में प्रकाशित न हो सकी। अब वह हिन्दी पाठकों को भेंट हो रही है। ऐसी रचनाओं का मूल्य सामयिक न होकर स्थायी होता है। भारत के महान् संत गुरु नानकदेव जी के जीवन और दर्शन का आकर्षक शैली में रसपूर्ण वर्णन इस पुस्तक में प्राप्त होता है।

गुरु नानकदेव जी का जन्म वैदिक ऋषियों की पवित्र भूमि पंजाब में हुआ। उन्हें न केवल पंजाब, अपितु समस्त भारत में विशुद्ध वैदिक धर्म कहीं दिखाई न दिया। भारत के मुसलमान शासक भी इस्लाम से कोसों दूर थे। इसलिए अपनी यात्रा आरम्भ करते समय गुरुदेव का प्रथम नारा था 'न कोई हिन्दू न मुसलमान।' अपनी यात्राओं के समय उन्हें पूर्ण मनुष्य कहीं भी नहीं मिला। यही कारण है कि उन्होंने पूर्ण मनुष्य बनाने वाला एक नियंत्रण स्थापित किया, जिसको 'गुरुमत' कहा जाता है। वे भारत में हिन्दू मत, बौद्ध मत और जैन मत, तिब्बत और चीन में ताउ मत, कनफ्यूशियस मत एवं सम्भवत: शिन्टो मत और मध्य पूर्व में जरथुस्त्र मत, यहूदी मत, ईसाई मत और इस्लाम के अनुयायियों से मिले और उनसे विचार-विमर्श किया। वे संसार में सबसे अधिक सफर करनेवाले महान् पुरुष एवं भारतीय संस्कृति और भारत की भक्त-आत्मा के प्रतीक थे।

गुरु नानकदेव जी ने अवतारवाद, देवपूजा, मूर्तिपूजा, कर्मकाण्ड, जाति-पाँति एवं छुआ-छूत का खण्डन किया। वे केवल एक परब्रह्म परमेश्वर को मानते थे और उसकी रागात्मिका भक्ति पर बल देते थे। उनका धर्म विश्व धर्म और अमली-जीवन का धर्म है। उनके लिए सारे संसार के मनुष्य एक कुटुम्ब के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समान हैं। असीम प्रभु की रचना भी असीम है। 'अहम्' के कारण 'जीव' प्रभु से बिछुड़ा हुआ है, एवं इसका मिलाप कृपानिधान प्रभु के साथ 'गुरु', 'शब्द' अथवा 'नाम' द्वारा हो सकता है। 'अहम्' रोग नाम रूपी दारू द्वारा ही दूर हो सकता है। यह परमौषधि सद्गुरु से प्राप्त होती है।

डॉ० जयराम मिश्र ने इस पुस्तक में गुरुमत दर्शन को गुरु नानकदेव जी की जीवन-घटनाओं द्वारा प्रकट किया है। स्थान-स्थान पर गुरुदेव के उच्चरित शब्दों की व्याख्या की गई है, ताकि साधारण पाठक गुरुमत सम्बन्धी ठीक-ठीक परिचय प्राप्त कर सके। घटनाओं के आन्तरिक तथ्य को डॉ० मिश्र ने विस्तारपूर्वक प्रकट किया है। जैसे—मलक भागो और भाई लालो की साखी के सम्बन्ध में लिखते हुए उन्होंने गुरुदेव के भावों को इस तरह स्पष्ट किया है—"उन्होंने जाति-गत अहंकार के मिथ्याभिमान को मिटाया। यह अहंकार समाज में घुन की तरह लगा था और उसे निकम्मा बना रहा था। उन्होंने उस समाज की नींव डाली, जहाँ अमीर और गरीब समान हैं। राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से गरीबों और अमीरों में कोई अन्तर नहीं है। सभी परमात्मा के बनाये मनुष्य हैं और सभी को सम्मानपूर्ण, मर्यादायुक्त, जीवन बिताने का अधिकार मिलना चाहिए। समाज में गुणों को आदर मिलना चाहिए, चाहे निर्धन ही क्यों न हो।"

डॉ० मिश्र को लेखनी में बल है। उनका गुरुमत का ज्ञान विशद और निर्दोष है। वे आवश्यकतानुसार संयम एवं व्याख्या की शैली का प्रयोग करते हैं। कहीं-कहीं संयम इतना है कि दो-चार पंक्तियों की व्याख्या करने के लिए कई-कई अध्याय पर्याप्त हैं, जैसे—"श्री गुरु नानकदेव का भारतीय धर्म-संस्थापकों एवं समाज-सुधारकों में गौरवपूर्ण स्थान है। मध्ययुग के संत-कवियों में उनकी विशिष्ट और निराली परम्परा है। वह उस धर्म के संस्थापक हैं, जिसके आन्त-रिक पक्ष में विवेक, वैराग्य, भक्ति, ज्ञान, योग, तितिक्षा, निष्काम कर्मयोग और आत्मसमर्पण की भावना निहित है और बाह्य पक्ष में सदाचार, संयम, एकता, भ्रातृभावना आदि पिरोए हुए हैं। मध्ययुग के सन्त कवियों में इतने सर्वाङ्गीण व्यक्तित्व वाले पुरुष का मिलना दुर्लभ है। वे मौलिक चिन्तक, क्रान्तिकारी धर्म सुधारक, अद्वितीय युग-निर्माता, महान् देशभक्त, दीन-दुखियों के परम हितैषी तथा दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता थे।"

डॉ० मिश्र की इस पुस्तक के स्रोत चाहे हमारी जन्म-साखियाँ क्यों न हों, परन्तु जिस सुयोग्य ढंग से उन्होंने घटनाओं का वर्णन किया है, वह उनकी मौलिकता का परिचायक है। 'पुरातन जन्म साखी' की भाँति ही इस ग्रन्थ में गुरुदेव की पाँच यात्राओं का वर्णन किया गया है। यद्यपि जीवन-चरित्र द्वारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं दर्शन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है, तथापि अपनी रचना को परिपूर्ण बनाने के लिए उन्होंने अन्त में दो अध्याय व्यक्तित्व एवं दर्शन सम्बन्धी अलग दिए हैं। मैं इस मनोहर रचना के लिए डॉ० जयराम मिश्र को वधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि जहाँ यह रचना हिन्दी पाठकों के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगी, वहाँ गुरुदेव की महान् आत्मा डॉ० मिश्र को गुरुमत सम्वन्धी अन्य कार्य करने की प्रेरणा एवं वल प्रदान करेगी।

पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़
१ जनवरी, १९७२

(डॉ०) सुरेन्द्र सिंह कोहली
वरिष्ठ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पंजावी विभाग,
पंजाव विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुक्रम

गुरु नानक के आविर्भाव के समय भारत की स्थिति	...	१३
जन्म एवं शैशवावस्था	...	१६
लड़कपन—विविध धन्धों में लगाने का प्रयास	...	२७
सौदागरी	...	४०
सुल्तानपुर में, अपने बहनोई के साथ	...	४६
परमात्मा का आदेश	...	५३
आदेश पालन	...	६१
निम्न वर्ण का उत्थान	...	७२
भयंकर ठग को धर्म-प्रचारक बनाना	...	८२
पाकपटन और कुरुक्षेत्र में	...	९०
कुरुक्षेत्र में	...	९३
हरिद्वार में	...	९८
शेख़ शरफ और सिकन्दर लोदी	...	१०४
रीठा को मीठा बनाना	...	१०९
जीवन का अमूल्य रत्न	...	११५
जादूगरनी पर जादू	...	१२०
जगन्नाथपुरी में संध्या की आरती	...	१२४
पंजाब की वापसी	...	१२९
पंजाब में यात्राएँ	...	१३४
हमज़ा ग़ौस का परिष्कार	...	१४२
मियाँ मिट्ठा	...	१४७
दुनीचन्द और करोड़िया	...	१५३
पश्चिम की यात्राएँ—मक्का	...	१६१
बग़दाद की यात्रा	...	१६६
पंजा साहब	...	१७५
दक्षिण की यात्रा	...	१७९
दक्षिण से वापसी	...	१८९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर की यात्रा—१	...	१६५
उत्तर की यात्रा—२	...	२०१
बाबर का आक्रमण	...	२०८
पाँचवीं यात्रा	...	२१६
कर्त्तारपुर का जीवन	...	२२८
प्रेम की कुछ और विजयें	...	२३३
ज्योति-ज्योति में समाहित होता	...	२३६
गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व की झाँकी	...	२४८
गुरु नानकदेव के दार्शनिक सिद्धान्त	...	२६६

● ● ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय एक

गुरु नानक के आविर्भाव के समय भारत की स्थिति

श्री गुरु नानकदेव का भारतीय धर्म-संस्थापकों एवं समाज-सुधारकों में गौरवपूर्ण स्थान है। मध्ययुग के सन्त कवियों में उनकी विशिष्ट और निराली परम्परा है। वह उस धर्म के संस्थापक हैं, जिसके आन्तरिक पक्ष में विवेक, वैराग्य, भक्ति, ज्ञान, योग, तितिक्षा, निष्काम कर्मयोग और आत्मसमर्पण की भावना निहित है और वाह्य पक्ष में सदाचार, संयम, एकता, भ्रातृभाव आदि पिरोए हुए हैं। मध्ययुग के सन्त-कवियों में इतने सर्वाङ्गीण व्यक्तित्ववाले पुरुष का मिलना दुर्लभ है। वे मौलिक चिन्तक, क्रान्तिकारी धर्म-सुधारक, अद्वितीय युग-निर्माता, महान् देशभक्त, दीन-दुखियों के परम हितैषी तथा दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता थे।

उनके व्यक्तित्व की पूर्ण महत्ता समझने के लिए, उस युग की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों पर एक विहंगम दृष्टि डाल लेना समीचीन प्रतीत होता है। उस समय अधिकांश भारत का शासन-सूत्र मुसलमानों के हाथों में था। सामान्यतया दिल्ली का सुलतान भारत का सम्राट् समझा जाता था। परन्तु वास्तविक स्थिति यह थी कि प्रान्तों का शासन मुसलमान गवर्नरों (सूबेदारों) के अधीन था। ये गवर्नर अपने को स्वतन्त्र समझते थे। इससे स्वेच्छाचार का बोलबाला था। वे शासन में मनमाना अत्याचार बरतते थे। उदार से उदार मुसलमान शासक में धर्मान्धता कूट-कूटकर भरी थी। 'तारीख-ए-दाऊदी' के लेखक ने सिकन्दर लोदी की प्रशंसा मुक्तकंठ से की है, "सुलतान सिकन्दर अत्यन्त यशस्वी शासक था। उसका स्वभाव अत्यन्त उदार था। वह अपनी उदारता, कीर्ति और नम्रता के लिए प्रसिद्ध था। उसे तड़क-भड़क, बनाव-शृंगार में कोई रुचि नहीं थी।" किन्तु श्री बनर्जी के अनुसार सिकन्दर की यह न्यायप्रियता और उदारता संकीर्णता से युक्त थी। उसकी यह न्यायप्रियता और उदारता अपने सहधर्मियों तक ही सीमित थी।[1] भाई गुरदास ने भी इस बात का संकेत किया है कि काजियों में रिश्वत का बोलबाला था।[2]

---

१. इवोल्यूशन आफ द खालसा, भाग १, इन्दुभूषण बनर्जी, पृ० २६
२. भाई गुरदास की वार, वार १, पउड़ी ३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव के शब्दों से भी तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है—"कलियुग के लोग कुत्ते के मुँहवाले हो गए हैं और उनकी खाद्यवस्तु मुरदे का मांस हो गई है ! अर्थात् इस युग में लोग कुत्तों के समान लालची हो गए हैं और रिश्वत तथा वेईमानी से पैसे खाते हैं। वे झूठ बोल-बोलकर भूँकते हैं।"[१]

भारत सदैव से धर्मपरायण देश रहा। वैदिक धर्म में जब कर्मकाण्ड और हिंसापूर्ण यज्ञों की प्रधानता हुई, तो बौद्ध धर्म एवं जैन-धर्म का प्रादुर्भाव हुआ। इन दोनों धर्मों के संस्थापकों ने जनभाषा के माध्यम से अपने धर्म का प्रचार किया। सेवा, प्रेम, समानता, जाति-व्यवस्था की असार्थकता और अहिंसा के सहारे बुद्ध भगवान् ने 'निर्वाण-पद'—प्राप्ति का लक्ष्य बतलाया। बौद्ध धर्म अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। कालांतर में शंकराचार्य का आविर्भाव हुआ और उन्होंने अद्वैतवाद का सहारा लेकर बौद्ध धर्म का उन्मूलन किया। पर शंकराचार्य का अद्वैतवाद सामान्य जनता की आध्यात्मिक क्षुधा की तुष्टि न कर सका। अतएव जनता की तुष्टि एवं क्षुधा-निवृत्ति न हो सकी। परिणामस्वरूप दक्षिण भारत में भक्तों ने भक्ति-आन्दोलन किया और शंकराचार्य के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए भी उनके अद्वैतवाद का खण्डन किया। दक्षिण के चार आचार्यों—रामानुजाचार्य, विष्णु स्वामी, निम्बार्काचार्य और मध्वाचार्य ने भक्ति का प्रबल और सशक्त आन्दोलन चलाया। चैतन्य, रामानन्द, वल्लभाचार्य ने भक्ति-आन्दोलन की सरिता उत्तर भारत में प्रवाहित की, जिससे जनता भक्ति-रस में परिप्लावित हो गई। इन आन्दोलनों के साथ गोरखनाथ का योग-आन्दोलन भी कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने अपने 'अलख' की ज्योति जन-साधारण में जगा दी। इन आन्दोलनों द्वारा सामान्य जनता की भक्ति, इष्टदेव के प्रति श्रद्धा एवं आत्म-समर्पण-भाव, सेवा, सहृदयता आदि गुणों का विकास तो हुआ, पर एकता और कर्मनिष्ठता का भाव प्रबल न हो सका। आगे चलकर अधिकांश वैष्णव सम्प्रदाय एवं अन्य धार्मिक सम्प्रदाय अपनी-अपनी सीमाओं, वेश-भूषाओं, वाह्याचारों, रूढ़ियों और खान-पान सम्बन्धी बातों में आबद्ध हो गए। इससे उन आन्दोलनों का वह प्रभाव न पड़ सका जो अपेक्षित था।

राजनीति एवं धर्म की दुर्बलता का प्रभाव समाज पर पड़ना स्वाभाविक ही है। राजनीति की नृशंसता एवं धर्म की रूढ़िवादिता के कारण हिन्दुओं का सामाजिक ढाँचा अस्तव्यस्त हो चला। जातियों के अन्तर्गत उपजातियों की बाढ़-सी आ गई। सभी जातियाँ अपनी रूढ़ियों और संकीर्णताओं में बँधती गईं।

---

१. सारंग की वार, सलोक २१

F 1/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection: Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकता की शृङ्खला छिन्न-भिन्न हो गई। इतिहासकारों का यह मत अक्षरशः सत्य है कि हिन्दुओं में जितनी उपजातियों का सृजन मुसलमानी शासकों के राज्यकाल में हुआ, उतना किसी अन्य समय में नहीं। हिन्दुओं के ब्राह्मणों एवं क्षत्रिय वर्णों के आदर्शों में पतन के चिह्न स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगे। ब्राह्मण वर्ण अपने त्याग, तपस्या और संयम के आदर्शों से च्युत हो गया और क्षत्रिय वर्ण से प्रजा-वत्सलता और राष्ट्राभिमान की भावना लुप्त हो गई। वैश्य वर्ण भी अधिकाधिक संकीर्ण हो गया। शूद्रों की अवस्था तो और भी अधिक चिन्त्य हो गई। डा० बड़थ्वाल की यह सम्मति ठीक प्रतीत होती है, 'तथाकथित निम्नवर्ण के हिन्दुओं पर सवर्ण हिन्दुओं का अत्याचार मुसलमानों के अत्याचारों से भी बढ़कर था।' स्त्रियों की दशा कुछ कम शोचनीय नहीं थी। वे भोग-विलास की सामग्री समझी जाने लगीं। समाज के आधे अंग के तिरस्कृत और उपेक्षित होने से शक्तिशाली समाज की सम्भावना की बात रह ही नहीं जाती।

सारांश यह कि उस समय की राजनीतिक स्थिति की भयंकरता, सामाजिक व्यवस्था की अस्तव्यस्तता एवं धार्मिक बाह्याडम्बर तथा रूढ़िवादिता के कारण भारत विषमावस्था में था। देश में दो वर्ग थे– एक तो शासकों का और दूसरा शासितों का। दोनों की मानसिक अवस्थाएँ पृथक्-पृथक् थीं। शासकों में अहंभाव की प्रधानता आ गई थी। उनकी अहंमन्यता अपनी चरमसीमा पर पहुँच चुकी थी। वह इतनी बढ़ी हुई थी कि शासितों का राजनीतिक अस्तित्व स्वीकार करने को कौन कहे, वे उनके धार्मिक और सामाजिक अस्तित्व को भी स्वीकार करने में अपना अपमान समझते थे। मुसलमान शासकों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी। उन्होंने धर्म-परिवर्तन के कई अस्त्र निकाले, जिनमें यात्रा कर, तीर्थयात्रा कर, धार्मिक मेलों, उत्सवों और जुलूसों पर कठोर प्रति-बन्ध, नए मन्दिरों के निर्माण तथा जीर्ण मन्दिरों के पुनरुद्धार पर रोक, हिन्दू धर्म और समाज के नेताओं का कठोर दमन, मुसलमान धर्म स्वीकार करने पर बड़े-बड़े पुरस्कार और ओहदे देने आदि मुख्य थे। इन्हीं अस्त्रों के द्वारा वे लोग हिन्दू धर्म को भारत से सर्वथा मिटा देना चाहते थे।

पंजाब की दशा तो और भी अधिक शोचनीय थी। मुसलमानों द्वारा यही प्रान्त सबसे पहले जीता गया। दिल्ली और काबुल के बीच में होने के कारण इसकी अवस्था चक्की के दो पाटों में पीसे जानेवाले अन्न की सी थी। मुसल-मानों की धर्मान्धता और क्रूरता का शिकार सबसे अधिक पंजाब प्रान्त को होना पड़ा। प्रारम्भ में धर्म-परिवर्तन भी सबसे अधिक यहीं हुआ। देश की इन्हीं विषम परिस्थितियों के बीच गुरु नानकदेव का आविर्भाव हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय दो

जन्म एवं शैशवावस्था

सिक्ख धर्म के आदि संस्थापक, गुरु नानक का जन्म तलवंडी (पाकिस्तान) में संवत् १५२६ विक्रमीय, वैशाख सुदी तृतीया को हुआ। गणनानुसार यह समय १५ अप्रैल १४६९ ई० को पड़ता है। गुरु नानक देव के सम्मान में तलवंडी को 'ननकाना साहब' भी कहा जाता है। इनकी माता का नाम 'तृप्ता' और पिता का नाम मेहता कल्याणदास था। किन्तु मेहता कालू के नाम से विख्यात थे। मेहता कालू क्षत्रिय वर्ण के 'वेदी' वंश के थे।

उस समय तलवंडी के जमीन्दार राय बुलार थे। बुलार के पिता भुइ को तलवंडी के आसपास के बारह गाँव दिल्ली के बादशाह की ओर से दिए गए थे। उनके पिता भुइ भट्टी वंश के थे। पर उन्होंने दबाव के कारण मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार बुलार के पिता भुइ हिन्दू धर्म से मुसलमान धर्म में परिवर्तित हुए थे। किन्तु पिता-पुत्र में अन्य परिवर्तित मुसलमानों की भाँति न धर्मान्धता थी और न कट्टरता। उन दोनों में असाधारण उदारता, सहिष्णुता थी। हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों ही के प्रति समान प्यार था। मेहता कालू राय बुलार के तहसीलदार थे। वे अत्यन्त विश्वासपात्र और ईमानदार थे। राय बुलार की मेहता कालू पर असीम कृपा और विश्वास था। वे समृद्ध, सम्पन्न और सुखी थे तथा समस्त 'टप्पा' में उनका बहुत सम्मान था।

नौकरानी ने मेहता कालू को पुत्रोत्पत्ति का समाचार अत्यन्त उल्लसित भाव से इस प्रकार दिया, 'मैंने अपने समस्त जीवन में किसी भी बच्चे को इस प्रकार जन्म लेते नहीं देखा है। इस बालक के जन्म से सारे का सारा कमरा अलौकिक ज्योति से जगमगा उठा है। बालक के जन्म होने पर मैंने अस्फुट और आह्लाद-कारिणी वाणियाँ सुनी हैं। अन्य बालक जन्म लेने पर रोते-चिल्लाते हैं, पर इस बालक के मुखमण्डल पर दिव्य मुस्कान दिखाई पड़ती है। इसके मस्तक के चारों ओर वृत्ताकार ज्योति पुंज दिखाई पड़ता है।' यह समाचार पाकर मेहता कालू को जो सुख प्राप्त हुआ, वह वर्णनातीत है। वे सुख-सागर में निमज्जित हो गए।

आह्लादित मेहता कालू ने अपने नवजात शिशु की जन्म-कुण्डली बनवाने के लिए पारिवारिक ज्योतिषी, हरदयालजी को बुलवाया। ज्योतिषीजी महा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज तुरन्त ही आ पहुँचे और नौकरानी से बच्चे की जन्मगाथा सुनकर आनन्द एवं आश्चर्य से भर गए। उन्होंने स्वयं बालक को देखने की इच्छा प्रकट की। यह सम्भव नहीं था। पर ज्योतिषीजी ने हठ पकड़ लिया। परिणामस्वरूप कालू मेहता को नवजात शिशु ज्योतिषीजी को दिखलाना पड़ा।

हरदयाल ज्योतिषी उस अनुपम बालक को देखकर विचित्र भाव-जगत् में पहुँच गए। उनकी समस्त बहिर्मुखी वृत्तियाँ अन्तर्मुखी हो गईं। उनके भाव-जगत् में उस बालक के भविष्य जीवन का प्रकाश कौंध गया। ज्योतिषीजी ने अपनी अनुभूति इस प्रकार अभिव्यक्ति की—'इस बालक का आध्यात्मिक तेज समस्त संसार में व्याप्त हो जाएगा। इसकी अलौकिक शान्ति लाखों हृदयों को शान्ति प्रदान करेगी। यह सहस्रों दुखियों के आँसू पोछेगा। यह हिन्दुओं, मुसलमानों एवं अन्य धर्मावलम्बियों को अपने निष्कपट प्रेम के धागे में बाँध देगा। यह मानव-प्रेम का पाठ जन-जन को पढ़ाएगा। यह पीड़ितों, शोषितों, दलितों को अपने गले लगाएगा और उनमें समानता का भाव भरेगा।' इतना कहकर ज्योतिषीजी ने उस नवजात शिशु को प्रणाम किया। उन्होंने मेहता कालू को इन शब्दों में बधाई दी, 'वास्तव में तू भाग्यशाली है कि तुझे ऐसे पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। यह विलक्षण बादशाह होगा। इसका साम्राज्य चारों दिशाओं में फैलेगा। तेरा यह पुत्र मानव-समाज के सभी समुदायों द्वारा पूजा जाएगा। इसका नाम और यश भारत की सीमाओं से पार दूर-दूर तक फैल जाएगा। यद्यपि मैं इसकी संसार-विजय को अपनी आँखों से न देख सकूँगा, फिर भी मुझे इसका दर्शन करके अपार प्रसन्नता है। मैं सचमुच अत्यन्त भाग्यशाली हूँ।'

ज्योतिषी के उपर्युक्त शब्दों को सुनकर पिता कालू मेहता और माता तृप्ता के हर्ष की सीमा नहीं रही। कालू सामान्य सांसारिक मनुष्य थे। उन्हें यह सोचकर अपार सुख हुआ कि उनका एकलौता पुत्र संसार में नाम, यश, ऐश्वर्य और धन-सम्पत्ति प्राप्त करेगा। साथ ही बादशाह बनकर हुकूमत करेगा।

बड़ी बहिन 'नानकी' के अनुकरण पर बालक का नाम 'नानक' रक्खा गया। 'नानकी' को अपने भाई 'नानक' नामकरण पर कितना हर्ष और गौरव प्राप्त हुआ होगा। चाहे यह नामकरण अकस्मात् ही क्यों न पड़ा हो, पर आगे चलकर इसका रहस्य उद्घाटित हुआ। वास्तव में 'नानकी' और 'नानक' दो शरीर पर एक आत्मा थे। भाई-बहिन में अलौकिक प्रेम था। आगे चलकर अपने भाई की आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रतिभा की अनुभूति सर्वप्रथम नानकी को ही हुई।

नानकदेव इस वसुन्धरा पर दैवी संगीत के रूप में अवतीर्ण हुए। प्रकृति में वे अल्पायु में ही रम जाते थे। अनन्त आकाश की नीलिमा, वायु के मृदुल झकोरों, सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति, जल की शीतलता और स्निग्धता तथा पृथ्वी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलौकिक वर्णों में उन्हें दिव्य संदेश सुनाई पड़ता। वे घण्टों अधखुली आँखों से प्रकृति के इस रूप को निहारते रह जाते, प्रकृति के माध्यम से वे भाव-जगत् में विचरण करने लगते। इससे उनकी आँखों में अन्तर्मुखता की खुमारी छायी रहती थी। वे अन्तरात्मा की अनिर्वचनीय शान्ति में निमग्न रहते। वे सच्चिदानन्द के अपार समुद्र में समाधि लगाए रहते। ऐसी अवस्था में कोई भी उनका स्पर्श करता अथवा उन्हें देखता, तो उसके अन्तर्गत भी अद्भुत आनन्द का संचार हो जाता। उन्हें जो कोई भी अपनी गोद में उठाता, उसी व्यक्ति में आनन्द की सरिता प्रवाहित होने लगती। किन्तु कोई यह नहीं जान सकता था कि यह आनन्द, यह शान्ति कहाँ से आ रही है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को वे स्वर्गीय बालक प्रतीत होते थे। गुरु नानक इतने सुन्दर वर्ण के थे, इतने आकर्षक थे कि प्रत्येक व्यक्ति उन पर मुग्ध हो जाता था। उनके मुखमण्डल की दिव्य मुसकान बलात् लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती थी।

शिशु अवस्था में नानक देव को रोते नहीं देखा गया। वे सदैव मुसकराते रहते थे। जब वे चलने योग्य हो गए, तब भी उनकी यही प्रवृत्ति बनी रही। कुछ काल के अनन्तर उनके एक निराले व्यक्तित्व का आभास मिलने लगा। जब कोई भिखारी अथवा साधु-फकीर उनके दरवाजे पर किसी खाद्य वस्तु अथवा कपड़े-लत्ते की माँग करता, तो वे दौड़कर घर में घुस जाते और उनके सामने खाने-पीने की जो वस्तु अथवा वस्त्र दिखाई पड़ जाता, वही उठाकर उल्लासपूर्वक उस भिखारी अथवा साधु-फकीर को दे देते। उनके पिता को अपने पुत्र का यह पागलपन तनिक भी नहीं रुचता था। पर चारा ही क्या था?

पाँच वर्ष की अल्पायु में वे धार्मिक एवं आध्यात्मिक वार्ता में रुचि लेने लगे। प्रायः अपने साथियों को अपने चारों ओर बैठा देते और उनसे परमात्मा का कीर्तन करने को कहते। स्वयं नानक देव कीर्तन में भाग लेते। अद्भुत वातावरण बन जाता था। जब वे एकान्त में अकेले होते, तो घण्टों अधमुँदे नेत्रों से चिन्तन में डूबे रहते। उस अवस्था में उन्हें जो भी देखता, वह अनिर्वचनीय आनन्द से परिपूर्ण हो जाता। गुरु नानक के शान्तिमय और तेजस्वी मुखमण्डल का आकर्षण लोगों को अपनी ओर बलात् आकर्षित कर लेता था। किन्तु उनके पिता कालू मेहता को अपने एकलौते पुत्र की दैवी प्रवृत्ति तनिक भी अच्छी नहीं लगती। वे अपने पुत्र को सांसारिक दृष्टि से महान् पुरुष देखना चाहते थे।

तलवंडी के ज़मीन्दार राय बुलार अत्यन्त सहिष्णु और उदार मुसलमान थे। उनकी इस उदार नीति के परिणामस्वरूप तलवंडी के आसपास के जंगलों में हिन्दू साधुओं का जमघट लगा रहता था। बालक नानक को उन साधुओं के सम्पर्क में हार्दिक प्रसन्नता होती थी। वे उनके पास घण्टों बैठे रहते। उन्हें घर पर खाने की जो भी चीज मिल जाती, प्रसन्नतापूर्वक उन साधुओं को समर्पित कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देते थे। क्या उन साधुओं को यह आभास होता था कि यही बालक आगे चलकर त्याग और कर्म के बीच में अनुपम सामंजस्य स्थापित करेगा ? बालक नानक की इन अलौकिक क्रियाओं से उसके पिता, कालू मेहता को हार्दिक पीड़ा और ग्लानि होती थी। जिस पिता की भावना सांसारिक धन-सम्पत्ति और सुख-समृद्धि में इतनी अधिक थी, वह अपने पुत्र के इस खर्चीले स्वभाव से कैसे सुखी हो सकता था ? उन्होंने अपने पुत्र को इस सम्बन्ध में अनेक बार डाँटा-फटकारा। नानक-देव ने अपने पिता को आश्वासन दिया कि भविष्य में वे इस प्रकार का कार्य नहीं करेंगे। पर वे अपने स्वभाव से लाचार थे। दान, मुक्त हाथ से दान—यही उनका स्वभाव बन गया था। दैवी प्रेरणा ही उनसे यह सब कार्य करा रही थी। उनकी अन्तरात्मा परमात्मा के शाश्वत संग से निरन्तर जुड़ी रहती थी। अतः वे स्व-भावतः इन लौकिक बन्धनों की अवहेलना कर देते थे। मेहताजी अपने पुत्र के इस घरफूंक दान से आजिज आ गए थे। उन्होंने ज्योतिषी हरदयालजी को खरी-खोटी सुनाई, "आपने क्या मज़ाक किया है ? आपने तो कहा था कि यह बालक संसार के व्यक्तियों पर शासन करेगा, इसके अपार धन-सम्पत्ति होगी। इसका अपार नाम-यश होगा। पर इसका मार्ग तो एकदम विपरीत है। यह तो उसे भी फूंककर ताप लेगा, जो कुछ मैंने ईमानदारी और परिश्रम से अर्जित किया है। क्या आपने इसके भविष्य के सम्बन्ध में गलत भविष्यवाणी करके. मज़ाक नहीं किया है ?"

मेहताजी की बात ज्योतिषीजी ने बड़े ध्यान से सुनी। वे शान्त भाव से सोचने लगे, "ज्योतिष-विज्ञान असत्य कैसे हो सकता है ? बच्चे के एक-एक लक्षण को देखकर मैंने ज्योतिष के अनुसार ठीक भविष्यवाणी की है।" कुछ देर मौन रहने के उपरान्त, उन्होंने मेहताजी से यह कहा, "धैर्य रखिए। मेरा अब भी यही कहना है कि नानक का स्थान बादशाहों और धनियों की अपेक्षा संसार में ऊँचा होगा। अभी जल्दी में नानक के सम्बन्ध में कोई निर्णय मत कीजिए। अपने स्तर से उनका मूल्यांकन न कीजिए।"

आखिरकार कालू मेहता ने गुरु नानक को पाठशाला में भरती कराने का निश्चय किया। उनका यह विचार था—"पाठशाला में रहने से यह साधुओं के संग से मुक्त हो जाएगा। दिन भर बाहर रहने से यह घर की वस्तुओं को फेंकेगा भी नहीं। साथ ही साथ इसे पढ़ना-लिखना भी आ जाएगा, जिससे भविष्य में मेरे मार्ग का अनुसरण करेगा।"

गुरु नानकजी ने अपने पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। शुभ-मुहूर्त निक-लवाकर कालू मेहता अपने पुत्र को लेकर 'पांधा' (पाठशाले के ब्राह्मण अध्यापक) के पास उपस्थित हुए। उन्होंने पांधा से निवेदन किया, 'महाराज, इसकी विशेष निगरानी रखिए। यह हमारे लिए सिरदर्द हो गया है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पांधा ने अपने नये शिष्य का बड़ी बारीकी से अध्ययन किया। किन्तु उन्हें अपने इस नवीन शिष्य में न कोई कमी प्रतीत हुई और न कोई त्रुटि ही नज़र आई। उन्होंने अनुभव किया कि यह नवीन शिष्य पढ़ने-लिखने में अत्यधिक उत्साही तथा बुद्धिमान हैं। साथ ही अत्यन्त आज्ञाकारी, विनीत एवं गुरुभक्त भी है। उन्हें यह अनुभव हुआ कि नानकदेव के समान मेधावी, तीक्ष्ण बुद्धिवाला, आज्ञाकारी, विनीत शिष्य जीवन भर में नहीं मिला है। वहुत थोड़े समय में नानक ने पढ़ना-लिखना सीख लिया।

एक दिन गुरु नानक सभी लड़कों से पृथक् होकर वड़े मनोयोगपूर्वक पट्टी पर कुछ लिख रहे थे। पांधाजी वड़े ध्यान से नानकजी का लिखना देख रहे थे। उन्हें इस बात का पहले ही आभास हो गया था कि यह साधारण लड़का नहीं है। यह असाधारण और विलक्षण है। उन्होंने खेल के समय नानक को अगुआ के रूप में देखा था। उन्होंने एकान्त में नानक को अधमुंदी आँखों से घण्टों ध्यान करते हुए भी देखा था। उन्हें यह पूर्ण बोध था कि यह निद्रा अवस्था नहीं है, वल्कि समाधि अवस्था है। उन्होंने गुरु नानक के ध्यानावस्थित नेत्रों का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण किया था। उन आँखों में अलौकिक रहस्य और विलक्षण आनन्द का स्रोत उमड़ता हुआ दिखाई पड़ा था। उनके मुखमण्डल पर आनन्द और शान्ति की वह लहर देखी थी, जिसके दर्शन मात्र से दुखियों एवं पीड़ितों की आन्तरिक व्यथा दूर हो जाती थी। उनके शिष्यों ने भी पांधा महाशय को यह सूचना दी थी, "जव आप पाठशाला से थोड़ी देर के लिए भी बाहर जाते हैं, तो नानक हम लोगों को एकत्र करके परमात्मा के नाम का कीर्तन कराने लगते हैं। ऐसे समय में उनके मुख पर स्वर्गीय आभा आ जाती है।" पांधा महाशय ने नानकजी के सम्वन्ध में यह सव देखा था, सुना और अनुभव किया था। अतः एकान्त में नानक को पट्टी पर लिखते देखकर उनकी जिज्ञासा और कुतूहलता की सीमा न रही। गुरु नानक देव शान्त भाव से और ध्यानपूर्वक लिखे चले जा रहे थे। पांधा की उत्सुकता और अधिक बढ़ी जा रही थी। पांधाजी ने लिखते समय नानक को अस्फुट स्वरों में गुनगुनाते भी सुना था।

अन्त में पट्टी पर लिखने का कार्य पूरा हुआ। पट्टी और कलम एक ओर रखकर नानकदेवजी अपनी रचना को शान्ति और आनन्द भाव से देखने लगे। वाद में जव गुरु नानक देव की पूर्ण प्रतिष्ठा पूर्ण गुरु के रूप में स्थापित हो गई, तो उन्होंने इस रहस्य का इस भाँति उद्घाटन किया, 'मैंने यह सब (पट्टी) नहीं लिखी थी। मैं तो परब्रह्म परमात्मा का माध्यम मात्र—निमित्त मात्र था। मेरे माध्यम से परब्रह्म परमात्मा ने स्वयं अपना गुणगान किया।' गुरु नानकदेव की रचना का यह पहला नमूना था, जिसे वे अत्यन्त ध्यानपूर्वक देख रहे थे। पांधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी यह सोच रहे थे, कि लिखने के बाद नानक उनके पास आएँगे और अपना काम दिखाएँगे। पर गुरु नानक निश्चित बैठे रहे। पांधाजी की प्रतीक्षा चरम-सीमा पर पहुँच गई। हृदय में कौतूहल और जिज्ञासा की हलचल लिये हुए, वे अपने प्रिय शिष्य के पास पहुँचे और बोले—'नानक, तुम पट्टी पर कुछ लिख रहे थे ? मैं उसे देखना चाहता हूँ।'

गुरु नानक अत्यन्त विनीत शिष्य की भाँति अपने स्थान से खड़े हुए और उन्होंने पट्टी पांधाजी के हाथों में थमा दी। पांधाजी ने पट्टी पर दृष्टि डाली। वे पट्टी की लिखावट देखकर आश्चर्यविभोर हो गए। उन्हें इतनी कम आयु के बालक से इस प्रकार की ऊँची आध्यात्मिक और दार्शनिक भावना की कल्पना स्वप्न में भी नहीं थी। पट्टी को एकटक दृष्टि से देखते ही रह गए। उन्हें यह देखकर अत्यधिक आश्चर्य हुआ कि लिखावट का प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य अद्भुत गंभीरता से युक्त है। भाषा की गरिमा के साथ भावों और विचारों में अप्रतिम गहराई है। इस प्रकार की शृङ्खलायुक्त रचना करनी इतनी कम अवस्था में असम्भव है। जैसे-जैसे वे पढ़ते थे, वैसे-वैसे बार-बार उनका मस्तक उन शब्दों के प्रति, उस अद्भुत रचना के प्रति सहज भाव से नमित होता जाता था। वर्ण-माला के प्रत्येक वर्ण से रचना की गई थी। उस रचना में ब्रह्म, जीव, जगत् के गूढ़ातिगूढ़ और सूक्ष्मातिसूक्ष्म सिद्धान्तों को बहुत सहज भाव से सुलझाया गया था। इस पट्टी में जगत् के दुखी, निराश, पीड़ित, हतप्रभ मनुष्यों के लिए आशा, उल्लास, आनन्द, सहृदयता का अनुपम संदेश अन्तर्निहित था। उस अद्भुत रचना के कुछ अंश का भाव इस प्रकार है—

"ससा (स) का अभिप्राय उस (परमात्मा) से है, जिसने सृष्टि की रचना की है (और जो) सबका स्वामी है। जिनका चित्त (उस परमात्मा में) लग गया है, (वे निरन्तर उसकी) सेवा करते हैं और उन्हीं का इस संसार में आना (जन्म लेना) भी सार्थक हो गया है ॥

"हे मन, मूर्ख मन (तू) उस हरी को क्यों भूलता है ? (क्या इसीलिए तू पढ़ गया है ?) भाई, तू पढ़ा हुआ तब समझा जायगा, जब अपने कर्मों का पूरा-पूरा हिसाब चुका देगा ॥१॥ रहाउ।

"ईअड़ी (ई) का अभिप्राय यह है कि आदिपुरुष ही एकमात्र दाता है, वह (परमात्मा) आपही सच्चा है। जो गुरु द्वारा दीक्षित (शिष्य) इन अक्षरों में (हरी को) समझ लेता है, (तात्पर्य यह है कि विद्या द्वारा परब्रह्म परमात्मा को समझ लेता है) उसके सिर पर (किसी कर्म का) हिसाब नहीं रहता ॥२॥

"ऊडें (ऊ) (का अभिप्राय यह है कि उसकी) उपमा उससे की जाय, जिसका कहीं अन्त न प्राप्त हो। (ऐसी उपमा कोई है नहीं, क्योंकि सभी वस्तुएँ देशकाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अन्तर्गत हैं। अतएव परमात्मा निरुपमेय है)। जिन्होंने (सद्गुरु की) सेवा की है और सच की कमाई की है (वे ही) (मोक्ष) फल पाते हैं ॥३॥

"ढड्ढा (ढ) (का आशय यह है कि) (हरी) स्वयं ही ढाहता है (नष्ट करता है) और स्वयं ही निर्माता है, उसे जैसा अच्छा लगता है, (वह) वैसा ही करता है। (वह हरी अपनी सृष्टि) रच-रचकर उसे देखता (सँभालता) है (और अपना) हुकुम (सब पर) चलाता रहता है। (वह) जिसके ऊपर अपनी कृपादृष्टि करता है, उसका निस्तार कर देता है ॥१७॥

"पप्पा (प) (का अभिप्राय यह है कि) पातशाह (बादशाह) परमेश्वर ने देखने के लिए प्रपंच (पंच तत्त्वों का विस्तार, जगत्) का निर्माण किया है। वह परमेश्वर ही) सब कुछ देखता है, समझता है और जानता है, (और वही जड़-चेतन के) भीतर-बाहर रम रहा है ॥२४॥

"लल्ला (ल) (का अर्थ यह है कि) जिसने (हरी ने) (सभी जीवों को) उनके धंधे में लगाकर छोड़ दिया है (और उसी ने) माया के मीठे आकर्षणों तथा मोह को बनाया है। अतएव खाने-पीने आदि को (तात्पर्य यह कि सुख भोगने हों अथवा दुःख झेलने हों, तो उन्हे) सम भाव से ही भोगना चाहिए (और यह भावना करनी चाहिए कि) उसके हुकुम के अनुसार सब कुछ हो रहा है ॥३१॥"[१]

पांधाजी ने मेहता कालू एवं अपने शिष्यों से नानकदेव की विचित्र प्रवृत्ति के सम्बन्ध में सुन रक्खा था। साथ ही ज्योतिषी हरदयाल की भविष्यवाणी भी उनके कानों तक पहुँच चुकी थी। पट्टी पर लिखी गई वाणी से उन्हें नानकदेव के सम्बन्ध में पूर्ण विश्वास हो गया कि यह बालक भविष्य में जगत् की आध्यात्मिक क्षुधा शान्त करेगा और भूले-भटके लोगों को सत्पथ पर लगाएगा। किन्तु पांधाजी गुरु नानक की दुबारा परीक्षा लेना चाहते थे। अतः उन्होंने गुरु नानक से कहा, "यह सब तो ठीक है। किन्तु मैं तुम्हें जो पढ़ाना चाहता हूँ, वह भी जीवन-यापन के लिए आवश्यक है। तुम एक खत्री के पुत्र हो। तुम्हें लेखा-जोखा और हिसाब-किताब भी पढ़ना चाहिए, ताकि तुम उनकी जगह पर काम कर सको। इससे तुम्हारे नाम, धन-सम्पत्ति में वृद्धि होगी और तुम सांसारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत कर सकोगे। इससे तुम्हारे पिताजी को भी सन्तोष होगा।" गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, "ऐहिक जीवन के लिए ये बातें सत्य हो सकती हैं। पर पारलौकिक जीवन के लिए इनका क्या प्रयोग हो सकता है ? मुझे आप जो कुछ पढ़ाएँ-लिखाएँगे, क्या वे पारलौकिक जीवन में सहायक सिद्ध होंगी ? आदरणीय गुरुजी, सांसारिक विद्याएँ इसी संसार तक रह जाएँगी। पारलौकिक जीवन में

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री राग, महला १, पृ० १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनका कोई भी उपयोग न हो सकेगा।" गुरु नानकजी का यह मार्मिक उत्तर 'श्री राग' की एक वाणी में इस प्रकार है—

"मोह को जलाकर, (उसे) घिसकर स्याही बनाओ। बुद्धि को ही श्रेष्ठ कागज बनाओ, प्रेम को कलम बनाओ और चित्त को लेखक। गुरु से पूछकर विचारपूर्वक लिखो। नाम लिखो, (नाम की) स्तुति लिखो और (साथ ही यह भी) लिखो (कि उस परमात्मा का) न तो अन्त है और न सीमा ॥१॥

"अरे बाबा, यही लेखा लिखना जानो। (क्योंकि) जहाँ तुम्हारे कर्मों का लेखा माँगा जाएगा, वहाँ सही-सही दस्तखत भी किया जाएगा (कि तुम्हारा लेख ठीक और प्रामाणिक है) ॥१॥ रहाउ ॥

"(लेखा ठीक होने पर) जहाँ (परमात्मा के यहाँ) बड़ाई होगी, सदैव खुशी (होगी) और शाश्वत आनन्द प्राप्त होगा। (परमात्मा के यहाँ) उन्हीं के मुख पर (प्रामाणिकता के) तिलक लगाए जाएँगे, जिनके मन में सच्चा नाम है। प्रभु की कृपा हो तभी उसकी (नाम की) प्राप्ति होती है, व्यर्थ की इधर-उधर बातों से नहीं ॥२॥

"कुछ तो (इस संसार) में आते हैं और कुछ 'सरदार' नाम रखवाकर उठ कर चल देते हैं। कुछ तो भिखारी उत्पन्न हुए हैं और कुछ (ऐसे उत्पन्न हुए हैं, जिनके) बड़े-बड़े दरबार (लगते) हैं। आगे जाने पर ही (वास्तविकता) जानी जाती है। बिना नाम के (परमात्मा के दरबार में सारे ऐश्वर्य) व्यर्थ सिद्ध होते हैं ॥३॥

"(हे प्रभु,) तेरे भय से मुझे बहुत अधिक भय है। (उसी भय से) मेरा शरीर खप-खपकर छीज रहा है। जिनके नाम 'मुलतान' और 'खान' थे, (वे भी खेह (राख) होते देखे गए। नानक कहते हैं कि (यहाँ से) उठकर चलने पर सभी झूठे प्रेम टूट जाते हैं[१] ॥४॥६॥"

पांधा को अपने वास्तविक गुरु की प्राप्ति नानक के रूप में हो गई। उन्हें यह प्रत्यक्ष अनुभूति हुई कि उन्हीं को आध्यात्मिक साधनों एवं शिक्षा की आवश्यकता है, उनके शिष्य नानक ने तो सच्चे गुरु की स्थिति प्राप्त कर ली है। अतएव उन्होंने गुरु नानकदेव को सादर प्रणाम किया।

इस घटना के बाद गुरु नानक कुछ दिनों और पाठशाला गये। तदनन्तर उन्होंने पाठशाला जाना बन्द कर दिया। जितना पांधाजी को पढ़ाना था, उतना सब उन्होंने अल्पकाल में ही पढ़ लिया। उन पर फिर वही नशा छा गया, जिससे उनके पिता बार-बार परेशान थे। बाज समय तो वे अपने समवयस्कों के साथ खेल-कूद में लग जाते थे। किन्तु उनका अधिकांश समय घर पर एकान्त में

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री राग महला १, पृ० १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यतीत होने लगा। एकान्त में ध्यान-मग्न रहने लगे। कभी-कभी निकट के जंगल में आए हुए साधु-फकीरों के सत्संग में जाते थे। उनके पिता कालू मेहता की परेशानी फिर ज्यों की त्यों हो गई। उनके पुरोहित एवं ज्योतिषी हरदयाल ने उन्हें सलाह दी कि वे नानक को संस्कृत सीखने के लिए संस्कृत-पाठशाला में भेजें। ज्योतिषी जी ने कहा, "नानक का मन लेखा-जोखा और हिसाब-किताब में नहीं लगता, तो उन्हें संस्कृत विद्वान् के पास संस्कृत सीखने भेजें। उनकी प्रवृत्ति धार्मिक है। अतः वेदों-शास्त्रों का अध्ययन कराइए। इससे वे प्रसिद्ध विद्वान् बन जाएँगे।" मेहताजी ने यह सलाह मान ली और नानकजी को संस्कृत पढ़ाने के लिए पंडित व्रजनाथ के पास भेजा गया। वहाँ भी उन्होंने काम की चीजें थोड़े ही समय में पढ़ लीं। अन्त में जगत् के उस भावी गुरु ने पंडित व्रजनाथ को इस बात पर राजी कर लिया कि उन्हें पेशाई पांडित्य और विद्या की आवश्यकता नहीं है। अन्त में गुरु नानकदेव जितना अध्ययन अपने काम के लिए आवश्यक समझा, उतना पूरा करके, फिर अपनी भजनानन्दी प्रवृत्ति में रम गए। फिर वही, एकान्त-चिन्तन और साधु-फकीरों का सत्संग चालू हो गया। हाँ, कभी-कभी उनके खिलाड़ी मित्र अपने खेलों में उन्हें उलझा लेते थे।

ऐसी स्थिति में वे घने जङ्गलों में चले जाते थे—जहाँ कोई भी मनुष्य नहीं फटकता था। उस निर्जन एकान्त में अपनी अन्तर्मुखी वृत्ति में विचरण करते थे। वे प्रकृति के दृश्यों को खुली आँखों से घण्टों निहारा करते थे। प्रकृति का सौंदर्य उन्हें मोह लेता था। वे प्रकृति के सौन्दर्य में अपने को डुबो देते थे। पक्षियों के कलरव गान में उन्हें ईश्वरीय संगीत सुनाई पड़ता था। प्रातःकाल एवं सायंकाल के सूर्य की लालिमा निशा के चन्द्रमा की सफेद चादर, नक्षत्रों का प्रकाश उन्हें विचित्र आनन्द से भर देता था। वे तुरन्त ही अन्तर्मुख होकर यह सोचने लगते—"सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, जीव-जन्तुओं का निर्माता कौन है? कौन है वह पुरुष, जो विविध प्रकार के जीवों का सृजन करता है; उनमें जीवनी-शक्ति, चेतना-शक्ति प्रदान करता है? वह कौन पुरुष है, जिससे जगत् के समस्त व्यापार उत्पन्न होते हैं, स्थित रहते हैं और फिर उसी में लीन होते हैं?"

इन प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान भी उनका पवित्र अन्तःकरण कर देता था—"वह सभी का कर्ता, एक, ओंकारस्वरूप, सत्य, निर्भय, निर्वैर, अकाल-मूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू है। वह अपने आपमें स्थित है, घट-घटव्यापी, भूत, भविष्य, वर्तमान से परे हैं। वह जड़-चेतन सभी का अधिष्ठान है।" इस विचार में वे इतने अधिक तन्मय हो जाते थे कि उन्हें शरीर की सुधि-बुधि एकदम विस्मृत हो जाती थी। वे इतनी अल्पायु में तुरीयावस्था में स्थित हो जाते थे। भला, संसार का सामान्य मनुष्य उनकी इस आनन्दावस्था को किस प्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझ पाता ? उनकी इस स्थिति का अनुमान तो कोई दूसरा नानक होता, वही लगा पाता। इस प्रकार वे प्रकृति के माध्यम से अव्यक्त, अगोचर, निर्विकार, निर्गुण परमात्मा का अमृत-पान करते रहते। वह नश्वर प्रकृति में अनश्वर परमात्मा की लीला देखा करते थे।

एकान्त-चिन्तन के साथ ही साथ अतिरिक्त समय में गुरु नानक देव का साधु-सन्तों एवं फकीरों के साथ सत्संग भी हुआ करता था। हिन्दू साधु वेद-शास्त्रों की व्याख्या करते थे। गुरु नानकदेव उनका श्रवण तो करते थे, परन्तु अपनी चिन्तन-परम्परा की स्वतन्त्र अनुभूति के आधार पर कुछ और वस्तुएँ जोड़ देते थे। बड़े-बड़े साधु-सन्त भी उनकी विलक्षण प्रतिभा का लोहा मान लेते थे और आश्चर्यान्वित हो जाते थे। उन्होंने प्रकृति के वाह्य रूपों---अनन्त आकाश, मुक्त वायु, तेजमयी अग्नि, प्रवाहपूर्ण एवं शीतल जल, रंग-विरंगी धरती, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त तथा प्रकृति के आन्तरिक रूपों---सुख-दुख, राग-विराग, हर्ष-विषाद, शोक-मोह आदि के माध्यम से परमात्मा का साक्षात्कार किया। सांसारिक रोगों—काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार की परमौषधि भी ढूंढ़ निकाली। वह रामवाण औषधि थी---प्रभु का नाम-स्मरण। आगे चलकर यही 'नाम-साधना' सिक्ख धर्म का मेरुदण्ड वनी।

जैसे-जैसे गुरु नानकदेव की आन्तरिक साधना विकासोन्मुखी होती गई, वैसे-वैसे उनके पिता कालू मेहता की आकुलता, व्यग्रता, क्षोभ और असन्तोष की भी वृद्धि होती गई। राय बुलार को गुरु नानक से सम्बन्धित सारे समाचार ज्ञात हो गए थे। वे नानकदेव की इस आध्यात्मिक प्रवृत्ति के प्रति अत्यधिक आकृष्ट थे और मन ही मन उन्हें वहुत स्नेह करते थे। अतः कालू मेहता को सहानुभूति युक्त वाणी में राय बुलार ने सलाह दी, "मेहताजी, नानक के लिए दुखी होकर निराश न हों। आपके पुत्र में विलक्षण बुद्धि और प्रतिभा है। उसे फारसी पढ़ाइए। मैं उसे अपने दफ्तर का प्रधान वना दूँगा। मुझे विश्वास है कि वह इस काम को भली-भाँति निभा लेगा। उसने लेखा-जोखा और संस्कृत पढ़ना तो छोड़ ही दिया है। शायद फारसी पढ़ने में अपनी अभिरुचि दिखाए। कोशिश करके देख लेने में तो कोई हानि है नहीं।"

परिणाम यह हुआ कि गुरु नानकदेव फारसी पढ़ने के लिए एक मुल्ला के यहाँ भेजे गए। वहाँ उन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा से मुल्ला से जो कुछ भी सीखना था, थोड़े ही समय में सीख लिया। मुल्ला को भी यह अनुभव हो गया कि उनका शिष्य उनसे कहीं वढ़कर है। अपनी इच्छा और आवश्यकता के अनुसार गुरु नानक ने मुल्ला साहव से फारसी सीख ली। तत्पश्चात् उन्होंने अपने गुरु, मुल्ला को परमात्म-ज्ञान की शिक्षा दी। इस प्रकार गुरु नानक ने अपने गुरु को अपना शिष्य वना लिया। तत्पश्चात् उन्होंने पढ़ना स्थगित कर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह सिद्ध होता है कि गुरु नानक देव ने संस्कृत, फारसी आदि का अच्छा अध्ययन किया था। कुछ भावुक समीक्षकों की यह धारणा है कि गुरु नानकदेव निरक्षर और अनपढ़ थे। पर यह युक्तिसंगत नहीं प्रतीत होता। गुरु नानक को अपने जीवन में अनेक सम्प्रदायवाले पंडितों, विद्वानों और मुल्लाओं से शास्त्रार्थ करने पड़े थे। कहना न होगा कि उन शास्त्रार्थों में वे अपने पाण्डित्य और अलौकिक तर्कशक्ति से विजयी हुए।

फारसी के अध्ययन से मुक्ति पाने के बाद गुरु नानक को पुनः प्रकृति की गोदी में जाने का सुअवर प्राप्त हुआ। प्रकृति के माध्यम से ईश्वरानुभूति में उनकी प्रगाढ़ता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। किन्तु इस आनन्दानुभूति में एक व्यवधान भी आ उपस्थित हुआ। गुरु नानक का कोमल और भावुक मन जब संसार की ओर मुड़ा, तो उन्हें अनुभव हुआ, 'पीड़ितों, दुखियों, दीन-हीनों के उच्छ्वासों से सारे संसार का वातावरण दग्ध हो रहा है। उनकी कराहें सारे संसार में गूँज रही हैं। उन दरिद्रों, दुखियों के आँसुओं से सारा संसार डूब गया है। न उन्हें कोई ढाढ़स बँधानेवाला है, और न कोई उनका आँसू पोंछने वाला। इस दुःख की ज्वाला की शान्ति किस प्रकार होगी ? इस व्यथा का अन्त कब होगा ?" इन भावनाओं से कोमल भावनाओं वाले बालक नानक द्रवीभूत हो जाते। वे उदास हो जाते, उनके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगती। शोषित और प्रताड़ित मानवता के प्रति उनके हृदय में करुणा की अजस्र मन्दाकिनी प्रवाहित होने लगती। इस प्रकार उनके हृदय में दो भावनाओं का द्वन्द्व-युद्ध छिड़ गया—एक तो ईश्वर में अपार प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और आनन्द तथा दूसरा शोषित-प्रताड़ित मानवता के प्रति करुण भाव एवं उसके उद्धार का उपाय। गुरु नानकदेव अपने परमात्म-आनन्द के स्रोत की अगाध सरिता जन-जन में प्रवाहित कर देना चाहता थे। उनकी यह भावना उन्हें चैन नहीं लेने देती थी कि प्रत्येक प्राणी सुखी-समृद्ध और ईश्वरोन्मुख हो और उसे अपने सच्चे स्वरूप—आत्मसुख का बोध हो। उनका लक्ष्य स्थिर हो गया—ईश्वर-प्रेम के माध्यम से मानवता का उद्धार। परन्तु अभी इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समय की अपेक्षा थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय तीन

लड़कपन—विविध धन्धों में लगाने का प्रयास

गुरु नानक का अध्ययन-काल इस प्रकार शीघ्र ही समाप्त हो गया। वे जिन तीन अध्यापकों के पास अध्ययन करने के लिए भेजे गए थे, उन तीनों ने ही नानकजी को गुरु रूप में स्वीकार कर लिया था। इसमें सन्देह नहीं कि उन्होंने उन तीनों से कुछ सीखा था, पर उसके बदले में उन्हें बहुत कुछ सिखाया था। गुरु नानक ने अपने गुरुओं को पारमार्थिक विद्या की सीख दी थी और ऐहिक सुखों की असार्थकता का ज्ञान कराया था। इससे बड़ी शिक्षा और कौन हो सकती है?

मेहता कालू अपने पुत्र की अध्ययन-विषयक उदासीनता और विरक्ति से उत्तरोत्तर चिन्तित और परेशान होते गए। अन्त में मेहता ने अपने आप सोच कर यह निर्णय लिया, "नानक को जंगलों में रहना बहुत प्रिय है। उसे एकान्त से प्रगाढ़ प्रेम है। उसे जंगलों में पशुओं को चराने का काम क्यों न सौंपा जाए? वह वहाँ घूमने के लिए स्वतंत्र रहेगा। साथ ही जीविका-निर्वाह के लिए कुछ सार्थक काम भी कर लेगा। कदाचित् उसे यह कार्य प्रिय लगे। इससे वह कम से कम अपना भरण-पोषण तो कर लेगा और दूसरों पर भार तो न होगा।'

गुरु नानक को पिता की यह आज्ञा ईश्वर का 'हुक्म' प्रतीत हुआ। अदृष्ट परमात्मा की इस इच्छा का कौन अनुमान लगा सकता था कि चरवाहा नानक जिस भाँति आज पशुओं की निगरानी, देखभाल और चराने के लिए नियुक्त किया जा रहा है, उसी भाँति निकट भविष्य में वह ईश्वर की आज्ञा से सारी मानवता की देखभाल करेगा और उनमें आनन्द, शान्ति की भावना भरेगा? अतएव गुरु नानक ने अपने पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। पशु चराते समय वे अपने अन्तःकरण की भावना के अनुसार या तो शान्त भाव से बैठकर परमात्म-चिन्तन करते या पशुओं के पीछे-पीछे घूमते थे। उनकी मानसिक वृत्ति परमात्म-मय हो गई। वे अपने मन की प्रत्येक क्रिया में परमात्मा की 'मर्जी' समझने लगे। पूर्ण वैभव से युक्त प्रकृति ही उनके दिनों की सहचरी बन गई। वे अत्यधिक प्रसन्न थे। संध्या-समय वे आनन्द-भाव से घर लौटते। उनके मुख पर परमात्मा के सम्मिलन की अद्वितीय मुस्कान दिखाई पड़ती। उनके पिता भी सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। वे सोचने लगे कि आखिरकार उनका पुत्र रास्ते पर आ गया। कम से कम सम्मानपूर्वक अपनी जीविका तो अर्जित कर लेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ दिनों तक सारा कार्य ठीक ढर्रे पर चलता गया। एक दिन वे एक वृक्ष की सघन छाया में बैठ गए। प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को देखकर उनका मन अपने काबू में न रह गया। उन्हें अपने प्रियतम 'हरी' की याद बड़े जोरों से आ गई। उनकी सारी बाह्य क्रियाएँ अन्तर्मुखी हो गईं। उनकी आँखें स्वयं मुँद गईं। वे महा-समाधि में स्थित हो गए। उनके हृदय में परमात्मा का आगमन हो गया। साधक और साध्य एक हो गए। द्वैत भावना मिट गई। केवल 'तू-तू' रह गया, बूँद समुद्र में समा गई और वह समुद्ररूप हो गई। उसका बूँद भाव--नाम और रूप—मिट गया। उसे अपने 'लाल' की 'लाली' चतुर्दिक दिखाई पड़ने लगी। भीतर और बाहर उसी का 'जलवा' दिखलाई पड़ने लगा। नानक का व्यष्टि भाव परमात्मा के समष्टि भाव में लीन हो गया।

गुरु नानकदेव की इस निर्विकल्प समाधि से पशु भी बन्धन-मुक्त हो गए। वे स्वच्छन्द होकर मनमाना चरने लगे। चरते-चरते पास के एक खेत में पहुँच गए। खेत के मालिक ने उन्हें अपने खेत से निकाल दिया और आवेश तथा क्रोध में वह गुरु नानक को खोजने लगा। नानकदेव उसे पेड़ के नीचे आँखें बन्द किए हुए दिखलाई पड़े। उसके क्रोध का पारावार न रहा और उसने चिल्लाना प्रारम्भ किया, "सो रहे हो ! कितने ढीठ और उद्दण्ड हो। खुद तो सो रहे हो और अपने पशुओं को गरीब किसानों की खेती चरने के लिए छोड़ दिए हो। गरीब किसानों के परिश्रम की बरबादी की तुम्हें तनिक भी परवाह और गम नहीं है। अरे देखो, घोड़ा बेचकर सो रहा है। अरे बदमाश, जागो तो।"

गुरु नानकदेव निर्विकल्प समाधि से जगकर बाह्य दशा में आ गए। उनके मुख से निकल पड़ा, 'धन्य नारायण !' उनकी आँखें खुल गईं। उन्होंने आँखों से क्रुद्ध किसान को देखा और कानों से उसकी गालियाँ सुनीं। गुरु नानकदेव ने दिव्य मुसकान द्वारा उस किसान से इस प्रकार कहा, "यार जाने दो। इतना तैश न खाओ। यदि परमात्मा के मूक प्राणियों ने दो-चार ग्रास आपकी फसल चर ही ली, तो भाई इससे हुआ क्या ? जिस दयालु और दाता करतार ने तुझे बनाया है, तेरे खेत को बनाया है, तेरी फसल उगाई है, उसी ने इन मूक पशुओं का भी निर्माण किया है। उसके खजाने में किसी चीज की कमी नहीं है। वह तुम्हारी पैदावार में कमी नहीं आने देगा। इसके अलावा ये पशु भी आशीर्वाद देंगे। तुम्हें दुखी न होना पड़ेगा।" किन्तु खेत का मालिक अत्यन्त संसार-लिप्त मनुष्य था। उसकी बुद्धि संसार के विषयों में ही रमी हुई थी। उसे सिद्ध नानक की वाणी में तनिक भी विश्वास नहीं था। वह अपनी जड़ता पर आरूढ़ रहा। वह उस सिद्ध बालक को पकड़कर राय बुलार के पास हाजिर हुआ और उसने सारी घटना का ब्योरा बताया। आस-पास के खड़े लोगों ने बुलार महाशय को सूचित किया कि यह लड़का विक्षिप्त है। अतः इससे कहने-सुनने से कोई लाभ नहीं है। इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिता, कालू मेहता को बुलवाया जाय। मेहता के आने पर राय बुलार ने अपना निर्णय दिया कि इस किसान की बरबाद हुई फसल का हरजाना आप भरें।

हम सहज में अनुमान लगा सकते हैं कि इस घटना से कालू मेहता पर क्या बीती होगी। उनका पुत्र पढ़ने-लिखने में तो असफल सिद्ध हुआ ही, अब तो उसने और भी बुरा कर दिया। नानक के कारण सारे लोगों के सम्मुख उनके मालिक, राय बुलार द्वारा उनकी बेइज्जती की गई। बेइज्जती के अलावा ऊपर से हरजाना भी भरना पड़ रहा है। गुरु नानकदेव ने अपने पिता की मनोदशा का बारीकी से अध्ययन किया और राय बुलार से इस प्रकार निवेदन किया, 'साहब, आपने निर्णय तो दे दिया। पर निर्णय देने के पहले बरबाद हुई फसल को तो देख लेना चाहिए। परमात्मा अत्यन्त दयालु है। उसी द्वारा निर्मित मूक पशुओं द्वारा दो-चार ग्रास चरी हुई फसल से, भला इस गरीब का नुकसान किस प्रकार हो सकता है ?' गुरु नानक की यह बात राय बुलार को लग गई। उन्होंने अपने आदमियों को बरबाद हुई फसल को देखने के लिए तुरन्त भेजा। वे सब हाँफते हुए दौड़कर आए और उन्होंने आश्चर्यान्वित होकर निवेदन किया, "हुजूर, जिस जगह फसल चरी हुई बताई गयी थी, उस जगह वह एकदम अछूती है। उस जगह तो वह और भी हरी-भरी, लहलहाती नजर आ रही है।"

वहाँ के सभी लोग आश्चर्यविभोर हो गए। राय बुलार ने गुरु नानकदेव की महत्ता के सम्बन्ध में पहले ही सुन रक्खा था। उन्होंने यह भी समाचार पाया था कि उस बालक ने किस प्रकार अपने अध्यापकों को आध्यात्मिक शिक्षा देकर उनके जीवन में परिवर्तन ला दिया है। गुरु नानक के शक्तिशाली आध्यात्मिक व्यक्तित्व के सम्मुख राय बुलार नतमस्तक हो गए। उनका सारा अहंभाव गल गया। अहंभाव का गलना ही आध्यात्मिक विकास का प्रथम सोपान है। उन्होंने गुरु नानकदेव से प्रार्थना की, "महाराज, अपने ज्ञान के प्रकाश का किंचित् अंश मुझे प्रदान कीजिए। निस्सन्देह आप पूर्ण योगी हैं, आप पहुँचे हुए फ़क़ीर हैं। अपनी अपार आध्यात्मिक निधि में से थोड़ा भाग मुझे भी देने की कृपा कीजिए।"

गुरु नानक महाराज की आँखें अधमुँदी थीं। उन्होंने अत्यन्त मधुर वाणी में यह उत्तर दिया...

"यदि कोई योगी होता है, तो वह अपना योग पूर्ण करना चाहता है। यदि कोई भोगी होता है, तो वह भोग भोगना चाहता है, यदि कोई तपस्वी होता है, तो वह तप करता है और तीर्थों में शरीर मल-मलकर स्नान करता है॥ १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"किन्तु हे प्रियतम हरी, मैं तो तेरा सन्देशा ही सुनना चाहता हूँ, यदि कोई बैठकर सुनावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥

"मनुष्य जैसा वोता है, वैसा ही काटता है और जो प्राप्त करता है, वही खाता है। यदि कोई हरी के नाम के परवाने के साथ इस संसार से कूच करके जाय, तो परलोक में (यमराज आदि) उसको पूछते नहीं ॥ २ ॥

"मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही कहा जाता है। अर्थात् कर्मानुसार फल की प्राप्ति अवश्यम्भावी है। जिस साँस में (परमात्मा) चित्त में नहीं आता, वह साँस व्यर्थ ही जाती है ॥ ३ ॥

"प्रियतम परमात्मा के पाने के निमित्त यदि कोई व्यक्ति मेरे इस शरीर को बिक्री में खरीदे, तो मैं इसे खुशी-खुशी वय (बेच) कर सकता हूँ। हे नानक, जिस शरीर में सच्चे हरी के नाम का निवास नहीं होता, वह शरीर किसी भी काम नहीं आता[1] ॥४॥५॥"

उपर्युक्त वाणी सुनकर राय बुलार ने श्रद्धा से अभिभूत होकर गुरु नानक को सादर प्रणाम किया। अन्य लोगों ने भी उन्हें प्रणाम किया। सभी एकत्र लोग एक-एक करके चले गए।

गुरु नानकदेव का चरवाहा वाला कार्य चलता रहा। उन्हें इसमें आनन्द मिलता था। कालू मेहता भी निश्चिन्त और सन्तुष्ट थे। धीरे-धीरे नानकदेव नौ वर्ष की आयु के हो गए। कालू मेहता ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहा। इसके लिए शुभ मुहूर्त्त निश्चित किया। सभी सम्बन्धी, बंधु-बान्धव, इष्ट-मित्र, पड़ोसी एवं आस-पास के धार्मिक लोग निमंत्रित किए गए। सारे संस्कार जब समाप्त हो गए, तो कुटुम्ब के पुरोहित हरदयालजी ने गुरु नानक के गले में यज्ञोपवीत पहनाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। सारे लोग कालू मेहता को बधाई एवं गुरु नानक को आशीर्वाद देने के लिए तैयार होने लगे। किन्तु उसी बीच जो घटना घटी, उसने सबको आश्चर्य में डाल दिया। उस देव बालक के मुख पर प्रेम एवं गंभीरता की मधुर मुसकान थी। उसने बढ़े हुए पुरोहित का हाथ थाम लिया और पूछा, 'पंडितजी महाराज, क्या करने जा रहे हैं?' पंडितजी ने उत्तर दिया, 'प्यारे नानक, यह यज्ञोपवीत (जनेऊ) है। इसके पहनने से तुम आज से द्विजों की श्रेणी में गिने जाओगे। इसके धारण किए बिना मनुष्य शूद्र की कोटि में रहता है। इस यज्ञोपवीत से तुम्हें लोक-परलोक दोनों स्थानों में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अतः इसे मुझे अपने गले में पहनाने दो।"

गुरु नानक ने तर्कपूर्ण जिज्ञासा की, "कपास से बना हुआ यह यज्ञोपवीत

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, रागु सूही, महला १, पृ० ७३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी को परलोक में किस प्रकार प्रतिष्ठा दे सकता है ? यह तो पंचभौतिक शरीर के साथ यहीं रह जाता है। यह तो जीव के साथ परलोक जा नहीं सकता। जब वहाँ शरीर ही नहीं जा पाता, तो जनेऊ की क्या बात है ? प्रत्येक मनुष्य परलोक में यज्ञोपवीत-विहीन जाता है। मुझे ऐसा यज्ञोपवीत धारण कराइए, जो मेरे साथ परलोक भी जा सके।"

पंडित हरदयाल ने यह उत्तर दिया, "किन्तु हमारे यहाँ के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने, जिन्हें परमात्मा का पूर्ण ज्ञान था, यज्ञोपवीत धारण करने के लिए व्यवस्था दी है। उनका विश्वास था कि प्रत्येक द्विज को यज्ञोपवीत अवश्य धारण करना चाहिए। इससे लोक-परलोक, दोनों में सहायता मिलती है। अच्छा, यह बताओ कि इस जनेऊ से तुम्हें सन्तोष नहीं प्राप्त होता, तो तुम किस प्रकार का जनेऊ चाहते हो ? वह जनेऊ कहाँ से आएगा ?"

उस मेधावी और तार्किक बालक ने अपने पुरोहित से कहा, "हाँ, मैं उस जनेऊ की विधि भली-भाँति जानता हूँ। मैं आपको बता रहा हूँ, सुनिए।—

"वह जनेऊ ऐसा है, जिसकी कपास दया है, जिसका सूत संतोष है, जिसकी गाँठ संयम है और जिसकी पूरन सत्वगुण है। हे पंडितजी, यदि आपके पास इस प्रकार का आध्यात्मिक जनेऊ जीव के कल्याण के निमित्त हो, तो आप उसे मुझे पहना दीजिए। वह जनेऊ न तो टूटता है, न गंदा होता है। न जलता है और न कभी नष्ट होता है। हे नानक, वे मनुष्य धन्य हैं, जो अपने गले में ऐसा जनेऊ पहनकर परलोक जाते हैं।

"हे पंडितजी, जो जनेऊ आप पहनाते फिरते हैं, वह तो आपने चार कौड़ी देकर (बाजार से मोल) मँगवा लिया, और अपने यजमान के यहाँ जाकर उसे पहना दिया। तत्पश्चात् आपने उसके कानों में यह उपदेश दे दिया कि आज से तेरा गुरु ब्राह्मण हो गया। आयु समाप्त होने पर जब वह यजमान मर जाता है, तो उसका जनेऊ उसके शरीर के साथ गिर जाता है। भावार्थ यह है कि चिता में जलाते समय, शरीर के साथ वह जनेऊ भी भस्मीभूत हो जाता है। जीव के साथ वह जनेऊ परलोक नहीं जा सकता। इस प्रकार वह बेचारा यजमान जनेऊ के बिना ही इस संसार से विदा हो जाता है।"[१]

पंडितजी ने अनुभव किया कि उस बालक की विलक्षण प्रतिभा के सामने उनका सारा पाण्डित्य पराजित हो रहा है। अतः उन्होंने गुरु नानक के परम्परागत भावनात्मक पक्ष को जाग्रत करने का प्रयास किया, "प्यारे बच्चे, तुमने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। परन्तु ऋषियों-मुनियों द्वारा चलाई गई परम्परा

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, आसा की वार, महला १, पृ० ४७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का तो आदर करना ही चाहिए। द्विज वर्ण में उत्पन्न हुआ कोई भी हिन्दू, बिना जनेऊ धारण किए धर्म-विहीन माना जाता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम धर्म मानते हो, अतएव जनेऊ पहन लो।"

गुरु नानक ने निश्शंक भाव से उत्तर दिया, "आपको जनेऊ, क्या धर्म प्रदान करता है ? मैं तो देख रहा हूँ कि जनेऊ धारण करनेवाले, लाखों चोरियाँ और पर-स्त्री-गमन करते हैं। वे लाखों झूठ बोलते हैं और लाखों गालियाँ बकते हैं। वे दिन-रात लोगों से लाखों ठगियाँ और गुप्त पाप करते हैं। (इस प्रकार जनेऊ धारण करनेवाले व्यक्ति सदैव पाप करते रहते हैं। क्या धर्म का स्वरूप यही है ?) कपास ले आकर सूत काता जाता है। ब्राह्मण यजमान के घर जाकर उसे पूर देता है। घर में आए हुए सम्बन्धियों और इष्ट मित्रों को बकरा मारकर और पकाकर खिलाया जाता है। तत्पश्चात् घर का प्रत्येक प्राणी कहता है, 'जनेऊ पहनाया गया है, जनेऊ पहनाया गया है।" पुराना होने पर जनेऊ फेंक दिया जाता है और उसके स्थान पर नया पहना जाता है। हे नानक, यदि धागे में शक्ति हो, तो वह टूट नहीं सकता। (अतएव जिस धर्म की आप बातें कह रहे हैं, उस धर्म का स्वरूप क्या है ? क्या तीन तागे का जनेऊ ही है ?[१]")

हरदयालजी ने नानक महाराज की यह वाणी सुनकर बड़ी कोमलता से उन्हें इस प्रकार समझाने का प्रयास किया, "नानक, तुम जो कुछ कह रहे हो, वह अक्षरशः सत्य है। लोगों का नैतिक और सामाजिक स्तर बहुत गिर गया है। फिर भी यह यज्ञोपवीत उच्च आदर्शों का चिह्न है। जनेऊ के परित्याग एवं तिरस्कार में सामाजिक एवं नैतिक समस्याओं का निदान नहीं है। लोगों के आचरण के सुधार के लिए पृथक् प्रयास की आवश्यकता है। क्या तुम यह समझते हो कि हमारे प्राचीन ऋषिगण और तुम्हारे पास बैठे हुए संभ्रान्त पंडितगण मूर्ख हैं ? यदि तुम इस जनेऊ से प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं हो, तो तुम्हें किस प्रकार का जनेऊ चाहिए ?"

गुरु नानक ने मृदुल वाणी में मुस्कराकर उत्तर दिया, "मैंने अपने जनेऊ के सम्बन्ध में पहले ही परिभाषा कर दी है। सत्व गुणों का अर्जन करना ही वास्तविक जनेऊ धारण करना है। परमात्मा का शाश्वत ध्यान करना, उसके 'हुक्म' को मानना, उसकी 'मर्जी' के अनुसार चलना, यही जनेऊ हमारे काम का है। इसी जनेऊ का लोक-परलोक में विश्वास किया जा सकता है। यही जनेऊ आत्मिक जनेऊ है। यह शाश्वत है। न तो यह कभी पुराना होता है और न कभी नष्ट होता है। यही जनेऊ साधक को आनन्दमय परमात्मा का साक्षात्कार

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, आसा की वार, महला १, पृ० ४७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कराता है और इसी से परमात्मा के शाश्वत दरबार में उसकी प्रतिष्ठा होती है। ऐसा जनेऊ मैं बड़ी प्रसन्नता से धारण करूँगा।"

पंडित हरदयाल के सारे तर्क-वितर्क समाप्त हो गए। फिर भी उन्होंने नानक से कहा, "नानक, तुमने जितनी बातें कही हैं, वे सब सत्य हैं। सचमुच हम सब आध्यात्मिक यज्ञोपवीत से विहीन हैं। हम लोग उसे धारण करने की भरसक चेष्टा करेंगे। परन्तु, तुम तो शारीरिक जनेऊ से विहीन हो। तुम इस शारीरिक जनेऊ को अभी पहन लो। हम लोग भी तुम्हारे बताए हुए जनेऊ को पहनने का प्रयास करेंगे।"

गुरु नानक ने अत्यन्त प्रत्युत्पन्न मति से पंडितजी को उत्तर दिया, "क्या आपको पूर्ण विश्वास है कि आपने शारीरिक जनेऊ को धारण कर लिया? (यहाँ शारीरिक जनेऊ का अभिप्राय शारीरिक संयम है, जिसका अभिप्राय शम और दम है) मेरी समझ में जनेऊ धारण करनेवाले ने अपनी इन्द्रियों और नाड़ियों को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया है कि वे इन्द्रियाँ विकारों की ओर न जायँ। इसी कारण प्रति दिन उनकी दाढ़ी पर थूक पड़ता है, भाव यह कि ऐसे बुरे कर्म करते हैं, जिससे नित्य थूके जाते हैं। उसने अपने पैरों को ऐसा तागा नहीं पहनाया है कि वे बुरे कर्मों की ओर अथवा बुरे लोगों की ओर न ले जायँ, हाथों को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया है कि वे बुरे कर्म न करें, जीभ को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया है कि वह पराई निन्दा करने से बची रहे, आँखों को ऐसा जनेऊ नहीं पहनाया है कि वे पराई स्त्री की ओर न देखें। इस प्रकार पंडित स्वयं तो बिना तागे (जनेऊ) के भटकते फिरते हैं, पर कपास के सूत के धागे बट-बट कर दूसरों को पहनाते फिरते हैं। पंडितजी अपने यजमानों की पुत्र-पुत्रियों का विवाह भाड़े पर कराते हैं—दक्षिणा लेकर कराते हैं। और पत्रा शोध-शोधकर उन्हें मार्ग दिखाते हैं। ऐ लोगो, सुनो और देखो, यह आश्चर्य-मय कौतुक! (पंडित) मन से तो अन्धे हैं—अज्ञानी हैं, पर अपना नाम रक्खे हैं सयाना।[१]"

उस अद्‌भुत बालक के अनुभवपूर्ण तर्कों और सच्चाई के कारण हरदयाल का सारा पाण्डित्य, सारा वाक्-चातुर्य ढह गया। वे निरुत्तर होकर शान्त हो गए। वहाँ के उपस्थित सारे समाज ने यह अनुभव किया कि इस क्रान्तिकारी बालक की वाणी बिलकुल ठीक है। इसने समाज और धर्म का जो जीता-जागता चित्र अंकित किया, उसमें किसी प्रकार की अतिरंजना नहीं थी। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के यज्ञोपवीतधारी समाज ने यह अनुभव किया कि वे सबके सब जनेऊ-

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, आसा की वार, महला १, पृ० ४७१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहीन हैं। गुरु नानक के कथनानुसार उनके यज्ञोपवीत सत्यहीन हैं, उनमें न ब्राह्मणोचित तप है, न क्षत्रियोचित तेज और बल। सारे समाज का नैतिक और सामाजिक स्तर दूषित और विकृत है। सबके सब अपना-अपना हृदय टटोलने लगे।

हरदयाल पंडित ने नानक को सादर प्रणाम किया और विनीत भाव से कहा, "मेरे बच्चे, तुमने जो कुछ कहा, सब सही है। हमारा समाज पतन के गर्त्त में पड़ गया है। अब उसके उत्थान का कोई सहारा नहीं दिखाई पड़ता। हम लोगों में से प्रत्येक को अपनी आत्मा का उद्धार करना चाहिए। वह कौन ऐसा पुरुष है, जो पददलित, शोषित और तिरस्कृत मानव-समाज का उद्धार करेगा ?"

पण्डितजी की यह वाणी सुनकर गुरु नानक की आँखें दैवी प्रकाश से चमकने लगीं और थोड़े ही क्षण पश्चात् वे मुँद गईं। उन्होंने एक आह भरी और मृदुल स्वर में एक 'वाणी' का गान किया, जिसका भाव इस प्रकार है—

"जिस सेवक के ऊपर परमात्मा दयालु हो जाय और कृपा करे, उसी के द्वारा वह अपना कार्य संपादित कराता है। प्रभु उस सेवक को निमित्त बनाकर लोगों के दुःखों को दूर कराता है। (अतएव यह हमारा कर्त्तव्य नहीं है कि हम लोग उस व्यक्ति को चुनें। प्रभु अपनी मर्जी के अनुसार उस व्यक्ति को स्वतः चुन लेगा)। परमात्मा के उसी सेवक के द्वारा जगत् का कल्याण होता है। प्रभु उस सेवक को अपने हुक्म के अनुसार कार्य में नियोजित करता है। ऐसा ही सेवक परमात्मा की सच्ची सेवा करता है। वही उसके 'हुक्म' और 'मर्जी' को क्रियात्मक रूप देता है। परमात्मा का 'हुक्म' मानने से ऐसा सेवक लोक-परलोक में प्रामाणिक समझा जाता है, इसी के फलस्वरूप वह अपने 'खसम' (प्रिय परमात्मा) का महल प्राप्त कर लेता है। जब सेवक वही कार्य करता है, जो पति (परमात्मा) को अच्छा लगता है, तो उसे मनोवांछित फल प्राप्त होता है और प्रभु के दरबार में वह प्रतिष्ठा के वस्त्र पहनकर जाता है।"

गुरु नानक की उपर्युक्त वाणी ने उपस्थित समाज में आशा और उत्साह का संचार कर दिया। सब आह्लादित होकर अपने-अपने घर गए।

इस घटना के बाद भी कुछ दिनों तक और गुरु नानकदेव पशु चराते रहे। उनसे जितना संभव था, उतना उनके चराने में ध्यान भी देते थे। जहाँ तक सम्भव था, वे अपने सांसारिक पिता—मेहता कालू की आज्ञा का पालन करना चाहते थे और वे यह सिद्ध करके दिखा देना चाहते थे कि वे मनसा, वाचा, कर्मणा उनके आज्ञाकारी पुत्र हैं। किन्तु नानक महाराज प्रतिक्षण यह भी अनुभव करते थे, कि सांसारिक पिता के अतिरिक्त उनके पारलौकिक पिता—परमात्मा भी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस पिता, परमात्मा का उनके लिए विशेष 'हुक्म' है, जिसके पालन के निमित्त उन्हें इस भौतिक संसार में उसने भेजा है। उसका 'हुक्म' था—'नानक देव द्वारा पीड़ित, दलित और शोषित मानवता का उद्धार।' उस परम पिता की आज्ञा गुरु नानक को विचित्र परिस्थितियों में प्राप्त हुई और जब यह 'हुक्म' प्राप्त हुआ, तब यह विलक्षण बालक उसकी आज्ञा में बन्दी की भाँति स्वतः सहज भाव से बँध गया। और उन पशुओं का क्या हुआ, जिन्हें वे चराते थे ? वे मनमाना इच्छानुसार चरा करते थे। ईश्वर की 'मर्जी' उन्हें जहाँ ले जाती थी, वहीं वे जाते थे। नानक महाराज जगत्पिता की स्नेहमयी गोदी में प्रेममयी क्रीड़ा करते थे। परमात्मा के इस शाश्वत, अखण्ड और पुनीत प्रेम ने उनके भौतिक जीवन में प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया। उसकी 'मर्जी' नानकजी को सृष्टि की प्रत्येक क्रिया में दिखलाई पड़ने लगी। उसकी 'मर्ज़ी' की लीला उन्हें सृष्टि की वाह्य और आन्तरिक लीलाओं में प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगी। उन्हें यह अनुभव होने लगा कि विना उसकी 'मर्जी' के एक पत्ता भी नहीं खटकता। परिणाम यह हुआ कि वह अद्भुत निरंकारी बालक अपने परम पिता के 'हुक्म' और 'मर्जी' का संगीत उन्मुक्त भाव से गाने लगा। अपने प्रियतम के संग में उसकी दैवी लीला होने लगी। उसका आन्तरिक प्रेम बाहर उमड़ आया, जो उसके प्रत्येक कर्म, प्रत्येक विचार, प्रत्येक भाव में दिखलाई पड़ने लगा। जो व्यक्ति उनके सान्निध्य में आया, उसके मन का ताप बुझ गया और ईश्वर-प्रेम की शीतल, पुनीत मन्दाकिनी उसके मन में प्रवाहित होने लगी। उसकी वही दशा हुई, जैसे पारस पत्थर के स्पर्श से लोहे की होती है। गुरु नानकदेव लोगों से सत्संग करने लगे और उस सत्संग में परमात्मा की अलौकिक शक्ति, उसकी एकरूपता एवं सार्वभौमिकता का गुणगान करने लगे। परिणाम यह हुआ कि नानकदेव सभी को ईश्वरोन्मुख, कर्मनिष्ठ बालक दिखलाई पड़ने लगे।

एक दिन गुरु नानक जंगल में एकान्त भाव से बैठे थे। इतने ही में अदृश्य स्वर्गीय उँगलियों द्वारा उनके हृदय का स्पर्श हुआ। अत्यन्त मधुर अस्फुट संगीत की ध्वनि प्रारम्भ हो गई। उस मधुर संगीत की मधुरिमा में गुरु नानकदेव निमग्न हो गए। अज्ञात दैवी शक्ति द्वारा वे परमात्मा के चरणकमलों में डाल दिए गए। वे उसी आसन से, उसी भाव में बड़ी देर तक स्थिर रहे। तत्पश्चात् वे विश्राम करने के लिए लेट गए। दिन दोपहर के बाद ढलने लगा। सूर्य पश्चिम दिशा की ओर ढल गया। वृक्षों की छाया पूर्व दिशा की ओर अग्रसर हो गई। अतः नानकदेव के शरीर पर से छाया हट जानी जाहिए थी। किन्तु आश्चर्य यह कि सूर्य की किरणों ने उस अद्भुत बालक के शरीर का स्पर्श नहीं किया। कोई अज्ञात और अलक्ष्य वस्तु नानकदेव और सूर्य के बीच में खड़ी होकर, उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीर की, सूर्य की तप्त किरणों से रक्षा कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि उस वृक्ष की छाया, जिसके तले गुरु महाराज विश्राम कर रहे थे, बिलकुल स्थिर हो गई थी। राय बुलार अपराह्न में उधर से गुजर रहे थे। उन्होंने इस चमत्कार को अपनी आँखों से देखा।

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना भी घटित हुई। गुरु नानकदेव पशु चराने गए थे। वे परमात्मा के गंभीर ध्यान में एक वृक्ष की छाया में विश्राम कर रहे थे। उनके पशु चर रहे थे और उनकी निगरानी देवदूत कर रहे थे। कुछ समय पश्चात् डालियों और पत्तियों के खुले भाग से सूर्य की किरणों का प्रकाश उनके मुख पर पड़ने लगा। इसी बीच एक बहुत बड़ा सफेद साँप आकर अपने बड़े फन को फैलाकर नानकदेव के मुखमण्डल की रक्षा सूर्य के प्रकाश से करने लगा। संयोगवश राय बुलार इस बार भी उधर से गुजरे। उन्होंने जैसे ही उस भयंकर सर्प को अपना फन नानकदेव के मुख पर फैलाए देखा, वैसे ही उनका हृदय भय से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। इस आशंका से कि यह भयंकर सर्प नानक को डस लेगा, राय बुलार के रोंगटे खड़े हो गए। वे आश्चर्यमिश्रित भय और आशंका से अपने स्थान पर चित्रवत् खड़े रहे। उन्होंने कालू मेहता के पुत्र के संबंध में इस प्रकार की अनेक रोमांचकारी घटनाएँ सुनी थीं, पर आज की घटना तो सबसे बढ़कर थी। उन्हें यह प्रत्यक्ष अनुभूति हुई कि समस्त प्रकृति गुरु नानक के साथ एक हो गई है। वह उनकी परिचर्या एवं रक्षा करती रहती है। अतएव यह संभव नहीं है कि साँप इस अद्‌भुत बालक का कुछ अनिष्ट करे। उन्हें पूर्ण रूप से प्रतीत हुआ कि जगत् के निर्माता, कर्त्ता पुरुष ने ही प्रकृति और जीवों की रचना की है और वह समस्त जीवों में उसी प्रकार व्याप्त है, जैसे दूध में घी व्याप्त है। इस सर्प में भी उसी परमात्मा की सत्ता विराजमान है। भला, परमात्मा की यह सत्ता उसके प्रिय पुत्र, नानक का कभी अनिष्ट कर सकती है? यह असंभव है। परमात्मा की अनिर्वचनीय, विलक्षण, अतर्क्य शक्ति ने सर्प की वृत्ति को परिवर्तित कर दिया। तभी तो वह अपने फन से उस बालक की धूप से रक्षा कर रहा है। गुरु नानक ने अपने आपको मनसा, वाचा, कर्मणा उस प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया है, तभी तो समस्त प्रकृति उनकी रक्षा और परिचर्या कर रही है।

इन अनहोनी घटनाओं से पाठकों में इस शंका का होना स्वाभाविक है : 'क्या ये सत्य हो सकती हैं ?' उत्तर में निवेदन है कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा में 'कर्तुं, अकर्तुं अन्यथा कर्तुं' शक्ति है। वह अपने भक्तों की महत्ता बढ़ाने के निमित्त विलक्षण से विलक्षण बातें घटित कर सकता है। असंभव होनेवाली घटनाओं को सम्भव बना सकता है। जो प्रकृति का स्वामी है, वह उसमें अपवाद भी उपस्थित कर सकता है। फिर जितने भी धर्म के संस्थापक हुए हैं, उन महापुरुषों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में विलक्षण शक्तियाँ देखी गई हैं। हाँ, यह बात अवश्य है कि वे मदारी की भाँति इनका चमत्कार दिखलाते नहीं फिरते। सर्वशक्तिमान् परमात्मा ही अवसर पड़ने पर ऐसे महापुरुषों को निमित्त बनाकर अपना चमत्कार दिखला देता है।

उपर्युक्त घटना को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखकर, राय बुलार का हृदय एकदम परिवर्तित हो गया। वे गुरु नानक के पक्के शिष्य बन गए। उन्होंने अपने हृदय में गुरु नानकदेव की वह छवि अपने अन्तःकरण में बसा ली। उनका हृदय अलौकिक आनन्द और शांति से परिपूर्ण हो गया। वे अपने साथ गुरु नानक को लेकर कालू मेहता के पास उपस्थित हुए और उन्हें इस बात के लिए बधाई दी कि नानक जैसा विलक्षण बालक उनके पुत्र के रूप में अवतरित हुआ है। साथ ही यह भी सलाह दी कि संसार के प्रति नानक की उदासीनता और विरक्ति के लिए वे कुछ कहें-सुनें नहीं।

इस प्रकार समय बीतता गया। गुरु नानकजी ने पशुओं का चराना छोड़ दिया। उनमें विलक्षण गंभीर भाव का आगमन हुआ। वे या तो जंगल के एकान्त में बैठे रहते, या साधु-संग में गंभीर आध्यात्मिक चर्चा में रत रहते अथवा उदासीन भाव से घर के कोने में लेटे रहते। उनका भजन 'मन में, वन में, घर के कोने में' होने लगा। कई दिनों तक कुछ खाते भी नहीं थे। बाज समय वे आध्यात्मिक गीत के गाने में तन्मय हो जाते। बाज वक्त उनकी आँखों से विरह और आनन्द की अश्रुधारा बहने लगती। फारसी की एक शेर उनके जीवन में अक्षरशः चरितार्थ होने लगी---

आशिकाने नौ निशानी ऐ पिसर,
इंतजारी, बेकरारी, बेसबर,
आहे-सर्दे, मुखे-जर्दे, चश्मे-तर
कम खुरो, कम गुफ्तगू, ख्वाबे हराम।

अर्थात् 'ऐ पुत्र, सच्चे प्रेमियों के नौ चिह्न होते हैं---प्रियतम की प्रतीक्षा, व्यग्रता, बेसबरी, ठण्डी और लम्बी आहें, पीला मुख, अश्रुयुक्त आँखें, अल्पाहार, कम वार्तालाप, अनिद्रा।'

गुरु नानक का सारा समय इसी प्रकार व्यतीत होने लगा। लोगों की यह धारणा पुष्ट हो गई कि नानक का पागलपन बढ़ गया है। इस आध्यात्मिक पागलपन को समझने के लिए उनमें बुद्धि कहाँ थी? किन्तु कुछ ऊँचे आध्यात्मिक पुरुषों ने यह समझ लिया, 'नानक का मन संसार से एकदम विरक्त हो गया है। वे अब शीघ्र ही घरबार छोड़कर पूर्ण विरक्त हो जाएँगे।' स्नेह के मूर्तिमान स्वरूप उनके पिता और माता ने नानकदेव की इस उदासीनता को छुड़वाने के लिए किसी भी उपाय के बरतने में कोई और कसर न उठा रक्खी। पर उस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहज विरक्त को संसार के प्रति लगाने में सारे के सारे प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए। उन्होंने जब अपने पुत्र से कृषि अथवा व्यापार करने के लिए आग्रह किया, तो उनके पुत्र ने उत्तर दिया, 'मैं परमात्मा के नाम की कृषि और व्यापार कर रहा हूँ। उस कृषि का जो कुछ भी लाभ होगा, वह सब, मैं संसार में बाँट दूँगा, उस व्यापार से जो कुछ मुनाफा होगा, उससे मैं संसार के दुःखों से दुखी और आवागमन के चक्कर में पड़े, भ्रमित और संतप्त प्राणियों का उद्धार करूँगा।' उनकी माता, तृप्ता नानक को यह कहकर संसार के कर्मों में लगाने का प्रयत्न करतीं, 'बेटा, बाहर के लोग तुम्हारी भर्त्सना करते हैं कि नानक पागल हो गया है। अतः तुम थोड़े दिनों के लिए यह सब बन्द कर दो, ताकि लोग यह समझ जायें कि तुम ठीक हो, पागल नहीं हो।' इस पर गुरु नानक उत्तर देते, 'माँ, प्रभु का नाम लिए बिना मैं एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। मैं जिस क्षण 'हरी' का नाम नहीं लूँगा, उसी क्षण मर जाऊँगा। जिस क्षण परमात्मा के संग से विहीन हो जाऊँगा, उस क्षण मेरे ऊपर दुःखों के पहाड़ टूट पड़ेंगे।' जब उनकी माता स्नेह से द्रवीभूत होकर कहतीं, 'बेटा नानक, कुछ खा-पी तो लो,' नानक देव का यह उत्तर होता, 'माँ, मेरी भूख केवल परमात्मा की प्राप्ति के लिए है, मेरी प्यास केवल प्रभु के दर्शन के निमित्त है। मुझे सांसारिक भूख-प्यास रंच मात्र भी नहीं है। मुझे कोई भी कष्ट नहीं है। भला मैं, उस जगत्पिता को किस प्रकार भूल सकता हूँ, जिसने सारी सृष्टि सिरर्जी है और जो सृष्टि के कण-कण में तथा प्रत्येक जीव में व्याप्त है?"

चार दिनों तक इसी 'उन्मनी अवस्था' में गुरु नानकदेव चारपाई पर चुपचाप पड़े रहे। न किसी से बोलना, न खाना-पीना, न किसी प्रकार की नित्य-क्रिया करना। परिवार के लोगों ने यही समझा कि वे किसी भीषण रोग के शिकार हो गए हैं। उनका निदान करने के लिए एक प्रतिष्ठित वैद्य को बुलवाया गया। वैद्य ने ज्यों ही उनकी नाड़ी पकड़ी, त्यों ही परमात्म-विरही नानकदेव ने अपनी बाँह खींच ली और मुस्कराकर उनसे इस प्रकार कहा—

"वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह।
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माँहि।"

—(मलार की वार)

अर्थात् "वैद्य, वैदगी (इलाज) करने के लिए बुलाया गया। वह बाँह (नाड़ी) पकड़कर (मर्ज) ढूँढ़ता है। किन्तु भोला वैद्य यह नहीं जानता कि मेरे कलेजे में करक—दर्द है, (वह वाह्य उपचारों से दूर नहीं हो सकता)।"

नानकदेव ने वैद्यजी से कहा, "वैद्यजी महाराज, आप अपने घर जाइए। आप मेरे मर्ज की दवा न कर सकेंगे। मेरे मर्ज की औषधि आपके पास नहीं है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैद्य ने नानक से प्रश्न किया, "यदि मैं रोग का निदान नहीं जानता, तो तुम्हीं बताओ, इसका निदान क्या है ?"

इस पर गुरु नानकदेव ने यह उत्तर दिया—

'एक दुःख तो वियोग का दुःख होता है और एक दुःख भूख का। एक दुःख शक्तिशाली यमदूत का होता है और एक दुःख शरीर में रोग का दौड़कर लगना है। (इस प्रकार संसार में अनेक प्रकार के दुःख और रोग हैं)। अतएव हे भोले वैद्य, तू किस रोग की निवृत्ति के लिए मुझे औषधि देना चाहता है ? तू, मुझे दवा मत दे, क्योंकि तुझे मेरे असली रोग का पता नहीं है ॥१॥

'हे भोले वैद्य, तेरी दवा से दर्द होता है और शरीर में पीड़ा भी होती है। हे वैद्य, तेरी दवा मेरे मर्ज के ऊपर काम नहीं करेगी, अतः मुझे दवा मत दे (तेरी दवा से मेरा मर्ज जाएगा नहीं) ॥१॥ रहाउ ॥

'पति (परमात्मा) को भुलाकर अनेक प्रकार के रसों और भोगों के भोगने में शरीर में अनेक प्रकार के रोग उठ खड़े होते हैं। अन्धे—अविवेकी मन को सजा मिलती है। अतः हे भोले वैद्य, मुझे अपनी दवा मत दे ॥२॥

'चन्दन की सुगन्धि ही चंदन का वास्तविक फल—परिणाम है। शरीर में (घट में) श्वासों का आना-जाना ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है—फल है। श्वास के चली जाने पर शरीर ढह जाता है। शरीरपात हो जाने के बाद कोई दवा नहीं खा सकता ॥३॥

"सोने के शरीर में निर्मल हंस—जीवात्मा का निवास है। उस जीवात्मा में निर्मल हरी का अंश है। हरी के नाम से समस्त दुःख और रोग नष्ट हो जाते हैं हे नानक, सच्चे हरी के नाम से ही रोगों से छुटकारा मिलेगा"[1] ॥४॥ २॥७॥

उपर्युक्त वाणी कहने के अनन्तर गुरु नानकदेव ने अपनी रहस्यात्मक प्रेममयी एवं तीखी दृष्टि वैद्यजी की आँखों में गड़ा दी। इस दृष्टिपात ने वैद्यजी के शरीर में विचित्र परिवर्तन ला दिया। उनका सारा शरीर काँपने लगा और उन्हें यह अनुभूति हुई कि वास्तव में मैं ही रोगी हूँ, नानकदेव नहीं। औषधि की आवश्यकता वैद्य को है, न कि रोगी को। नानकजी की वाणी एवं चितवन द्वारा वैद्यजी को सच्ची औषधि प्राप्त हो गई। उन्होंने नानकदेव को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और वे चुपचाप चले गए। उन्हें यह पूर्ण विश्वास हो गया कि जिस दैवी बालक की वे दवा करने आए थे, वह संसार के समस्त दुखियों की दवा करेगा। संसार के समस्त दुखी प्राणी इस अलौकिक बालक द्वारा त्राण पाएँगे। जाते-जाते वैद्यजी कालू मेहता से कह गए—'महाशयजी, मैं आपको अनेक बधाइयाँ दे रहा हूँ। आपका पुत्र महान् है। वह बीमार नहीं है। यह दुखी मानवता को घायल हृदयों पर फाहा रखने के लिए इस संसार में आया है।

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, रागु मलार, घरु २, महला १, पृ० १२५६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय चार

सौदागरी

लगभग तीन महीने तक गुरु नानकदेव इसी 'उन्मनी' अवस्था में स्थित रहे। उनका खाना-पीना, घूमना-फिरना, उठना-बैठना तथा बोलना-चालना नाम मात्र के लिए रह गया। उनके माता-पिता अपने उस एकलौते पुत्र के लिए स्वभावतः अत्यधिक चिन्तित थे, जिसे पंडित और मुल्ला राह पर न ला सके थे और जिसकी औषधि वैद्यजी न कर सके थे। सामान्य लोगों को उस बालक में रहस्यपूर्ण महत्ता का भान हुआ था, पर उसके माता-पिता को इस बात का आभास नहीं हो सका। इसलिए वे अपने पुत्र की मनोवृत्ति से लाचार थे। उन्हें भीतर ही भीतर बहुत कष्ट होता था।

इसके पश्चात् गुरु नानक महाराज की उपर्युक्त मनोदशा समाप्त हुई। अब उनकी आयु सोलह वर्ष के लगभग हो चुकी थी। उन्होंने तीन महीने की ऊपर वाली 'उन्मनी' अवस्था को वस्त्र की भाँति उतारकर अलग कर दिया। उन्होंने अब सामान्य मनुष्यों की भाँति व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया—खाने-पीने लगे, घूमने-फिरने लगे, और बातचीत में रस लेने लगे। उनकी इस अवस्था को देखकर उनके माता-पिता के हर्ष की सीमा न रही।

कालू मेहता ने समझा कि नानक को किसी काम-काज अथवा रोजगार व्यापार में लगाने का यह अच्छा अवसर है। ऐसा सोचकर उन्होंने गुरु नानक को अपने पास बुलाया और कहा, "बेटा, अब तुम्हें अपनी रोजी-रोटी के सम्बन्ध में गम्भीरता से सोचना चाहिए। तुमने न पढ़ने-लिखने में अपना मन लगाया, और न पशु चराने में ही दक्षता दिखलाई। अब तुम बच्चे तो हो नहीं। तुम्हारी शादी जल्दी ही होनेवाली है। ऐसी स्थिति में तुम क्या कराना चाहते हो? जब तुम कुछ रोजगार-पाती नहीं करोगे, तो अपना परिवार कैसे चलाओगे? हम लोग भी तो अब बूढ़े हो रहे हैं। हमारी भी देखभाल तुम्हीं को करनी है। मैंने तुम्हारे लिए एक तरकीब सोची है। मैं तुम्हें एक छोटी पूँजी दूँगा। अपनी बुद्धि से तुम उस पूँजी को बढ़ाओ। मैं तुम्हें यह राय देता हूँ कि तुम नित्य के व्यवहार की उन चीजों को समीप के बाजार से खरीदकर यहाँ बेचो, जिनमें तुम्हें मुनाफा हो। ऐसा करने से दो-चार फेरे में तुम्हें सौदागरी का पूरा अनुभव हो जाएगा। साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही तुम्हारी पूँजी भी बढ़ जायगी। पूँजी बढ़ने पर तुम और दूर जाकर चीजें खरीदकर यहाँ वेचो। इस प्रकार तुम्हें और लाभ होगा। मेरा सुझाव तुम्हें स्वीकार होना चाहिए।'

गुरु नानक ने उत्तर दिया, "पिताजी, मैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ। मैं उस बात को अवश्य करूंगा, जिससे आपको प्रसन्नता हो। किन्तु मैं यदि अपने कार्य में असफल होऊँ, तो आप यह न समझें कि मेरी कोशिश या मंशा में किसी प्रकार की कमी है। कोई अदृश्य शक्ति मुझसे जो भी काम कराती है, उसी को करने के लिए मैं विवश हो जाता हूँ। आप मुझे जो आज्ञा दे रहे हैं, उसे मैं भर-सक पूरी करने की चेष्टा करूंगा।"

इस बात पर कालू मेहता ने गुरु नानक को बीस रुपये की अल्प पूँजी देकर उन्हें सौदागरी करने के लिए भेजा। साथ में अपने विश्वसनीय नौकर 'बाला' को साथ कर दिया। बाला की देखरेख में गुरु नानक वस्तुएँ खरीदने के लिए 'चूहड़काणा' नामक स्थान को रवाना हुए। तलवण्डी से चूहड़काणा गाँव बारह मील की दूरी पर था। राह चलते-चलते उन दोनों को वृक्षों का एक झुरमुट दिखलाई पड़ा। गुरु नानक के पाँव उसी दिशा में चल पड़े। कोई अदृश्य शक्ति बलात् उन्हें वृक्षों की ओर खींचे ले जा रही थी। उसी अज्ञात शक्ति द्वारा गुरु नानक के शरीर और आत्मा अब तक संचालित और प्रेरित होते आए हैं। वहाँ वे बहुत बड़ा सौदा करने जा रहे थे। बाला भी उनके पीछे-पीछे चल रहा था। उन वृक्षों के झुरमुट में उन्हें साधुओं का एक समुदाय दिखलाई पड़ा। लंगोटी को छोड़कर उनके पास कोई और वस्त्र नहीं था। वे सब कठिन तपस्या में रत थे। उनका शरीर अस्थिमात्र हो गया था। एक साधु के पास पहुँचकर गुरुजी ने वार्तालाप प्रारम्भ कर दिया। बातचीत के प्रसंग में गुरु नानकदेव को यह बात ज्ञात हुई कि उन साधुओं को कई दिनों से कोई आहार नहीं मिला है। उनका यह व्रत था कि कहीं माँगकर भोजन नहीं करेंगे। वे चलते-फिरते विरक्त महात्मा थे। बस्ती से दूर, जन-रव से परे, वे अपने शरीर की चिन्ता छोड़ बैठे थे और एकान्त स्थल में रहते थे। परमात्मा के साक्षात्कार की उत्कट अभिलाषा में वे अपने शरीर की चिन्ता छोड़ बैठे थे। शरीर का भार उन्होंने अपने प्रारब्ध और ईश्वर की मर्जी पर छोड़ दिया था। परमात्मा उनके प्रारब्धानुसार जब जो कुछ दे देते थे, उसी में सन्तोष मानते थे। दैवी बालक उन साधुओं की निष्ठा और विश्वास देखकर अत्यधिक प्रभावित और द्रवीभूत हो गया। उन साधुओं की कई दिनों की क्षुधा ने गुरु नानक का हृदय चुम्बक की भाँति खींच लिया। वे द्रवीभूत हो गए कि ये साधु क्षुधा की प्रबल ज्वाला में दग्ध हो रहे हैं। मेरे पास रुपये हैं। इन रुपयों से उनकी क्षुधा मिटाई जा सकती है। उन्होंने तत्क्षण निश्चय कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिया कि इन रुपयों का सदुपयोग इससे अधिक और क्या हो सकता है कि साधुओं की क्षुधा मिटाई जाए। इससे बढ़कर न कोई सौदा हो सकता है, और न कोई मुनाफा। उन्होंने जेब से बीसों रुपये निकाल लिए और उस साधु को समर्पित कर दिए। साधु ने रुपये छूने से एकदम इनकार कर दिया और कहा, "अभी तो तुम बिलकुल लड़के हो। कदाचित् तुम्हारे माता-पिता इसे बुरा मानें। संभवतः तुम्हें अपने इस कार्य के लिए सजा भी भुगतनी पड़े। अतः तुम, हमारे लिए परेशान मत हो। परमात्मा हम लोगों का सहारा और रक्षक हैं। जब उसकी मर्जी होगी, तब हम लोगों को भोजन भेज देगा। हम लोग तब तक प्रतीक्षा करेंगे।"

गुरु नानकदेव ने कहा, "आप मेरी फिक्र न करें। मेरे ऊपर जो बीतेगी, उसे मैं खुशी से भुगत लूंगा। आत्मा शरीर पर शासन और नियंत्रण करती हैं, शरीर आत्मा पर नहीं। आप लोगों की क्षुधा से मेरी आत्मा तड़प उठी है। मैं अपनी आत्मा की पुकार की अवहेलना नहीं कर सकता। आप लोगां को भूखे छोड़कर मैं यहाँ से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। मुझे पूर्ण अनुभव हो रहा है कि ईश्वर ने मुझे इसी उद्देश्य से यहाँ भेजा है।"

आखिरकार साधु ने गुरु नानक की बात स्वीकार करते हुए कहा, "यदि तुम्हारी इतनी प्रबल निष्ठा है, तो मैं तुम्हारी इच्छा स्वीकार करता हूँ। पर हम लोगों में कोई रुपयों का स्पर्श नहीं करेगा। हमारा यह व्रत है। यदि हम लोगों को खिलाने की तुम्हारी श्रद्धा है, तो तुम इन्हीं रुपयां से हमारे लिए भोजन की सामग्री लाओ।" गुरु नानक अपने नौकर बाला को लेकर बाजार गए और उन रुपयों से जितनी खाद्य सामग्री मिल सकती थी, उसे खरीदकर साधुओं की सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने भोजन करके अपना कई दिनों का उपवास तोड़ा और गुरु नानकदेव को हार्दिक आशीर्वाद दिया। जिस स्थान पर गुरु नानक ने उन साधुओं को भोजन कराया था, वहाँ एक गुरद्वारा बना हुआ है, जिसका नाम है 'खरा सौदा'।

अपने बीस रुपयों से साधुओं को खिलाने का अनमोल सौदा कर गुरु नानक महाराज अपने नौकर बाला के साथ तलवण्डी लौट पड़े। रास्ते भर अत्यधिक आह्लादित और सन्तुष्ट थे कि मैंने भूखे साधुओं को खिलाकर मनुष्य के कर्त्तव्य का पालन किया है और साथ ही परमात्मा के 'हुक्म' को माना है। तलवण्डी पहुँचने पर उनके मन में यह प्रतिक्रिया हुई, 'पिताजी ने मुझे सौदागरी करने के लिए बाहर भेजा, मैंने अपनी बुद्धि और क्षमता के अनुसार उनकी आज्ञा शिरोधार्य की। पर वे इस बात को नहीं समझ पाएँगे। वे तो यही समझेंगे कि मैंने उनके रुपये बरबाद कर दिए हैं। इस पर वे मेरे ऊपर नाराज होंगे। उनके इस क्रोध से जब तक सम्भव हो, मुझे बचना चाहिए।' ऐसा सोचकर उन्होंने भाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाला को तो गाँव भेज दिया और स्वयं एक पेड़ पर चढ़कर छिप गए और सारी रात वहीं बिता दी (उस पेड़ के सामने एक गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम 'तम्बू साहिब' है ।)

प्रातःकाल कालू मेहता को ज्ञात हुआ कि बाला नौकर लौट आया है । अपने पुत्र की अनुपस्थिति से उनका परेशान होना स्वाभाविक था । उन्होंने बाला को अपने पास बुलवाया और अपने पुत्र के सम्बन्ध में पूछा । बाला ने सारी घटना ज्यों-की-त्यों सुना दी और कहा, 'मैंने उन्हें ऐसा करने से मना किया । पर उन्होंने मेरी एक भी नहीं सुनी । उन्होंने यह कहा कि मैं अपने पिता की आज्ञा पर ही चल रहा हूँ । कल शाम होते-होते हम लोग जैसे ही गाँव के समीप पहुँच गये, वैसे ही वे तालाब के पास कहीं छिप गए । शायद आपके क्रोध के भय के कारण उन्होंने ऐसा किया है । मैंने तो अपना कर्त्तव्य पालन किया । अतएव मैं कसूरवार नहीं हूँ ।'

इस बात को सुनकर कालू मेहता क्रोध से आगबबूला हो उठे । वे तुरन्त उस स्थान पर पहुँचे । पेड़ की डाल में छिपे हुए गुरु नानक को बेदरदी से खींच लिया । क्रोध में थे ही, दोनों गालों पर बेरहमी से तड़ातड़ तमाचे लगाने शुरू कर दिए । तमाचों की चोट से गुरु नानक के कपोल स्याह और नीले पड़ गए । इस प्रकार गुरु नानकजी को साधुओं के प्रति दया और उदारता दिखलाने की कड़ी सजा भुगतनी पड़ी ।

राय बुलार ने यह घटना सुनी । वे गुरु नानक के प्रशंसक और सच्चे शिष्य पहले ही हो चुके थे । उन्होंने जब यह सुना कि कालू मेहता ने गुरु नानक को बड़ी निर्दयता से पीटा है, तो उनके दुःख और क्षोभ की सीमा न रही । उन्होंने तुरन्त ही कालू मेहता को बुलवाया और उनसे कहा, 'आपने इस आध्यात्मिक और धार्मिक लड़के को इतनी निर्दयता से पीटकर कितना अमानुषिक व्यवहार किया है ? जरा इस लड़के के गालों को तो देखो जहाँ आपने राक्षसी प्रहार किए हैं, वहाँ काले और नीले दाग पड़ गए हैं । मैंने आपको कई बार चेतावनी दी है कि नानक के साथ आप दुर्व्यवहार न करें, यह साधारण लड़का नहीं है । अफसोस है कि आप इस दैवी बालक को अपना लड़का मात्र समझते हैं । आप इस लड़के की विचित्र लीलाएँ नहीं समझ पाते । केवल बीस रुपयों के दान देने पर आपने इस बेचारे को इतनी क्रूरता से पीटा है । आप घनघोर सांसारिक हैं, इस दैवी बालक की महत्ता का अनुमान नहीं लगा सकते । यदि आपको रुपयों का मोह था, तो आप मुझसे कहते, मैं बीस के बदले आपको चालीस दे देता । अपने बीस रुपयों के लिए, उस बेचारे को इतनी बेरहमी से पीटा है । आप बाप होने लायक हैं ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहता ने समझा, मेरे सम्बन्ध में सभी लोग गलत अन्दाज लगा रहे हैं, ये सब मुझे मक्खीचूस समझ रहे हैं। अतः अपनी सफाई इस प्रकार पेश की, 'राय साहब, आपने रुपयों के सम्बन्ध में जो बात कही हैं, वास्तव में वह ठीक नहीं। थोड़ी देर के लिए आप अपने को मेरी परिस्थिति में रखिए, तो कदाचित् आपको मेरे दुःख और क्रोध का ठीक-ठीक अनुमान लग जाय। यह मेरा एकलौता पुत्र है। अतएव इसके मूर्खतापूर्ण व्यवहार से मुझे कष्ट होना स्वाभाविक है। पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा, पर उससे भी अपना मुँह फेर लिया। खेतीबारी करने में इसका मन लगता ही नहीं। सौदागरी का हाल आप देख ही रहे हैं। घर का मूलधन ही फूंक-ताप लिया। हमारी जो कुछ भी थोड़ी बहुत पूँजी है, निकम्मों और भिखमंगों को देने पर तुला हुआ है। मैं समझता हूँ, जो बीस रुपये सौदागरी के लिए दिए थे, बहुत बड़ी रकम नहीं है, पर उसके बरबाद कर देने से, इसकी मनोवृत्ति का तो पता लग ही गया है—'होनहार बिरवान के होत चीकने पात।' इसकी करतूतों से मुझे पूरा यकीन हो गया है कि मेरी सारी कमाई यह फूंक-तापकर बराबर कर देगा। पिता होने के कारण मेरा यह फर्ज है कि इसे सही रास्ते पर लगाऊँ। इसीलिए मैंने इसे तमाचे जड़े हैं कि भविष्य में इस प्रकार की बातों से सतर्क रहे। फिर भी आप मुझे ही डाट-फटकार रहे हैं। हुजूर, आपको इसके भविष्य पर कुछ रहम करना चाहिए।'

मेहता कालू की बातें सुनकर राय बुलार ने कहा, 'मेहताजी, आप अदूरदर्शी हैं। पता नहीं, आपकी आँखें कब खुलेंगी? आप यह जल्द से जल्द जान लें कि आपका पुत्र, नानक, साधारण लड़का नहीं है। उसके साथ आप जिस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं, उस प्रकार का व्यवहार आपको नहीं करना चाहिए। उसे संसार में महान् कार्य करना है। सौदागरी के रुपये साधुओं को खिलाकर भी, उसने आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है। उसने आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन किया है। आपने इसे रुपये देकर यही तो कहा था कि इन रुपयों से मुनाफा करो। उसने वही किया भी। कई दिनों के भूखे साधुओं को खिलाने से बढ़कर इस संसार में और कौन बड़ा लाभ हो सकता है? इसने आपके जो रुपये खर्च किए हैं, उनका भुगतान मैं कर दूँगा। मेरी इच्छा है कि ऐसे दैवी बालक को अपने घर रक्खूं, और उसका गुलाम होकर रहूँ। लेकिन लोकाचार के कारण मैं ऐसा करने से बाध्य हूँ। पता नहीं, लोग आड़ में क्या-क्या काना-फूसी करेंगे। मेहताजी, मैं आपको चेतावनी देता हूँ कि भविष्य में नानक के साथ इस प्रकार दुर्व्यवहार न करें। खबरदार, आप यदि ऐसा करेंगे, तो इस लड़के को मैं जबर्दस्ती आपसे ले लूँगा।'

राय बुलार की गुरु नानक के प्रति यह श्रद्धा देखकर कालू मेहता आश्चर्य में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ गये । उनसे कुछ कहते-सुनते नहीं बना । वे चुपचाप अपराधी की भाँति वहाँ से चले आये । कुछ दिनों तक सब ठीक रहा । दैवी बालक, नानक को अपनी खुशी के अनुसार रहने की पूरी छूट मिल गई । वे भी इस प्रकार का कोई व्यवहार नहीं करते थे, जिससे उनके पिता को किसी प्रकार का रोष अथवा क्षोभ हो । पर दैवी अन्तर्प्रेरणा कब तक मौन रह सकती थी ? एक दिन गुरु नानक स्नान करके घर आ रहे थे । संयोगवश उन्हें एक साधु मिले, जिन्होंने परमात्मा के नाम पर गुरु नानक से कुछ याचना की । परमात्मा के नाम पर विरक्त साधु द्वारा की गई याचना ने गुरु नानक का हृदय मथ डाला । वे अपने काबू में न रह गए । उन्होंने तुरन्त ही पीतल का लोटा और अपनी सोने की अँगूठी निकालकर साधु को समर्पित कर दी । जब मेहता कालू को इस बात का पता चला तो उन्होंने गुरु-नानक से क्रोधपूर्वक कहा, 'हद हो गई ! अब दो में से एक ही रास्ता है—या तो ठीक से रहो या मेरा घर छोड़कर जहाँ तुम्हारी इच्छा हो, चले जाओ ।'

राय बुलार के कानों तक पिता-पुत्र की यह बात पहुँची । उन्होंने गुरु नानक के शिष्य के रूप में अपने को मान लिया था । यह बात सुनकर उन्हें बहुत दुःख हुआ । उन्होंने गम्भीरतापूर्वक सोचना प्रारम्भ किया कि परिवार के इस पारस्परिक कलह को किस प्रकार दूर किया जाए और कौन-सा उपाय किया जाए, जिससे गुरु नानक पिता के बन्धनों से मुक्त होकर अपनी अन्तरात्मा की पुकार के अनुसार स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें । अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे—जब तक यह बालक अपने संसारी पिता के साथ रहेगा, तब तक आए दिन संघर्ष, कलह, तनातनी और मनमुटाव होते ही रहेंगे । अतः यह आवश्यक है कि कुछ ऐसी तरकीब की जाए जिससे बाप-बेटे अलग-अलग रहें ।

अतएव राय बुलार किसी ऐसे उपयुक्त स्थान की तलाश में लग गए, जहाँ वे अपने गुरु, नानक को समझा-बुझाकर भेज सकें । आखिरकार वह अवसर आ ही गया । गुरु नानक के बहनोई, भाई जयराम तलवण्डी आए । नानक की बहन नानकी की शादी जयराम से हुई थी । जयरामजी सुल्तानपुर के नवाब दौलत खाँ लोदी की अदालत में दीवान थे । उन्होंने अपने ससुर और साले के बीच होने वाले नित्य के झगड़ों को सुना । उन्होंने यह भी सुना कि गुरु नानक किस प्रकार सन्त जीवन व्यतीत करते हैं और आस-पास के लोगों में उनका कितना आदर है । जयरामजी जब राय बुलार से मिलने गए, तो बुलार साहब ने कालू मेहता के नानक के प्रति किए गए बर्बर व्यवहारों की निन्दा की । दोनों ने मिलकर यह निश्चय किया कि गुरु नानक को कोई काम-धन्धा दिलाकर उन्हें कालू मेहता के शासन से अलग और स्वतंत्र कर दिया जाए । भाई जयराम ने कहा कि मैं सुल्तानपुर में नानक के लिए कोई काम ढूंढ़कर सूचित करूँगा । इस प्रस्ताव से कालू मेहता भी राजी हो गए ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय पाँच

सुल्तानपुर में, अपने बहनोई के साथ

आखिरकार दीवान जयराम को अपने उद्देश्य में शीघ्र ही सफलता प्राप्त हो गई । अतः उन्होंने पत्र लिखकर गुरु नानक को सुल्तानपुर बुलाया । गुरु नानक जी अपने माता-पिता एवं इष्ट मित्रों से विदा लेकर सुल्तानपुर रवाना हुए । पहुँचने के थोड़े ही दिनों बाद उनके बहनोई, जयरामजी ने उन्हें नवाब, दौलत खाँ से मिलाया । नवाब नानकजी की शिक्षा-दीक्षा, व्यवहार-कुशलता, शिष्टता एवं व्यक्तित्व से बहुत प्रसन्न तथा प्रभावित हुए । उन्होंने गुरु नानक को प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाकर सम्मानित किया और अपने मोदीखाने का प्रधान नियुक्त किया । गुरु नानक ने इस नये पद का उत्तरदायित्व बड़ी कुशलता और सतर्कता से सँभाला । उन्होंने मोदीखाने की सारी व्यवस्था दक्षतापूर्वक अपने हाथों में ले ली । वहाँ उन्हें अपनी रुचि के अनुकूल कार्य मिला और मुक्त हस्त से गरीबों एवं दुःखियों को खाद्य-सामग्री देने लगे । हाँ, इस बात की ओर उनका ध्यान अवश्य था कि दी हुई सामग्री उनके वेतन और भत्ते से अधिक न होने पावे । जो भी व्यक्ति मोदीखाने से राशन पाते थे अथवा खरीदते थे, वे गुरु नानकदेव की ईमानदारी, स्पष्टवादिता और सच्चाई से अत्यधिक प्रभावित हुए । जो भी व्यक्ति वहाँ उनके सम्पर्क में आया, वही उनका हृदय से सम्मान करने लगा ।

उनकी ईमानदारी और सच्चाई की खबर नवाब, दौलत खाँ के कानों तक पहुँची । गुरु नानक महाराज दौलत खाँ के अत्यन्त विश्वासपात्र बन गए और मोदीखाने का स्तर बहुत ऊँचा हो गया । गुरु नानकजी मोदीखाने के कार्य में इतने तन्मय होते हुए भी अपनी आध्यात्मिक साधना के प्रति तनिक भी उदासीन नहीं हुए । वे पहले की ही भाँति परमात्मा की भक्ति में रत रहते । वे प्रतिदिन अमृतबेला (ब्राह्म मुहूर्त) में उठ जाया करते थे । उठते ही वे समीप के जंगल में चले जाते थे । नित्यक्रिया से निवृत्त होकर प्रतिदिन वेईं नदी में नियमपूर्वक स्नान करते थे । तत्पश्चात् वेईं नदी के तट पर बैठकर आनन्द-समाधि में निमग्न हो जाते थे । अपनी आत्मा के पंखों से उड़कर आनन्दमय परमात्मा के चरणकमलों तक पहुँच जाते और अपार सच्चिदानन्द सागर में निमज्जित हो जाते थे । निर्विकल्प समाधि अवस्था से जब उनका उत्थान होता और आँखें खुलतीं, तो स्वभावतः वे आकाश की ओर चली जातीं । अनन्त नक्षत्रों की जगमगाहट और

F 3/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदी के बहते जल में उनकी बनती-बिगड़ती प्रतिच्छायाओं को देखकर गुरु नानक का हृदय अपार आनन्द से ओतप्रोत हो जाता था। इस प्रकार उनकी आन्तरिक और बाह्य अवस्था में अपूर्व सामंजस्य उत्पन्न हो गया था। नेत्र मुँदने पर उन्हें 'नेह नानास्ति किंचन' का बोध होता था और नेत्र खुलने पर 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' की प्रतीति होती थी। एकान्त में वेईं के तट पर गुरु नानकजी शान्त प्रकृति के नाना रूपों को आनन्द भाव से देखते थे। वेईं के जल को स्पर्श करती हुई ठंडी वायु के झोंके गुरु नानक के उपासनामय पावन शरीर का स्पर्श कर स्वयं पवित्रता का अनुभव करते थे। गुरु नानकदेव इस स्पर्श की अनुभूति कर सहज भाव से 'कर्त्तापुरुष' की अद्भुत रचना में विमुग्ध हो जाते थे। उन्हें ऐसी अनुभूति होती थी, जैसे परमात्मा का पावन प्रेम ऊपर से उतरकर उन्हें अपनी गोदी में क्रीड़ा करा रहा है। इसी पावन प्रेम में सारी सृष्टि के जड़-चेतन को अनुरागमय मजीठिया रंग से रंग देता था। उस एकान्त स्थल में वे प्रकृति के माध्यम से कर्त्तापुरुष की अद्भुत वाणी का निनाद सुनते थे, उसके रंग-बिरंगे नाना रूप देखते थे और उसके अनन्त भावों की अनुभूति अपने सात्विक अन्तःकरण में करते थे। वे इसी अवस्था में घण्टों बैठे रहते। अकाल पुरुष की गोदी में व्यतीत किए गए वे घण्टे गुरु नानकदेव को पल से भी कम प्रतीत होते थे। वे उस अवस्था में रमे रहते थे, जिसमें देश-काल की दूरी अपने आप समाप्त हो जाती है। कुछ समय पश्चात् उस अनुभूति का अनुपम आह्लाद गुरु नानक की वाणी में संगीत के माध्यम से निनादित हो उठता। अनुभूति की प्रगाढ़ता में गुरु नानकदेव की वह वाणी, वह संगीत की मधुरिमा शाश्वत रूप धारण कर लेती। उनकी यह क्रिया सूर्योदय तक चलती रहती।

इस साधना के अनन्तर गुरु नानक घर आकर सांसारिक कर्त्तव्यों में जुट जाते थे। सांसारिक कर्त्तव्यों को निभाते हुए भी, उनका शरीर तो बाह्य कार्यों में लगा रहता था, पर मन सदैव प्रभु के चरणों में युक्त रहता था। यह उनकी सहज साधना हो गई थी। इस प्रकार सांसारिक कार्यों को करते हुए भी, उन्होंने अपनी वृत्ति योग-परक बना ली थी। जीवनमुक्ति की दृष्टि से उन्होंने राजा जनक का उदाहरण संसार के सामने रख दिया था। कहा जाता है कि खाद्य-सामग्री तौलते समय जब एक-दो से गणना करते-करते 'तेरह' (पंजाबी-तेरा) की संख्या पर पहुँचते थे, तो वे विचित्र भाव-जगत में पहुँच जाते थे। प्रभु के प्रति उनकी आत्म-समर्पण-वृत्ति इतनी प्रबल हो जाती थी, कि वे 'तेरा' संख्या की पुनरावृत्ति करते ही जाते थे और तृप्त नहीं होते थे। 'तेरा' का भाव यह था—'हे प्रभु, इस संसार में सब कुछ तेरा ही है।' इसी आत्मसमर्पण भाव में—इसी उच्च आध्यात्मिक अवस्था में न मालूम कितना सौदा तौल जाते थे। उन महापुरुष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की इस वृत्ति से अनेक दरिद्रों का कल्याण हो जाता था। 'तेरा' कहते समय उनके मुख मण्डल की कान्ति अनुपम प्रभा से युक्त हो जाती थी। वे सचमुच धन्य थे जिन पर गुरु नानक की यह अहैतुकी कृपा होती थी। वे बेचारे तो आते थे शारीरिक क्षुधा की निवृत्ति के लिए, पर गुरु नानकदेव उन पर आध्यात्मिक कृपा-वृष्टि करके, उन्हें कृतकृत्य कर देते थे। 'तेरा'—इस एक शब्द का संगीत श्रोताओं के हृदय में अनिर्वचनीय आनन्द का संचार कर देता था, उन्हें मोहित कर लेता था। वे श्रोतागण अपनी समस्त श्रद्धा, समस्त भक्ति उन अलौकिक तौलनहार पर न्यौछावर कर देते थे। साधुओं और फकीरों के प्रति उनकी श्रद्धा भावना पूर्ववत् बनी रही, बल्कि उसमें नवीन उल्लास की भावना और अधिक बढ़ गई। सुल्तानपुर में जितने भी विरक्त महात्मा, साधु-फकीर आते थे, सबको गुरु महाराज सम्मानपूर्वक भोजन कराते थे।

गुरु नानक के इस मुक्तहस्त दान ने अनेक दरिद्रों का हृदय जीत लिया। दीन जनता उन्हें 'दीनबन्धु' समझने लगी। किन्तु गुरु नानक की बहिन 'नानकी' और उनके बहनोई—जयरामजी, उनकी इस उदारता को देखकर चिन्तित और व्यग्र हो गए। इस चिन्ता का प्रमुख कारण यह था कि नानकदेव अपनी नौकरी और भत्ते में से बहुत कम बचा पाते थे। वे दोनों यह भी अनुभव करते थे कि कालू मेहता को यह जानकर बहुत क्षोभ होगा कि नानक अपनी आय में से कुछ भी न बचा पा रहा है और वह अधिकांश भाग साधु-फकीरों को लुटा रहा है। दोनों ने मिलकर एक युक्ति सोची कि यदि नानक को वैवाहिक बन्धन में बाँध दिया जाय, तो सम्भवतः उनकी यह बेफिक्री और लापरवाही दूर हो जाएगी। उन दोनों को यह प्रबल आशंका थी कि यदि नानक की उदारता इसी प्रकार बढ़ती जायगी, तो एक दिन वे संसार से पूर्ण विरक्त होकर साधु हो जाएँगे। अतः उन्होंने गुरु नानक को पारिवारिक बन्धन में बाँधना चाहा। पत्नी के आ जाने पर नानक की जिम्मेदारी बढ़ जायगी। उनका प्रेम पत्नी में केन्द्रीभूत हो जाएगा। अतः साधु-फकीरों का समागम स्वभावतः कम हो जाएगा। लड़कों-बच्चों के होने पर और अधिक उत्तरदायित्व आ जाएगा। इस प्रकार विवाह के द्वारा कुछ दिनों में अपने आप सही रास्ते पर आ जाएँगे। अपने परिवार-पालन में लग जाने पर, स्वयं मितव्ययी हो जाएँगे। वे यह सोचकर और भी अधिक प्रसन्न हुए कि कालू मेहता को जब यह सुखद समाचार ज्ञात होगा, तो वे कितने अधिक प्रसन्न और सन्तुष्ट होंगे।

इस प्रकार गुरु नानक के बहिन-बहनोई ने उन्हें परमार्थ-पथ से हटाकर संसार में लगाना चाहा। उन लोगों ने गुरु नानक के विश्वव्यापी प्रेम को परिवार की संकीर्ण सीमा में बाँधना चाहा। उन लोगों ने उस जीवनमुक्त पुरुष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवार के बन्धनों में जकड़कर बाँधना चाहा, जिसके द्वारा हज़ारों-लाखों दुःखी मनुष्यों के बंधनों का छुटकारा होने को था। उन लोगों ने सच्चिदानन्द के मान-सरोवर में विहार करनेवाले निर्मल हंस को पारिवारिक तुच्छ तलैया में आवद्ध करना चाहा। उन लोगों ने मुक्त पवन को अपनी इस युक्ति द्वारा वशीभूत करना चाहा। अनन्त सागर की असंख्य लहरों के समान नानक को पारिवारिक प्रपंचों की मुट्ठी में जकड़कर बाँधने को सोचा। परिणाम यह हुआ कि उन दोनों ने सम्मिलित रूप से यह प्रस्ताव गुरु नानक के सम्मुख रक्खा। परमात्मा की मर्जी समझकर उन्होंने इस प्रस्ताव को न तो अस्वीकार किया और न इसका विरोध किया। वास्तविकता तो यह थी कि वे अपने प्रियतम परमात्मा के साथ उसी प्रकार नित्य विहार किया करते थे, जिस प्रकार मछली सरिता अथवा समुद्र में विहार करती है। गुरु नानकदेव की मनःस्थिति का पता उन्हीं की वाणी से लगता है—

"जिन मनुष्यों के अन्तर्गत कोमलता और प्रेमरूपी पट, पर बाहर सरलता और सादगी रूपी गूदड़ है, संसार में वे बड़े ही भले हैं। उनका परमात्मा में निरन्तर प्रेम लगा हुआ है और वे उसके दर्शन करने के विचार में सदैव निमग्न रहते हैं। प्रियतम परमात्मा के प्रेम में वे कभी हँसते हैं, कभी रोते हैं और कभी शान्त और मौन रहते हैं। सच्चे स्वामी, प्रभु के बिना, उन्हें किसी अन्य व्यक्ति की चिन्ता नहीं होती। जीवनरूपी मार्ग में चलते हुए, ऐसे भक्त प्रभु के दरवाजे से नामरूपी खर्च माँगते हैं। जब वह प्रभु देता है, तभी वे खाते हैं।"[1] अपनी इस भक्ति-साधना द्वारा आध्यात्मिक भाण्डार का संग्रह नानकदेव स्वयं अपने ही लिए नहीं कर रहे थे, प्रत्युत समस्त मानवता को उसका साझीदार बना रहे थे।

विवाह करके गुरु महाराज समस्त जगत् के सम्मुख वैवाहिक जीवन के उच्चादर्शों को रखना चाहते थे। वे संसार के समस्त व्यक्तियों को यह दिखाना चाहते थे कि गृहस्थी के बन्धनों के बीच भी किस प्रकार सच्चा धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत किया जा सकता है। अतएव उन्होंने विवाह करना स्वीकार कर लिया। लगभग उन्नीस वर्ष की आयु में उनका विवाह बटाला-निवासी (जिला गुरदासपुर) बाबा मूला की कन्या सुलक्खनी देवी से सम्पन्न हुआ। किन्तु विवाह गुरु नानक महाराज के मन और हृदय को संसार की ओर मोड़ न सका। उनकी आध्यात्मिक ईश्वरपरायण वृत्ति ज्यों-की-त्यों अखण्ड बनी रही। उन्होंने आदर्श पति होने का पूर्ण निर्वाह किया। माता सुलक्खनी के अन्त-र्गत भी भक्ति-भावना जगाने का प्रयास किया।

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, आसा की वार, महला १, पृ० ४७३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानक के माता-पिता विवाह में सम्मिलित हुए। उनके माता-पिता हर्ष की सीमा न रही। उन्हें इस बात से भी अत्यधिक आह्लाद हुआ कि उनके एकलौते पुत्र ने कर्त्तव्यपालन में पूर्ण दक्षता दिखलाई है, जिसके परिणामस्वरू उसकी कीर्त्ति गाथा चारों ओर गूंज रही है और साथ ही वह सांसारिक समृद्धि के मार्ग पर भी है। उन्हें इस बात की भी आशा बँध गई कि नानक अब साधु सन्तों का समागम कम करके, अपने परिवार में लिप्त हो जायगा। गुरु नानक के विवाह में उनके तलवण्डी के इष्ट-मित्र, संगी-साथी भी सम्मिलित हुए। उन उनके सखा 'मरदाना' का नाम उल्लेखनीय है। मरदाना अपूर्व गवैया था मरदाना ने गुरु नानक से उनके विवाह का कोई उपहार चाहा। गुरु नानक उसे रबाब बाजे की भेंट की। उनकी अन्तर्दृष्टि ने मरदाना की विशेषता पहचान लिया। रबाब ने मरदाना की संगीत और गायन शक्ति में नवीन प्रा फूंक दिया। नानकदेव के इस दिव्य उपहार ने उसकी प्रसुप्त आध्यात्मिक भाव को जाग्रत कर दिया। वह अनुपम संगीतज्ञ और गायक बन गया। गुरु नानक जब भावावस्था में किसी वाणी का गान करते थे, तो मरदाना अपने रबाब तंत्रियों द्वारा उसे और भी मोहक बना देता था। रबाब के संयोग से वाणी अजीब समा बँध जाता था, और श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो जाते थे। नान महाराज परब्रह्म की प्रार्थना अपनी वाणी द्वारा करने लगे। उनकी प्रार्थना इतनी अधिक सम्मोहिनी शक्ति थी कि लोग स्वभावतः खिच-खिचकर आने लगे लोगों के आने का तांता बँधने लगा और भरपूर सत्संग होने लगा। श्रोता आनन्द-समुद्र में गोते लगाने लगे। पुष्प खिल गया, भँवरे-मँडराने लगे। अप वेतन से जो कुछ राशन उपलब्ध हो सकता था, वह सब गुरु नानकदेव साधु सन्तों एवं अभ्यागतों को वितरित करने लगे। उन्हें उसमें संग्रह करने की कामना नहीं थी। इस प्रकार उन्हें वेतन और भत्ते से जो कुछ भी प्राप्त हो था, सब दान कर देते थे। तलवण्डी से आए हुए अपने अनेक मित्रों को उन्हों मुल्तानपुर में कोई न कोई काम अथवा नौकरी दिला दी। उनके सारे मित्र नानक के शिष्य बन गए। वे सब उनकी श्रद्धा-भक्ति और आराधना करने लगे शाम को सभी लोग उनका आध्यात्मिक संगीत सुनने और सत्संग करने के निमि एकत्र होने लगे। उनमें भाई भगीरथ और भाई मनमुख के नाम उल्लेखनी हैं। गुरु नानक के प्रति उन दोनों की अपार श्रद्धा और भक्ति थी। भाई म सुखजी पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने सर्वप्रथम गुरु नानक की वाणियों का सं किया।

समय अपनी गति से आनन्दपूर्वक बीतता गया। गुरु नानकदेव को प्रारब्धा नुसार ऐसा कार्य मिला था, जिससे वे पूर्णतया संतुष्ट थे। उन्होंने संसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमार्थ के बीच सामंजस्य स्थापित कर लिया था। दोनों के बीच अनुपम समझौता कर लिया था। माता-पिता की इच्छा के अनुसार सांसारिक जीवन व्यतीत करते थे और अपनी आत्मा की पुकार के अनुसार ईश्वराधना और सत्संग में निमग्न रहते थे।

सांसारिक दृष्टि से गुरु नानकदेव सक्षम, विश्वसनीय और ईमानदार कर्मचारी थे। मित्रों की दृष्टि में स्नेही, विनोदी और उदार मित्र थे। पड़ोसी लोग उन्हें अपना सच्चा हितैषी और सहृदय पड़ोसी समझते थे। नागरिकों की नजरों में वे उदारमना, दानी नागरिक थे। गृहस्थ लोग उन्हें आदर्श और अनुपम गृहस्थ समझते थे। धार्मिक और आध्यात्मिक व्यक्तियों की दृष्टि में गुरु नानक महाराज पूर्ण भक्त, विलक्षण ब्रह्मज्ञानी और आदर्श जीवन्मुक्त पुरुष थे।

समय पर उनके यहाँ दो पुत्रों ने जन्म लिया। ज्येष्ठ पुत्र बाबा श्रीचन्द का जन्म १४६४ ई० में और कनिष्ठ पुत्र बाबा लक्ष्मीदास का जन्म १४६७ ई० में हुआ। इस प्रकार उनकी गृहस्थी की गाड़ी सुचारु रूप से चली जा रही थी। उनकी गृहस्थी में प्रसन्नता, समृद्धि और शान्ति तीनों की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही थी। गुरु नानकदेव का जीवन सभी नवयुवक गृहस्थों के लिए अनुकरणीय आदर्श जीवन था। पर उनका उद्देश्य और लक्ष्य तो और भी ऊँचा था। दीन-दुखियों, शोषितों की आहें और कराहें, गुरु नानकदेव का मन बलात् अपनी ओर खींच लेती थीं। रह-रहकर उन्हें यह अनुभव होता था कि मेरा जीवन केवल मेरे लिए नहीं है, मेरे जीवन पर सभी मनुष्यों का समान अधिकार है। दीन-दुखियों की पीड़ा से वे अत्यधिक द्रवीभूत हो जाते थे और उनके नेत्रों से अश्रुपात होने लगता था। उनका मन मसोसकर रह जाता था। उन्हें प्रतीत होने लगता कि गृहस्थी उनके पैरों की बेड़ी है। उनके मन में बार-बार आता कि उस गृहस्थी रूपी बेड़ी को काटकर तोड़ दें और मानवता के उद्धार के लिए निकल पड़ें। पर शायद अभी वास्तविक समय नहीं आया था। अभी परमात्मा के सच्चे आदेश की प्रतीक्षा थी। गुरु नानक महाराज उस समय की प्रतीक्षा करने लगे।

दुष्ट प्रकृति के लोग अपने स्वभाव के अनुसार सज्जन से सज्जन अथवा निष्कलंक से निष्कलंक व्यक्ति में कुछ न कुछ अवगुण अथवा कलंक खोज निकालते हैं। गुरु नानकदेव की साधुता और प्रसिद्धि से कुछ दुष्ट लोग जल-भुन गए। कुछ दुष्टों की आँखों में, गुरु नानकदेव का उदार दान किरकिरी बन गया, कुछ दुष्टों के हृदय पर उनकी भगवद्भक्ति के प्रचार से साँप लोट गया। हिन्दू मुसलमान दोनों ही समान भाव से गुरु नानकदेव की प्रशंसा करते थे, इस कारण भी बहुत से स्वार्थी और संकीर्ण विचारधारा के लोग जलने-भुनने लगे। गुरु नानकदेव के प्रति नवाब दौलत खाँ की श्रद्धा-भक्ति को देखकर भी बहुत से ईर्ष्यालु ईर्ष्या की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्नि में सुलगने लगे। अतः कुछ दुष्टों ने मिलकर ऐसा षड्यंत्र रचा, जिससे गुरु नानकदेव की प्रसिद्धि, यश और प्रतिष्ठा धूल में मिल जाय। उन्होंने दौलत खाँ से शिकायत की कि नानकदेव अन्न का भाण्डार खाली कर चुके हैं। दौलत खाँ ने शिकायत के आधार पर दुबारा-तिबारा जाँच कराई, पर सभी वस्तुएँ ठीक-ठीक मिलीं। कहते हैं कि एक बार तो भाण्डार की जाँच करते समय, गुरु नानक महाराज को एक कोठरी में बन्द कर दिया गया। पर उसके बाद भी सारी वस्तुएँ बदस्तूर मिलीं। उस 'कोठरी' पर एक गुरुद्वारा बना हुआ है, जिसका नाम 'कोठरी साहिब' है। प्रत्येक बार की जाँच में नवाब दौलत खाँ का विश्वास बढ़ता ही गया और अन्त में इस प्रकार की रिपोर्टों को निरर्थक समझकर उन पर कार्रवाई करनी छोड़ दी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय छः

परमात्मा का आदेश

लगभग दस वर्षों तक गुरु नानक महाराज ने गृहस्थाश्रम में रहकर उस आश्रम का आदर्श रूप सामान्य लोगों के सम्मुख उपस्थित किया। उन्होंने जगत् के सम्मुख यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि किस प्रकार धार्मिक और आध्यात्मिक पुरुष परमात्मा की आराधना, भजन, चिन्तन करते हुए भी मनुष्यों की सेवा कर सकता है और परमात्मा की सृष्टि को सुन्दर बना सकता है। परमात्मा का भक्त किस प्रकार देखते हुए, सुनते हुए, स्पर्श करते हुए, सूँघते हुए, भोजन करते हुए, चलते हुए, सोते हुए, हँसते हुए, अन्न तौलते हुए, मित्रों के साथ वार्तालाप करते हुए, वेईं नदी में स्नान करते हुए, प्रकृति के दृश्यों को देखते हुए, पुत्रों को स्नेह लुटाते हुए, स्त्री से प्रेम करते हुए, बहनोई-बहिन और माता-पिता को श्रद्धा करते हुए, साधुओं से सत्संग करते हुए, विचार और भाव की उच्च भूमि में विचरण करता है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण गुरु नानक महाराज ने जगत् के मोहग्रस्त प्राणियों के सामने रक्खा। उन्होंने जगत् की मोहक, आकर्षक वस्तुओं के प्रति सदैव तटस्थता और साक्षित्व की वृत्ति रखी। सभी आकर्षक वस्तुओं को क्षण-भंगुर और नश्वर समझकर उनमें वैराग्य भाव रखा। इस प्रकार गृहस्थी के बीच, विवेक, वैराग्य, षट्-सम्पत्ति और मुमुक्षत्व से सम्पन्न प्रबल ज्ञानी, रागात्मिका भक्ति से युक्त प्रबल भक्त, सांसारिक कर्मों को निष्काम भाव से करते हुए निष्काम कर्मयोगी और वेईं के तट पर गंभीर ध्यान और समाधि में रमते हुए सिद्ध योगी—आदि अनेक साधकों और सिद्धों का समन्वित रूप गुरु नानक महाराज के व्यक्तित्व में प्रतिभासित हुआ। गुरु नानकदेव अहर्निश सच्चिदानन्द के अपार सागर में डूबे रहते थे। उनके महान् साधनामय व्यक्तित्व से पता नहीं कितने व्यक्ति उनके शिष्य हो गये। उनकी दृष्टिमात्र से कितने व्यक्ति आध्यात्मिक साधना में प्रवृत्त हो गए। उनके वार्तालाप मात्र से कितनों का जीवन परिवर्तित हो गया। किन्तु तलवण्डी अथवा सुल्तानपुर कब तक उस अलौकिक व्यक्तित्व को अपनी परिधि में बाँध सकते थे? सूर्य के प्रकाश को छोटी-सी झोपड़ी कब तक रोक सकती थी? संसार में उनका आगमन केवल कुछ सौ व्यक्तियों के उद्धार के लिए नहीं हुआ था, बल्कि सारी मानवता उन्हें अपने त्राण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए पुकार रही थी। अहर्निश मानवता की दर्द-भरी चीख उनके कानों में गूंजकर उनके हृदय को विदीर्ण करने लगी। किन्तु गुरु नानकदेव दैवी आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त में परमात्मा के दिव्य आदेश का समय आ ही पहुँचा।

घटना १४९७ ई० की है। सदैव की भाँति गुरु नानकदेव वेईं की धार में स्नान करने गये। उनके साथ में एक नौकर भी गया और वह उनके कपड़ों के पास बैठकर उनकी प्रतीक्षा करने लगा। गुरु नानकदेव स्नान करने के लिए जलधार में कूद पड़े। जहाँ वे स्नान के निमित्त कूदे थे, उस स्थान का नाम 'संत घाट' है। उन्हें स्नान में पर्याप्त विलम्ब हो गया। बेचारा नौकर चिन्तित होकर उनकी प्रतीक्षा व्यग्रतापूर्वक करने लगा। उसने ध्यानपूर्वक धार में इधर-उधर गुरु नानक को देखा, पर उनका कोई भी पता नहीं चला। अन्त में वह बेचारा इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि गुरु नानकदेव धार में डूब गए। दुखी होकर उसने गुरुजी के बहनोई को यह दुःखद समाचार सुनाया। बिजली की तरह यह समाचार पूरे कस्बे में फैल गया। नवाब दौलत खाँ ने भी यह खबर सुनी। वेईं के तट पर लोगों का मजमा लग गया। नवाब साहब स्वयं घटनास्थल पर पहुँचे। गोताखोरों को गुरु नानकदेव के शरीर को ढूँढ़ने की आज्ञा दी गई। उनके सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए। सभी लोग अत्यधिक दुखी होकर अपने-अपने स्थान को लौट गए।

गुरु नानक के लापता हो जाने पर दुष्टों की फिर बन आई। उन्होंने अफवाह उड़ा दी कि भण्डारे की रसद नानक ने खतम कर दी है, और जब उसका पूरा करना असंभव हो गया, तो उन्होंने जानबूझ कर आत्महत्या की है। यह खबर नवाब के कानों तक पहुँची। नवाब ने सारी रसद तौलने की, सारा हिसाब-किताब जाँच करने की और सारे नकद रुपयों को गिनने की तुरन्त आज्ञा दी। जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि सारी वस्तुएँ एकदम दुरुस्त हैं, बल्कि हिसाब-किताब में गुरु नानकदेव का काफी बैलेन्स बढ़ा है। लोगों में फिर खलबली मच गई, 'भाई, तब गुरु नानक क्यों लापता हो गए? आखिर गए कहाँ?' ऐसे प्रश्न सभी लोगों की जबान पर थे, पर इसका उत्तर देनेवाला कोई न था।

कदाचित् इस घटना का संकेत सबसे पहले भाई गुरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वारां' में किया है। भाई गुरदास सिक्खों के सामन्त माने जाते हैं। सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदासजी से उन्होंने दीक्षा ली थी। उन्हें उन सिक्खों से मिलने और सत्संग करने का सुअवसर अवश्य मिला होगा, जिन्होंने गुरु नानकदेव के दर्शन किए थे और उनके सम्पर्क में आए थे। हमें यह भलीभाँति विदित है कि भाई गुरदास ने अपनी रचना, 'वारां' सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव को दिख-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाई थी। गुरु अर्जुनदेव ने भाई गुरदास की रचना 'वारां' का आलोचनात्मक अध्ययन किया था। उनकी रचना से इतने अधिक प्रभावित हुए थे कि उन्होंने इसे 'गुरु ग्रन्थ साहिब की कुञ्जी' की संज्ञा से संबोधित किया था। अतएव हम बिना किसी हिचक के यह कह सकते हैं कि भाई गुरदासजी ने जो कुछ भी लिखा है, उस पर गुरु अर्जुनदेव की पूर्ण सम्मति थी। भाई गुरदास ने उस घटना का इस प्रकार संकेत किया है --

पहिलां बाबे पाइआ बखशदर पिच्छों दे फिर घाल कमाई।
रेत अंक आहार करि रोड़ां की गुर करी बिछाई॥
भारी करी तपस्सिआ, बड़े भाग हरि सिउं बणि पाई॥
बाबा पैधा सच्च खंड, नउनिधि नाम गरीबी पाई।
बाबा देखै ध्यान धरि, जलती सभि प्रिथमी दिस आई।
बाझहु गुरू गुबार है, है है करदी सुणी लुकाई॥
बाबे भेख वणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधण धरति लुकाई[1] ॥२४॥

इसका भावार्थ इस प्रकार है--'बाबा नानक को सर्वप्रथम परमात्मा की अहैतुकी कृपा का दरवाजा खुला प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् उन्होंने उसकी प्राप्ति के लिए अत्यधिक श्रम किया। गुरु नानक ने परमात्मा की प्राप्ति के लिए अत्यधिक तपश्चर्या की। बालू (रेत) के समान रूखा-सूखा आहार किया। कंकड़ों-पत्थरों पर शयन किया। इस प्रकार महान् तपस्या करके, बड़े भाग्य से हरी (परमात्मा) से साक्षात्कार किया। उन्होंने 'सच्च खण्ड' में प्रवेश किया। उस सच्च खण्ड में उन्हें प्रतिष्ठा की पोशाक पहनाई गई। उन्हें नामरूपी नवनिधि एवं गरीबी (विनम्रता) की प्राप्ति हुई। नाम का सहारा लेकर उन्होंने ध्यान योग की साधना की। उस ध्यान के बल पर उन्हें जगत् की वास्तविक स्थिति का बोध हुआ। त्रिविधि ताप से सारी पृथ्वी जलती हुई दिखाई पड़ी। सच्चे गुरु के बिना जगत् के चारों ओर उन्हें तमोगुण और मोह का अन्धकार ही अन्धकार दिखाई पड़ा। इस घोर तामसी अन्धकार में जगत् के समस्त स्त्री-पुरुष हाहाकार कर रहे थे। चारों ओर 'त्राहि-त्राहि' की पुकार मची थी। इस करुण चीत्कार को सुनकर नानकदेव का कोमल हृदय करुणा से विगलित हो गया। परमात्मा की प्रेरणा से उन्होंने जगत् के कल्याण के निमित्त 'उदासी' (विरक्त) का वेश बनाया। इस परम्परा का अनुसरण कर बाबा नानकजी पृथ्वी के लोगों का कल्याण करने के लिए अपने घर से निकल पड़े।'

---

१. वारां, भाई गुरदासजी, वार १, पउड़ी २४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस घटना का उल्लेख 'पुरातन जनम-साखी' में भी मिलता है। इसकी रचना १६३५ ई० के आसपास गुरु हरगोविन्द जी के समय में हुई थी। इस पुरातन साखी में इस घटना को पौराणिक शैली में बताया गया है। इस पौराणिक शैली का अभिप्राय यह है कि आध्यात्मिक-जगत् की घटना को लोगों की सांसारिक भाषा में अभिव्यक्त किया गया है। कभी-कभी आध्यात्मिक जगत् की सूक्ष्म बातों को स्पष्ट करने के लिए जगत् की स्थूल भाषा का सहारा लिया जाता है। पुरातन जनम साखी का वर्णन इस प्रकार है—

'ज्यों ही गुरु नानक ने धार में गोता लगाया, परमात्मा के देवदूतों ने उन्हें अपने पीछे चलने को कहा। उन देवदूतों ने गुरु नानक को परमात्मा के सामने उपस्थित किया। सृष्टि-निर्माता ने उनका हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत किया। अपनी कृपा के प्रसाद रूप में उन्हें अमृत से भरा एक कटोरा पीने को दिया। गुरु नानक महाराज ने परमात्मा के उस प्रसाद को अत्यन्त विनय भाव से ग्रहण किया। अमृत पिलाकर परमात्मा ने उन्हें शोषित, पीड़ित और दुखी मानवता का उद्धार करने के लिए जगत् में भेजा। उद्धार का कार्य गुरु महाराज को सौंप दिया। इस प्रकार गुमराह लोगों को सही रास्ता दिखलाने के लिए परमात्मा ने गुरु नानक को नियुक्त किया। उन्हें जगत् में पूर्ववत् रहने का आदेश परमात्मा की ओर से प्राप्त हुआ, पर जगत् के दुखी मनुष्यों के उद्धार के लिए उन्हें अत्यधिक श्रम करने की आज्ञा प्रदान की गई। जिस प्रकार का जीवन स्वयं गुरु नानकदेव व्यतीत करते थे, ठीक उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करने के लिए वे अन्य लोगों को भी उपदेश दें। परमात्मा ने उन्हें अमोघ आशीर्वाद भी दिया कि इस पुनीत कार्य में उनकी कृपा और सहायता सदैव बनी रहेगी। सृष्टि-निर्माता ने जिस कार्य का उत्तरदायित्व गुरु नानक के ऊपर रक्खा, उसे उन्होंने विनयपूर्वक सहर्ष स्वीकार किया। गुरु नानक महाराज ने परमात्मा को धन्यवाद देकर उनका गुणानुवाद किया। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर परमात्मा के साक्षात्कार का अनिर्वचनीय आनन्द लेने लगे। तत्पश्चात् वे उसी जलधार में फिर पहुँचा दिए गए। इस क्रिया में इस संसार के तीन दिन व्यतीत हो गए।'[1]

श्रद्धालु समीक्षक गुरु नानकदेव की एक वाणी इस घटना से संबंधित बताते हैं—

हउ ढाढ़ी बेकारु कारे लाइआ
राति दिहै कै वार धुरहु-फुरमाइआ ॥
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ।
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥

---

१. लाइफ आफ गुरु नानकदेव—कर्त्तार सिंह, पृ० ६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सचा अंमृत नामु भोजनु आइआ।
गुरमति खाधा रजि तिनि सुख पाइआ॥
ढाढी करे पसाउ सबदु बजाइआ।
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ॥
(माझ की वार, महला १)

अर्थात्, मैं बेकार था, मुझे प्रभु ने अपना चारण बनाकर अपने वास्तविक कार्य में नियोजित कर दिया। प्रभु का प्रारम्भ से हुक्म हो गया कि मैं रात-दिन उसके यश का गान करूँ। मुझ चारण को प्रभु ने अपने सच्चे महल में बुला लिया। उसने सच्ची स्तुति और प्रतिष्ठा के वस्त्र मुझे पहना दिए। सच्चे नाम रूपी अमृत का भोजन मुझे परमात्मा के यहाँ से आ गया—प्राप्त हो गया। गुरु की शिक्षा पर चलकर जिस-जिस मनुष्य ने यह अमृत-नाम रूपी भोजन तृप्त होकर किया है, उसने सुख पाया है। मैं चारण भी ज्यों-ज्यों उसकी स्तुति और प्रशंसा के गीत गाता हूँ, त्यों-त्यों प्रभु के यहाँ से प्राप्त नाम-प्रसाद को छकता हूँ। (नाम का आनन्द मानता हूँ।)

मैकालिफ़ ने इस घटना का बड़ी रोचक शैली में वर्णन किया है—'एक दिन स्नान करते समय, गुरु नानक जंगल में अन्तर्हित हो गए और वहाँ उन्होंने ध्यान की उच्चावस्था में परमात्मा का साक्षात्कार किया। उन्होंने अमृत से भरा प्याला प्रदान किया गया। उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक उसे ग्रहण किया। परमात्मा ने गुरु नानक से कहा, 'मैं तेरे साथ हूँ। मैंने तुझे आनन्दित किया है। जो व्यक्ति तेरा नाम लेंगे, वे भी आनन्दित होंगे। तू जा और मेरा स्मरण कर और दूसरों से भी मेरे नाम का स्मरण करा। निर्लिप्त भाव से जगत में रह। मेरे नाम का कीर्त्तन कर। दान, आराधना और ध्यान का अभ्यास कर। मैंने तुझे यह अमृत का प्याला दिया है। यह मेरे स्नेह का द्योतक है।' गुरु नानक महाराज खड़े हो गए और परमात्मा को साष्टांग प्रणाम किया। फिर उन्होंने एक वाणी का उच्चारण किया, जिसका भावार्थ इस प्रकार है—

'यदि मेरी आयु करोड़ों वर्ष की हो जाय, और आहार भी वायु ही हो, ऐसी कन्दरा के बीच बैठूं, कि चन्द्रमा और सूर्य भी न देख सकें और सोने को स्वप्न में भी स्थान न मिले, अर्थात् निरन्तर जागता ही रहूँ, फिर भी तेरी कीमत मुझ द्वारा आँकी नहीं जा सकती। तेरे नाम को मैं कितना बड़ा बताऊं?' ॥१॥

'सच्चा निरंकार अपने आपमें स्थित है, अर्थात् वह अपनी महिमा में अपने आप स्थित है। जैसा वह है, उसका ज्ञान उसे आप ही है। उसके गुण सुन-सुनकर ही वर्णन किए जाते हैं। यदि उसकी इच्छा हो, तो वह अपने आपको दिखाने की कृपा करता है' ॥१॥ रहाउ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मैं वार-वार काटा जाऊँ और काट-काटकर टुकड़े-टुकड़े बना दिया जाऊँ और फिर चक्की में डालकर पीसा जाऊँ, आग में जला दिया जाऊँ और आग की भस्म के साथ मिल जाऊँ, फिर भी तेरी कीमत (महिमा) मुझ द्वारा नहीं आँकी जा सकती। तेरे नाम को मैं कितना बड़ा वताऊँ ?' ॥२॥

'यदि मैं पक्षी हो जाऊँ और सौ आसमानों तक का भ्रमण कर आऊँ, अर्थात् उड़ आऊँ, (इतनी अलौकिक सिद्धि प्राप्त हो जाय कि) किसी की दृष्टि में न आऊँ और न कुछ खाऊँ, न पिऊँ, फिर भी तेरी कीमत मुझ द्वारा नहीं आँकी जा सकती। तेरे नाम को मैं कितना बड़ा वताऊँ ?' ॥३॥

'नानक कहता है कि यदि लाख मन कागज हो और उस पर लिख-लिखकर सिद्धान्त (भाव) जानने की चेष्टा की जाय, लिखते समय स्याही में किसी प्रकार की कमी न आने पावे और लेखनी वायु की गति से तेरा (परमात्मा का) यश लिखती जाय, तो भी तेरी कीमत, मुझ द्वारा नहीं आँकी जा सकती। तेरे नाम को मैं कितना बड़ा वताऊँ ?'[1]

नानक के इस कथन पर एक आवाज इस प्रकार सुनी गई, "अरे नानक, तूने मेरा साम्राज्य देख लिया है", इस पर गुरु नानक ने कहा, "अरे प्रभु, नश्वर प्राणी, तेरी महिमा का गुणगान किस प्रकार कर सकता है ? जिसका मैंने प्रत्यक्ष दर्शन किया, उसका कथन अथवा श्रवण किस प्रकार किया जा सकता है ? तेरी महिमा का गुणगान तो तुच्छ से तुच्छ पशु-पक्षी भी करते हैं।" इतना कहने के पश्चात् गुरुजी महाराज ने 'जपु जी' के वीजमन्त्र और मंगलाचरण का उच्चारण किया, "वह एक है, ओंकारस्वरूप है। 'सत्य' ही उसका नाम है। वह सबका निर्माता है, आदिपुरुष है, भय और वैर से रहित है, वह अकाल है—तीनों कालों से रहित है, अयोनि और स्वयंभू है।"[2]

"वह परमात्मा आदि में अर्थात् भूतकाल में सत्य रूप से स्थित था, युगों के प्रारम्भ में वही सत्य विद्यमान था, अब भी वर्तमान काल में वही परमात्मा सत्य रूप में विद्यमान है; आगे आनेवाले समय में (भविष्य में) वही सत्य रहेगा।"[3]

गुरु नानकदेव ने जब अपना कथन समाप्त किया, तो पुनः एक ध्वनि सुनाई पड़ी, "ओ, नानक, तुझ पर मेरी निरन्तर कृपा है। जैसे मैं तुझ पर कृपालु हुआ हूँ, वैसे ही तू भी मेरे ऊपर कृपालु हो। मैं परमात्मा हूँ, पूर्ण, ब्रह्म और तू सद्गुरु है, दैवी गुरु है।" परमात्मा के इन वचनों को सुनने के पश्चात्, गुरु नानक ने एक वाणी (शब्द) का उच्चारण किया, जिसका भाव इस प्रकार है—

---

१. कोटि कोटि मेरी आरजा...हउकै वडु आखा नाउँ, सिरी रागु, महला १
२. बीजमंत्र—१ ओंकार...आदि
३. मंगलाचरण—आदि सचु—आदि, जपु जी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हे प्रभु, तू समुद्र है, ज्ञाता (दाना) और द्रष्टा (बीना) है, भला, मैं मछली, तेरा अन्त किस प्रकार पा सकती हूँ ? जहाँ-जहाँ मैं देखती हूँ, वहाँ वहाँ तू ही है, तुझसे पृथक् होने पर, मैं फूटकर मर जाती हूँ ॥१॥

"न तो मैं मल्लाह को जानती हूँ और न जाल को ही। मुझे जब-जब दुःख होता है, तो तुझी को स्मरण करती हूँ ॥१॥ रहाउ ॥

"तू सर्वत्र पूर्ण रूप से व्याप्त है, किन्तु मैं अपनी अज्ञानता से तुम्हें दूर जानती हूँ। मैं जो कुछ भी करती हूँ, वह सब तेरी निकटता में ही होता है। तू सब कुछ देखता है और मैं तेरी सर्वज्ञता से मुकर जाती हूँ। न तो मैं तेरे काम की हूँ और न तेरे नाम की ॥२॥

"जितना तू देता है, उतना ही मैं खाती हूँ। मुझे कोई और दूसरा दरवाजा नहीं है। अतएव, मैं तेरे दरवाजे को छोड़कर किसके दरवाजे पर जाऊँ? नानक एक प्रार्थना करता है कि जीव और प्राण—सभी तेरे हैं ॥३॥

"हे प्रभु, तू स्वयं ही समीप है, स्वयं ही दूर है और स्वयं ही मध्य में है। तू स्वयं ही सब कुछ देखता है और स्वयं ही सब कुछ सुनता है। तूने स्वय अपनी कुदरत—शक्ति अथवा माया रची है। नानक कहता है कि हे प्रभु, जो तुझे अच्छा लगता है, यही हुक्म प्रामाणिक है[1] ॥४॥३१॥"

तीन दिनों के पश्चात् गुरु नानकदेव जंगल से वापस लौटे। वे अपने निवासस्थान पर आये, जहाँ नित्य विश्राम करते थे और जहाँ उनकी शिष्य-मंडली, मित्र-मण्डली और अतिथि—अभ्यागत नित्य पहुँचते थे। सभी लोगों ने गुरुजी महाराज को देखकर यह अनुभव किया कि वे एकदम परिवर्तित हो गए हैं। उन्होंने अपने मकान का दरवाजा खोला और गरीबों को आमंत्रित किया। उन्हें अपने घर की सारी वस्तुएँ न्यौछावर कर दीं। यदि कोई गरीब लेने में आनाकानी करता था, तो उसका हाथ पकड़कर उसे अपने घर की वस्तु जबर्दस्ती उसके हाथों में थमा देते थे।

सारे शहर में यह खबर फैल गई। दर्शकों की भारी भीड़ इस दृश्य को देखने के लिए एकत्र हो गई। नवाब दौलत खाँ भी वहाँ उपस्थित हो गए। उन्होंने गुरु नानकदेव से प्रश्न किया, 'आपको क्या हो गया है ?' पर गुरुजी महाराज ने न तो नवाब साहब के शब्दों को सुना और न कोई उत्तर ही दिया। उनके ऊपर महान् भाव का नशा चढ़ा हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे वे इस संसार के मनुष्य हैं ही नहीं। लोगों ने कानाफूसी की कि उनके ऊपर किसी भूत-प्रेत अथवा

---

१. तू दरीआऊ दाना...हुकुम सोई परवानो । सिरी रागु, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिशाच आदि की सवारी है। नवाब साहब ने रंज से अपना सिर हिलाया और वे चुपचाप वहाँ से चले आये।

इस प्रकार गुरु नानक महाराज के ऊपर परमात्मा का आदेश आ उपस्थित हुआ। सारी सांसारिक सम्पत्ति लुटा देने के उपरान्त, अब आध्यात्मिक भाण्डार के लुटाने की बारी आई। उसे भी गुरुजी महाराज मुक्त हाथों से लुटाने के लिए कटिबद्ध थे। वे एकान्त में चले गए। उनका साथी, एकमात्र साथी मरदाना था। मरदाना के हाथ में रवाब बाजा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय सात

आदेश पालन

प्रायः सभी लोगों ने यह विश्वास कर लिया था कि गुरु नानकदेव नदी की धार में डूब गये हैं। पर उनकी बहिन, बीबी नानकी के मन में यह दृढ़ विश्वास था, 'नदियाँ उसे डुबो नहीं सकतीं।' उन्हें अपने भाई की आध्यात्मिकता में पूर्ण विश्वास था। अतएव लोगों से उन्होंने यही कहा था, 'वह डूबने के लिए इस संसार में नहीं आया है, बल्कि डूबनेवालों का उद्धार करने के लिए आया है। उसे नदियाँ डुबो नहीं सकतीं।' गुरु नानकदेव के सम्बन्ध में जब दूसरी अफ़वाह उड़ी कि उन पर किसी भूत-प्रेत ने सवारी की है, तो ऐसी स्थिति में भी बीबी नानकी, अपने दृढ़ विश्वास से तनिक भी विचलित नहीं हुई और उन्होंने अपनी धारणा इस प्रकार अभिव्यक्त की, 'मेरे भाई पर कौन सी प्रेतबाधा लग सकती है? वह तो उन मनुष्यों का उद्धार करने के लिए आया है, जो प्रेतबाधा में जकड़े हैं।'

प्रेतबाधा को दूर करने के लिए, एक भोला-भाला देहाती एक प्रसिद्ध मुल्ला को बुला लाया। मुल्ला साहब गुरु नानकदेव के पास पहुँचकर कुछ मंत्रोच्चारण करने लगे और गुरु नानक के लिए 'तावीज' बनाने लगे और उस 'ताव़ीज' पर कुछ लिखने लगे। मुल्ला की इस क्रिया को देखकर, गुरु महाराज मुस्कराये और इस पद का उच्चारण किया—

धृगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ।
खेती जिन की उजड़ें खलवाड़े किया थाउ॥

—(सारंग की वार, महला १)

भावार्थ यह है कि उनके जीवन को धिक्कार है, जो हरिनाम को लिख-लिख कर बेचते हैं, अर्थात् जो व्यक्ति हरिनाम के आधार पर सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहते हैं, उनके जीवन को धिक्कार है। जिनकी खेती उजड़ गई है, उनके खलिहान में भला क्या फसल होगी? तात्पर्य यह है कि जिनकी नाम रूपी खेती नष्ट हो चुकी है, उन्हें आध्यात्मिक लाभ क्या होगा?

मुल्ला साहब ने गुरु नानक की वाणी की ओर ध्यान नहीं दिया और मंत्रोच्चारण तथा तावीज लिखने का कार्य जारी रक्खा। अपने आवश्यक कार्यों को समाप्त कर, मुल्ला ने तथाकथित प्रेतबाधा-ग्रस्त गुरु नानकदेव से प्रश्न किया, 'तू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौन है ?' उस युग में प्रेतबाधा-ग्रस्त व्यक्ति से इस प्रकार के प्रश्नों का पूछा जाना साधारण सी बात थी। आजकल भी अशिक्षित जनता में इस प्रकार की बातें बहुधा पाई जाती हैं। मुल्ला जी को पूर्ण विश्वास था कि मेरे जादू-टोने का असर पड़ चुका है और प्रेत नानक के माध्यम से अवश्य उत्तर देगा। किन्तु गुरु जी महाराज विचित्र प्रकार के मरीज थे। उन्होंने तत्काल मुल्ला साहब को इस प्रकार उत्तर दिया—

कोई आखे भूतना को कहै बेताला।
कोई आखे आदमी नानकु बेचारा ॥१॥

(रागु मारू, सबद ७)

अर्थात्, 'बेचारे नानक को कोई भूत कहता है, कोई बेताल कहता है और कोई आदमी कहता है।'

गुरु नानकदेव के इस उत्तर पर सारी उपस्थित जनता और मुल्ला साहब इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उन्हें कोई प्रेतबाधा नहीं है, बल्कि वे पागल हो गए हैं। इस पर गुरु नानक ने मरदाना को संकेत किया कि वह अपना रबाब तैयार रखे। नानक महाराज का स्वर्गीय संगीत फूट पड़ा और मरदाना भी रबाब का स्वर उस संगीत से मिलाने लगा—

भइआ दिवाना साह का नानक बउराना।
हउ हरि बिन अवरु न जाना ॥१॥ रहाउ ॥
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ।
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥२॥
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ।
हुकुम पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप जाइ ॥३॥
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु।
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥४॥७॥

(रागु मारू, सबद ७)

अर्थात्, 'नानक अपने शाह, अर्थात् परमात्मा के प्रेम में डूबकर दीवाना और पगला हो गया है। मैं हरी के बिना अन्य किसी बड़े-से-बडे सांसारिक व्यक्ति को नहीं जानता ॥१॥ रहाउ ॥

'वास्तव में व्यक्ति को तब दीवाना समझना चाहिए, जब वह परमात्मा के प्रेम में दीवाना हो और वह एक साहब, अर्थात् हरी को छोड़कर दूसरे और व्यक्ति को न जाने ॥२॥

'मनुष्य को सच्चा दीवाना तभी समझना चाहिए, जब वह एक परमात्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का ही काम करे। पति परमात्मा का हुक्म पहचाने और उसी की प्रेरणा से कार्य करे, यही बुद्धिमानी है और बुद्धिमानी भला किस काम की है ? ॥३॥

'मनुष्य को सच्चा दीवाना तभी समझना चाहिए, जब वह अपने हृदय में साहब का प्रेम धारण करे, वह अपने को निकृष्ट समझे और संसार के अन्य सभी प्राणियों को भला समझे' ॥४॥

गुरु नानक महाराज के इस उत्तर से मुल्ला साहब अथवा अन्य सभी लोग शान्त हो गए। उन्हें पूर्ण बोध हो गया कि गुरु नानक महाराज में अलौलिक आध्यात्मिक शक्ति का प्रकाश हुआ है और वे वास्तविक संत हो गए हैं। सभी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और सब अपने-अपने स्थान पर चले गए। सारे दिन और सारी रात गुरु जी महाराज समाधि में स्थित रहे। वे अपने स्थान पर मूर्ति-वत् स्थित रहे, न तो हिले-डुले और न कुछ बोले ही। दूसरे दिन वे सामान्य अवस्था में आए। इस समाधि अवस्था के पश्चात् उन्होंने जिस वाक्य का उच्चारण किया, वह यह था—'नाह कोई हिन्दू नाह मुसलमान।' शीघ्र ही ये शब्द लोगों की जबान पर चढ़ गए। वास्तव में हिन्दू अपने आदर्शों को भूल चुके थे। न तो वे गुरु नानक के इस वाक्य पर ध्यान दे सकते थे और न इसका प्रतिकार ही कर सकते थे। मुसलमान, शासक क़ौम होने के कारण, अपनी शक्ति की चरम सीमा पर थे और वे शक्ति में मदान्ध भी थे। उनका मज़हब तेजी से प्रत्येक दिशा में फैल रहा था। अतएव कोई हिन्दू मुसलमान राज्य में किस प्रकार यह कहने का साहस कर सकता था कि कोई मुसलमान है ही नहीं। 'नाह कोई हिन्दू नाह मुसलमान' सुल्तानपुर के काज़ी के कानों तक पहुँचा। काजी साहब सुल्तान-पुर के नवाब दौलतखाँ के पास शिकायत लेकर पहुँचे कि नानक ऐसे शब्दों का उच्चारण करके मुसलमान मज़हब और जाति का घोर अपमान कर रहे हैं। यद्यपि नवाब को यह पूर्ण विश्वास था कि गुरु नानक महाराज सच्चे ईश्वर-भक्त हैं और वे स्वप्न में भी किसी व्यक्ति अथवा किसी मज़हब पर चोट नहीं पहुँचा सकते, परन्तु काज़ी साहब तो इस पर कटिबद्ध थे कि गुरु नानक की पेशी नवाब के सामने हो। अतएव नवाब ने गुरु नानक को अपने पास बुलवाया, पर गुरु नानक महाराज ने यह कहते हुए नवाब की आज्ञा का निषेध कर दिया, 'मेरे प्रभु, परब्रह्म की आज्ञा नहीं है कि मैं किसी व्यक्ति की आज्ञा का पालन करूँ। मैं अपने प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। इसके पश्चात् नवाब ने एक दूसरा सन्देशवाहक भेजा। उसने अत्यन्त विनयपूर्वक गुरु नानक से प्रार्थना की, 'आपके प्रभु के नाम पर नवाब ने यह प्रार्थना की है कि आप उन्हें अपने दर्शन से कृतार्थ करें। उन्होंने नवाब की हैसियत से नहीं, बल्कि आपके एक विनम्र प्रशंसक के रूप में आपको स्मरण किया है।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु के नाम पर बुलाए जाने पर, गुरु महाराज जी द्रवीभूत हो गए। वे तुरन्त ही उठकर चल दिए और नवाब साहब के सामने उपस्थित हुए। नवाब दौलत खाँ, गुरु जी महाराज से अत्यन्त आदर और विनय-भाव से मिले और उन्होंने कहा, 'आप ऐसे सच्चरित्र और विश्वसनीय मोदी को खोकर मुझे हार्दिक दुःख हुआ है।' नवाब की उदारता और विनम्रता पर गुरु नानकदेव मुस्कराए और पुनः उसी वाक्य का उच्चारण किया, 'नाह कोई हिन्दू नाह कोई मुसलमान।' इस वाक्य को सुनकर काज़ी महाशय बोल पड़े, "हिन्दुओं के सम्बन्ध में तो मैं कोई बात पूछूंगा नहीं, पर आप यह किस प्रकार कहते हैं कि कोई मुसलमान नहीं है ? क्या पैगम्बर मुहम्मद के लाखों अनुयायी मुसलमान नहीं हैं ?"

काज़ी की बात को सुनकर गुरु महाराज ने मरदाना को संकेत किया कि वह रबाब उठाए। मरदाना के रबाब उठाते ही गुरु नानकदेव की दिव्य वाणी अपने आप निकल पड़ी, जिसका भाव यह है—

'सच्चा मुसलमान बहुत कठिन है। यदि वह व्यक्ति इस प्रकार का हो, तो अपने आपको मुसलमान कहला सकता है। असली मुसलमान बनने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि उसे औलियों—सन्तों का मज़हब प्रिय लगे। तत्पश्चात् जैसे मिसकल (जंग साफ करने का औजार विशेष) से लोहे का जंग साफ किया जाता है, उसी प्रकार अपनी कमाई का धन गरीबों को बाँट कर धन का अहंकार नष्ट करे, अपने अन्तःकरण को पवित्र करे। इस प्रकार मज़हब के सम्मुख चलकर सच्चा मुसलमान बने और जीवन-मरण के भ्रम को समाप्त कर दे। परमात्मा की मर्जी को शिरोधार्य करे, कर्ता (परमात्मा) को सब कुछ करनेवाला माने और आपापन को मिटा दे। नानक का कथन है कि इस प्रकार परमात्मा के उत्पन्न किए हुए सारे प्राणियों पर मेहरबान हो, तभी मुसलमान कहला सकता है।'[1]

गुरु नानकदेव के उपर्युक्त कथन से काज़ी साहब सन्तुष्ट नहीं हुए, अतएव उन्होंने और भी प्रश्न किए। गुरु जी महाराज ने काज़ी के प्रत्येक प्रश्न का समाधान किया। गुरु जी की वाणी गङ्गा की पवित्र धार सी प्रवाहित होती रही और मरदाना अपने वाद्य-यंत्र—रबाब का सहयोग देता गया। वाणी का भाव इस प्रकार है—

'प्राणियों के ऊपर दया को मस्जिद बताओ, श्रद्धा को मुसल्ला। (वह दरी जिस पर बैठकर नमाज़ पढ़ी जाती है) हक की कमाई को क़ुरान बनाओ, बुरे कर्मों के प्रति लज्जा को सुन्नत मानो, शील-स्वभाव को रोज़ा बताओ। हे भा

---

१. मुसलमान कहावण मुसकलु...माझ की बार, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस विधि से मुसलमान बनो। शुभ कर्मों को रोज़ा, सच्चाई को पीर, सुन्दर और दयापूर्ण कर्मों को ही क़लमा और नमाज़ बनाओ। जो बात खुदा को अच्छी लगे, उसी को शिरोधार्य करना तुम्हारी तसवीह हो। नानक का कथन है कि खुदा ऐसे ही मुसलमान की लज्जा रखता है।

"हे नानक, पराया हक मुसलमान के लिए सुअर और हिन्दू के लिए गाय के समान हो। गुरु अथवा पैगम्बर खुदा से तभी सिफ़ारिश करता है, यदि मनुष्य पराया हक—बेईमानी की कमाई न खाए। निरी बातें करने से बिहिश्त में नहीं जा सकता, सत्य को वास्तविक जीवन में बरतने से ही छुटकारा मिलता है। हराम के मांस में मसाला—चतुराई की बातें—डालने से हलाल नहीं हो जाता। हे नानक, झूठी बातें करने से झूठ ही पल्ले पड़ता है।

'मुसलमानों की पाँच नमाजें हैं, उनके पाँच वक्त हैं और उन पाँच नमाजों के पृथक्-पृथक् पाँच नाम हैं।[1] हमारी राय में असली नमाजें ये हैं—सत्य बोलना पहली नमाज़ है, हक़ की कमाई दूसरी नमाज़ है, परमात्मा से सब का भला माँगना तीसरी नमाज़ का नाम है, नीयत को साफ़ रखना तथा मन को पवित्र रखना—यह चौथी नमाज़ है। और परमात्मा के यश की महिमा की प्रशंसा करना यह पाँचवीं नमाज़ है। इन पाँचों नमाज़ों के साथ-साथ जब ऊँची करनी—पवित्र आचरण—का क़लमा पढ़े, तभी अपने आपको मुसलमान कहलवा सकता है। हे नानक, इन नमाज़ों और क़लमे से रहित, जितने भी मुसलमान हैं, वे सब झूठे हैं, झूठे की प्रतिष्ठा भी झूठी होती है।'[2]

गुरु नानकदेव के इस मधुर और स्पष्ट उपदेश को काज़ी के इजलास में उपस्थित सारी जनता और प्रतिष्ठित हिन्दुओं और मुसलमानों ने ध्यानपूर्वक सुना। सब ने अनुभव किया कि मुसलमानों ने हिन्दुओं की सम्पत्ति पर जबर्दस्ती अधिकार किया है और उनका यह कार्य अभी तक जारी है। सभी मुसलमानों को यह अनुभूति हुई कि मजहब उनके लिए यान्त्रिक मात्र है। कुरान की कुछ अरबी आयतों को रट लेना और उनका मशीन की तरह पाठ करना वास्तविक मजहब नहीं है। मजहब की कुछ बाह्य वस्तुओं का आचरण करना, जैसे सुन्नत करना, रोजा रखना, सच्चा मजहब नहीं है। हिन्दुओं को जबर्दस्ती मुसलमान बनाना, उनकी सम्पत्ति को बलात् हड़प लेना, उनकी बहू-बेटियों का अपहरण करना सच्चा मजहब नहीं है। काज़ी की भरी इजलास में इस प्रकार के सत्य

---

१. पाँच नमाजें ये हैं—नमाज़े सुबह, नमाज़े पेशीन, नमाज़े दीगर, नमाज़े शाम, तथा नमाज़े खुफ़तन।

२. मिहर मसीति. . . . कूड़े-कूड़ी पाइ। मःझी की वार, महला १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथन से सारी जनता किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। लोग एक दूसरे का मुँह ताक लगे। सभी के मुँह पर आश्चर्य की रेखा खिंच गई थी। सभी लोग इस बा से और भी चकित थे कि इतने कठोर सत्य का उद्‌घाटन इतनी मृदु वाणी किया गया है। सभी गुरु नानक की आध्यात्मिक अनुभूति और व्यावहारिक ज्ञा के सामंजस्य से आश्चर्यमिश्रित आनन्द का अनुभव करने लगे। उच्च वर्ग मुसलमानों के सिर लज्जा से नत थे। उन्हें प्रतीत होने लगा था कि इस न सन्देश ने उन्हें वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराया है, उनका मोह दूर किया है उन्हें नवीन आध्यात्मिक प्रकाश दिया है और उन्हें मानवता का अद्वितीय पा पढ़ाया है। गुरु नानकदेव की आँखों में आध्यात्मिकता की अनोखी ज्योति प्रज्व-लित हो रही थी, जिसकी शक्ति के सम्मुख पाशविक बल नत था। उन्होंने मुसल-मानों का हृदय-परिवर्तन कर दिया था। सभी हिन्दू-मुसलमान 'नाह कोई हिन् नाह मुसलमान' कहनेवाले व्यक्ति के सम्मुख श्रद्धा से नत थे। उन्हें उस वाक्य का वास्तविक रहस्योद्‌घाटन हो चुका था। उन्हें गुरु नानक महाराज ईश्वर के, खुदा के खास पुत्र प्रतीत हो रहे थे।

इसके पश्चात् दोपहर के बाद की नमाज़ का समय हो गया। मुसलमान का समुदाय नमाज़ पढ़ने जा ही रहा था कि उसी समय काज़ी ने नानकदेव से कहा 'आपने हमें सच्चे मुसलमान का उपदेश दिया है और यह भी बतलाया है कि हमें किस प्रकार नमाज़ पढ़नी चाहिए। हम सब अब नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं। क्या आप हमारे साथ चल कर नमाज़ में सम्मिलित होंगे?'

गुरु महाराज ने तत्काल उत्तर दिया, 'अवश्य।' सभी मस्जिद में प्रविष्ट हुए। काज़ी सारी भीड़ के नेता के रूप में नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए और कुरान से अरबी भाषा में आयत पढ़ने लगे साथ ही नियमानुसार सिजदा करने लगे। सारी भीड़ इस क्रिया में उनका अनुसरण करने लगी। गुरु नानकदेव की दृष्टि काज़ी पर जमी थी। काज़ी साहब भक्ति में तन्मय दिखलाई पड़ते थे, पर गुरु महाराज उन पर हँस पड़े। मस्जिद में नमाज़ पढ़ते समय काज़ी पर हँसना कितना दुस्साहसपूर्ण कार्य था। उस समय काज़ी के मुखमण्डल पर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं लक्षित हुई। जब नमाज़ समाप्त हुई, तो काज़ी साहब ने गुरु नानकदेव की शिकायत नवाब से की, 'नानक ने नमाज़ के समय हँस कर सारी भीड़ का ही अपमान और तिरस्कार नहीं किया है, बल्कि सारे मुसलमान मज़हब की हँसी उड़ाई है।' नवाब दौलत खाँ अत्यन्त सहिष्णु थे। उन्होंने गुरु जी महा-राज के समीप पहुँच कर उनसे कहा, 'महाराज, आपने तो हम लोगों के साथ नमाज़ में सम्मिलित होने की प्रतिज्ञा की थी, पर इसके विपरीत जब काज़ी नमाज़ पढ़ रहे थे, तो आप उन पर हँसे क्यों?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'मैंने नमाज़ में सम्मिलित होने की प्रतिज्ञा अवश्य की थी। पर काज़ी साहब का ध्यान नमाज़ में बिल्कुल नहीं था। वे तो मुँह से आयत का मात्र उच्चारण कर रहे थे, उनका मन तो कहीं दूसरे स्थान पर था। उनका मन तो नए बछेड़े के पीछे दौड़ रहा था, जिसे वे घर छोड़ कर आए थे। उन्हें यह भय था कि कहीं वह आँगन के बड़े गड्ढे में न गिर जाय। इस प्रकार वे नमाज़ नहीं पढ़ रहे थे, बल्कि नमाज़ के अपने बछेड़े की रक्षा में तन्मय थे। उनका नमाज़ पढ़ना तो ढोंग मात्र था। इसीलिए मैं उन पर स्वाभाविक रूप से हँस पड़ा, हम अपने को और संसार को कितना धोखा देते हैं। साथ ही खुदा को भी धोखा देते हैं।'

बात सच्ची थी। अतः काज़ी साहब का चेहरा शर्म से नीचे झुक गया, पर उन्होंने साहस बटोर कर गुरु महाराज से कहा, 'लेकिन, नवाब साहब भी तो नमाज़ पढ़ रहे थे। उनसे बढ़कर सच्चा मुसलमान तो कोई है नहीं। आप उन्हीं की नमाज़ में सम्मिलित हुए होते।'

गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'निस्सन्देह ही नवाब, बहुत ही भले आदमी हैं, पर वे भी नमाज़ में नहीं थे। उनका शरीर तो मस्जिद में सिजदा कर रहा था, पर मन काबुल में घोड़े खरीद रहा था। इसी प्रकार जो व्यक्ति यहाँ नमाज़ें पढ़ रहे थे, सब के मन संसारी कार्यों के पीछे चक्कर काट रहे थे। ऐसी नमाज़ किसी काम की नहीं हैं। वे निरर्थक हैं। ऐसी नमाज़ से हमारा अहंकार, दम्भ और असहिष्णुता बढ़ती है। इसी से मैं आप लोगों की नमाज़ में शरीक नहीं हुआ।'

ऐसा कहकर गुरु नानकदेव वहाँ से जाने के लिए उद्यत हो गए। नवाब दौलत खाँ ने अत्यन्त भक्ति-भावना से गुरु जी महाराज के चरणों को पकड़ लिया और कहा, "अरे सच्चे फ़क़ीर, खुदा के प्यारे, यहीं रुकिए। सुल्तानपुर का सारा अधिकार, सारी हुकूमत, सारा धन-दौलत आपके चरणों में समर्पित है। मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए। हमारा स्वामी, हमारा रक्षक बनना स्वीकार कीजिए। मैं जीवन भर आपका गुलाम बन कर आपकी खिदमत करूँगा। आप हम सब को छोड़ कर कहीं दूसरी जगह न जाइए।"

गुरु नानक महाराज ने ध्यानावस्थित अधमुँदे नेत्रों से उत्तर दिया, "मेरे सच्चे दोस्त, ऐसा नहीं हो सकता। समस्त विश्व का शासक, मेरा प्रभु मुझे और भी जरूरी काम से बुला रहा है। मुझे उसके आदेश का पालन करना ही है। मुझे उसकी सेवा में अपना जीवन अर्पित करना है। परमात्मा का आदेश है कि मैं दूर के देशों में जाऊँ और लोगों को उसके नाम की महिमा सुनाऊँ। मेरे दोस्त, अपना अधिकार, अपनी रियासत, खुदा का अधिकार और खुदा की रियासत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझिए। आप अपने को उसका नौकर समझिए। अपने दिल में खुदा के लिए और इन्सान के लिए मुहब्बत रखिए। खुदा आपकी रक्षा करेगा।''

नवाव का सिर भक्ति-भावना से गुरु जी के चरणों पर झुक गया। एक तो अपना सब कुछ समर्पित करने के लिए उद्यत था और दूसरा परमात्मा के नाम पर, उसके विश्वास पर सब कुछ त्याग करने पर कटिबद्ध था। इस दृश्य को देखकर कबीर का यह दोहा मूर्तिमान होकर हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है—

सिख को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु भी ऐसा चाहिए, सिख का कछू न लेय॥

गुरु-शिष्य का यह मिलन अपूर्व था। सारी जनता मन्त्र-मुग्ध दृष्टि से इस मिलन को देख रही थी।

अन्त में नवाव ने विनीत स्वरों में गुरु नानक जी से निवेदन किया, ''जैसी आपकी इच्छा। पर मोदीखाने में आपके नाम से जो रकम बाकी है, उसे तो अपने परिवार के लिए स्वीकार कर लीजिए।''

गुरु महाराज ने अपनी इच्छा प्रकट की, ''उस रकम को आप गरीबों और निराश्रितों को बाँट दीजिए। जहाँ तक मेरा और मेरे परिवार का प्रश्न है, सर्वरक्षक परमात्मा, भरण-पोषण करेगा।'' ऐसा कह कर गुरु जी महाराज उस एकान्त स्थान पर पुनः लौट आए, जहाँ से नवाब के बुलाने पर उपस्थित हुए थे। हिन्दू और मुसलमान जाति के अनेक धार्मिक व्यक्ति गुरु जी महाराज के पीछे-पीछे चल पड़े और उन्हीं के साथ रुक गए। प्रतिदिन उनके पास ज्ञानार्जन और शान्ति के लिए वृहत् जन-समुदाय एकत्र होने लगा। गुरु नानकदेव ने अनेक जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं को 'सत्यनाम' का प्रसाद दिया और उन्हें प्रेम तथा सेवा का रहस्य समझाया। उन्हें आदर्श आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया।

गुरु जी महाराज के त्याग की गाथा उनके एवं उनकी सहधर्मिणी के माता-पिता के कानों तक पहुँची। वे अत्यधिक क्षुब्ध हुए। परिणामस्वरूप सुल्तानपुर आ पहुँचे। एक विद्वान् और शास्त्रज्ञ पंडित उन लोगों के साथ में थे। उन्होंने गुरु नानकदेव को विरक्ति मार्ग से हटाना चाहा। उन्होंने वेदों, शास्त्रों, पुराणों, स्मृतियों के प्रमाणों के आधार पर गुरु जी को गृहस्थ-जीवन में रहने के लिए समझाया। गुरु जी के पिता, कालू मेहता ने आर्द्र स्वर में अपने प्रिय पुत्र से कहा, 'हम लोग वूढ़े हो चुके हैं। अव तुम्हारा कर्त्तव्य है कि हमारी परवरिश करो।' गुरु जी के श्वसुर वावा मूलचन्द ने गुरु जी महाराज को समझाया, 'इस समय तुम पति, पिता दोनों ही हो। तुम्हारा धर्म है कि अपनी पत्नी और बच्चों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भरण-पोषण करो । बच्चों को शिक्षित बनाओ । तुम्हारे पिता ने जैसे तुम्हें पाल-पोस कर बड़ा किया है, उसी प्रकार तुम भी अपने बच्चों को बड़ा बनाओ । उन्हें शिक्षा देकर सच्चा मनुष्य बनाओ । यदि तुम्हें सब कुछ छोड़ना ही था, तो तुम्हें शादी ही नहीं करनी चाहिए थी ।' गुरु महाराज की सहधर्मिणी ने उनके चरणों को पकड़ कर अपने अश्रुजल से उन्हें धो दिया और दीन शब्दों में कहा, 'आपको छोड़ कर इस संसार में मेरा और कौन है ? मेरे जीवन-स्वामी, मुझे और इन भोले-भाले बच्चों को किसके सहारे छोड़ रहे हैं ? मेरी अवस्था पर न सही, इन मासूम और असहायों की दशा पर तो दया कीजिए ।'

उनकी बहिन नानकी बीबी चुपचाप, निश्चल खड़ी थीं, अपने भाई एवं श्रद्धालु गुरु की चिर विदाई से उनकी आँखों से करुणा के अश्रु बिन्दु टपक रहे थे । उनके मुखमण्डल पर श्मशानी शान्ति थी । वह उन्हें रोकना तो चाहती थीं, पर उनके मार्ग में रोड़े नहीं डालना चाहती थीं ।

गुरु जी के मित्रों, सम्बन्धियों, ने जो कुछ भी कहा, उसे उन्होंने भली-भाँति सुना और उस पर मनन किया । तत्पश्चात् अपना सिर ऊपर उठाया और इस प्रकार कहा, 'महानुभावो, मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मेरा धर्म पिता की सेवा करना है । परन्तु संसारी पिता के अलावा एक पृथक् पिता और है, जो सभी प्राणियों जीव-जन्तुओं और मनुष्यों का पिता है । उस परमपिता की आज्ञा है कि मैं बाहर जाऊँ और दुखी मानवता के घायल हृदयों पर फाहा लगाऊँ, और उन्हें शीतल करूँ । परमात्मा का यह आदेश मेरे लिए सबसे महान् शक्तिशाली आदेश है । उसका उल्लंघन करना मेरे बूते की बात नहीं है । उसका जो आदेश मुझे बाहर भेज रहा है, वही आदेश हमारे माता-पिता की बुढ़ौती में रक्षा करेगा । उसी परमपिता पर विश्वास कीजिए । अतएव मुझे बाहर जाने की आज्ञा दीजिए । आप लोग मुझे अमोघ आशीर्वाद दीजिए, जिससे मैं अपने लक्ष्य में सफल हो सकूँ ।'

गुरु जी के शब्दों एवं उनकी रहस्य भरी चितवन ने माता-पिता के ऊपर जादू का सा काम किया । अपनी इच्छा के प्रतिकूल उन्हें कहना पड़ा, 'ठीक है, जाओ और अपने उद्देश्य में सफल हो ।'

तदनन्तर गुरु महाराज अपने श्वसुर बाबा मूलचन्द की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने इस प्रकार कहा, 'मनुष्य की यह शक्ति नहीं है, कि वह संसार में बच्चों को ले आए । वे जगत्-निर्माता, जगत्-पालक के द्वारा यहाँ भेजे जाते हैं । हमें तो केवल उसकी मर्जी का पालन करना है । अपनी पुत्री और नातियों की आप तनिक भी चिन्ता न करें । परमात्मा, जिसके वे बच्चे हैं वही उनकी रक्षा करेगा । मैं तो उसी परमात्मा द्वारा उसके बच्चों की सेवा के लिए अन्यत्र नियुक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया गया हूँ। परमात्मा द्वारा निर्मित सृष्टि के समस्त बच्चे मेरे परिवार के हैं। सारा संसार मेरा घर है। उस जगत्-नियन्ता ने जिस धर्म के पालन के लिए मुझे नियुक्त किया है, उसी का पालन करना मेरा वास्तविक कर्त्तव्य है। दुखी मत होइए, बल्कि मुझे अपना आशीर्वाद दीजिए।'

गुरु महाराज के इन शब्दों को सुनकर बाबा मूलचन्द और उनकी सहधर्मिणी के सारे दुःख जाते रहे।

तत्पश्चात् गुरु नानकदेव अपनी पत्नी की ओर आकर्षित हुए और उन्होंने कहा, 'जगत्-पिता, परमात्मा की पुत्री, धैर्य धारण करो, अशान्त मत हो। यहां के मेरे सारे कार्य समाप्त हो गए हैं। जो सर्वशक्तिमान्, सर्वरक्षक तुझ ऐसी प्रिया और मेरे अत्यन्त प्यारे बच्चों को छोड़ने की मुझे आज्ञा दे रहा है, वही तुम सबकी रक्षा करेगा, वही भरण-पोषण करेगा। तुम्हारा प्रेम अपार है, भक्ति अगाध है, त्याग असीम है, पर विश्वास रक्खो, प्रभु इनसे भी बड़ा पुरस्कार तुम्हें प्रदान करेगा। मेरा आशीर्वाद है कि सर्वशक्तिमान् प्रभु, तुम्हारे बच्चों के साथ सदैव रहेगा। मैं जगत्-पिता के पुत्रों और पुत्रियों के दुःखों-तापों, एवं पापों की निवृत्ति के लिए तुमसे विदा ले रहा हूँ। अतएव मेरी प्राणप्रिया, हँस कर मुझे विदा दो।'

गुरु नानकदेव की इन बातों को सुनकर, उनकी सहधर्मिणी का मोह-भ्रम दूर हो गया और उन्होंने अपनी इच्छा, उनकी इच्छा में मिला दी। उन्होंने अपना सिर गुरु जी के चरणों पर रख दिया और उनके सिर पर गुरु महाराज ने अपना दाहिना वरद-हस्त रख दिया।

तत्पश्चात् गुरु नानकदेव अपनी बहिन, नानकी की ओर मुड़े और उन्होंने इस प्रकार कहा, 'मेरी पूजनीया बहिन, मेरे प्रति आपका प्रेम, इन लोगों के प्रेम से भिन्न है। यह उच्च कोटि का आध्यात्मिक प्रेम है। आपकी चितवन में मैं आपके भावों और विचारों का अध्ययन कर रहा हूँ। जरा भी चिन्ता न कीजिए। परमात्मा सदैव आपके साथ रहेगा। मैं भी आपके साथ सदैव रहूँगा। आपका प्रेम जब मुझे देखने को उमड़ पड़ेगा, तो मैं उस समय अवश्य ही आपकी पुकार सुन लूंगा और मैं तुरन्त ही आपके सन्निकट उपस्थित हो जाऊँगा। (जन्मसाखियों के देखने से यह पता चलता है कि नानकी ने जब कभी गुरु नानकदेव के दर्शन की कामना की, उसी समय गुरु महाराज तुरन्त उनके पास पहुँच जाते थे और थोड़े समय तक उनके पास रहते थे। गुरु महाराज के पहुँचने में दूरी कोई भी बाधा नहीं डाल पाती थी। सिद्ध पुरुषों के लिए देश और काल की दूरी समाप्त हो जाती है।) किन्तु मेरी आदरणीया बहिन, अपने उत्कट प्रेम पर नियन्त्रण रखने की भी चेष्टा कीजिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांसारिक प्रेम नश्वर है। अतः केवल परमात्मा का ही चिन्तन कीजिए। आपके प्रति मेरा क्या कर्त्तव्य है, इसे मैं भली-भाँति समझता हूँ, पता नहीं संसार की कितनी और बहिनें दुःख और पीड़ा के कराह रही हैं। बहिन, उनके दुःख निवारण के लिए मुझे उनके पास जाना है।'

इसके बाद गुरु नानकदेव ने अपने दोनों पुत्रों को बारी-बारी से उठा कर अपनी गोदी में लिया, उन्हें स्नेह से आलिंगन किया और चूमा और अपनी दिव्य मुस्कान उन पर बिखेर दी। तत्पश्चात् उन दोनों मासूमों को उनकी माता के हाथों में सौंप दिया। उन्होंने स्नेह से उन दोनों के सिरों पर हाथ फेर कर उन्हें आशीर्वाद दिया। तदनन्तर उन्होंने अपने सारे सम्बन्धियों से विदाई ली। वे सब आँखों में आँसू भर कर भारी दिल से लौट गए।

शहर के चारों ओर यह खबर बिजली की तरह फैल गई कि गुरु महाराज उपदेश यात्रा पर रवाना हो रहे हैं। उनके समस्त शिष्य और प्रशंसक उनका आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास पहुँच गए। नवाब साहब भी उनके पास पहुँचे। गुरु महाराज ने उन सबको आशीर्वाद दिया और नाम का प्रसाद दिया। उन सबको जीवन के वास्तविक उद्देश्य का रहस्य समझाया और सच्ची रहनी रहने के लिए अनुप्रेरित किया।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय छः

निम्न वर्ण का उत्थान

कुछ समय के पश्चात् गुरु नानकदेव ने व्यापक यात्रा करने का विचार किया। अन्त में उन्होंने अपनी बहिन, स्त्री और पुत्रों से विदा ली। मरदाना को अपना साथी बना कर, यात्रा पर निकल पड़े। व्यास नदी को पार कर, ये उस स्थान पर पहुँचे, जिसका वर्त्तमान नाम गोइंदवाल है। तब वह एकदम वीरान स्थान था। नदी के तट पर बैठ कर गुरु जी महाराज प्रकृति के ध्यान में स्थित होकर अन्तर्मुखी हो गए। जो अनाहत ध्वनि सर्वत्र व्याप्त है, उसी के श्रवण में गुरु नानकदेव तन्मय हो गए। उनके बगल में उनका शिष्य और साथी मरदाना रबाब बजाने में तन्मय था। गुरु महाराज की मधुर वाणी को, वह रबाब के स्वरों में बाँध रहा था। उनका मन आनन्दमय परमात्मा के चरणों में एकदम रम गया था। दो दिनों तक वे इसी आनन्दमयी स्थिति में रहे। उनकी आँखें मुँदी रहती थीं और मुख पर दिव्य और शान्त मुस्कान बनी रहती थी।

मरदाना सट कर गुरु जी के पास बैठ गया। उसे अत्यधिक भूख लगी थी। उसने अपना रबाब अलग रख दिया। वह इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगा कि कोई यात्री आस-पास दिखाई पड़ जाय। किन्तु कोई नहीं दिखलाई पड़ा। वह भूख से बेहाल था। जब गुरु जी अपनी साम्यावस्था में आए, तो मरदाना ने उनसे प्रार्थना की, 'प्रभु, या तो मुझे ऐसी शक्ति प्रदान कीजिए, जैसी आप में है अथवा मेरे भोजन का प्रबन्ध कीजिए। आप तो बिना खाए-पिए परमात्मा के ध्यान में स्थित रहते हैं, पर यह मेरे बूते के बाहर है। अथवा आप ऐसे मार्ग का अनुसरण कीजिए, जिसमें आदमियों की बस्ती रहे, नहीं तो यह बेचारा मिराजी (रबाब बजाने वाला), जिसे आप समाज से यहाँ खींच लाए हैं, जीवित नहीं रह सकेगा। एक दिन मेरी लाश ही आपको जंगल में दिखाई पड़ेगी। मेरे मर जाने पर, आपके आध्यात्मिक पदों को कौन गायेगा? इस वीरान जंगल में आपको कौन सा आकर्षण लग रहा है, जहाँ आप भूख-प्यास को जीत कर दो दिन से बैठे हैं? मुझ लाचार और भूखे-प्यासे पर तो दया कीजिए।'

मरदाना की प्रार्थना सुनकर गुरु नानकदेव ने मुस्करा कर कहा, "यह स्थान, परमात्मा के आशीर्वाद से पवित्र हुआ है। इस स्थान पर कोई महान् व्यक्ति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे गुरुद्वारे का निर्माण कराएगा, जहाँ रात दिन भूखों के लिए भोजना मिलता रहेगा, साथ ही अनेक व्यक्तियों की आध्यात्मिक भूख मिटती रहेगी।[1] जहाँ तक तुम्हारी और मेरी भूख का प्रश्न है, हमें परमात्मा पर भरोसा रखना चाहिए।''

कुछ ही क्षणों पश्चात्, उस स्थान पर एक जमीन्दार पहुँचे। लोग इसे संयोग की बात कह सकते हैं, पर सर्वशक्तिमान् परमात्मा में अनन्त शक्ति है उनके अनन्य भक्त की भूख उनसे नहीं सहन हुई। अतएव उन्होंने जमीन्दार को निमित्त रूप में भेज दिया। जमींदार ने गुरु नानक और मरदाना की शारीरिक भूख शान्त की। इसके बदले में गुरु महाराज ने उस जमीन्दार की आध्यात्मिक क्षुधा मिटाई।

इस स्थान से वे दोनों फिर अपनी यात्रा पर चल पड़े। गुरु नानकदेव उसी मार्ग पर चल रहे थे, जहाँ परमात्मा की मर्जी उन्हें चलाए जा रही थी उन्हें अपनेपन का कोई ध्यान नहीं था। ईश्वरीय आज्ञा से उनकी सारी दैनिक क्रियाएँ अपने आप स्वाभाविक ढंग से होती जा रही थीं। प्रत्येक स्थान पर गुरु जी ने नास्तिकों में आस्तिकता का प्रचार किया और उन्हें मानवधर्म की शिक्षा दी। अधिकारी-भेद को ध्यान में रखते हुए, उनकी प्रकृति के अनुकूल आध्यात्मिक-साधना बताई। चलते-चलते वे एक जलाशय पर पहुँचे, जिसका जल अत्यन्त निर्मल था। इसी जलाशय के समीप एक वेर का पेड़ था। उसकी घनी छाया के नीचे गुरु नानक-देव मरदाना के साथ बैठ गए और उन्होंने कुछ देर तक विश्राम किया। तत्पश्चात् परमात्मा की भक्ति से सम्बन्धित पदों का गान किया। उस स्थान को छोड़ते हुए, गुरु नानकदेव ने कहा, 'कोई महान् पुरुष इस स्थान पर भी हरि का एक मन्दिर बनवाएगा, जहाँ आध्यात्मिक भोजन का प्रसाद सदैव मिलता रहेगा।' इसी जलाशय की भूमि पर प्रसिद्ध 'अमृतसर' का निर्माण हुआ है, जिसके मध्य में प्रसिद्ध अमृतसर का स्वर्ण 'गुरुद्वारा' निर्मित हुआ है। अमृतसर के तट पर अब भी वह वैर वृक्ष स्थित है, जहाँ, पर गुरु महाराज ने विश्राम किया था और परमात्मा का भजन किया था। यह 'दुःख-भंजनी' वैर के नाम से प्रसिद्ध है। इसके सम्बन्ध में यह विख्यात है कि इसके दर्शन से दुःखों और क्लेशों की समाप्ति हो जाती है।

इस प्रकार यात्रा करते हुए, अनेक स्थलों पर रुकते हुए, परमात्मा की भक्ति

---

१. इसी स्थान पर सिक्खों के तीसरे गुरु, अमरदास ने एक बावली का निर्माण कराया और अपना निवास स्थान बनाया। यहाँ उन्होंने ऐसे लंगर की स्थापना की जहाँ सभी समय मुफ्त भोजन मिलता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की शिक्षा देते हुए, सहृदयता और मानवता का पाठ पढ़ाते हुए, गुरु नानकदेव लाहौर पहुँचे। लाहौर में पहुँचकर कुछ दिनों तक वहाँ रुके। अपने कोमल ढंग से वे निरन्तर प्रेम और सेवा की शिक्षा देते रहे। लोगों का बहुत बड़ा समुदाय उनका शिष्य हो गया। कुछ सप्ताह रुकने के पश्चात् गुरु जी महाराज वहाँ से रवाना हुए और सैयदपुर पहुँचे। सैयदपुर को अब ऐमनाबाद कहा जाता है, जो गुजरांवाला जिले में स्थित है। वहाँ वे एक निम्न कोटि के निर्धन बढ़ई के यहाँ रुके। उस बढ़ई का नाम 'लालो' था। लालो ईश्वर से डरने वाला व्यक्ति था और अपने परिश्रम की रोटी खाता था। ऐसे लोग गुरु को बहुत प्यारे थे। ऐसे लोगों से मिलने के लिए गुरु महाराज मीलों चलकर उनके पास पहुँचते थे।

भाई लालो ने बड़े उत्साह और आह्लादपूर्वक गुरु नानक का अतिथि के रूप में स्वागत किया। गुरु नानक के ज्ञान और भक्ति के प्रकाश से दमकते हुए मुख-मण्डल पर जब लालो ने अपनी दृष्टि डाली, तो उन्हें बोध हो गया कि परमात्मा की भक्ति उन्हें कुछ सुन्दर फल देने वाली है। आज प्रभु और रक्षक मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मेरे पास आ गए हैं। वे निश्चय ही हमारी आत्मा को भक्ति के प्रकाश से चमका देंगे। वे निश्चित रूप से मुझे पुनर्जन्म देंगे। मुझे भक्ति के अलौकिक ज्ञान से कृतकृत्य करेंगे और अन्त में पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर से मेरा साक्षात्कार करा देंगे। इन विचारों और भावों से ओतप्रोत भाई लालो अपने औजारों को छोड़कर खड़े हो गए और उन्होंने दोनों पवित्र अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। वे दोनों अतिथियों को अपनी झोपड़ी के अन्दर बड़े विनीत भाव से ले गए और गुरु नानकदेव को एक छोटी सी खाट पर बैठा दिया। उनकी झोपड़ी में यही एक खाट थी। तत्पश्चात् चौके में जाकर प्रेमपूर्वक भोजन पकाने लगे। मरदाना गुरु जी के इस मेजवान के चुनाव पर आश्चर्यचकित था। उस शहर में ऐसे अनेक धनी और सम्मानित व्यक्ति थे जो गुरु को अतिथि रूप में पाकर अत्यधिक प्रसन्न होते और उनका दिल खोलकर आदर-सत्कार, सेवा-शुश्रूषा करते, पर गुरु महाराज की क्रिया बड़ी अजीब है। उन्होंने ऐसे दरिद्र को अपना मेजवान बनाया है, जिसके पास केवल एक छोटी सी खाट है, भोजन बनाने को न इसके पास पत्नी है और न कोई रसोइया ही है। पता नहीं यह गरीब बढ़ई किस प्रकार का भोजन देगा?

गुरु नानक महाराज ने मरदाना के भावों को जान लिया, उनका मुखमण्डल अलौकिक प्रेम की ज्योति से जगमगा रहा था। उन्होंने मरदाना से कहा, 'भाई मरदाना, परेशान मत हो, मैंने अत्यंत पवित्र व्यक्ति को अपना मेज़बान बनाया है। मेरी दृष्टि में पवित्र वही है, जो परमात्मा से प्रेम करता है, पापों से डरता है और परिश्रम से अपनी जीविका चलाता है। लालो की यह दरिद्र कुटिया उन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े आदमियों के महलों से कही अधिक पवित्र और शान्तिपूर्ण है, जो ग़रीबों के रक्त से बने हैं और जिनमें बेईमानी का पैसा लगाया गया है।'

इसी बीच भाई लालो ने साधारण सा भोजन तैयार कर लिया—रूखी-सूखी रोटी और साधारण सा साग। भोजन बनाने के पश्चात् भाई लालो ने गुरु महाराज से प्रार्थना की, 'महाराज, भोजन करने चौके में पधारें।' गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'भाई लालो, सारी पृथ्वी मेरे लिए ऐसी ही पवित्र है, जैसे तुम्हारा चौका। भगवान् के सच्चे भक्त, चूल्हे-चौके के झमेले में नहीं पड़ा करते। वे तो प्रभु के नाम के बल पर सदैव पवित्र रहते हैं। प्रभु के नाम में अत्यन्त पवित्रता है। अपवित्र से अपवित्र व्यक्ति एवं स्थान को वह पवित्र बना देता है। अतएव भोजन यहीं लाओ।'

इस रूखे-सूखे भोजन को देखकर मरदाना को कुछ क्षोभ हुआ। उसने सोचा कि ऐसा रूखा-सूखा भोजन न तो वह मुँह में डाल सकेगा न गले के नीचे उतार पाएगा। पर उसने देखा कि गुरु महाराज उसे बड़े चाव से खा रहे हैं। अनिच्छा-पूर्वक मरदाना ने अपने मुँह में एक ग्रास डाला। बड़े ही आश्चर्य की बात हुई। मरदाना को अनुभव हुआ कि उतना स्वादिष्ट भोजन उसने अपने जीवन में कभी नहीं किया था। इतना रूखा-सूखा भोजन और इतना स्वादिष्ट, इसकी उसे कल्पना भी नहीं थी। गुरु नानकदेव ने कहा—'प्रेम, सच्चाई और ईमानदारी की कमाई में जो स्वाद मिलता है, वह अत्यन्त दुर्लभ है।'

भाई लालो के यहाँ कुछ दिनों ठहरने के बाद, गुरु महाराज वहाँ से अन्यत्र जाने के लिए उद्यत हुए। किन्तु भाई लालो उनके चरणों पर गिर पड़े और उन्होंने प्रार्थना की, 'महाराज, कुछ दिनों तक और इस दीन की कुटिया में रहने की कृपा करें।' गुरु जी महाराज लालो की इस प्रार्थना को इन्कार न कर सके। वे कुछ दिनों तक और भाई लालो के यहाँ रुक गए। भाई मरदाना ने गुरु जी महाराज से तलवण्डी जाने की आज्ञा माँग ली। वे अपने भाई-बन्धुओं को देखना चाहते थे। गुरु जी ने उन्हें सहर्ष आज्ञा प्रदान कर दी।

भाई लालो के यहाँ रुकने पर, गुरु जी महाराज कुछ समय के लिए एकान्त में निकल जाते थे। वह वहाँ रोड़ों-कंकड़ों अथवा बालू पर बैठ कर अथवा लेट-कर परमात्मा के ध्यान में निमग्न हो जाते थे।[1] प्रायः सारी रात वे अनवरत ध्यान में डूबे रहते थे। रात बीतने पर वे वहाँ से भाई लालो के घर लौट जाते थे। धीरे-धीरे यह खबर सारे शहर में फैल गई कि तलवण्डी स्थान के वेदी-

१. इस स्थान पर अब एक गुरद्वारा बना हुआ है, जिसका नाम 'रोड़ी साहिब' है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

क्षत्रिय-वंश का एक नवयुवक साधु एक बढ़ई शूद्र के यहाँ ठहरा है और वह उसी बढ़ई के हाथ का बनाया भोजन करता है। ब्राह्मण-क्षत्रिय, उच्चवर्ण के लोग गुरु महाराज की इस क्रिया से अपने वर्ण को कलंकित समझने लगे। वे अत्यन्त क्षुब्ध हुए और क्रोध में गुरु जी को 'कुराहिया' कह कर संबोधित करते लगे। 'कुराहिया' का अभिप्राय यह होता—'वह व्यक्ति जो सच्चे मार्ग को छोड़कर गलत मार्ग पकड़ लिये हो।' कुछ विद्वान् ब्राह्मण गुरु नानकदेव के पास गए और उन्होंने, उन्हें सही राह पर लगाना चाहा। उन्होंने गुरु नानक महाराज से शास्त्रार्थ कर उन्हें वर्णाश्रम धर्म पर आरूढ़ करना चाहा। किन्तु शास्त्रार्थ में वे गुरु महाराज के तर्कों के सम्मुख टिक न सके। उनका धर्म डगमगाने लगा। किन्तु वे उस पर इसलिए आचरण करते थे कि उसके आधार पर वे अपनी आजीविका चलाते थे। उन ब्राह्मणों, क्षत्रियों के विरोध करने पर भी, गुरु नानकदेव के पास हिन्दुओं और मुसलमानों की भारी भीड़ एकत्र होने लगी। सारे लोग गुरु जी के ज्ञान-वैराग्य-भक्ति पूर्ण संगीत से अत्यधिक प्रभावित होने लगे। उनका तेजस्वी मुख-मण्डल लोगों को बलात् अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। लोगों के ऊपर गुरु महाराज के उपदेशों का अत्यधिक प्रभाव पड़ने लगा और वे स्वाभाविक रूप से उनके शिष्य होने लगे। हिन्दू उन्हे 'तपा नानक' कहने लगे और मुसलमान, 'नानक शाह'। 'तपा' का अर्थ तपस्वी होता है और 'शाह' का अर्थ पहुँचा हुआ फकीर होता है।

थोड़े ही दिनों में गुरु नानकदेव के पास, आस-पास के गाँवों के लोग पहुँचने लगे। पंडितों और मुल्लाओं द्वारा निर्मित बाह्याचारों, रूढ़ियों से सामान्य हिन्दू और मुसलमान जनता ऊबी हुई थी। गुरु नानक महाराज इन बाह्याचारों और रूढ़ियों की असार्थकता सिद्ध करने लगे और साथ ही सच्चे और आन्तरिक धर्म की, नई शैली में व्याख्या करने लगे। इससे जनता उनसे और भी आकर्षित हुई। इससे पंडितों और मुल्लाओं को अत्यधिक क्षोभ हुआ, क्योंकि इसी के बल पर उनकी रोटी चल रही थी। उन लोगों को यह अनुभव हुआ कि गुरु नानक महाराज उनके एकाधिकार पर कुठाराघात कर रहे हैं। गुरु जी ने सामान्य जनता को समझाया कि परमात्मा की एकान्तिक भक्ति के लिए किसी पंडित अथवा मुल्ला के माध्यम की आवश्यकता नहीं है। भक्ति तो अपने हृदय के आन्तरिक प्रेम की वस्तु है। परमात्मा अथवा खुदा आन्तरिक प्रेम और सच्चाई से रीझता है। पंडितों और मुल्लाओं को भय हुआ कि गुरु नानकदेव उनके आधिपत्य को नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। अतएव उन लोगों ने एक सम्मिलित षड्यंत्र रचा कि गुरु नानकदेव इस स्थान को छोड़ कर चले जायँ। उन दोनों ने, मलिक भागो के कान भरने प्रारम्भ किये। मलिक भागो खत्री जाति का था। वह स्थानीय मुसलमान शासक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का प्रभावशाली अफ़सर था। वह भ्रष्ट और रिश्वतखोर था। इसके अतिरिक्त वहाँ के नवाब के पास भी पण्डितों और मुल्लाओं की पहुँच हुई।

कुछ दिनों तक गुरु महाराज इस षड्यंत्र से बचे रहे। उनके पास लोगों की और भी भीड़ आने लगी और लोग उनके आध्यात्मिक संगीत और उच्च उपदेशों से लाभ उठाने लगे। अन्त में एक घटना ऐसी हुई, जिससे मलिक भागो को गुरु नानक को कष्ट देने का बहाना मिल गया। परिवार में किसी खुशी के मौके पर, मलिक भागो ने एक ब्रह्मभोज का आयोजन किया। इस ब्रह्मभोज में आस-पास के सभी ब्राह्मण तथा साधु-महात्मा निमंत्रित किए गए। गुरु नानकदेव के पास भी निमंत्रण पहुँचा। किन्तु गुरु महाराज ने उस निमंत्रण में सम्मिलित होने से साफ़ इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा, 'ऐसे निमंत्रण में सम्मिलित होने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं है। भागो के यहाँ की खाने की सारी चीज़ें खून से सनी होंगी।'

ब्राह्मणों को अच्छा अवसर हाथ लग गया। वे घमंडी और दुराग्रही मलिक भागो के पास पहुँचे। उन ब्राह्मणों ने मलिक से निवेदन किया, 'आप देख रहे हैं इस व्यक्ति को, जिसे लोग साधु कहते हैं? यह वेदी वंश का उच्च क्षत्रिय है, पर है बहुत गिरा हुआ। इसने वर्णाश्रम धर्म का तिरस्कार किया है। शूद्र का बनाया हुआ खाता है। इसने आपके निमन्त्रण का तिरस्कार किया है। इसने जानबूझ कर आपके निमंत्रण की अवहेलना की है। साथ ही यह भी कहा है, 'मलिक भागो के निमंत्रण की सारी खाद्य सामग्री खून से सनी हुई है। यह भयानक अपमान है, घोर अपकीर्ति है, निरा पाखण्ड है। इसकी यह हिमाकत! यह व्यक्ति दण्ड का भागी है।'

इन बातों को सुनकर मलिक भागो आग-बबूला हो गया। मलिक के अहं-भाव पर यह करारी चोट थी। उसने सोचा—'एक भिखारी का यह साहस, यह हिमाकत!' तत्काल ही उसने एक ब्राह्मण भेजकर गुरु जी को बुलवाया। किन्तु गुरु जी महाराज ने ऐसे घमण्डी अफसर से मिलने से इन्कार कर दिया और कहा, 'फकीर को अफसर से क्या काम है? हम दोनों एक दूसरे को जानते भी नहीं। अतः मुझे कोई कारण नहीं जान पड़ता कि मैं उनसे मिलने जाऊँ?' लौट कर उस ब्राह्मण ने बढ़ा-चढ़ा कर गुरु जी की बात मलिक भागो से कही। मलिक के क्रोध का पारा और चढ़ गया। उसने पैदल सिपाहियों की एक टुकड़ी गुरु जी को बुलाने के लिए भेजी। यह भी आज्ञा दी कि आवश्यकता पड़ने पर बलप्रयोग भी किया जाय। उन्होंने पहुँच कर जब गुरु जी से अपना मन्तव्य प्रकट किया, तो उन्होंने मुस्करा कर कहा, 'दोस्तो, बहुत अच्छा। परमात्मा का कार्य

F 5

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना ही है। आप लोग जाइए और अपने मालिक से कह दीजिए कि मैं अभी आ रहा हूँ।'

मलिक भागो बड़ी अधीरता से गुरु महाराज के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। समय पर गुरु महाराज नानकदेव वहाँ उपस्थित हो गए। शान्त भाव से खड़े रहे। भागो सोच ही रहा था कि वह गुरु महाराज के ऊपर क्रोध से कूद पड़े। किन्तु ज्योंही उसकी दृष्टि गुरु जी के शान्त मुख पर पड़ी, उसके सारे शरीर में अजीव कँपकँपी आ गई। उसका सारा क्रोध ठंडा पड़ गया। उसने गुरु जी को बड़े सत्कार से संवोधित किया। उसने प्रश्न किया, 'महाराज, आप शूद्रों के साथ बैठकर क्यों भोजन करते हैं। मेरे ब्रह्मभोज में आने से क्यों इन्कार किया? आपने यह क्यों कहा कि मेरे ब्रह्मभोज की सारी चीज़ों में खून सना है?'

गुरु नानकदेव ने मलिक भागो के प्रश्नों को बड़ी शान्ति से सुना और बड़ी संयत भावा में उत्तर दिया, 'मेरे गुमराह भाई, ब्रह्मभोज में सभी को निमंत्रण देना आपका कर्त्तव्य था और उस कर्त्तव्य का आपने पालन किया। किन्तु किसी को जबर्दस्ती वुलाना आपका धर्म नहीं है। हम साधु लोग इस प्रकार के प्रपंचों में नही पड़ना चाहते। हम लोग तो परमात्मा जो कुछ अपनी मर्जी से भेज देता है, उसी को उसका प्रसाद समझकर स्वीकार कर लेते हैं। आपके ब्रह्मभोज की खाद्य सामग्री के सम्बन्ध में मैंने अपनी राय प्रकट की है। जैसा मैंने अनुभव किया, वैसा कहा है। किसी मनुष्य के भय से मुझे सत्य कहने से नहीं रोका जा सकता। गरीवों के परिश्रम का शोषण करके भोग-विलास और ऐश्वर्य के जो साधन जुटाए जाते हैं, वे सव रक्त से सने रहते हैं। आपकी सारी सम्पत्ति दीन व्यक्तियों से निर्दयतापूर्वक एकत्र की गई है। अतः यह कमाई हलाल की नहीं है, हराम की है। अनाचार और अत्याचार के साधनों से एकत्र भोग-वस्तुएँ कुप्रवृत्तियों और तमोगुण की वृद्धि का कारण हैं। ऐसी भोग वस्तुएँ भोगने वाले के मन और हृदय दोनों को दूषित करती हैं। इनके भोग से मन और शरीर दोनों अस्वस्थ हो जाते हैं। इसी कारण मैंने आपके ब्रह्मभोज से अपने को पृथक् रक्खा।'

मलिक भागो को गुरु जी का कथन न्यायसंगत प्रतीत हुआ। पर उसके अपने नौकर-चाकर, मातहत अधिकारी तथा बहुत से मित्र एकत्र थे, अतः वह अपनी पराजय आसानी से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। अतएव मलिक भागो ने गुरु जी से कहा, 'यदि मुझ ऐसे विशिष्ट उच्च वर्ण के व्यक्ति का ब्रह्मभोज आपके लिए उपयुक्त नहीं है, तो आप शूद्रों का अन्न क्यों खाते फिरते हैं? उन शूद्रों के स्पर्श मात्र से द्विजाति भ्रष्ट हो जाती है। शूद्र, लालो वढ़ई की रूखी सूखी रोटी में कोई दूध तो है नहीं?'

F 5/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानक ने तुरन्त उत्तर दिया, 'हाँ, उस रूखी-सूखी रोटी में दूध और शहद है, क्योंकि वह ईमानदारी और परिश्रम से कमाई रोटी है। ऐसी रोटी अत्यधिक पवित्र होती है और वह दूध तथा शहद के समान स्वास्थ्यवर्द्धक होती है। वह शारीरिक स्वास्थ्य तो प्रदान करती ही है, साथ ही आत्मा का भी उत्थान करती है। तुम्हारे उच्च वर्ण के सम्बन्ध में मेरा यह कथन है—

फकड़ जाती फकड़ु नाउ। सभना जीआ इका छाउ।
आपहु जे को भला कहाए। नानक तापरु जापै जा पति लेखै पाए॥

(वार, सिरी राग)

अर्थात् 'जाति का अहंकार व्यर्थ है और नाम अर्थात् बड़प्पन का अहंकार भी व्यर्थ है। वास्तव में सारे जीव एक ही परमात्मा की छाया अथवा प्रतिबिम्ब हैं। भावार्थ यह है कि सारे घटों में एक ही परमात्मा विराजमान है, कोई व्यक्ति यदि अपनी जाति अथवा नाम के बल पर अपने को अच्छा कहता है, तो इससे वह अच्छा नहीं बन सकता। हे नानक, जीव भला तभी समझा जाता है, जब परमात्मा के लेखे में प्रतिष्ठा प्राप्त करे।'

जाणहु जोति न पुछहु जाती आगै जाति न हे।

(रागु आसा, सबद ३)

अर्थात् सभी मनुष्यों में परमात्मा की ज्योति समझो। किसी की जाति न पूछो, क्योंकि आगे—परमात्मा के यहाँ—कोई भी जाति नहीं है।'

गुरु नानकदेव ने अपना कथन जारी रक्खा, 'मेरे गुमराह दोस्त, अपनी उच्च जाति का अभिमान मत कीजिए। मनुष्य से घृणा मत कीजिए। परमात्मा का निवास सभी ऊँच-नीच जाति के लोगों में है। सभी एक पिता, परमात्मा की सन्तान हैं। परमात्मा की ज्योति सभी जीवों में समान रूप से व्याप्त है। उसी के प्रकाश में सब अनुप्राणित हैं। किसी जाति अथवा वर्ण विशेष में जन्म लेने से न मनुष्य ऊपर उठता है और न नीचे गिरता है। वह अपने कर्मों से ऊपर उठता है अथवा नीचे गिरता है। निम्न वर्ण का पवित्र मनुष्य अपने शुभ कर्मों के सम्पादन से ऊँचे उठ जाता है, किन्तु उच्च वर्ण का क्रूर अत्याचारी, अहंकारी व्यक्ति अपने दुष्कर्मों से पतित हो जाता है। मनुष्य मात्र की सेवा, ईमानदारी से किए गए कर्म किसी मनुष्य को नीचे नहीं गिराते। सेवा और विशुद्ध कर्मों के आचरण से तो मनुष्य का उत्थान होता है। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो'—

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु।
नानकु तिनके संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस।
जिथे नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस॥

(सिरी राग)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात्, 'नीच जातियों में जो नीच हैं और उन नीचों में भी जो बहुत नीच हैं, नानक कहता है कि मेरा उन्हीं से संग-साथ है। बड़ों से मैं अपनी तुलना क्या करूँ? जहाँ पर नीच देखे-भाले जाते हैं, वहाँ तेरी (परमात्मा की) कृपादृष्टि होती है।'

गुरु नानक महाराज की इस अद्वितीय संगीत से परिपूर्ण वार्ता ने श्रोताओं के हृदय में सीधा घर बना लिया।

गुरु महाराज की जीवन-सम्बन्धी गाथाओं से यह पता चलता है कि मलिक भागो ने इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहा कि उनके ब्रह्मभोज के पकवान रक्त से सने हैं और लालो बढ़ई की रूखी-सूखी रोटी दूध से युक्त है। मलिक भागो के इस हठ पर गुरु जी महाराज ने लालो बढ़ई के यहाँ से उसकी रूखी-सूखी रोटी मँगवाई और मलिक भागो के यहाँ से उसका पकवान मँगवाया। भाई लालो की रूखी-सूखी रोटी अपने दाहिने हाथ से दबाई, तो उस रोटी से दूध की धार निकलने लगी। बाएँ हाथ से मलिक भागो के पकवान को लिया और उसे निचोड़ा, तो उससे खून की धार बहने लगी। इस प्रकार गुरु महाराज की इस चमत्कारिणी क्रिया से भागो को पूर्ण बोध हो गया कि उसकी कमाई अत्याचार और क्रूरता की कमाई है, जिसमे उसके पकवान से रक्त धारा बही और लालो बढ़ई की कमाई गाढ़े पसीने और ईमानदारी की कमाई है, जिससे उसकी रूखी-सूखी रोटी से दूध की धार बही। मलिक भागो का सारा दर्प चूर-चूर हो गया। वह नतमस्तक हो गया। उसकी आँखें श्रद्धा और भक्ति से मुंद गईं और वह गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़ा। गुरु महाराज के चरणों के स्पर्श से उसके मस्तक में आनन्द की एक लहर दौड़ गई, जो बिजली की तरह उसके सारे शरीर में व्याप्त हो गई। वह हाथ जोड़ कर, आँखों में आँसू भर गुरु महाराज से प्रार्थना करने लगा, 'महाराज, मेरे सारे गुनाहों को माफ करें। मैं अत्यन्त नीच, पापी और अहंकारी हूँ। मुझे आप अपना बना लें। मुझे रोशनी दें। मैं मोह के अन्धकार में था। वहाँ से आप निकालकर मुझे ज्ञान का प्रकाश दें। मैं आपकी शरण में हूँ। मेरा उद्धार करें।' इतना कह कर वह बिलकुल परिवर्तित मनुष्य के रूप में उठ कर खड़ा हुआ उसकी आँखों में सात्विक जीवन का नवीन प्रकाश था। उसके हृदय में आध्यात्मिकता का अपूर्व आनन्द था।

मलिक भागो की आर्द्र वाणी सुन कर गुरु जी महाराज ने उसे गले से लगा लिया और उसे परमात्मा के सत्य-नाम का उपदेश किया। मलिक भागो ने आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश पाया। उसका सारा अहंकार नष्ट हो गया। उसके भीतर सेवा और प्रेम भाव की पवित्र गंगा प्रवाहित हुई। उसने अपनी सारी संपत्ति गरीबों में बाँट दी। उसने प्रेम, भक्ति और सेवामय जीवन व्यतीत करना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का व्रत लिया। जिस भाई लालो को वह अब तक घृणा की दृष्टि से देखता था, उसे वह श्रद्धा और भक्ति की दृष्टि से देखने लगा और अपना बड़ा भाई तथा अंतरंग सखा मानने लगा।

इस प्रकार गुरु नानक महाराज ने समाज में एक गिरे हुए व्यक्ति को ऊपर उठा कर उसे प्रसिद्धि दी। उन्होंने जातिगत अहंकार के मिथ्याभिमान को मिटाया। यह अहंकार समाज में घुन की तरह लगा था और उसे निकम्मा बना रहा था। उन्होंने उस समाज की नींव डाली जहाँ गरीब ओर अमीर समान हैं। राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से गरीबों और अमीरों में कोई अन्तर नहीं है। सभी परमात्मा के बनाए मनुष्य हैं और सभी को सम्मानपूर्ण, मर्यादायुक्त जीवन बिताने का अधिकार मिलना चाहिए। समाज में गुणों को आदर मिलना चाहिए, चाहे निर्धन ही क्यों न हो।

थोड़े दिनों पश्चात् मरदाना तलवण्डी से वापस लौट आया। उसने गुरु जी को उनके पुराने शिष्य राय बुलार की याद दिलाई और कहा, 'राय बुलार ने आपके पास संदेश भेजा है कि "मुझे आप दर्शन अवश्य देने की कृपा कीजिए। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। साथ ही बहुत कमजोर भी हूँ। अतः आकर दर्शन करने में असमर्थ हूँ। गुरु महाराज बहुत ही दयालु हैं। मेरी अन्तिम इच्छा है कि अपनी आँखों से गुरु महाराज का दर्शन करूँ। थोड़े ही दिनों बाद ये सदैव के लिए मुँद जायेंगी।" मरदाना ने यह भी बतलाया है कि तलवण्डी के अन्य शिष्यों की यह उत्कट अभिलाषा है कि उन्हें आप अपने दर्शन से कृतार्थ करें। अतएव सैयदपुर में थोड़े दिनों ठहरने के पश्चात्, गुरु नानकदेव तलवण्डी के लिए रवाना हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय नव

भयंकर ठग को धर्म-प्रचारक बनाना

अपनी जन्मभूमि तलवण्डी पहुँच कर, गुरु नानकदेव ने अपना डेरा गाँव के बाहर जमाया। उनके माता-पिता को उनके आगमन की सूचना मिली। अतएव माता-पिता अपने पुत्र, गुरु नानक से मिलने गए। गुरु जी के चाचा मेहता लालू भी साथ में थे। उन सबों ने मिलकर फिर एक बार गुरु नानकदेव को विरक्ति-पथ से मोड़ने का प्रयास किया और गृहस्थ-जीवन में आने के लिए जोर दिया, साथ ही तदनुकूल कोई व्यवसाय करने के लिए आग्रह किया। गुरु महाराज ने उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं और इस प्रकार उत्तर दिया, 'अब सारा संसार मेरा परिवार हो गया है। मैंने संसार का त्याग तो किया नहीं है। हाँ, सीमित संसार के बदले सारे संसार को अपना परिवार मान लिया है। मैंने अपने को सारे संसार के कल्याण के लिए लगा दिया है। मैंने अपने लिए बड़ा लाभदायक व्यवसाय भी चुन लिया है। वह व्यवसाय है संसार के समस्त मनुष्यों की सेवा। इस व्यवसाय में मुझे इस लोक में तथा परलोक में आनन्द और शान्ति की अपार धनराशि मिल रही है। इसके साथ संसार के उन मनुष्यों को भी शान्ति और आनन्द प्राप्त होगा, जिसे वे अपने भ्रम, मोह और माया के कारण भूल गए हैं। शान्ति और आनन्द मनुष्य की सर्वोच्च सम्पत्ति हैं। मैं एक कृषक भी हूँ। मनुष्यों का हृदय खेत हैं। उस खेत में प्रभु के शाश्वत नाम और अनन्त प्रेम के बीज बोता हूँ। मैं सौदागर भी हूँ। मैं नाम का सौदा करता हूँ। उसका लाभ मैं स्वयं लेता हूँ और दूसरे मनुष्यों को भी बाँटता हूँ। मेरा सौदा अजर और अमर है। वह कभी नष्ट नहीं होता। अतएव अब आप लोग ऐसे सच्चे और लाभदायक व्यवसाय से मुझे विचलित न करें। बल्कि यह आशीर्वाद दें कि मैं अपने व्यवसाय में निरन्तर लगा रहूँ और उसी में मेरा लाभ और उन्नति हो।'

गुरु महाराज जी के उपर्युक्त कथन से उनके माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धी शान्त हो गए। इसके बाद गुरु महाराज उठ कर राय बुलार के घर की ओर चल पड़े। अब तक राय बुलार काफी बूढ़े हो गए थे। गुरु जी के आने पर, राय बुलार उठ कर खड़े हुए और उनके चरणों में गिरना चाहा। किन्तु गुरु जी महाराज ने उन्हें अपनी प्रेमपूर्ण भुजाओं में बाँध लिया। राय बुलार को स्नेहाधिक्य से गुरु महाराज ने अपने सीने से चिपका लिया। इस आलिंगन से राय बुलार को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असीम आनन्द एवं शान्ति की प्राप्ति हुई। इस आध्यात्मिक मिलन के आनन्द का वर्णन मन, वाणी की पहुँच से परे है। राय बुलार का सारा अपनापन गुरु के व्यक्तित्व में समा गया। गुरु और शिष्य एक हो गए। शारीरिक भाव जाता रहा। प्रभु के अखण्ड नाम से दोनों युक्त हो गए।

गुरु महाराज तलवण्डी में कुछ दिनों तक और रुके। उनके शिष्य और बाल्यावस्था एवं युवावस्था के मित्रगण उनके पास निरन्तर आते रहते थे। वे उन्हें सदैव परमात्मा की भक्ति और नाम के माहात्म्य का उपदेश देते थे। इस प्रकार गुरु जी महाराज जगत् के मायिक नश्वर जीवन की क्षणभंगुरता का रहस्य समझा कर उन्हें आध्यात्मिक जीवन की अखण्डता, शान्ति, संतोष और आनन्द का प्रतिपादन करके जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरणा देते रहते थे। दिन में तो अपने इष्टमित्रों और सम्बन्धियों और विशेषत: राय बुलार के साथ रहते थे, किन्तु रात में वे तलवण्डी के जंगल में निकल जाते और सारी रात ईश्वर-चिन्तन में व्यतीत करते थे।

थोड़े दिनों के पश्चात् उन्होंने तलवण्डी छोड़ने का निश्चय कर लिया। वे अपनी उपदेश-यात्रा पर फिर रवाना हो गए। रावी नदी को पार करते हुए, वे दक्षिण की ओर चल पड़े। इस पथ में जंगलों की अधिकता थी, कहीं-कहीं छुटपुट मनुष्यों की बस्तियाँ भी थीं। मरदाना उनके साथ था। गुरु जी को तो न भूख सताती थी, न प्यास। वे तो किसी शक्तिशालिनी अदृश्य शक्ति द्वारा परिचालित किए जा रहे थे। पर बेचारे मरदाना के ऊपर भूख और प्यास सवार थी। बहुत देर तक उसने दोनों का बहादुरी से सामना किया। जंगल के फल उसकी भूख मिटाने को पर्याप्त न थे। उसे तो दूध और भोजन की आवश्यकता थी।

धीरे-धीरे वे हड़प्पा के समीप पहुँचे। गुरु जी ने मरदाना को यह आश्वासन दिया कि यहाँ बस्ती में तुम्हारी अच्छी आवभगत होगी। यह कह कर उसे बस्ती में जाने की आज्ञा दे दी। मरदाना ने उनकी आज्ञा का पालन किया और बस्ती की ओर रवाना हो गया। लोगों ने उसका सुन्दर आतिथ्य किया। विविध पकवानों से उसकी आवभगत की। साथ ही उपहार में अनेक कीमती वस्त्र तथा रुपये-पैसे दिए। मरदाना उन उपहारों का गट्ठर बाँध कर, गुरु जी महाराज के पास उपस्थित हुआ। मरदाना के सिर पर भारी गट्ठर देख कर गुरु नानकदेव ठहाका मार कर हँस पडे और उन्होंने प्रश्न किया, 'मरदाना, यह क्या है?' मरदाना ने उत्तर दिया, 'महाराज, रुपये-पैसे और वस्त्र आदि हैं। लोगों ने इसे उपहार में दिया है और यह सब बाँध कर आपकी सेवा में लाया हूँ।'

गुरु महाराज ने तत्काल उत्तर दिया, 'किन्तु, ये सारी वस्तुएँ हम लोगों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी काम की नहीं हैं। हम लोगों ने सारी सांसारिक सम्पत्ति का त्याग किया है और त्यागमय जीवन का वरण किया है। क्या हम लोग उसी प्रपंच और मायाजाल में फिर फँसें? इन सब को फेंक दो। जरूरतमन्द और गरीब इन्हें पाएँ। हम लोग जिस परब्रह्म की आराधना और सेवा कर रहे हैं, वही हमारी जरूरतें पूरी करेगा। परमात्मा के सच्चे भक्त इन नश्वर सांसारिक वस्तुओं में अनुराग नहीं रखते, वे तो उसके सच्चे नाम में प्रीति और विश्वास रखते हैं। क्या सर्वशक्तिमान्, घटघटव्यापी परमात्मा हमारी देखरेख नहीं करेगा? उसकी सदाशयता पर पूर्ण विश्वास रक्खो। अतः, इन वस्तुओं को यहीं फेंक दो। जरूरतमन्द और गरीब इन्हें ले जाएँगे।' मरदाना ने तत्क्षण गुरु महाराज की आज्ञा का पालन किया।

वे दोनों शीघ्र ही वहाँ से रवाना हुए और मुल्तान जिले के तुलंभा नामक स्थान पर पहुँचे। यहाँ एक ठग का निवास था। उस ठग का नाम शेख सज्जन था। उसकी बड़ी आलीशान इमारत थी। इस शानदार इमारत के एक तरफ मस्जिद थी और दूसरी तरफ मन्दिर। यात्रियों और अतिथियों के स्वागतार्थ दो नौकर सदैव दरवाजे पर हाथ बाँधे खड़े रहते थे। उन नौकरों ने गुरु नानकदेव और मरदाना का हार्दिक स्वागत किया। गुरु जी के मुख की अद्भुत आभा से उन्हें यह पूर्ण विश्वास हो गया कि निश्चय ही ये लोग बड़े धनाढ्य व्यक्ति हैं। दोनों ही व्यक्तियों को एक सुसज्जित कमरे में आरामदेह खाट पर बैठाया गया। इतने ही में सज्जन भी इनके पास उपस्थित हुआ। उसकी पोशाक बड़ी ही भड़कीली और आकर्षक थी। उसके बाएँ हाथ में हिन्दू साधु की सी एक माला थी और दाहिने हाथ में मुसलमान फकीर के समान एक सोंटा था। गुरु जी महाराज को देखकर वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ। कारण यह कि उसे पूरा निश्चय हो गया था कि यह बहुत बड़ा आदमी है और इसके पास अमूल्य रत्न हैं। 'सवेरा होने के पहले इस व्यक्ति की सारी सम्पत्ति मेरी हो जायगी'—ऐसा सज्जन को प्रतीत हो गया।

अत्यन्त विनम्रता से सज्जन गुरु नानक के चरणों के पास बैठ गया। सज्जन ने इस बात की जानकारी प्राप्त करनी चाही कि गुरु नानकदेव के पास किस प्रकार की सम्पत्ति है। गुरु जी ने जब सज्जन का नाम पूछा, तो उसने बतलाया "महाराज, मैं सभी लोगों का समान रूप से मित्र और सेवक हूँ। हिन्दू मुझे 'सज्जनमल' कहते हैं और मुसलमान मुझे 'शेख सज्जन' कहकर पुकारते हैं किन्तु न तो मैं हिन्दू हूँ और न मुसलमान। अथवा मैं दोनों ही हूँ।"

नौकरों ने गुरु नानकदेव और मरदाना के लिए भोजन आदि की व्यवस्था की। किन्तु गुरु महाराज ने भोजन करने से इन्कार कर दिया। सज्जन और उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुयायियों ने लाख कोशिशें कीं कि गुरु जी भोजन करें, पर अपने प्रयास में असफल सिद्ध हुए। मरदाना भी बिना गुरु जी की आज्ञा के कोई चीज खा पी न सका। इसके बाद सज्जन उन दोनों को एक कमरे में ले गया। वहाँ खूब आराम-देह पलंगें पहले से ही तैयार थीं। किन्तु गुरु महाराज पलंग पर न बैठकर फर्श पर ही बैठे। सज्जन ने दोनों हाथ जोड़कर गुरु जी से पलंग पर लेटने की प्रार्थना की। गुरु महाराज ने मुस्कराकर कहा, "दोस्त, ये आरामदेह पलंगें फकीरों के लिए नहीं हैं। मैं फर्श पर, भली-भाँति हूँ यहाँ मुझे कोई तकलीफ नहीं है। मुझे अपना काम करना है। अभी मेरे लिए आराम करने का समय नहीं है। यदि आपको जरूरत हो, तो आप आराम करने के लिए बेशक जा सकते हैं।"

सज्जन गुरु महाराज को प्रणाम करके वहाँ से चला गया। उसने अपने सह-कारियों को एकत्र किया। सभी लोगों ने गुरु नानकदेव की सम्पत्ति को लूटने के उपाय सोचे। उन्हें क्या मालूम था कि गुरु जी महाराज अपनी आध्यात्मिक सम्पत्ति का खजाना उन भिक्षुओं को लुटाने आए हैं जो लाखों के स्वामी थे। सर्वसम्मति से यह निर्णय हुआ कि भोर की रात में उन दोनों का गला घोंटकर मार डाला जाय। सज्जन उठकर अपने बिस्तर पर चला गया। वह कुत्सित विचारों में डूबा जग ही रहा था कि इतने ही में गुरु नानकदेव के कमरे से उसे अत्यधिक मधुर संगीत सुनाई पड़ा। उस स्वर्गीय संगीत से विमुग्ध होकर, वह अपने बिस्तर से उठकर गुरु जी महाराज के कमरे की तरफ चल पड़ा। वह छिपकर चुपचाप गुरु जी के कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसने देखा कि गुरु जी आँखें बन्द किए हुए बैठे हैं। उनके मस्तक पर अनन्त रत्नों की जगमगाहट प्रतिभासित हो रही थी। मरदाना रबाब बजा रहा था और रबाब के स्वर पर गुरु नानकदेव की एक वाणी गा रहा था। गुरु जी की वाणी, अद्भुत संगीत, और गुरु जी के मुख का अद्भुत आकर्षण—इन तीनों ने सज्जन को अदृश्य शक्ति की जंजीरों में कस कर बाँध लिया। वह चुपचाप महाराज के कमरे में प्रविष्ट हुआ। कमरे का सारा वातावरण अत्यन्त सात्विक, शान्त और पवित्र हो रहा था। सज्जन ने गुरु महाराज को दण्डवत प्रणाम किया। उसके प्रणाम करने के दो कारण थे। पहले तो प्रदर्शन मात्र के लिए उसने प्रणाम किया और दूसरे किसी शक्तिशालिनी अज्ञात शक्ति ने उसे प्रणाम करने के लिए बाध्य कर दिया।

कुछ समय पश्चात् मरदाना ने गाना बन्द कर दिया। किन्तु रबाब का स्वर झंकृत होता रहा। तत्पश्चात् गुरु नानकदेव ने एक 'सबद' अपने मधुर कंठ से गाना प्रारम्भ किया। उस सबद में सज्जन ऐसे पाखण्डियों, ठगों एवं क्रूरों के चरित्र का विश्लेषण था। यदि किसी पाखण्डी का हृदय अपवित्र और क्रूर है और वह दिखावे के लिए बाह्य पूजा तथा दान में लगा है, तो उसकी आत्मा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए असंख्य जाल बिछे रहते हैं और वह उनमें उलझ कर अहर्निश त्रिविध ताप से दग्ध होता रहता है। बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतें और अपार धन-सम्पत्ति के पापों का बोझ उसके सिर पर लदा रहता है। जो व्यक्ति क्रूर हत्याएँ करके, सज्जन बनने का दम्भ करते हैं और संसार को धोखा देते हैं, उन्हें परलोक में अपने पापों के फल भोगने पड़ते हैं। दम्भ और पाखण्ड से उनका उद्धार नहीं होता, क्योंकि घट-घट व्यापी परमात्मा सब कुछ जानता रहता है। रात्रि के घन-घोर अंधकार में अथवा अँधेरी और सुनसान माँद में की गई क्रूर हत्याएँ परलोक में परमात्मा के यहाँ उस पापी नरसंहारक के सम्मुख खड़ी होकर पापपूर्ण और काले जीवन की गाथा हजारों जिह्वाओं से बता देती हैं। इस संसार के झूठे साथी, जिन्होंने उसके जघन्य कृत्यों में सहायता की है, और रक्तपूर्ण धन-सम्पत्ति में हिस्सा बटाया है, परलोक में किनारा कस लेते हैं। अतएव उस क्रूर को अकेले ही उन पापों के फल भोगने पड़ते हैं। सच्चे मित्र तो वे ही होते हैं, जो ऐसे समय में उसकी सहायता करें। उसे ऐसे सच्चे मित्र की तलाश करके अपना सगा बनाना चाहिए। झूठे मित्र तो उसके बन्धनों के कारण बनते हैं। परमात्मा का सतत चिन्तन और उसकी कृपा, प्रेम और सेवा के पथ का अनुसरण और उन संतों की संगति, जिन्होंने परमात्मा का साक्षात्कार किया है—ये ही उसके बन्धनों के खोलने में सहायक होते हैं। गुरु नानक द्वारा उच्चरित पद इस प्रकार है—

उजलु कैहा चिलकणा घोटिमु कालड़ी मसु।
धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोआ तिसु ॥१॥
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलन्हि।
जिथै लेखा मंगिऐ तिथै खड़े दंसन ॥१॥ रहाउ ॥
कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा।
ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥२॥
बगा बगे कपड़े तीरथ मंझि वसन्हि।
घुटि-घुटि जीआ खावणो बगे ना कहीअन्हि ॥३॥
सिंमल रुखु सरीरु मै मै जन देखि भुलन्हि।
से फल कंमि न आवही ते गुण मै तन हन्हि ॥४॥
अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु।
अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥५॥
चाकरीआ चांगिआईआ अवर सिआणपु कितु।
नानक नामु समालि तू बधा छुटहि जितु ॥[1] ६॥१॥३॥

---

१. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, राग सूही, घरु ६, सबद ३, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावार्थ "काँसा धातु सफेद और चमकीली होती है, पर यदि वह रगड़ी जाय तो काली स्याही हो जाती है। आन्तरिक जूठ—अपवित्रता—बाहरी सफाई से नहीं दूर होती, चाहे उसे सौ बार ही क्यों न धोया जाय ॥१॥

"सजन वे ही होते हैं, जो जहाँ भी जाते हैं, वहाँ साथी बनकर साथ जाते हैं। उनसे जिस स्थान पर जब भी जीवन की अच्छाइयों और बुराइयों का लेखा माँगा जाता है, उसी स्थान पर खड़े-खड़े अपना लेखा दिखा देते हैं ॥१॥ रहाउ ॥

"चाहे बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ और महल निर्मित कर लिए जायँ और पास से चित्रित भी कर दिए जायँ, किन्तु ढिंढोरा पीटना कुछ भी काम नहीं आएगा, क्योंकि भीतर से वे सब ऊपरी तड़क-भड़क खाली हैं ॥२॥

"बहुतों के पंख-कपड़े-साफ होते हैं और तीर्थों में निवास करते हैं, किन्तु वे घोंट-घोंट कर जीवों (मछलियों) आदि को खाते हैं। अतएव वे अपनी हिंसक मनोवृत्ति के कारण साफ़ पवित्र नहीं कहे जा सकते। (उपर्युक्त पंक्तियों का तात्पर्य शेख सज्जन से है। तुम भी सज्जनों का वेश बनाकर हिंसा कर रहे हो। अतएव तुम्हारी और बगुले की समान अवस्था है।) ॥३॥

"मेरा शरीर (जीवन) सेमल के वृक्ष के समान है। (बाह्य दृष्टि से खूब फूला हुआ है, उसी प्रकार मेरी बाह्य वेशभूषा और आचार आदि को) देखकर लोग भूल जाते हैं और भ्रमित हो जाते हैं। जिस प्रकार सेमल वृक्ष के फल किसी काम नहीं आते हैं, उसी प्रकार मेरे शरीर में जो ऊपरी गुण हैं, वे किसी भी काम नहीं आते ॥४॥

"अन्धे ने (मैंने) पाप का बहुत भारी बोझा उठाया है, मार्ग बहुत पहाड़ी है। मैं आँखों से रास्ता ढूँढ़ता तो अवश्य हूँ, किन्तु पाता नहीं हूँ, मैं किस प्रकार पहाड़ चढ़कर लाँघूं ? (गुरु नानक ने उपर्युक्त पंक्तियों में सारे अवगुण अपने में दिखाकर, शेख सज्जन को लज्जित किया है।) ॥५॥

"हरी के नाम के बिना अन्य सेवाएँ, नेकियाँ तथा चतुराइयाँ किस काम की हैं! हे नानक, तू नाम को सम्हाल, जिससे तू बुरे कर्मों के बन्धनों से मुक्त हो जा ।६॥ १॥३॥"

जैसे-जैसे उपर्युक्त 'सबद' की पंक्तियों का संगीतमय प्रवाह प्रवाहित होता रहा है, वैसे-वैसे सज्जन के क्रूर हृदय में कोमलता का संचार होता गया। अंतिम पंक्ति पहुँचते-पहुँचते उसके हृदय में अद्भुत परिवर्तन हो गया। उसके सामने उसके सारे कारनामे अपने आप नग्न रूप में खड़े हो गए। वह उनकी विभीषिकाओं से थर्राने लगा। उसने भय से अपनी आँखें मूँदने की चेष्टा की, फिर भी वे बन्द नहीं हुईं और अपलक गुरु जी महाराज के चमकते मुख को निहारती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहीं। पापों के भारी बोझ से वह दबता जा रहा था। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि गुरु जी ने उसके समस्त पापों का खुली हुई पुस्तक के पृष्ठों के समान अध्ययन कर लिया है। वह खड़ा हो गया। उसके पैर भय से लड़खड़ा रहे थे, उसकी आँखें लज्जा से झुकी हुई थीं। उसने गुरु नानकदेव के पैरों को कस कर पकड़ लिया। पैर पकड़ते ही उसके हाथों और सिर में सात्विकता और आध्यात्मिकता की लहर बिजली की तरंगों की भाँति व्याप्त हो गई। सारे शरीर में रोमांचकारी कम्पन होने लगा। इस लहर से उसके मन और हृदय के पापों का बोझ हलका होने लगा। उसने अपने पश्चात्ताप, दुःख और ग्लानि के अश्रुजल से गुरु नानक-देव के चरणों को नहला दिया।

इसी भावपूर्ण स्थिति में वह बड़ी देर तक स्थित रहा। गुरु नानक महाराज उसकी इस दशा पर मुस्करा दिए। उन्होंने अपने स्नेह भरे हाथ से सज्जन की पीठ का स्पर्श किया। गुरु जी के स्पर्श ने उसके शरीर में दुबारा सिहरन उत्पन्न कर दी। वह आनन्द सागर में डूब गया। उठने का उसका मन नहीं करता था। गुरु जी के त्राणदायक चरणों में सदैव पड़े रहने की उसकी इच्छा हुई। गुरु महाराज ने उसके हाथों को पकड़ कर जबर्दस्ती उठा लिया। उन पापपूर्ण हाथों से उसने न मालूम कितने जघन्य कर्म किए थे। पारस पत्थर ने लोहे को छूकर सोना बना दिया। सज्जन ठग गुरु जी के चरणों को छोड़कर, दोनों हाथ जोड़ कर उनके पास बैठ गया। उसके नेत्रों में आध्यात्मिकता की नवीन ज्योति चमक रही थी। गुरु जी की वाणी ने उसके समस्त कल्मषों, पापों-तापों को धो दिया था।

सज्जन ने पश्चात्तापपूर्ण शब्दों में गुरु नानकदेव से भीख माँगी, "महाराज, मेरा उद्धार कीजिए। मेरे अत्याचारों, हत्याओं और पापों का अन्त नहीं है।" गुरु जी ने कहा, "तुम, अपने पापों और हत्याओं को खुले दिल से स्वीकार करो। प्रतिज्ञा करो कि भविष्य में इस प्रकार के क्रूर कर्म नहीं करोगे।" सज्जन ने गुरु जी के आदेश का अक्षरशः पालन किया। उसने अपने समस्त पापों को स्वीकार किया और प्रतिज्ञा की, 'प्रभु इस जीवन में मेरे समान पापी कोई नहीं है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं स्वप्न में भी पुनः ऐसे पाप नहीं करूँगा। मेरी रक्षा कीजिए। मैं मनसा, वाचा और कर्मणा आपकी शरण में हूँ।'

गुरु महाराज ने उस पर वरद-हस्त रख कर उसे पूर्ण आश्वासन दिया। उसके पापों की रुई के पहाड़ को, गुरु महाराज ने अपने अमोघ आशीर्वाद की चिनगारी से दग्ध कर दिया। गुरु जी की भक्ति-मन्दाकिनी के प्रवाह में उसके सारे कल्मष बह गए। उसका अन्तःकरण दर्पण के समान निर्मल हो गया। उं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम उल्लास, शान्ति और आनन्द की अनुभूति हुई। उसने लूट की सारी कमाई गरीबों और जरूरतमन्दों में बाँट दी। उसने अपनी उस आलीशान इमारत को ढहा दिया जहाँ हजारों हत्याएँ और लूट हुई थी। अपने रहने के लिए एक साधारण कुटिया बना ली।

गुरु नानकदेव ने उसे 'हरी नाम' का प्रसाद दिया। गुरु जी की आज्ञा से उसने अपना निवासस्थान 'धर्मशाला' बना दिया। उस स्थान पर भजन प्रार्थना, अतिथि-सेवा, साधु-सेवा, सत्संग का दौर चलता रहता। इस प्रकार वह वास्तविक 'सज्जन' हो गया। उसने सच्चाई और ईमानदारी से आजीविका कमाने का व्रत लिया। इस प्रकार एक महान् क्रूर और अत्याचारी ठग पूर्ण साधु के रूप में परिवर्तित हो गया। गुरु नानकदेव द्वारा वह प्रथम सिक्ख-धर्म-प्रचारक नियुक्त किया गया। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय दस

पाकपटन और कुरुक्षेत्र में

इस प्रकार सज्जन ठग को साधु में परिवर्तित कर और उसे सिक्ख धर्म का प्रथम धर्म-प्रचारक बना कर गुरु नानकदेव पूर्व की तरफ़ बढ़े। पाकपटन नामक स्थान पर, वे शेख़ फरीद के पवित्र स्थान पर गए। वहाँ की गद्दी के मालिक शाह ब्राहम अथवा शेख फरीद द्वितीय थे। वहाँ पहुँचते ही गुरु महाराज को विदित हुआ कि शाह ब्राहम जंगल में तपस्या करने के लिए गए हैं। उनकी कठिन तपस्या का उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति करना और परमात्मा का साक्षात्कार करना था। गुरु नानकदेव का उद्देश्य दोनों प्रकार के अतिवादियों से मिलना था —एक तो वे जो अत्यंत भोगवादी और सांसारिक सुखों, भोगों, और ऐश्वर्यों को ही सर्वस्व समझ कर उन्हीं में लिप्त रहने वाले मनुष्य थे। दूसरे ऐसे लोग थे जो चरम सीमा के निवृत्ति-परायण व्यक्ति थे, जिनका उद्देश्य उग्र तपस्या करना था। ऐसे लोग घनघोर तपस्या के निमित्त जंगलों में चले जाते थे और कठोर तपस्या द्वारा अपने शरीर को सुखा डालते थे। संसार के अन्य मनुष्यों से कोई भी सम्बन्ध नहीं रखते थे। गुरु महाराज दोनों प्रकार के अतिवादियों से मिलते थे। उनके जीवन की समस्याओं पर, आध्यात्मिक विकास के संबंध में वार्ता करते और जीवन के वास्तविक रहस्य को समझाने की चेष्टा करते थे। उन्हें सही रास्ते पर लाने की कोशिश करते थे। अपने वाद-विवाद, तर्क-वितर्क में गुरु महाराज ऐसी अनुभूतियों का चित्रण करते, जिससे वे नतमस्तक हो जाते थे और गुरु महाराज के प्रेम, सेवा तथा ईश्वर भक्ति वाले मार्ग को स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाते थे। गुरु जी उनके भीतर जीवन के आदर्शों का नवीन रूप रख कर, उनके पथों को परिवर्तित कर देते थे। उनमें भक्ति और ज्ञान का नवीन प्रकाश भर देते थे।

इसी उद्देश्य से गुरु नानकदेव शाह ब्राहम से घनघोर जंगल में मिलने गए। गुरु नानक महाराज के सुगठित, हृष्ट-पुष्ट शरीर तथा ओजयुक्त मुखमण्डल को देखकर शाह ब्राहम को यह भ्रम हुआ कि वे शरीर निर्माण की ओर अपना ध्यान अधिक देते हैं, और आत्मोन्नति की ओर कम। जब औपचारिक मिलन समाप्त हुआ, तो शेख़ ब्राहम ने गुरु नानकदेव से जिज्ञासा प्रकट की, "आप पहने तो हैं फ़कीरी लिबास, पर आपका शरीर ऐसा है, जो भोगियों के शरीर को भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लज्जित करता था। ऐसा होना नहीं चाहिए। तपस्वी और त्यागी पुरुष का शरीर तो दुबला-पतला होना चाहिए। मनुष्य के दो मार्गों में से एक ही पर चलना चाहिए—या तो उसे संसार के उच्च पद पर होना चाहिए, अथवा उसे सब कुछ त्याग कर परमात्मा की भक्ति ही करनी चाहिए। दोनों मार्गों का अनुसरण करना ठीक उसी प्रकार है, जैसे दो नावों पर अलग-अलग पैर रखना। इससे मनुष्य का नाश ही होता है। आपकी भी वही दशा है—आप खाते-पीते तो सांसारिकों की तरह हैं और साथ ही रहनी फकीरों की सी रहते हैं।"

गुरु नानक ने उत्तर दिया, "मेरे दोस्त, ऐसी बात नहीं है। दो नावों का एक साथ तैयार रहना, एक नाव की तैयारी से अच्छा है। बुद्धिमान वही है, जो अपना असबाब दोनों नावों पर लादे। किसे पता है कि कौन-सी नाव किनारे पर पहले पहुँचेगी? अतएव, मेरे दोस्त, अपने शरीर को भूख-प्यास से सुखा कर, आत्मा का हनन मत करो। न तो दुनिया को छोड़ो और न खुदा को। कौन जानता है इन दोनों मार्गों में से कौन-सा मार्ग परमात्मा को अधिक प्रिय है? ऊँचे पद और धन ऐश्वर्य स्वयं बुरे नहीं हैं। यदि उनका ठीक-ठीक प्रयोग किया जाय, उनके माध्यम से मनुष्य की सेवा की जाय, तो वे वरदान के समान हैं। मनुष्य की सेवा परमात्मा की ही आराधना है। हाँ, यदि पद और धन-सम्पत्ति का दुरुपयोग किया जाय, उनके द्वारा मनुष्यों को सताया जाय, तो निश्चय ही वे अभिशाप हैं। पद, धन, सम्पत्ति के दुरुपयोग से गरीबों और जरूरतमंदों को तकलीफ होती है और दुरुपयोग करने वाले का आत्मिक पतन होता है। यह माया अनादि है। इसी के वशीभूत होकर मनुष्य की कामना और आसक्ति बढ़ती है। माया का यह स्वभाव ही है। पर भगवद्-भक्त को इस चुड़ैल से भयभीत नहीं होना चाहिए। यदि साधक सतर्क रहता है, तो माया को अपनी चेरी बना कर अपने उत्थान का साधन बना लेता है। हाँ, यदि वह माया का दास होकर उसके वशीभूत हो जाता है, तो पथभ्रष्ट होकर अनेक प्रकार की यंत्रणाएँ सहन करता है। मेरे दोस्त यह माया किसी को भी नहीं छोड़ती। यह बहुरूपिणी है। अनेक रूप धारण करके लोगों को मोहती रहती है। जंगल के एकान्त में भी यह तुम्हें न छोड़ेगी। अतएव, तुम कायर की भाँति इसे छोड़कर भागते क्यों हो? पलायनवाद से इससे पीछा नहीं छुड़ा सकते। मेरे दोस्त, माया का प्रयोग आत्मोन्नति के लिए क्यों नहीं करते? माया को अपनी चेरी बना कर परमात्मा के मिलन में सहायिका क्यों नहीं बनाते? इसे क्रियाशील बनाकर, प्रेम और सेवा में क्यों प्रयोग नहीं करते? यह शरीर व्यर्थ नहीं है। इसके माध्यम से परमात्मा का साक्षात्कार होता है। परमात्मा की प्राप्ति के लिए यह रथ है। शरीर घोड़ा है और आत्मा परिचालक। अतः शरीर और आत्मा दोनों को ही संतुलित रखना चाहिए। दोनों के समुचित प्रयोग से ही साधक को परमात्मा की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्ति होती है। शरीर को उग्र और आसुरी तपों से तपाना घनघोर पाप है। इसी प्रकार विविध भोगों द्वारा शरीर को पुष्ट करना और आत्मा से विमुख हो जाना भी घनघोर पाप है। दोनों का सामंजस्य अनिवार्य है। दोनों का प्रयोग परमात्मा की सेवा के लिए करो। शरीर से तो परमात्मा के प्राणियों की सेवा करो और आत्मा को परमात्मा के अखण्ड ध्यान में नियोजित कर दो। दोनों के सहयोग से प्रेम, सेवा और भक्ति पथ का अनुसरण करो। परमात्मा की प्राप्ति का यही वास्तविक पथ है।"

गुरु नानकदेव के उद्‌बोधक वाक्यों को शेख ब्राहम शान्त भाव से सुनते रहे। उनके उपदेश से वह पूर्ण संतुष्ट हुए और उन्होंने अपनी जीवन दिशा परिवर्तित कर दी। गुरु जी के आदेश से शेख ब्राहम ने अपना कई दिनों का उपवास-व्रत तोड़ दिया। गुरु महाराज कुछ दिनों तक शेख साहब के साथ रहे और अपने दिव्य संगीत से उनकी आध्यात्मिक उन्नति करते रहे। जब गुरु नानक वहाँ से अन्यत्र जाने को तैयार हुए, तो शेख भी अपने निवास-स्थान पाकपटन को लौट गए। गुरु नानकदेव बाद में फिर शेख ब्राहम से मिले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय ग्यारह

कुरुक्षेत्र में

पूर्व की ओर यात्रा करते हुए, गुरु नानकदेव हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ कुरुक्षेत्र में पहुँचे। उन्होंने यह पहले ही सुन रक्खा था कि सूर्य-ग्रहण के अवसर पर वहाँ बहुत बड़ा मेला होगा। वे हिन्दुओं की रूढ़िवादिता से भली-भाँति विज्ञ थे। उन्हें यह पहले से ही ज्ञात था कि ऐसे अवसरों पर भोली-भाली जनता को ब्राह्मण वर्ग किस प्रकार छलते हैं। उन्होंने पहले ही संकल्प कर लिया था कि उस अवसर पर वे इस रूढ़िवादिता और अन्ध-परम्परा का अवश्य खण्डन करेंगे और लोगों को सही रास्ता बतायेंगे।

वहाँ पहुँच कर उन्होंने अपना आसन एक झील के किनारे जमा दिया। जनता स्नान करके ब्राह्मणों को दान देने में लगी हुई थी। हिन्दू जनता की यह धारणा बनी हुई थी कि ग्रहण-स्नान से उसके पापों का शमन होगा, साथ ही सूर्य देव भी राहु के ग्रास से मुक्ति पाएँगे। हिन्दुओं की धारणा है कि राहु के ग्रसने के कारण सूर्य और चन्द्र को ग्रहण लगते हैं। गुरु महाराज ने लोगों के स्नान और दान को सूक्ष्मता से निरीक्षण किया। भोली जनता की इस रूढ़िवादिता पर उन्हें हँसी आई। उन्होंने आज्ञा दी, "मरदाना, रबाब उठाओ।" गुरु जी महाराज ने अपनी एक ललित और चित्ताकर्षक वाणी का गान किया। मरदाना का रबाब बजता रहा। बहुत कम लोग उनका दिव्य संगीत सुन पाए, क्योंकि सभी लोग स्नान आदि में व्यस्त थे।

उसी समय एक रानी अपने पुत्र के साथ गुरु नानकदेव के पास उपस्थित हुई। उनके मुखमण्डल की दैवी आभा से वह अत्यधिक आकर्षित हुई। उसने उन्हें पुत्र-सहित भक्तिपूर्वक प्रणाम किया और गुरु महाराज के चरणों में अपने पुत्र द्वारा शिकार किए गए एक हिरन की भेंट दी। रानी के पास उस शिकार किए गए हिरन के अतिरिक्त और कोई वस्तु भेंट में देने के लिए नहीं थी। उन्होंने गुरु महाराज से प्रार्थना की, "महाराज हमारा राज्य अपहृत कर लिया गया है। आशीर्वाद दीजिए कि वह हमें वापस मिल जाय।"

गुरु महाराज ने कहा, "सब कुछ परमात्मा के हाथ में है। उसका सदैव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण रक्खो। जिस दशा में उसने तुम लोगों को रहने की आज्ञा दी है, उसी में संतुष्ट रहो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारे प्रेम और भक्ति से परमात्मा अवश्य प्रसन्न होगा और तुम्हारा राज्य तुम्हें वापस देगा।"

गुरु नानकदेव के आदेश से हिरन काट कर एक बड़े बर्तन में पकाया जाने लगा। हिरन पकने की गन्ध ने ब्राह्मणों तथा अन्य लोगों के ध्यान को आकर्षित कर लिया। उनका विश्वास था सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण के अवसर पर आग जलाकर किसी चीज को पकाना बड़ा पापपूर्ण कार्य है। गुरु महाराज के इस कार्य से उनके क्रोध की सीमा न रही। तुरन्त ही वे गुरु जी के पास उपस्थित हुए। जब उन्हें सारी चीजों की जानकारी हुई, तो वे क्रोध में और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। कुछ लोगों ने कहा, "यह महान् पापी है।" कुछ व्यक्तियों ने ललकारा, "यह नास्तिक है, नास्तिक।" कुछ लोगों ने अपनी सम्मति इस प्रकार प्रकट की, "यह नीच जाति का है और अपने इस पापपूर्ण कार्य से तीर्थ की पवित्रता नष्ट कर देगा।" सब के सब क्रोध में पागल हो गए। इस क्रोध के कारण वे अपना स्नान और दान भी भूल गए। बड़ा तहलका और हंगामा मच गया। उन लोगों ने गुरु जी महाराज को घेर लिया। उन्होंने गुरु जी महाराज को बड़ी बुरी तरह डाँटा-फटकारा, डराया-धमकाया और भद्दी-भद्दी गालियाँ दीं। किन्तु गुरु महाराज निश्चल थे। वे एकदम शान्त और निश्चल थे। उनके चेहरे पर दिव्य मुस्कान थी। वे उनकी मूर्खता और उद्दण्डता पर करुणा और दया से मुस्करा रहे थे। उन्होंने गुरु महाराज की जब यह मुद्रा देखी, तो उनका गरम दिमाग ठंडा होने लगा और उनका उद्वेलित हृदय शान्त होने लगा। उनके सारे हिंसात्मक विचार प्रकृतिस्थ हो गए। वे गुरु जी के बिलकुल पास पहुँच गए, उनके उस विचित्र कार्य पर प्रश्न करने लगे। किन्तु उनकी उत्तेजना अभी तक पूर्णतया समाप्त नहीं हुई थी। गुरु महाराज ने बड़े शान्त भाव से उन्हें बैठकर समस्या को सुलझाने का आमंत्रण दिया। वे सब गुरु जी के चारों तरफ बैठ गए। नानू पण्डित सबके सिरताज थे। नानू पण्डित को अपने पाण्डित्य का बहुत अभिमान था। मांस-भक्षण के प्रश्न को लेकर नानू पंडित ने तर्क-वितर्क प्रारम्भ किया। गुरु महाराज ने इस प्रश्न का उत्तर एक वाणी के द्वारा दिया, जिसका भाव इस प्रकार है—"सर्वप्रथम वीर्य का स्त्री के पेट में टिकना मांस के अन्तर्गत होता है। फिर यह मांस के लोथड़े के रूप में माता के गर्भ के अन्तर्गत वास करता है। जब उस मांस पिण्ड में जीव पड़ता है—जीव का आगमन होता है, तो उसे मांस का ही मुंह मिलता है, उसकी हड्डियाँ, चाम और शरीर भी मांस के बनते हैं। जब मनुष्य बच्चे के रूप में माता के गर्भ से बाहर निकलता है, तो पहले-पहल वह अपना ग्रास-आहार-पाने के लिए मांस के बने स्तन को अपने मुँह में रख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, ताकि उसे पीने को दूध मिले। उसका मुँह भी मांस का ही है, जीभ भी मांस की है और उसकी साँसें भी मांस के भीतर आती-जाती हैं। बड़ा होने पर विवाह करने के पश्चात्, वह मांस की बनी स्त्री को अपने घर ले आता है। मांस से ही मांस की उत्पत्ति होती है, उसके सारे सम्बन्ध भी मांस से ही होते हैं। सद्गुरु से मिलने पर हरी का हुक्म समझने पर मनुष्य को सच्चा रास्ता प्राप्त होता है। नानक का कथन कि मनुष्य अपने प्रयत्नों से इस संसार से नहीं छूटता, प्रत्युत ऐसी अहंकार की बातों से उसका नाश होता है।

"मूर्ख लोग 'मांस-मांस' कह कर झगड़ा करते हैं। वे ज्ञान-ध्यान कुछ भी नहीं जानते। वे यह नहीं समझते कि कौन-सी वस्तु मांस कहलाती है और कौन-सी साग और किस वस्तु में पाप समाया है। देवताओं के स्वभाव को समझ कर कि वे लोग मांस खाना पसन्द करते हैं, गैंडे, मार कर होम-यज्ञ किये जाते थे। जो व्यक्ति मांस खाना छोड़कर, उसके समीप बैठने पर नाक पकड़ते हैं कि बदबू आ रही है, वे रात को मनुष्यों का भक्षण कर जाते हैं। वे लोग दम्भ-पाखण्ड करके लोगों को दिखाते हैं, किन्तु उन्हें ज्ञान-ध्यान कुछ भी नहीं सूझता। नानक का कथन है कि अन्धे से क्या कहा जाय ? यदि उससे कहा भी जाय, तो कहना नहीं समझता। वही व्यक्ति अन्धा है, जो अन्धे—अविवेकपूर्ण कर्मों को करता है। उसके हृदय में ज्ञान की आँखें नहीं हैं। माता-पिता को रक्त-रज और वीर्य से उत्पन्न हुए, पर मछली और मांस नहीं खाते। जिस रात्रि मे स्त्री-पुरुष का संयोग होता है, तो वहाँ भी मांस ही कर्म करते हैं, तात्पर्य यह कि मांस के ही शरीर से भोग-विलास करते हैं। वीर्य मांस-निर्मित है, इस प्रकार हम सब मांस के ही भाँड़े हैं। ज्ञान ध्यान तो कुछ नहीं सूझता, कहलाते हैं सयाने पंडित। हे पंडित, बकरे आदि का बाहर से लाया हुआ मांस तो बुरा होता है, और घर की स्त्री, पुत्रादिकों का मांस प्यारा होता है। जितने भी जीव-जन्तु हैं, सभी मांस द्वारा बने हुए हैं। जीव भी माता के उदर के भीतर मांस में ही वास करता है। जिनका गुरु अन्धा होता है, वे न खाने वाली, अभक्ष्य वस्तुएँ, तात्पर्य यह है कि हराम की कमाई तो खाते हैं, किन्तु भक्ष्य वस्तुएँ, तात्पर्य यह है कि मांसादिक त्याग देते हैं। वीर्य मांस निर्मित गर्भ-में स्थित होता है और मांस के लोथड़े के रूप में मनुष्य का जन्म होता है, इस प्रकार हम सब मांस के पात्र हैं। ज्ञान-ध्यान तो कुछ सूझता नहीं, पर कहलाते हैं सयाने पण्डित। हिन्दुओं के पुराणों तथा मुसलमानों के कतेब आदि में भी मांस खाना मिलता है। चारों युगों में मांस का प्रयोग होता रहा है। यज्ञ और विवाह आदि सुहावने—शुभ कार्य हैं, किन्तु उन अवसरों पर मांस का प्रयोग होता है। जितने भी स्त्री-पुरुष हैं, सभी मांस से उत्पन्न होते हैं, पातशाह और सुलतान आदि बड़े-बड़े व्यक्ति भी मांस से ही उत्पन्न होते हैं। हे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित, यदि तेरी दृष्टि में दान देने वाले वे लोग नरक जाते हुए दिखाई पड़ते तो उनका दान तुम्हें नहीं लेना चाहिए। देने वाला तो नरकगामी हो और वाला स्वर्गगामी ! यह जबर्दस्ती तो देखो। पण्डित बनता तो बहुत चतुर है लोगों को धर्म की बातें समझाता है, किन्तु स्वयं कुछ भी नहीं समझता। पंडित, तू यह जानता ही नहीं कि मांस कहाँ से उत्पन्न हुआ है। जब से गन्ने और कपास की उत्पत्ति हुई है, तब से ही त्रिभुवन की उत्पत्ति भी जाती है। जल को मैं अनेक विधि से अच्छा मानता हूँ, यह परम पवित्र है इसमें विकार भी बहुत हैं, क्योंकि जल ही अपना स्वरूप परिवर्तित करके रसों में निर्मित हो जाता है और मांस आदि सारी वस्तुएँ इसी से बनती हैं अतएव इन सभी रसों का त्याग किया जाय, तभी संन्यासी—त्यागी हुआ सकता है किन्तु संसार में रहते हुए, सभी रसों का त्याग असम्भव है। अतएव पण्डित का सारा पक्ष—त्याग का पक्ष—ग़लत सिद्ध होता है, नानक यह विचार करके कहता है[1]।"

इसके अनन्तर नानू पण्डित ने सूर्य-ग्रहण पर प्रश्न किया। गुरु महाराज ने इस प्रश्न का समाधान भी बड़े तार्किक और वैज्ञानिक ढंग से किया। उन्होंने कहा सूर्य यहाँ से बहुत दूरी पर है। उस सूर्य का ग्रहण, यहाँ से दान देकर छुड़ाया जा सकता है ? सूर्य-ग्रहण तो स्वाभाविक वस्तु है। ग्रहण का त्याग उतना ही स्वाभाविक है। ब्राह्मणों ने लोगों को भुलावे में डाल कर सूर्य-ग्रहण को अपनी आय का साधन बना लिया है। यह कैसा धर्म है ? तुम उन पापों दुष्कर्मों से अपनी मुक्ति क्यों नहीं करते, जो रात-दिन तुम्हें ग्रसे हुए हैं। सूर्य-ग्रहण तो थोड़े समय के लिये लगता है, पर ये बुरे कर्म तो तुम्हें युग-युगान्तरों से हैं। पहले इन दुष्कर्मों से अपना उद्धार करो। तुम मांस खाना तो बुरा समझते हो, पर जीवित मनुष्यों की गाढ़ी कमाई का खून तो अपने अत्याचारों से पीते रहते हो। क्या यह मांस खाने से बदतर नहीं है ? अतः, मेरे मित्रो, बातों में कुछ भी नहीं रखा है। इन ढकोसलों को छोड़ो। सच्चे मनुष्य परमात्मा का अहर्निश चिन्तन करो। प्रेम और सेवा का व्रत लो। मनुष्यों सेवा करनी ही परमात्मा की सच्ची उपासना है। शरीर को स्वस्थ्य और रखो। इसे परमात्मा की प्राप्ति का साधन समझो। इस शरीर से शुभ कर्मों आचरण करो। बुरे कर्मों में जाने से, इसे रोको। यही तप, संयम और योग साथ ही इसके माध्यम से परमात्मा का रात-दिन ध्यान करो।'

---

१. पहिला मासहु''नानकु कहै विचारा, मलार की वार महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस शास्त्रार्थ का परिणाम यह हुआ कि नानू पण्डित तथा अन्य लोग भक्ति भाव से गुरु नानकदेव के चरणों में गिर पड़े और उन्होंने मनसा, वाचा, कर्मणा अपने को उनकी मर्जी में समर्पित कर दिया। गुरु जी महाराज ने उन्हें अपने धर्म में दीक्षित किया। जिस स्थान पर शास्त्रार्थ हुआ था, वहाँ अब एक गुरुद्वारा स्थित है, जहाँ लोग जाकर शान्ति पाते हैं। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय बारह

हरिद्वार में

कुरुक्षेत्र से चलकर गुरु नानकदेव हरिद्वार की ओर रवाना हुए। जहाँ-जहाँ वे पहुँचे, वहाँ-वहाँ उन लोगों को सच्चे धर्म में लगाया, जो रूढ़ियों और बाह्याडम्बरों को ही सब कुछ समझ बैठे थे। उन्होंने गुमराह लोगों को सिखाया, 'परमात्मा वेश और पाखण्ड से नहीं रीझता। वह तो सच्चे प्रेम, सच्चे कर्म, मानव-प्रेम और सेवा के वशीभूत होता है। परिश्रम और ईमानदारी से अपनी रोटी कमानी चाहिए। साथ ही गरीबों और जरूरतमंदों को अपना ही अंग समझ कर, उन्हें अपनी कमाई में हिस्सेदार बनाकर खुद भोजन करना चाहिए। इससे शरीर और मन दोनों पवित्र होते हैं। परिश्रम की कमाई को बाँट कर खाने से अन्तःकरण पवित्र होता है। पवित्र अन्तःकरण में परमात्मा का निवास होता है। इस संसार में अपनी कोई भी वस्तु नहीं है। शरीर छोड़ने पर, संसार की सारी वस्तुएँ यहीं रह जाती हैं। अतः जरूरतमन्दों की सहायता करके अपने शरीर और मन को पवित्र बनाना चाहिए। अपने को परमात्मा का यन्त्र समझ कर, उसकी मर्जी के अनुसार रहना चाहिए। सुख-दुःख को परमात्मा की देन समझ कर, उसमें सम-बुद्धि रखनी चाहिए। भगवत्-प्राप्ति का यह राजमार्ग है। इसी को राजयोग अथवा सहजयोग समझना चाहिए।' जनता ने गुरु महाराज की उपर्युक्त शिक्षाओं का हार्दिक स्वागत किया। अनेक लोग उनके शिष्य हुए। इस प्रकार गुरु महाराज जहाँ-जहाँ जाते थे, वहाँ-वहाँ निष्काम कर्मयोग और प्रेमाभक्ति की धार बहाते जाते थे। लोग उस धार में स्नान कर अपने को कृतकृत्य समझते थे।

हरिद्वार पहुँच कर गुरु महाराज ने देखा कि वहाँ भी लोग रूढ़ियों और वाह्याडम्बरों के शिकंजे में जकड़े हैं। लोग बाह्य कर्म तो अवश्य करते हैं, किन्तु उन कर्मों से उनका मन नहीं द्रवीभूत होता। इसके विपरीत उसमें अहंकार की वृद्धि दिन दूनी और रात चौगुनी होती है। गुरु महाराज ने लोगों को सही रास्ता बताने का संकल्प लिया। वहाँ उन्होंने देखा कि लोग गंगा के पवित्र शीतल जल में स्नान कर रहे हैं, ओंठ से परमात्मा के नाम का उच्चारण कर रहे हैं अथवा किसी देवी-देवता की स्तुति कर रहे हैं; किन्तु उनका मन कहीं दूसरी जगह है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे बाहरी भक्ति में तो अवश्य लगे हैं, पर भीतरी भक्ति अथवा प्रेमाभक्ति से कोसों दूर हैं। गुरु महाराज को लोगों के इस कृत्य पर, अत्यधिक करुणा हुई और उन्होंने तत्काल उपदेश का रास्ता अपने मौलिक ढंग से ढूँढ़ निकाला।

उन्होंने देखा कि बहुत से लोग स्नान करते समय पूर्व दिशा में अंजुली में जल भर कर उलच रहे हैं। गुरु नानकदेव ने अनुभव किया कि अंधविश्वास के कारण ही लोग इस क्रिया को यांत्रिक रूप से किये जा रहे हैं। उन्होंने तत्काल अपनी अंजुली में जल भर-भर कर पश्चिम दिशा में उलचना प्रारंभ किया। जिन लोगों ने महाराज जी को यह कृत्य करते देखा, वे सब अचंभे में आ गए। हिन्दू तो जलदान की क्रिया पूर्वाभिमुख होकर करते हैं, यह किस धर्म का अनुयायी है, जो पश्चिम की ओर जल दे रहा है। इस बात से गुरु जी के पास हजारों की भीड़ एकत्र हो गई, साथ ही सैकड़ों प्रश्नों की झड़ी लग गई, "भाई तुम कौन हो ? क्या हिन्दू हो ? यदि हिन्दू हो, तो पश्चिम में, मक्का की ओर क्यों जल दे रहे हो ? क्या मुसलमान धर्म में जल देने का कोई विधान है ? क्या तुम मुसलमान हो ? यदि हो, तो तुम हिन्दुओं के तीर्थ में क्यों आए हो ?"

इन प्रश्नों को सुनकर गुरु नानकदेव ने मुस्करा कर कहा, "मित्रो, जरा धैर्य रखिए। क्या मैं जान सकता हूँ कि आप लोग पूर्व दिशा में क्यों जल दे रहे हैं ?"

हिन्दू तीर्थयात्रियों ने उत्तर दिया, "हम अपने पूर्वजों को पूर्व दिशा में जल दे रहे हैं, ताकि उनकी तृषित आत्मा शान्ति प्राप्त करे।"

गुरु नानकदेव ने पूछा, "वे कहाँ हैं ? कितनी दूरी पर हैं ?"

यात्रियों ने उत्तर दिया, "वे करोड़ों मील की दूरी पर, परलोक में हैं।"

गुरु नानकदेव ने कहा, "इस पृथ्वी पर नहीं हैं। अच्छा, धन्यवाद।" ऐसा कह कर, उन्होंने पश्चिम दिशा में बड़े जोश से दुवारा जल फेंकना प्रारम्भ किया। उनके चेहरे पर संतोष की मुस्कान थिरक रही थी। लोग उनकी इस अजीब क्रिया पर चकित थे। अतः लोगों ने फिर प्रश्न किया, "भाई, बताओ, यह क्या कर रहे हो ?"

गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, "भाई थोडी देर रुकिये। वर्षा के अभाव में मेरे खेत सूख रहे हैं। पहले मैं उन्हें सींच लूं, बाद में आपके प्रश्नों का उत्तर दूंगा।"

गुरु जी के इस कथन पर यात्रियों का कुतूहल और भी बढ़ा और उन्होंने पूछा, "पर तुम्हारे खेत हैं कहाँ ?"

गुरु जी का उत्तर था, "क्यों ? वे खेत इसी दुनिया में हैं। यहाँ से कुछ सौ मील की दूरी पर हैं। मुझे अपना काम करने दीजिए।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु जी महाराज के इस उत्तर से कुछ यात्रियों ने तो उन्हें पागल समझा। कुछ लोगों ने आश्चर्य किया कि आज भी ऐसे मूर्ख इस दुनिया में मौजूद हैं। एक ने उन्हें यह सलाह दी, "भाई, तुम्हारा यह सब परिश्रम व्यर्थ है। तुम्हारा फेंका हुआ जल तुम्हारे खेतों तक पहुँच नहीं रहा है। वह तो यहीं गंगा में ही गिर रहा है। तुम्हारे खेत तो सैकड़ों मील की दूरी पर हैं। भला यह जल उन्हें किस प्रकार सींच सकता है ?"

गुरु महाराज तन कर खड़े हो गए और उन्होंने कहा, "आप इस बात को मान रहे हैं ? यदि मेरा दिया हुआ जल इस पृथ्वी पर कुछ सौ मील की दूरी पर स्थित खेतों को नहीं सींच पाएगा, तो आप लोगों का दिया हुआ जल दूसरे संसार में करोड़ों मील की दूरी पर आपके पूर्वजों तक किस प्रकार पहुँच पाएगा ?"

गुरु जी के इस प्रश्न ने लोगों को चक्कर में डाल दिया। वे लोग शर्म से बगलें झाँकने लगे। इस प्रकार उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था। उन्हें अनुभव हो गया कि ब्राह्मणों द्वारा वे लोग किस प्रकार गुमराह किये जा कर लूटे जा रहे हैं। उन्हें विश्वास हो गया कि ऐसी क्रियाएँ सचमुच प्रदर्शन मात्र हैं। इनसे कोई आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती। उन्होंने गुरु महाराज से प्रार्थना की, "महाराज हम लोगों को सही रास्ता बताइए, जिससे परमात्मा की प्राप्ति हो।"

गुरु महाराज ने कहा, "भाई बाह्याडम्बरों और अन्धविश्वासों से परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती। यदि हमारा मन संसार के भोगों में लगा हुआ है, तो गंगास्नान करने से, माला फेरने से क्या लाभ हो सकता है ? साधक को परमात्मा की स्थिति की सतत प्रतीति और विश्वास होना चाहिए। प्रभु हमारे शुभ और अशुभ कर्मों को निरन्तर देख रहा है—ऐसा विश्वास जिसे रहेगा, वह बुरे कर्म कर ही नहीं सकता। घटघटव्यापी परमात्मा प्रत्येक मनुष्य के भीतर निवास करता है। अतः उससे कोई भी बुरा कर्म छिपाया नहीं जा सकता। यदि सभी लोग ऐसा समझने लगें, इसी के अनुसार कार्य करने लगें, तो संसार में पाप रह ही न जाय और सारा संसार स्वर्ग में परिणत हो जाय।" तदनन्तर गुरु महाराज ने उन्हें 'सत्य नाम' की महिमा बतलाई। उस नाम का प्रसाद देकर उन्हें नया जीवन प्रदान किया। उनकी आत्मा को 'अकाल पुरुष', 'निर्भय पुरुष' से युक्त कर दिया।

इसके बाद लोग जहाँ-तहाँ खिसक गए। कुछ ब्राह्मण और साधु गुरु नानक के पास मौजूद थे। उन लोगों ने गुरु महाराज पर लांछन लगाना प्रारम्भ कर दिया कि वे आचार-सम्बन्धी पवित्रता का उल्लंघन कर रहे हैं। वे अपना भोजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौके में नहीं करते। इसके अलावा वे सब का लाया हुआ भोजन बिना किसी भेदभाव के ग्रहण कर लेते हैं। वे इस ओर भी ध्यान नहीं देते कि भोजन लाने वाला किस जाति का है। ब्राह्मण और साधु उनके पास पहुँचे और गुरु महाराज को भला-बुरा कहना प्रारम्भ किया। "आप शास्त्रों में प्रतिपादित आचार-सम्बन्धी पवित्रता का पालन नहीं कर रहे हैं। आप क्यों प्रत्येक जाति के मनुष्य के हाथ का लाया हुआ भोजन करते हैं ?"

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, "कैसी पवित्रता ? कैसे नियम ? मेरा शरीर आप लोगों के शरीर से कहीं अधिक साफ-सुथरा है। मैं शरीर की सफाई आप लोगों से अधिक रखता हूँ। आप लोगों में से तो किसी-किसी का शरीर धूल-धूसरित है, किसी ने शरीर पर राख ही पोत रखी है। मेरे वस्त्र भी आप लोगों के वस्त्रों से अधिक स्वच्छ हैं अथवा उन लोगों के वस्त्रों से भी अधिक साफ़ हैं, जिन्हें आप पवित्र कहते हैं। जो लोग मुझे भोजन ला कर देते हैं, वे भी आप लोगों की अपेक्षा अधिक साफ और पवित्र हैं। अतः मैं पवित्रता के नियमों को तोड़ कहाँ रहा हूँ ? मेरे दोस्तो ! इस प्रकार की भ्रान्त धारणाओं का परित्याग कीजिए। आप लोग अपने-अपने शरीर की सफाई करना सीखिए, तत्पश्चात् अपने मन को भी स्वच्छ रखने की चेष्टा करें। ऐसा करने से आप लोगों को संसार का कोई भी व्यक्ति मलिन नहीं बना सकता। बाह्य और आन्तरिक शुद्धि बरतने से किसी मनुष्य का स्पर्श आपको अपवित्र नहीं कर सकता और न तो आपका भोजन ही स्पर्श से अपवित्र हो सकता है।" इतना कह कर गुरु नानक-देव ने एक 'वाणी' का उच्चारण किया, जिसका भाव इस प्रकार है—

'हिन्दू कहते हैं कि हमारे चौके में कोई न आए। चौका देकर लकीर खींच देते हैं। ताकि उस लकीर को कोई अन्य व्यक्ति न पार करें। परन्तु इस चौके में झूठे लोग, अपवित्र व्यक्ति आदरपूर्वक बैठते हैं वे चौके में बैठकर कहते हैं— 'मत छुओ, मत छुओ, नहीं तो हमारा भोजन अपवित्र हो जायगा।' ऐसे मनुष्य अपवित्र शरीर से मलिन कर्म करते हैं और जूठे—अपवित्र मन से कुल्ले करते हैं। नानक कहता है कि दिखावे में कुछ नहीं है, सच्चे प्रभु का ध्यान करो। सच्ची और आन्तरिक पवित्रता होगी, तभी सत्य-परमात्मा की प्राप्ति होगी।'

जिन ब्राह्मणों और साधुओं ने गुरु महाराज की तर्कपूर्ण वाणी का श्रवण किया, उन्हें अब और कुछ सुनने की आवश्यकता नहीं रह गयी। उन लोगों ने गुरु जी महाराज को साष्टांग प्रणाम किया और उनसे सच्ची शिक्षा की कामना की। गुरु जी ने उन्हें सच्चे आध्यात्मिक जीवन का उपदेश दिया, ऐसा जीवन जिसमें परमात्मा की रागात्मिका भक्ति, प्रेम और मानव-सेवा का सर्वोच्च स्थान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन प्रातःकाल गुरु नानकदेव ने एक ब्राह्मण को देखा जिसके मस्तक पर टीका, गले में यज्ञोपवीत तथा कटि में लँगोटी मात्र थी। वह ब्राह्मण चौके में अपना भोजन बना रहा था। गुरु महाराज ने उस ब्राह्मण की रहनी से यह जान लिया कि इसके भीतर दम्भ और पाखण्ड की अधिकता है, आन्तरिक भक्ति का लेश मात्र भी नहीं है; केवल अहंकारपूर्ण पाखण्ड मात्र है। उस ब्राह्मण के अन्तर्गत जातिगत अहंकार की दुर्भावना कूट-कूट कर भरी है। गुरु नानक महाराज ने उसे सही रास्ता दिखाना चाहा। अतः चुपके से उसके चौके में घुस कर कहा, 'महाराज, मैं अपना चूल्हा जलाने के लिए थोड़ी आग ले सकता हूँ?' ब्राह्मण क्रोध से गरज उठा, 'तुमने मेरे चौके को भ्रष्ट कर दिया। तुम कौन हो? भागो यहाँ से, नहीं तो जलती हुई लकड़ी से प्रहार करूँगा और तुम्हारा दिमाग दुरुस्त हो जायगा।'

गुरु जी महाराज ने अत्यन्त शान्त भाव से कहा, 'मेरे मित्र, शान्त होइए। आप धार्मिक पुरुष हैं, साधु हैं, इतना अधिक क्रोध आपको शोभा नहीं देता। दान और सेवा ही साधुओं के आभूषण हैं। दान और सेवा सभी धर्मों के प्राण हैं। इतनी संकीर्णता आपको शोभा नहीं देती। मनुष्य का स्पर्श किसी आदमी अथवा उसके भोजन को अशुद्ध नहीं बनाता।'

क्रुद्ध ब्राह्मण गरज कर बोला, 'इसके माने यह कि मैं अपने चौके में शूद्रों और नीचों को घुसाता फिरूँ? उनका स्पर्श मुझे और मेरे भोजन को अपवित्र नहीं कर देगा? दूसरों की सुविधा के लिए मैं अपना धर्म छोड़ता फिरूँ?

गुरु नानकदेव ने मुस्करा कर ब्राह्मण से कहा, 'क्या आपको पूर्ण विश्वास है कि आप इस चौके में अकेले हैं? मेरी समझ में चार अति नीच वर्ण की स्त्रियाँ आपके चौके में आपके ही साथ मौजूद हैं। वे आपके शरीर के भीतर उपस्थित है।'

ब्राह्मण ने कहा, 'मुझसे पहेलियाँ मत बुझाओ। अपने मन्तव्य को साफ़-साफ़ कहो। मैं तो अपने चौके में अकेला हूँ। इस चौके में मेरे अलावा क्या कोई दूसरा व्यक्ति है? वे निम्न जाति की कौन-सी चार स्त्रियाँ मेरे साथ हैं?'

ब्राह्मण की बातों को सुनकर गुरु नानक महाराज ने उसे इस प्रकार उत्तर दिया—

'शरीर में स्थित कुबुद्धि डोमिनी है, निर्दयता कसाइन है, परनिन्दा मेहतरानी है और क्रोध चाण्डालिनी है—ये चारों तुम्हारे भीतर स्थित हैं। इन चारों ने मिलकर, (ऐ ब्राह्मण) तुम्हें बुरी तरह से ठग लिया है। यदि ये चारों हृदय में एक साथ बैठी हों, तो बाहरी चौके की शुद्धि के लिए, लकीर खींचने से क्या लाभ? हे नानक, जो मनुष्य सत्य, संयम और शुभ कर्मों को चौका शुद्ध करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए लकीरें समझते हों, नाम-जप को तीर्थ-स्थान मानते हों, जो औरों को भी पाप वाली शिक्षा नहीं देते, वे ही मनुष्य आगे—परमात्मा के दरबार में उत्तम गिने जाते हैं।

'जिस पर प्रभु—परमात्मा कृपा करे, तो वह क्या हंस और क्या बगुला? अर्थात् सर्वशक्तिमान् प्रभु चाहे तो बगुले (बुरे व्यक्ति) को भी हंस (पुण्यात्मा) बना देता है। यदि प्रभु चाहे, तो बाहरी दृष्टि से अच्छे दीखने वाले को नहीं, अन्दर से भी गंदे आचरण वाले कौवे को हंस बना देता है।'[1]

ब्राह्मण ने अपनी गलती स्वीकार की। गुरु नानकदेव ने उसे रूढ़ियों और बाह्याचारों के बंधनों से मुक्त किया। वह गुरु जी महाराज का सच्चा शिष्य बन गया। इसी प्रकार अन्य ब्राह्मणों और अब्राह्मणों को गुरु जी महाराज ने सच्चा पथ दिखलाया।

इन घटनाओं के पश्चात् कुछ विद्वान् ब्राह्मणों ने आपस में विचार किया, 'यदि किसी प्रकार यह साधु हम लोगों के पंजे में आ जाय, तो हम लोगों के धर्म की बहुत बड़ी प्रतिष्ठा और गौरव होगा। यह व्यक्ति हिन्दू धर्म का दूसरा शंकराचार्य होगा और यह पतनोन्मुख हिन्दू धर्म का उद्धारक सिद्ध होगा। अतः हमें उसके पास चलकर प्रयत्न करना चाहिए।'

वे विद्वान् ब्राह्मण गुरु महाराज के पास पहुँचे और उन्होंने आसन ग्रहण किया। पारस्परिक औपचारिक वार्ता के अनन्तर उन सबों ने गुरु जी की आध्यात्मिक महत्ता स्वीकार की और उनके महान् व्यक्तित्व की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने गुरु महाराज से निवेदन किया, 'महाराज, आप हम सबके नेता बनने की कृपा कीजिए।' इस निवेदन के बाद उन लोगों ने हिन्दू देवी-देवताओं के समान उनका पूजन किया। उनकी आरती उतार कर प्रदक्षिणा की। साथ ही मंत्रों द्वारा उनके सम्मुख हवन किया।

गुरु जी ने उत्तर दिया, 'भाइयो, परमात्मा के अतिरिक्त मेरा अन्य किसी में अनुराग नहीं है। सर्व-सृष्टि-निर्माता एक परमात्मा को छोड़ कर मैं किसी अन्य देवी-देवता की आराधना नहीं कर सकता। इन यज्ञादिकों द्वारा काल्पनिक शक्ति-हीन-देवी-देवताओं की आराधना से क्या लाभ है? यज्ञादिकों में घी तथा अन्य सामग्रियों के जलाने से क्या लाभ है? ये यज्ञ की वस्तुएँ यदि दुखियों और भूखों को खिलाई जायँ, तो परमात्मा अधिक प्रसन्न होगा। दरिद्र-नारायण की सेवा द्वारा प्रभु-परमात्मा का सुन्दर यज्ञ होगा।' गुरु महाराज के इन क्रान्तिकारी विचारों को सुन कर, ब्राह्मण लोग वहाँ से चुपचाप चले गए।

---

१. कुबुधि डूमणी...कागुहु हंसु करेइ।—सिरी राग की वार, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय तेरह

शेख़ शरफ और सिकन्दर लोदी

थोड़े दिनों के बाद गुरु नानकदेव हरिद्वार से चल पड़े। अपनी इच्छा के अनुसार वे पर्यटन करते रहे। सभी स्थानों पर लोगों ने गुरु जी की शिक्षाएँ बड़े उत्साह से सुनीं। 'परमात्मा के असीम वात्सल्य और मानव-बन्धुत्व' का सन्देश लोगों ने बड़े ध्यान से सुना। लोगों ने गुरु महाराज के भक्ति पूर्ण और सामाजिक उत्थान सम्बन्धी गीतों को बड़े अनुराग से श्रवण किया। उनके श्रवण से उन्होंने अपने दुष्कर्मों, वाह्याडम्बरों और रूढ़ियों का परित्याग किया। अपनी आत्मा के पवित्र प्रकाश का अनुभव किया और अन्त में उनके शिष्य बनते गए। थोड़े समय पश्चात् गुरु जी महाराज पानीपत पहुँचे। उस समय वहाँ एक प्रसिद्ध मुसलमान सूफ़ी फ़कीर रहते थे। उनका नाम था शेख शरफ़। बहुत से मुसलमान उनके अनुयायी थे। वे परमात्मा के भक्त और सच्चे फकीर थे। उन्होंने परमात्मा के साक्षात्कार के लिए अहर्निश कठोर तपस्या की थी। पर उन्हें अपनी मनोकामना में सिद्धि नहीं प्राप्त हुई थी। अतएव वे बड़े निराश थे।

जिस समय गुरु नानकदेव शेख के निवास स्थान पर पहुँचे, उस समय शेख की मानसिक दशा अत्यधिक निरुत्साहित थी। एक कुएँ के पास गुरु महाराज ने अपना आसन जमाया था। शेख का एक शिष्य अपने गुरु के लिये पानी लेने उस कुएँ पर गया। गुरु नानकदेव को मुसलमानी फ़कीर का लबादा पहने और फ़ारसी टोपी पहने हुए देख कर उन्हें मुसलमान दरवेश समझ कर 'सलाम आलेकुम' कह कर अभिवादन किया। गुरु महाराज ने मुस्करा कर 'सलाम अलेख' कह कर अभिवादन का जवाब दिया। अभिवादन की इस नवीन शैली से शेख चकित हो गया। तुरन्त ही अपने 'पीर' के पास पहुँच कर उसने निवेदन किया, 'शेख साहब, एक फकीर आया है, वह 'सलाम आलेकुम' का जवाब 'सलाम अलेख' कह कर देता है।'

अपने शिष्य की बात सुन, शेख साहब भी चक्कर में पड़ गए। उन्होंने इस प्रकार सोचना प्रारम्भ किया, 'यह व्यक्ति कौन हो सकता है? यह हिन्दू तो है नहीं, क्योंकि कोई भी हिन्दू 'सलाम आलेकुम' का तिरस्कार नहीं कर सकता। हिन्दू तो राज्य-धर्म की अवहेलना का परिणाम भलीभाँति जानता है। यदि मुसलमान है, तो अपने धर्म की हँसी, स्वयं नहीं कर सकता। इसमें कोई-न-कोई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहस्य अवश्य है, निश्चित ही यह व्यक्ति या तो पागल है या पहुँचा हुआ फ़कीर है, खैर मैं उससे मिलकर सारी बातें मालूम करता हूँ।'

गुरु नानकदेव का किसी को अपनी ओर आकर्षित करने का यह बिलकुल अजीब तरीका था। जब लोग उनके इस अजीब तरीके से उनकी ओर आकर्षित हो जाते थे, तो उन्हें अपनी बातें कहने का अच्छा मौका मिल जाता था। इस प्रकार पहले वे लोगों में कुतूहल और जिज्ञासा जगाते थे, तत्पश्चात् अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते थे।

शेख साहब सीधे गुरु महाराज के पास पहुँचे। उन्होंने देखा कि गुरु नानकदेव अधमुँदी आँखों से परमात्मा के ध्यान में बैठे हैं। उनके मुखमण्डल पर परमात्मा-साक्षात्कार की अलौकिक ज्योति उद्भासित हो रही है। दर्शन मात्र से शेख जी के अन्तर्गत एक अलौकिक उल्लास और आनन्द का संचार हुआ। उनके निराश हृदय में आशा की लहर दौड़ गई। शेख जी गुरु नानकदेव के सन्निकट बैठ गए। पारस्परिक औपचारिक वार्ता के अनन्तर शेख साहब ने गुरु महाराज और उनके धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। शेख की जिज्ञासा सुनकर गुरु नानकदेव ने एक ऐसे पद का गान किया, जिसमें शेख साहब के जीवन, उनकी तपस्या और मनोदशा की पूरी झाँकी दिखलाई पड़ती थी। साथ ही उनकी निराश-भावना का साकार चित्रण भी प्रदर्शित हुआ था। उस पद के द्वारा शेख साहब को निर्गुण और कृपालु परमात्मा के सान्निध्य की प्रतीति हुई। पद समाप्त होने के बाद पीर साहब ने गुरु जी के चरणों को पकड़ लिया। चरण पकड़ते ही शेख जी के सारे शरीर के भीतर आध्यात्मिक पवित्रता, शान्ति और आनन्द की बिजली कौंध गई। उनकी आँखों में एक नवीन चमक आ गई, उनके शरीर में नवीन स्फूर्ति का संचार हुआ, उनका हृदय अपार शान्ति और आनन्द से परिपूर्ण हो गया और उनकी आत्मा में नवीन आध्यात्मिक जीवन की शाश्वत लहर व्याप्त हो गई। पीर साहब गुरु महाराज के शिष्य बन गए। पीर साहब के सारे शिष्य भी गुरु महाराज के शिष्य हो गए।

इस प्रकार पीर साहब को आध्यात्मिक जीवन में लगा कर, गुरु महाराज दिल्ली की ओर अग्रसर हुए। उस समय दिल्ली का बादशाह, सिकन्दर लोदी था। सिकन्दर लोदी अत्यधिक असहिष्णु और धर्मान्ध मुसलमान था। वह हिन्दुओं के ऊपर घनघोर अत्याचार करके उन्हें मुसलमान मजहब स्वीकार करने के लिए बाध्य कर रहा था। उनके लिए दो ही रास्ते थे—मुसलमान मजहब को स्वीकार करना अथवा मृत्यु का वरण करना। जो धर्म-परायण लोग शान्ति, सहिष्णुता, सहृदयता, मैत्री भाव का उपदेश देते थे, उन सबको चुन-चुन कर सिकन्दर लोदी ने घोर यंत्रणाएँ दीं। उसकी धर्मान्धता का कोपभाजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीर, नामदेव, रविदास अथवा रैदास ऐसे प्रसिद्ध सन्तों को भी होना पड़ा था। गुरु नानकदेव की दिल्ली-यात्रा के समय में भी, बहुत से साधु-फ़क़ीर और उनमें से अधिकांश हिन्दू-साधु अपनी धार्मिक मनोवृत्ति के कारण क्रूर सजाएँ भोग रहे थे। उनसे चक्कियाँ पिसवाई जाती थीं। गुरु नानकदेव और मरदाना भी गिरफ्तार करके जेल के सीखचों के भीतर डाल दिए गए। अन्य-साधुओं एवं फ़क़ीरों की भाँति उन दोनों से भी चक्की में अनाज पीसने को कहा गया। गुरु नानक महाराज ने थोड़ी देर तक चक्की पीसी। उस स्थल पर जेलर के भयंकर आतंक से कमज़ोर, निरपराध साधुओं को चक्की पीसते देखकर गुरु महाराज का कोमल हृदय द्रवीभूत हो गया। भावातिरेक से उनका सारा शरीर काँपने लगा। उनके चेहरे पर अद्‌भुत प्रकाश दमकने लगा। उन्होंने मरदाना को आज्ञा दी, "भाई मरदाना रवाब उठाओ, बड़ा सुन्दर भाव आया है।" मरदाना ने रवाब उठा लिया। तत्पश्चात् गुरु जी महाराज ने अपने कुछ उन विशिष्ट पदों का गान किया, जो भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के उच्च भावों से परिपूर्ण थे। उस स्वर्गीय संगीत ने सारे जेल में जादू कर दिया। कैदी चक्की चलाना भूल गए। वे अपने वन्दी-जीवन को भूलकर अलौकिक भाव-जगत् में विचरण करने लगे। वार्डर भी कैदियों से कार्य कराना भूल गये, उनके चाबुक उनके हाथों से गिर पड़े। जेल के सारे कैदी एकत्र होकर दिव्य संगीत सुनने में तन्मय हो गए। और भी बाहरी लोग जेल के फाटक पर एकत्र होकर गुरु जी के पद और मरदाना का रवाब सुनने लगे। जो जहाँ था, वहीं मूर्तिवत् स्थित हो गया। उस दिव्य संगीत ने सिकन्दर लोदी का पाषाण-हृदय भी पिघला दिया। सिकन्दर निस्तब्ध खड़ा होकर मूक पशु की भाँति गुरु जी का पद सुनने में तन्मय हो गया। उन पदों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के स्वरूप उसके गुणों, उसकी कृपालुता का वर्णन था। उनमें संसार की नश्वरता और क्षणभंगुरता, विषयी मनुष्यों की जड़ता, भोगवृत्ति में उनकी अपार लिप्सा, उनकी क्रूरता, अत्याचार आदि का सजीव चित्रण था। साथ ही उनके पापों, अनाचारों और क्रूरता के परिणामों की मनोहर झाँकी प्रस्तुत की गई थी। उन गीतों में प्रेम, सहृदयता, सहानुभूति, करुणा और भक्ति के उदात्त भावों का ऐसा साकार चित्रण था, जिससे मानव और पशु के अन्तर स्पष्ट दिखलाई पड़ते थे। आत्मा की अजरता, अमरता की प्राप्ति ही मनुष्य-जीवन का चरम लक्ष्य है। आत्मा के साक्षात्कार से ही मनुष्य को शान्ति और आनन्द मिलता है।

सिकन्दर गुरु महाराज के गानों को सुनकर, इतना अधिक द्रवीभूत हुआ कि वह गुरु महाराज के चरणों में गिर कर अपने किए गए पापों और अत्याचारों के लिए क्षमायाचना करने लगा। गुरु नानकदेव ने कहा, "किए गए पापों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए सच्चे पश्चात्ताप से ही क्षमा मिल सकती है। आपने निरपराध व्यक्तियों को बहुत अधिक सताया है। उन व्यक्तियों को अपने शुभ कर्मों से सन्तुष्ट और प्रसन्न करने की भरसक चेष्टा कीजिए, इसी से आपको क्षमा मिल सकती है। आपका विशुद्ध अन्तःकरण ही आपको क्षमा दे सकता है। दूसरा और कोई व्यक्ति आपको क्षमा-प्रदान करने का अधिकारी नहीं है। इन निरापराध साधुओं ने क्या अपराध किया है जिन्हें आपने अपराधियों और खूनियों की तरह जेल में वन्द कर रक्खा है?'

सिकन्दर लोदी ने पूर्ण रूप से यह जान लिया कि गुरु नानक महाराज उससे क्या कराना चाहते हैं? उसने जेल का दरवाजा खोल दिया और सभी गिरफ्तार क्रिये गये साधुओं को मुक्त कर दिया। तत्पश्चात् गुरु महाराज ने उसे सलाह दी कि वह परमात्मा का सदैव चिन्तन करे और साथ ही उसके पुत्रों और पुत्रियों की सेवा करे। गुरु महाराज ने उससे विनम्र शब्दों में कहा, "ऐ बादशाह, याद रक्खो संसार के सभी प्राणी उस परमपिता परमेश्वर की सन्तान हैं। परमात्मा की पवित्र ज्योति का निवास संसार के सभी मनुष्यों के अन्तर्गत है। संसार के सभी प्राणियों को अपने ही समान समझो। धर्म की भिन्नता के कारण गुमराह मत हो। अपनी प्रजा के साथ पुत्रवत् व्यवहार करो। हिन्दू और मुसलमान सभी खुदा की प्यारी सन्तान हैं। तुम दोनों के पालन के लिए समान रूप से जिम्मेदार हो। याद रक्खो, जो तुम अच्छा अथवा बुरा कर्म इस दुनिया में करोगे, वही तुम्हारे साथ दूसरी दुनिया में जाएगा। समय के रहते हुए, इस पर ध्यान दो। यदि समय रहते इस पर ध्यान नहीं दोगे, तो बाद में कुछ करते-धरते नहीं बनेगा। तुम अपने क्रूर अत्याचारों से अपनी प्रजा का दमन करते हो, उसे कुचलते हो, तुम वहम में पड़ कर प्रजा को कुचलने के लिए फरमान पर फरमान जारी करते हो। यह बादशाह के लिए श्रेयस्कर नहीं है, शोभनीय नहीं है। याद रक्खो, इन क्रूर कर्मों का फल, तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा। उस समय कोई भी तुम्हारी रक्षा के लिए नहीं फटकेगा। इस्लाम-धर्म के प्रचार के लिए तुम्हारी धर्मान्धता तुम्हें सर्वनाश की ओर ले जा रही है। तुम्हारे इन राक्षसी कर्मों के लिए तुम्हारे पैगम्बर भी तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे, हालांकि तुम ये सारे क्रूर कर्म उन्हीं के नाम पर कर रहे हो। यह जीवन बहुत लम्बा नहीं है, थोड़े ही दिनों का है। अतएव इसका सदुपयोग परलोक के जीवन के लिए—आगामी जीवन के लिए करो। आगामी जीवन ही शाश्वत जीवन है। सभी के प्रति उदार, सहिष्णु, ईमानदार और न्यायप्रिय बनो। यदि तुम्हारी प्रजा तुम्हारे शासन से सन्तुष्ट, समृद्ध और प्रसन्न है, तो तुम समझो कि तुम्हारा राज्य करना सार्थक और धर्मपूर्ण है। इस जीवन की शान्ति और सन्तोष आगामी जीवन में भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

शान्ति और सन्तोष प्रदान करेंगे। अतएव ऐ बादशाह? नेक, उदार और न्यायप्रिय शासक बनो। इसी में तुम्हारा कल्याण है!'

गुरु जी द्वारा दी गई शिक्षाओं से बादशाह अत्यधिक प्रभावित हुआ और उसने उनकी आज्ञाओं के पालन की प्रतिज्ञा की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्याय चौदह

रीठा को मीठा बनाना

दिल्ली के यात्रा के बाद गुरु नानकदेव ने भारत के सुदूर भागों की यात्रा का विचार किया। उनका पहनावा हिन्दू साधुओं और मुसलमान फकीरों के बीच का था, अर्थात् उनके पहनावे और वेशभूषा का कुछ भाग तो हिन्दू-साधुओं के पहनावे और वेशभूषा से मिलता-जुलता था और कुछ भाग मुसलमान दरवेशों की वेशभूषा से। उन्होंने मुसलमान फकीरों की भाँति हरे आम के रंग का एक जाकेट पहन रखा था और उसके ऊपर से सफेद चादर ओढ़ ली थी। उनके सिर पर मुसलमान कलन्दरों की तरह एक लम्बी टोपी थी। गले में हड्डियों की एक माला थी। मस्तक पर हिन्दू साधुओं का केशरिया तिलक लगा रहता था। गुरु-महाराज ने जानबूझकर, खास उद्देश्य से इस पहनावे और वेशभूषा को अपनाया था। इस अजीब वेशभूषा से लोग स्वभावतः उनकी ओर आकृष्ट हो जाते थे। इसी के माध्यम से लोगों को आकर्षित करके अपने धर्म का प्रचार करना चाहते थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि जो कोई व्यक्ति उनके पास तर्क-वितर्क अथवा वादविवाद करने आएगा, वह निश्चित ही उनसे प्रभावित होकर जाएगा। इसके अतिरिक्त गुरु महाराज का पहनावा ऐसा था, जिससे किसी धर्म विशेष के पहनावे का उपहास होता था। उनके पहनावे के द्वारा हिन्दू यह समझते थे कि इसके द्वारा मेरे पहनावे का मजाक बनाया गया है। यही प्रतीति मुसलमान फकीरों को भी होती थी। सर्वसाधारण की सामान्य वेशभूषा को इससे बल मिलता था कि आदमी जो पहनावा पहनता हो, तो अपना ही पहने। उसे वेशभूषा बदलने की जरा भी जरूरत नहीं है। साथ ही अपने पहनावे से गुरु महाराज यह भी प्रदर्शित करना चाहते थे कि वे न तो हिन्दू हैं और न मुसलमान। दोनों धर्म उन्हें समान रूप से प्रिय हैं। वे ऐसे नवीन धर्म की स्थापना करना चाहते हैं, जिसमें सभी मनुष्यों के बीच भाईचारे और समानता का व्यवहार हो।

दिल्ली से वे गोरखमता नामक स्थान पर पहुँचे। यह स्थान उत्तरप्रदेश में पीलीभीत से लगभग बीस मील की दूरी पर स्थित है। यह योगियों का प्रधान गढ़ माना जाता था। गुरु महाराज की विशेष इच्छा उन व्यक्तियों से मिलने की थी, जो या तो किसी धर्म विशेष के विशिष्ट व्यक्ति थे अथवा जाति विशेष के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्भ्रान्त व्यक्ति थे । उनसे मिलकर वे अपने सिद्धान्तों, विचारों और आदर्शों के सम्वन्ध में चर्चा अथवा वादविवाद करते थे । उस वाद-विवाद में वे अपने अकाट्य तर्कों द्वारा व्यक्ति को अपना सिद्धान्त स्वीकार करने के लिए बाध्य कर देते थे। उस स्थान पर जाने का गुरु महाराज का यही मन्तव्य था। वे योगियों को अकर्मण्य और रिक्त जीवन से हटाकर निष्काम कर्मयोग और सच्ची भक्ति में लगाना चाहते थे । गोरखमता में इस प्रकार के अनेक योगी थे ।

उस स्थान पर पहुँचकर एक पीपल वृक्ष के नीचे बैठ गए। कहा जाता है कि जिस पीपल के वृक्ष के नीचे वे बैठे थे, वह सूखा था, पर गुरु महाराज के बैठते ही वह फिर से हराभरा हो गया। इस आश्चर्यमयी घटना को देखकर योगीगण गुरु नानक के पास पहुँचे और उनसे प्रश्न किया, 'ओ नवयुवक, तुम किसके शिष्य हो ? किस गुरु ने तुम्हें शिक्षा दी है ?'

इस पर गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया,—

'कौन तराजू है, कौन तौल है और तेरा कौन सर्राफ, जो तौल करने के लिए बुलाया गया है ? किस गुरु के पास दीक्षा ली है और किससे उस परमतत्त्व का मूल्य कराया है ? ।। १ ।।

'हे मेरे लालजी—प्रियतम, मैं तेरा अन्त नहीं पा सका। हे प्रभु, तू जल, थल, पृथ्वी और आकाश के बीच में पूर्ण रूप से व्याप्त है, तू स्वयं ही सर्वत्र समाया हुआ है ।। १ ।। रहाउ ।।

'मन तराजू है, चित्त तौल है, 'तेरी सेवा की कमाई' मेरे लिए सर्राफ है। तात्पर्य यह कि सेवा के द्वारा मन में प्रियतम हरी के परखने की कला उत्पन्न होती है । अपने हृदय के अन्तर्गत उस प्रियतम को तौलूँ । इस प्रकार अपने चित्त को स्थिर कर रक्खूँ—यही तौलने की सच्ची विधि है ।। २ ।।

'प्रभू आप ही कुण्डा है, आप ही वजन है, आप ही तराजू है और आप ही सब को तौलनेवाला है। वह आप ही देखता है, आप ही समझता है और आप ही बनजारा है ।। ३ ।।

'मन अन्धा, नीच और परदेशी है। वह एक क्षण में आता है और तिल मात्र में चला जाता है । तात्पर्य यह है कि चंचल मन एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकता । इस प्रकार के मन की संगति में, मैं, नानक रहता हूँ, मैं मूर्ख किस प्रकार हरी को प्राप्त कर सकता हूँ[१] ।। ४ ।।'

गुरु नानकदेव की उपर्युक्त बातों को सुनकर सिद्धों ने उनसे कहा, 'ओ नवयुवक, तुम योगी बन जाओ । हमारी वेशभूषा धारण कर लो, इससे तुम्हें सच्चे मार्ग की प्राप्ति होगी ।'

---

१. कउणु तराजी...मूड़ा पावै ।। रागु सूही, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गुरु नानक महाराज ने इस प्रकार उत्तर दिया—

'योग की प्राप्ति, न तो कंथा पहनने में है, न डंडा लेने में है और न शरीर पर भस्म लगाने में है। योग न तो कानों में मुद्रा पहनने में है, न मूंड मुड़वाने में है और न शृंगी बजाने में ही हैं। यदि माया के बीच में रहते हुए निरंजन से युक्त रहा जाय, तो यही योग की वास्तविक युक्ति है और इसी से योग प्राप्त होता है॥ १ ॥

'निरी, कोरी बातों से योग की प्राप्ति नहीं होती। जो एक दृष्टि करके सभी को समान समझे, उसी को वास्तविक योगी कहा जाता है॥ १ ॥ ॥ रहाउ ॥

'योग बाहर—कब्रों अथवा श्मशानों के बीच रहने में नहीं है और वाह्य ध्यान लगाने में भी योग नहीं है। देश, देशान्तरों के भ्रमण करने में भी योग नहीं है और न तीर्थादिकों के स्नान में ही योग है। यदि माया के बीच रहते हुए, निरंजन—माया से रहित हरी से युक्त रहा जाय, तो यही योग की वास्तविक युक्ति है और इसी से योग प्राप्त होता है॥ २ ॥

'सद्गुरु मिले, तभी भ्रम टूट सकता है और विषयों की ओर दौड़ते हुए मन को रोककर रखा जा सकता है, तभी आत्मानन्द का निर्झर निरन्तर झरने लगता है और सहजावस्था में वृत्ति—धुनि लग जाती है और अपने घर ही में—आत्मस्वरूप में ही परमात्मा का परिचय प्राप्त हो जाता है। यदि माया के बीच में रहते हुए निरंजन—परमात्मा से युक्त रहा जाय, तो यही योग की वास्तविक युक्ति है और इसी से योग प्रात होता है॥ ३ ॥

'हे नानक, ऐसा योग कमाओ कि जीवितावस्था में ही अहंकार से मरकर रहो। जब बिना बजाए ही (नाम की) शृंगी बजती रहे, तभी निर्भय पद की प्राप्ति होती है। माया के बीच में रहते हुए निरंजन से युक्त रहा जाय, तो यही योग की वास्तविक युक्ति है और तभी योग प्राप्त होता है[१] ॥' ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

इसके अनन्तर गुरु नानकदेव ने उन योगियों को इस प्रकार उपदेश दिया, "आप मनुष्य ऐसे अमूल्य जीवन को व्यर्थ क्यों नष्ट कर रहे हैं? मनुष्य जीवन को आप अभिशाप क्यों समझे हैं? अपने पलायनवाद को त्यागकर आप लोग संसार में बहादुरी से वापस लौटिए। मानवता को आप लोगों की सेवा की परम आवश्यकता है। उस मानवता से आप लोग विलग क्यों हैं? मानवता की दुर्दशा से आप लोग तटस्थ क्यों हैं? बहादुरी से संसार के प्रांगण में कूदिए। कायर और पलायनवादी मत बनिए, बहादुर और रक्षक बनिए। निष्काम काम करने में ही सच्चे धर्म का पालन है। यही वास्तविक योग है।"

---

१. जोगु न खिंथा...जुगुति तउ पाईऐ...रागु सूही, महला १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धा और भक्ति से सिद्धों के सिर झुक गए। उन्हें गुरु महाराज जी के उपदेशों में जीवन की वास्तविकता का दर्शन हुआ। किन्तु उन लोगों ने पुराने जीवन के अभ्यास की प्रबलता के कारण, नए जीवन की रहनी पर अपनी असमर्थता प्रकट की। गुरु नानकदेव उन योगियों के साथ कुछ दिनों तक रहे और उन्हें निरन्तर धार्मिक उपदेश देते रहे। सिद्धों ने उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनीं और उनसे प्रार्थना की, 'महाराज, हम लोगों को उत्कट अभिलाषा है कि आप जीवन-पर्यन्त हमारे साथ यहीं निवास कीजिए।' गुरु जी ने प्रार्थना स्वीकार नहीं की और कहा, 'अभी हमारा कर्त्तव्य शेष है। ईश्वर की सन्तानों की सेवा करनी हमारा परम धर्म है।' गुरु महाराज ने जब उस स्थान को छोड़ा, तो सिद्धों ने उनकी स्मृति में उस स्थान का नाम 'नानक मता' रख दिया।

गुरु जी के महान् व्यक्तित्व से प्रभावित होकर योगी मछन्दरनाथ उनके साथ हो गए। मछन्दरनाथ गुरु नानकदेव के सान्निध्य में रहकर कुछ दिनों तक उनके सत्संग का आनन्द उठाना चाहते थे। गोरखमता से लगभग बीस मील की दूरी पर एक स्थान पर गुरु नानकदेव रुके। मछन्दरनाथ को बहुत भूख लगी थी। मछन्दरनाथ ने प्रार्थना की, 'गुरु जी महाराज, बहुत जोर की भूख लगी है। कुछ खाने को दीजिए।' उस समय, वे सब एक रीठा के वृक्ष के नीचे बैठे थे। गुरु महाराज ने मरदाना से कहा, 'भाई मरदाना, जरा सिर के ऊपर की डाल को हिलाओ।' मरदाना ने गुरु जी महाराज की आज्ञा का तुरन्त पालन किया। डाल हिलाने से रीठा के फल गिरे। गुरु ने मछन्दरनाथ को फल खाने का संकेत किया। मछन्दर ने उन फलों को खाया। बड़े आश्चर्य की बात हुई, वे फल असाधारण मीठे थे। मछन्दरनाथ की यह धारणा हुई कि शायद यह विशेष किस्म का मीठा फल हो। यह सोचकर वे पेड़ की दूसरी डाल पर चढ़ गए, एक फल तोड़कर चक्खा, पर वह तो कड़वा निकला।

कहते हैं कि आज तक रीठा की उस डाल का फल मीठा होता है, जिसके नीचे गुरु महाराज बैठे थे, पर उस पेड़ की बाकी दूसरी डाली के सारे फल कड़वे होते हैं।

वहाँ से फिर गुरु महाराज बनारस की ओर मुड़े। बनारस हिन्दुओं का गढ़ है। बहुत से पंडित उनके पास एकत्र हो गए। उन लोगों के नेता चतुरदास थे। उन्होंने गुरु महाराज से 'राम, राम' कहकर हिन्दू शैली में प्रणाम किया। गुरु महाराज की वेशभूषा को देखकर चतुरदास पंडित ने प्रश्न किया, "आपने कौन सी साधुता प्राप्त की है? आपके पास शालिग्राम क्यों नहीं हैं?"

इस पर गुरु महाराज ने उत्तर दिया—

"हे ब्राह्मण (विप्र) हरी को शालिग्राम बना और शुभ करनी को तुलसी की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

माला समझ। तू राम नाम के जप का बेड़ा बाँध, जिनके सहारे भवसागर को पार कर। हे दयालु परमात्मा, हम सबके ऊपर दया कर।

"हे प्राणी, तू बालूवाले रेतीले खेत को सींचकर, क्यों अपना जन्म नष्ट कर रहा है ? कच्ची होने के कारण दीवाल ढह जायगी, फिर चूना क्यों लगा रहा है ? तात्पर्य यह कि धार्मिक पाखण्ड क्यों कर रहा है ?"

गुरु महाराज की बात सुनकर चतुरदास ने कहा, "साधुजी, आप शालिग्राम और तुलसी की माला को अनावश्यक सिद्ध कर सकते हैं, पर मुझसे यह बताइए की ईश्वर-प्राप्ति का दूसरा मार्ग क्या है ?"

चतुरदास की जिज्ञासा का गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया—

"हे ब्राह्मण, अपने हाथों को, तात्पर्य यह कि सेवा-वृत्ति को, कुएँ के रहट के पात्रों की माला बना और उसके अंतर्गत अपने मन को युक्त कर। तू हरि प्राप्त रूपी अमृत से अपनी जीवनरूपिणी क्यारी सींच, तभी तू सच्चे हरी रूपी माली का पुत्र हो सकता है।"

पंडितजी ने फिर जिज्ञासा की, "जमीन तो सींची जा सकती है, पर जब तक यह खोदी न जायगी, तब तक यह किस प्रकार संभव है ?"

गुरु महाराज ने उनकी जिज्ञासा का इस प्रकार समाधान किया—

"काम-क्रोध को खुरपे अथवा रम्मे बना और इन्हीं से हे भाई, तू धरती गोड़। तू जैसे इस प्रकार धरती गोड़ेगा, वैसे-वैसे सुख पाएगा। की हुई कमाई कभी निष्फल नहीं जाएगी।"

इस पर पंडितजी का अहंभाव जाता रहा और उन्होंने बड़े विनीत स्वर में गुरु महाराज से निवेदन किया, "महाराज, मैं बगुला हूँ और आप परमात्मा के हंस हैं। मेरा सारा ज्ञान तो विषयों द्वारा जीत लिया गया है। मैं कैसे आपकी बातें समझ सकता हूँ ?"

गुरु नानक ने उत्तर दिया—

"यदि दयालु हरी कृपा करें, तो बगुला भी हंस रूप में परिणत हो सकता है, अर्थात् प्रभु की कृपा से अत्यन्त तमोगुणी और पाखण्डी व्यक्ति सत्वगुणी और नीर-क्षीर विवेकी साधु हो जाता है। हे दयालु हरी, तेरे दासों का दास नानक विनय करता है कि मुझ पर दया कर।"[1]

इस पर पंडितजी ने स्वीकार कर लिया कि गुरु महाराज पहुँचे हुए फकीर

१—सालग्राम.........करहु दइआला—रागु बसंत, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं और उनसे प्रार्थना की कि गुरु महाराज अपने आशीर्वाद से बनारसपुरी को कृतकृत्य करें और अपने स्वर्गीय संगीत से लोगों का उद्धार करें। इसी वार्ता के सिलसिले में गुरु जी महाराज ने 'दखनी ओअंकारु' वाणी का उपदेश किया, जिसका संकलन 'रामकली राग' में है। यह वाणी आध्यात्मिक सिद्धान्तों की दृष्टि से बड़ी उदात्त वाणी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अध्याय पन्द्रह

जीवन का अमूल्य रत्न

कुछ दिनों तक बनारस में रहने के पश्चात् गुरु नानकदेव मरदाना के साथ और पूर्व की ओर बढ़े। गुरु महाराज जहाँ-जहाँ जाते थे, वहाँ-वहाँ अपने सिद्धान्तों और विचारों का प्रतिपादन करते थे। इसके परिणाम-स्वरूप अनेक लोगों ने उनके धर्म को स्वीकार किया। एक बार दोनों व्यक्ति घनघोर जंगल से गुजर रहे थे, तो ठगों का एक समुदाय दिखलाई पड़ा। गुरु महाराज के चेहरे के ओज और तेज को देखकर ठगों ने समझा कि यह व्यक्ति निश्चय ही धनी ओर समृद्धि-शाली है, इसके पास भारी धन-राशि है। ऐसा सोचकर उन दोनों को चारों ओर से घेर लिया। गुरु महाराज ने अत्यन्त निर्भयतापूर्वक पूछा, 'भाई, आप लोग कौन हैं और क्या चाहते हैं ?' गुरु महाराज की निश्शंक चितवन, उनकी विश्वास-युक्त दृढ़ मुस्कराहट और पूछने के ढंग विशेष से ठगों का हृदय किंचित् द्रवीभूत हुआ। वे अपने भीतर की बात छिपा न सके और उन्होंने कहा, 'हम आपसे झूठ नहीं बोलेंगे। हम सब ठग हैं। हम लोग आपको लूटकर आपकी हत्या कर डालेंगे, यही हमारा पेशा है।'

गुरु महाराज ने मुस्कराकर उनसे कहा, 'अच्छा है, आप जीवन में ठगी का पेशा कीजिए। परन्तु आप लोगों ने क्या इस बात पर भी कभी विचार किया है कि आपका यह धन्धा आगामी जीवन—परलोक में भी आपके साथ जाएगा ? परलोक में आपके ये सारे क्रूर कार्य, आपके द्वारा की हुई सारी हत्याएँ, परमात्मा के यहाँ साक्षी बनेंगी। क्या इन बातों पर भी कभी ठंडे दिमाग से सोचा है ?'

ठग लोग गुरु महाराज जी के इन वाक्यों से स्वयं ठग से लिए गए। उनकी सारी सिट्टी-पिट्टी भूल गई। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर गुरु महाराज को एकटक देखने लगे। गुरु महाराज ने उनकी आँखों को त्राटकयुक्त रहस्य भरी दृष्टि से देखकर उनकी अन्तरात्मा का अध्ययन करना प्रारम्भ किया। उनकी शक्तिशालिनी चितवन से वे काँपने लगे। उनका हृदय दुःख और पश्चात्ताप के भारी बोझ से दब गया। लज्जा और ग्लानि से उनकी आँखें झंप गईं। उन्होंने झुककर गुरु महाराज के चरणों को पकड़ लिया और कहा, 'महाराज, हम पापियों को क्षमा कीजिए। हम आपकी शरण में हैं, हमारा उद्धार कीजिए।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु महाराज ने कहा, 'भाई उठो, अपने पापों का हृदय से पश्चात्ताप करो। भविष्य में इस प्रकार के क्रूर कर्म मत करो। अपनी सारी पापपूर्ण सम्पत्ति गरीबों, असहायों को बाँट दो, अपने परिश्रम से कमाई करो। उस कमाई में गरीबों और जरूरतमन्दों का भी हिस्सा लगाओ। सदैव परमात्मा का स्मरण रक्खो। यदि तुम लोग ऐसा करोगे, तो निश्चय ही तुम्हारा उद्धार हो जाएगा।'

उन लोगों ने गुरु महाराज की आज्ञा मान ली और अपने जीवन का ढंग परिवर्तित कर दिया।

गुरु नानक महाराज घनघोर जंगलों को मरदाना के साथ पार करते गए। हिंसक जानवरों से वे जंगल भरे थे। जंगली फल ही उन दोनों व्यक्तियों का आहार था। भेड़िया, चीता, रीछ और सिंह जैसे भयानक हिंसक पशुओं का सामना करना पड़ा। पर गुरु जी उनसे तनिक भी भयभीत नहीं हुए। उनमें परमात्मा के सभी जीवों के प्रति असीम प्यार भरा था। इस असीम प्यार के प्रभाव से हिंसक से हिंसक पशु भी उन्हें अपना सगा समझकर उन्हें रास्ता दे देते थे और उन्हें किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचाते थे। वे उनके सामने नमित होकर दुम दवाकर उनका मार्ग छोड़ देते थे। उन हिंसक पशुओं को भी गुरु महाराज के तेजस्वी चेहरे पर सर्वशक्तिमान् परमात्मा का स्वरूप दिखलाई पड़ा।

थोड़े दिनों वाद गुरु जी पटना पहुँचे। पटना से कुछ मील की दूरी पर उन्होंने गङ्गा के तट पर अपना आसन जमाया। वहाँ एक वड़ा मेला लगा था। गंगाजी के पवित्र जल में लोग स्नान कर रहे थे। उन लोगों को गुरु जी महाराज ने सच्चे धर्म का उपदेश दिया और वतलाया कि आन्तरिक प्रेम से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। वहाँ भी गुरु महाराज ने अनेक व्यक्तियों का हृदय जीत लिया। उस स्थान पर अनेक विद्वानों, शास्त्रों एवं दर्शनिकों ने गुरु जी महाराज के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्हें शास्त्रों का मूर्तिमान स्वरूप कहा। उन लोगों ने कहा, "गुरु महाराज में दैवी और मानवी गुण साकार रूप में अवतरित हुए हैं।" उन लोगों ने गुरु नानकदेव को अपना आध्यात्मिक गुरु मानकर उनकी अभ्यर्थना की।

एक दिन मरदाना ने गुरु नानकदेव से प्रश्न किया, "महाराज, सभी धार्मिक व्यक्तियों और ग्रन्थों ने यह घोषणा की है कि मनुष्य का जीवन अनुपम रत्न है, फिर भी हम देखते हैं कि संसार में अधिकांश मनुष्य अधम पापपूर्ण वासनाओं की तृप्ति में ही दुर्लभ मानव-जीवन नष्ट करते हैं। ऐसा क्यों करते हैं?"

गुरु महाराज ने मरदाना की शंका का इस प्रकार समाधान किया, "भाई मरदाना, तुम्हारी बात अक्षरशः सत्य है। यह बिलकुल यथार्थ है कि मानव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जीवन अमूल्य और अनुपम रत्न है। यह जीवन बार-बार नहीं प्राप्त होता। यह जीवन परमात्मा की अनुपम देन है। इसी के द्वारा मनुष्य अपना आध्यात्मिक उत्थान करके सर्व शक्तिमान्, घटघटव्यापी परमात्मा से मिलकर एक हो सकता है, तथापि यह बड़ी दुखद बात है कि बहुत कम लोग इस सत्य का अनुभव करते हैं। उसके मन में भ्रम पैदा हो जाता है, जिससे वे इस सत्य वस्तु के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वे लोग मनुष्य-जीवनरूपी रत्न के अनन्त मूल्य का अनुमान लगाने में असफल होकर, इसे कूड़ा-कर्कट और धूल समझकर फेंक देते हैं। यही दुनियाँ का तरीका है।"

मरदाना ने गुरु महाराज की बात का प्रतिकार करते हुए कहा, "महाराज जी, परन्तु कहा यह जाता है कि सच्चा रत्न छिपाकर नहीं रखा जा सकता। उसकी ओर जो कोई देखेगा, उसकी जगमगाहट से अवश्य आर्कषित हो जाएगा। यदि जीवन को वास्तव में अमूल्य रत्न माना जाता है, तो संसार के अधिकांश मनुष्य उच्च धार्मिक पुरुषों के उद्बोधन के बावजूद भी, इसके मूल्य को न समझने की भयंकर भूल क्यों करते हैं ?"

गुरु नानक महाराज ने उत्तर दिया, "भाई मरदाना, तुम भूल कर रहे हो। केवल पारखी जौहरी की सधी आँखें ही अमूल्य रत्न की कीमत आँकने में समर्थ होती हैं। बहुत कम लोगों में यह सामर्थ्य होती है। संसार के अधिकांश मनुष्य अपने छोटे-छोटे धन्धे में फँसे रहते हैं। वे लोग तो पारखी जौहरी की बातों पर विश्वास भी नहीं कर सकते। उनके लिए तो अमूल्य हीरा साधारण पत्थर का टुकड़ा मात्र है। वे इसे निरर्थक समझते हैं। इस तथ्य का निश्चय करने के लिए, तुम उस हीरे को बाजार में ले जाओ, जिसे पाए हुए तुम्हें थोड़े दिन हुए हैं। बाजार में जाकर इसका मूल्यांकन कराओ, तब मेरी बात समझ में आ जाएगी।"

मरदाना उस रत्न को लेकर शहर में गया। एक कुंजड़े ने रत्न का मूल्य एक मूली लगाया; दो मूलियों को भी उनके बदले में देने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने कहा, "भाई, यह पत्थर मेरे किस काम का है।" एक हलवाई आध सेर मिठाई देने पर राजी हुआ, उसने मरदाना से कहा, 'भाई, यह पत्थर का टुकड़ा मेरे किस काम आएगा ?"

बेचारा मरदाना दूकान से दूकान पर फिरता रहा। बजाज ने एक-दो गज कपड़े देना मंजूर किया, बनिए ने कुछ सेर अनाज का मूल्य लगाया और एकाध दूकानदार ने कुछ ताँबे के पैसे देने चाहे। एक सुनार ने कुछ रुपयों को देने का वादा किया। अन्त में वह शहर के प्रसिद्ध जौहरी सालसराय के पास पहुँचा। जौहरी ने रत्न को अपने हाथ में ले लिया और उसको बड़े ध्यान से परखा। जिस समय जौहरी उस रत्न को अपने हाथ में लिये उसको बारीकी से परख रहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

था, उस समय मरदाना के चेहरे पर अकृत्रिम नैसर्गिक आभा चमक रही थी। जौहरी ने उस हीरे को परखकर, उसे मरदाना को लौटाते हुए, कहा, 'दोस्त यह रत्न अमूल्य है। मेरे खजाने के सब रत्न मिल कर इसके पूरे मूल्य का एक हिस्सा भी नहीं चुका सकते। इसे आप अपने मालिक के पास वापस ले जाइए। इसके अतिरिक्त मेरी इस सौ रुपयों की तुच्छ भेंट स्वीकार करने की कृपा कीजिए। यह तुच्छ भेंट मैं आपको इसलिए दे रहा हूँ कि आपने मुझे इतना बहुमूल्य रत्न दिखाने की कृपा की है।'

मरदाना उन रुपयों को लेकर वापस लौटा। वह आश्चर्य से भरा था। गुरु महाराज के पास पहुँचकर, मरदाना ने जब उन्हें सारी घटना और अपने अनुभव का वर्णन किया, तो उन्होंने हँसकर कहा, 'तुमने देख लिया, किस प्रकार संसार के लोग लाल को छोड़कर कौड़ी में फँसे हैं? उनके पास लाल परखने की न आँखें और न बुद्धि है। उनके विचार और भाव तो दूसरी ओर लगे हैं। यदि तुम जाकर जौहरी की बातें उनसे कहो, तो वे तुम्हें पागल अथवा मूर्ख समझकर तुम पर हँसेंगे। अधिकांश मनुष्यों का यही दृष्टिकोण जीवनरूपी रत्न के साथ भी होता है। अच्छा, अब जाओ और इन रुपयों को सालसराय को वापस दे आओ। हमें इनकी जरूरत नहीं है।'

मरदाना लौटकर सालसराय के पास पहुँचा। जौहरी रुपये लेने को किसी तरह राजी न हुआ। मरदाना उसके पास रुपये जबर्दस्ती रखकर वापस लौटा। सालसराय ने मरदाना को बुलाया और उन त्यागी गुरु महाराज के सम्बन्ध में पूछ-ताछ की, जिन्होंने रुपयों को इतने सहज भाव से लौटा दिया था। गुरु महाराज की रुपयों के प्रति इस अनासक्ति को देखकर सालसराय की उनमें अगाध श्रद्धा-भक्ति जग गई। सालसराय को ज्ञात हुआ कि मरदाना ने जिस व्यक्ति को अपना मालिक बताया है, वह सामान्य सांसारिक मनुष्य नहीं है, बल्कि कोई पहुँचा हुआ सिद्ध पुरुष है। उस जौहरी ने अपने नौकर अधरके को एक टोकरी फल इत्यादि उपहार देकर गुरु नानकदेव की सेवा में भेजा। थोड़े समय पश्चात् वह भी नौकर पीछे-पीछे चल पड़ा। अधरके गुरु महाराज का दर्शन करके उनके चरणों में गिर पड़ा। वह उन्हें प्रणाम करके उठा, एकदम परिवर्तित रूप में। उसकी आँखों में आध्यात्मिकता का नया प्रकाश था, उसकी धमनियों में नवीन जीवन का रक्तप्रवाह हो रहा था, उसके हृदय में अलौकिक आनन्द का समावेश था और उसकी आत्मा में विलक्षण शान्ति और संतुष्टि की अनुभूति हो रही थी। वह गुरु महाराज का सच्चा शिष्य बन गया। जब सालसराय उस स्थान पर पहुँचा, तो उसे अपने नौकर में अभूतपूर्व परिवर्तन दिखाई पड़ा। सालसराय ने भी गुरु जी के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया। गुरु महाराज ने उस पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

... in Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अपने दैवी आशीर्वाद की वृष्टि की। गुरु महाराज ने उसे अपने धर्म में दीक्षित किया। उन्होंने उस सात्विक जौहरी और उसके नौकर में मानव जीवन की महत्ता की नई ज्योति जलाई और उनके हृदय में आदर्शमय मानव जीवन व्यतीत करने की महत्त्वाकांक्षा उत्पन्न की। वे दोनों गुरु जी महाराज के शिष्य हुए। उन दोनों में मालिक-नौकर का व्यवहार समाप्त हो गया और भाईचारे का नया संबंध स्थापित हुआ। उन दोनों ने गुरु महाराज के आदेशानुसार जीवन-पर्यन्त मानव-सेवा का व्रत लिया।

जब गुरु महाराज जाने को तैयार हुए, तो सालसराय और अन्य व्यक्ति जिन सबको उन्होंने आध्यात्मिकता का अमृत पिलाया था, एकत्र हुए और निवेदन किया, 'महाराज और अधिक समय तक रुकने की अनुकम्पा कीजिए। अभी आपने हमारे जीवन में जो पौदा लगाया, वह बहुत नन्हा हैं। अभी इसे सींचने की, निगरानी करने की जरूरत है। आपकी उपस्थिति से यह बड़ा होगा और फूलेगा-फलेगा। अतः आप हम लोगों पर अनुग्रह करें और रुकें।' किन्तु गुरु जी महाराज को अभी और भी आवश्यक कार्य करने थे। उन्हें अभी परमात्मा का वह आदेश पालन करना शेष था, जिसके लिए उन्होंने अपने घर-बार का परित्याग किया था। अतएव वे एक स्थान पर बँधकर नहीं रह सकते थे। अतः वे अपने निश्चय पर अडिग रहे। इस पर लोगों ने उनसे निवेदन किया, 'किन्तु महाराज, आपके विना हम लोग रह कैसे सकेंगे? हम लोगों को जल्दी मत छोड़िए। हम लोगों को भक्ति और वैराग्य से परिपूर्ण संगीत कौन सुनाएगा? परमात्म—साक्षात्कार का मार्ग हम लोगों को कौन दिखाएगा?'

गुरु महाराज ने सालसराय के भूतपूर्व नौकर, अधरके की ओर इशारा करके कहा, 'इस व्यक्ति को मैं आप लोगों का उपदेशक नियुक्त कर रहा हूँ। इस व्यक्ति ने हमारी शिक्षाओं और उपदेशों को भली भाँति ग्रहण कर लिया है। इसका मन परमात्मा के चरणों में पूर्ण रूप से नियोजित हो गया हैं। यह आप लोगों को वही मार्ग दिखाएगा, जो इसे दिखाया गया है।'

गुरु नानक की बात सुनकर सालसराय अधरके के चरणों में गिर पड़े। अभी थोड़े समय पूर्व अधरके, सालसराय का आज्ञाकारी नौकर था; वह अब गुरु कृपा से वह अपने मालिक का आध्यात्मिक गुरु बन गया। इस प्रकार गुरु महाराज लोगों को समझा-बुझाकर अपने पथ पर आगे बढ़े। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय सोलह

जादूगरनी पर जादू

गया में गुरु महाराज पडों द्वारा घेर लिए गए । उन पंडों ने गुरु महाराज से कहा, 'आपके पूर्वजों को भोजन और वस्त्र की कामना है । मेरे साथ चलिए और जो वस्तुएँ आप उन्हें श्राद्ध में देना चाहते हों, उन्हें हमें दें । हम लोग मंत्रों द्वारा आपके पूर्वजों का श्राद्ध करावेंगे और इससे आपकी दी हुई समस्त वस्तुएँ उन्हें प्राप्त हो जाएँगी । उन्हें प्रकाश की भी आवश्यकता है । हमें तेल दीजिए, दीपक जलाकर हम उन तक प्रकाश भी पहुँचा देंगे ।'

पंडों की बातें सुनकर गुरु जी को बहुत हँसी आई । उन्होंने पंडों से इस प्रकार कहा—

'एक परमात्मा का नाम ही मेरा दीपक है । उसमें दुःखरूपी तेल पड़ा है । नामरूपी दीपक के उस प्रकाश ने दुःखरूपी तेल को सोख लिया है और यमराज से मिलाप होना भी समाप्त हो गया है ।।१।।

'लोगो, मेरे विश्वास की बदनामी मत उड़ाओ । जिस प्रकार लाखों लकड़ियों के ढेर को आग की एक चिनगारी नष्ट कर देती है, उसी प्रकार एक नाम असंख्य पापों की राशि को नष्ट कर देता है'[1] ।।१।। रहाउ ।।

तत्पश्चात् गुरु महाराज ने उन पंडों को इस प्रकार समझाया, 'सर्वशक्तिमान् घट-घट-व्यापी परमात्मा के सतत ध्यान से, मनुष्य को उसकी कृपा प्राप्त होती है । परमात्मा की कृपा से यमराज का सारा भय समाप्त हो जाता है । शाश्वत आनन्द और अपार शान्ति से उसका हृदय भर जाता है । इस प्रकार का मेरा दीपक है । मेरे इस नामरूपी दीपक से मेरे पूर्वज भी प्रकाश और शान्ति पाते हैं । उनके लिए इस साधारण दीपक की क्या आवश्यकता है ?'

इसके बाद गुरु महाराज ने पूर्वजों के श्राद्ध और पिंडदान के सम्बन्ध में ये बातें कहीं—

'मान लीजिए, यदि कोई ठग पराया घर लूटे और उस पराए घर को लूट कर अपने पितरों को श्राद्ध रूप में अर्पित करे और आप लोगों ने उसे अपने मंत्र के बल से पितरों के लोक में पहुँचा भी दिया, तो वहाँ श्राद्ध में दी हुई सारी

---

१. दीवा मेरा...रति से भाहि, रागु आसा, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वस्तुएँ पहचान ली जाएँगी। इससे पितर लोग चोर प्रमाणित होंगे। परमात्मा वहाँ यह न्याय करेगा कि दलाल—श्राद्ध करानेवाले ब्राह्मण—का हाथ काट लिया जाय। हे नानक, आगे—परलोक—में तो मनुष्य को वही मिलता है, जो वह अपना कर्म करके प्राप्त करता है, अर्थात् अपने किए हुए कर्मों के अनुसार वह परलोक में सुख अथवा दुःख का भागी होता है।'[1]

ऐसा कहकर गुरु महाराज ने उन्हें पुनः समझाया, 'आप लोग दूसरों की कमाई पर आश्रित रहनेवाले इस निम्न-कोटि के व्यवसाय का परित्याग कीजिए। अपने परिश्रमयुक्त व्यवसाय पर निर्भर रहिए। परमात्मा का सदैव चिन्तन कीजिए। अपनी गाढ़ी कमाई में गरीबों और जरूरतमन्दों का हिस्सा भी लगाइए। भगवान् द्वारा निर्मित प्राणियों की सेवा कीजिए। इस प्रकार आप उस परमपिता परमेश्वर को प्रसन्न कर इहलोक और परलोक—दोनों लोकों में आनन्द और शान्ति पाएँगे। आप लोगों के पूर्वजों की अन्तरात्मा भी आपके इन पुण्यमय कर्मों से संतुष्ट और तृप्त होगी।'

कहना न होगा कि गुरु महाराज की इस तर्कपूर्ण वाणी से पंडों ने अपनी त्रुटि अनुभव की। उन्होंने गुरु नानकदेव के आदेशानुसार जीवन व्यतीत करने का वादा किया।

कुछ दिन वहाँ रुकने के पश्चात् गुरु नानकदेव बिहार और बंगाल प्रान्त के स्थलों में विचरण करते हुए और लोगों को सन्मार्ग पर लगाते हुए कामरूप अथवा कामरू प्रदेश में प्रविष्ट हुए। कामरूप की स्त्रियाँ अपने छल-कपट तथा जादू-टोने के लिए बहुत बदनाम थीं। ढाका से कुछ मीलों की दूरी पर धनपुर नामक नगर था। वहाँ पहुँचकर नगर के बाहर गुरु जी ने अपना आसन जमाया। मरदाना को बहुत भूख लगी थी। मरदाना को भोजन लेने के लिए भेज दिया। साथ ही उन्होंने उसे यह चेतावनी भी दे दी, 'मरदाना, यहाँ की स्त्रियों के जादू-टोने से बचना। सदैव परमात्मा का स्मरण रखना।'

नूरशाह धनपुर की कुख्यात जादूगरनी थी। उसके साथ उसकी अनेक चेलियाँ और नौकरानियाँ भी थीं। उसका महल बहुत ही आलीशान था। उसकी सुन्दर नौकरानियाँ लोगों को अपने जाल में फँसाने में अत्यधिक निपुण थीं। नूरशाह अत्यधिक सुन्दरी थी। उसके सौन्दर्य की धाक समस्त प्रदेश में जमी थी। उसके स्वाभाविक सौन्दर्य में उसका जादू सोने में सुहागे के समान था। नूरशाह में प्रबल सम्मोहिनी शक्ति थी। अपने सौन्दर्य और मानसिक शक्ति की

---

१. जे मोहाका घरु···घाले देइ।—आसा की वार, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रबलता से वह बड़े-बड़े साधुओं, महात्माओं को भी मोह लेती थी। साधारण लोगों की गणना ही क्या की जा सकती है। उसकी सम्मोहिनी शक्ति से सभी वशीभूत होकर उसके मन के अनुसार चलते थे। सभी लोग उसकी आज्ञा पर हाथ-बाँधे खड़े रहते थे। अनेक साधु और फकीर, योगी, यती, संन्यासी उसके जाल में फँसकर गुलामों की भाँति अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

मरदाना उसके महल पर पहुँचा। नूरशाह ने उसे अपनी शाही दावत पर निमंत्रित किया। तत्पश्चात् उसने त्राटकयुक्त चितवन से मरदाना को निहारा। उसकी जादू भरी, रहस्यपूर्ण चितवन से बेचारा मरदाना काँप उठा। मरदाना कुछ समय तो अपने गुरु और परमात्मा के सहारे उसकी सम्मोहिनी शक्ति से लड़ता रहा। किन्तु धीरे-धीरे उस सम्मोहिनी शक्ति ने मरदाना को अपने काबू में कर लिया। उसे अपने गुरु और परमात्मा का विस्मरण हो गया। घनघोर जड़ता ने उसे आ दबोचा। वह संज्ञाविहीन होकर जमीन पर गिर पड़ा और उस स्थान को चूमने लगा, जहाँ नूरशाह खड़ी थी। वह पाले हुए भेड़े की भाँति उसके संकेतों और सुझावों का पालन करने लगा। वह भोजन के विना भोजन करने लगा और पानी के विना पानी पीने लगा। वह बच्चे की भाँति रोने लगा और मूर्खों की तरह हँसने लगा। इस प्रकार वेचारा मरदाना नूरशाह की सम्मोहिनी शक्ति से वन्दी वना गया और अपने गुरु को एकदम भूल गया।

गुरु महाराज शहर के बाहर बैठे थे। मरदाना के देर लगाने पर, उनकी अन्तर्यामित्व शक्ति ने नूरशाह के महल में पहुँचकर, वेचारे की दयनीय स्थिति को देख लिया। उन्होंने जान लिया कि मरदाना नूरशाह के मोहपाश में बुरी तरह जकड़ा जा चुका है। यदि उनकी इच्छा होती, तो वे मरदाना के ही अन्तर्गत शक्ति का संचार करके नूरशाह के समस्त मोहपाश को तुड़वा सकते थे, पर उन्हें तो और लीला करनी थी। वे तो नूरशाह के मोहपाश को सदैव के लिए तोड़कर उसे गुरुमार्ग पर लगाना चाहते थे।

थोड़ी देर बाद गुरु महाराज ने 'सत् करतार' का उच्चारण किया और नूरशाह की महल की ओर रवाना हुए। महल के दरवाजे पर पहुँचकर, गुरु महाराज खड़े हो गए। नूरशाह की नौकरानियों ने उन्हें महल में प्रविष्ट होने का आमंत्रण कर दिया, पर वे अविचल भाव से ज्यों के त्यों स्थित रहे। उनकी आँखों में विचित्र त्राटक शक्ति दिखलाई पड़ रही थी। किसी अनोखी अज्ञात शक्ति द्वारा नूरशाह को स्वयं उनके पास आना पड़ा। पहले वह महल के आँगन में आई। महिमायुक्त अजनबी व्यक्ति दरवाजे पर खड़ा था। गुरु महाराज ने नूरशाह की दासियों के समस्त जादू को ध्वस्त कर दिया था। वे उनके सम्मुख नतमस्तक और नीची आँखें किए हुए खड़ी थीं। नूरशाह ने ज्यों ही गुरु नानक महाराज पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दृष्टि डाली, उसकी सारी सम्मोहिनी शक्ति ढहने लगी। फिर भी उसने अपनी शक्ति बटोरकर उस महान् अविजेता को जीतने का भरसक प्रयास किया। गुरु महाराज ने उसके समस्त भोगों और ऐश्वर्यों को अस्वीकार कर दिया। उसकी शाही दावत, उसके आरामदेह गद्दे-बिछौने, पलंग, सोने, हीरे गुरु महाराज की आँखों में धूल के समान थे। गुरु महाराज पूर्ववत् अपने स्थान पर अविचल भाव से खड़े रहे। थोड़ी देर बाद उनके मुँह से 'सत् कर्त्तार' एक शब्द निकला। इस शब्द के उच्चारण मात्र से वह और विरोध न कर सकी। उसके सारे प्रयत्नों पर पानी पड़ गया। उसकी सारी सम्मोहिनी शक्ति काफूर हो गई। वह शक्तिविहीन होकर जमीन पर गिर पड़ी। उसके नेत्र अश्रु-विगलित हो उठे। लज्जा और ग्लानि से वह नतमस्तक हो गई। गुरु महाराज अब उसके पास पहुँच गए और उन्होंने नूरशाह से कहा, 'भगवान् के भक्तों के साथ मजाक करना उचित नहीं है। मेरे आदमी को वापस दो।' वह खड़ी हो गई, भीतर आई और मरदाना को लेकर वापस लौटी। उसने मरदाना को अपने मोहपाश से मुक्त कर दिया। आँगन में पहुँचकर मरदाना ने गुरु महाराज का दर्शन किया। वह गुरु महाराज के चरणों पर गिरकर, उन्हें चूमने लगा। उसने कहा, 'महाराज, मैं कहाँ हूँ ? मेरी समझ में मैं मिमिया रहा था भूँक रहा था, रो रहा था। आप कितने कृपालु हैं। आपने मेरा यहाँ से उद्धार किया।'

गुरु नानकदेव ने मरदाना से कहा, 'मरदाना, उठो और जरा रबाव बजाओ।' उन्होंने एक पद गाया। पद ने नूरशाह के हृदय पर गहरी चोट की। उसने यह महसूस किया, 'अमूल्य, मानव-जीवन को मैं जगत् के नश्वर भोगों और ऐश्वर्यों के चक्कर में डालकर नष्ट कर रही हूँ। इस जीवन को शुभ कर्मों में लगाकर मैं इसका सदुपयोग कर सकती हूँ।' इतना सोचकर पश्चात्ताप की अग्नि में दग्ध होने लगी। उसने अपने दासों और दासियों को मुक्त कर दिया और स्वयं गुरु महाराज के गाए हुए पद की दासी बन गई। गुरु जी महाराज ने उसे अपने धार्मिक सिद्धान्तों का उपदेश दिया। परिणाम यह हुआ कि उसने अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों को बाँट दी। स्वयं परिश्रम द्वारा अर्जित आजीविका पर जीवन व्यतीत करने लगी। वह गुरु महाराज के धार्मिक सिद्धान्तों की प्रचारिका बन गई। सामान्य लोगों को वह शारीरिक और आध्यात्मिक, दोनों प्रकार का भोजन देने लगी। बाद में नूरशाह के महल के स्थान पर गुरुद्वारे का निर्माण हुआ और उसमें हजारों लोग धार्मिक उपदेश ग्रहण करने लगे।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय सत्रह

जगन्नाथपुरी में संध्या की आरती

आसाम, कछार, पूर्वी बंगाल और ब्रह्मा की यात्रा करते हुए, गुरु नानकदेव ने जगन्नाथपुरी की समुद्री यात्रा की। जगन्नाथजी का मन्दिर उड़ीसा प्रान्त में, पुरी जिले में स्थित है। कृष्णजी की मूर्ति को जगन्नाथजी कहा जाता है। यह हिन्दुओं का बहुत प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रतिवर्ष लाखों यात्री जगन्नाथजी का दर्शन करने जाते हैं। वहाँ मूर्तिपूजा के अतिरिक्त अन्धविश्वास का बोलवाला था। आषाढ़ के महीने में वहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। जगन्नाथजी की मूर्ति का बहुत बड़ा जुलूस निकलता है। मूर्ति को लोहे के बहुत बड़े रथ पर स्थापित किया जाता है और नगर में विशाल जुलूस के साथ उस रथ को घुमाया जाता है। उन दिनों अन्धविश्वास और मूर्खता का ऐसा बोलबाला था कि कुछ लोग उस रथ के पहियों के नीचे अपने को डाल देते थे। रथ उनके शरीर पर से निकल जाता था। परिणामस्वरूप लोग मर जाते थे। ऐसी मृत्यु को लोग बड़ी सौभाग्यशालिनी मृत्यु समझते थे। लोगों का ऐसा विश्वास था कि जगन्नाथजी के पहियों के नीचे अपने को कुचलवाकर मरनेवाले व्यक्ति साक्षात् विष्णुलोक में जाते हैं। गुरु महाराज जी की यात्रा का प्रमुख उद्देश्य था कि इस प्रकार के अंधविश्वासों से जनता को मुक्ति दिलावें और उन्हें सच्चे धर्म और प्रेमाभक्ति का उपदेश दें। इसी उद्देश्य से उन्होंने अनेक हिन्दू तीर्थस्थानों की यात्राएँ की थीं। इसी लक्ष्य से उन्होंने जगन्नाथपुरी की भी यात्रा की।

उन्होंने जगन्नाथजी के मन्दिर से कुछ दूरी पर अपना आसन जमाया। गुरु जी ने पद गाना आरम्भ किया और उस पद की ध्वनि के साथ मरदाना अपने रबाब का स्वर मिलाने लगा। गाने के मधुर स्वर, उनके विचारों और भावों की उच्चता एवं गुरु नानकदेव के अलौकिक व्यक्तित्व ने लोगों को चुम्बक की भाँति आकर्षित कर लिया। अनेक तीर्थयात्री आ-आकर गुरु जी के पास बैठ गये और मन्त्रमुग्ध होकर उनका स्वर्गीय संगीत सुनने लगे। वे सब गुरु महाराज का दर्शन कर अपने को कृतकृत्य समझने लगे।

गुरु जी का गाना समाप्त हुआ। मरदाना के रबाब के तारों में वह अन्तिम रूप में झंकृत होने लगा। उनकी आँखें ध्यानावस्थित होकर मुँदी थीं। थोड़ी देर बाद उनके मुख से निकल पड़ा, 'ओ कृपालु, सर्वशक्तिमान् परमात्मा, तुझे लाखों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

धन्यवाद।' ऐसा कहकर उन्होंने अपनी आँखें खोल दीं। उन्होंने प्रेममयी और करुणायुक्त दृष्टि से अपने आस-पास के लोगों को देखा। उस चितवन ने अनेक घायल छातियों पर फाहा लगा दिया, अनेक दग्ध हृदयों को शीतलता प्रदान की, अनेक दग्ध मस्तकों पर मलयागिरि चन्दन पोत दिया और अनेक अशान्त एवं दुखी आत्माओं को शान्त तथा आनन्दित कर दिया। लोगों ने अपने भ्रम, भय, दुख और कष्ट को दिल खोलकर महाराज से कहना प्रारम्भ किया। गुरु जी महाराज ने सर्वशक्तिमान्, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वान्तिर्यामिन्, अत्यन्त कृपालु परमात्मा का गुणगान किया। उनके उपदेश से उनकी सारी शंकाएँ निर्मूल हो गईं, उनके सारे दुःख दूर हो गए, उनकी सारी चिन्ताएँ हवा में उड़ गईं और उनके सारे कष्ट समाप्त हो गए। उनमें आत्मविश्वास, दृढ़ता, आशा, उत्साह और पौरुष का संचार हुआ।

सारी जनता उन्हें प्रेम और उनकी प्रतिष्ठा करने लगी। पर जो ब्राह्मण जनता के अंधविश्वासों पर ही अपनी आजीविका कमाते थे, वे रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए। उन लोगों ने अपने तर्कों और शास्त्रार्थ के बल पर गुरु महाराज को उखाड़ फेंकना चाहा, किन्तु गुरु नानक महाराज के अगाध प्रेम, पूर्णविश्वास, महान् तर्क-वितर्क शक्ति, तीखी पर मृदु हास्यवृत्ति, सच्चाई, सहृदयता, निष्कपट व्यवहारकुशलता, दूरदर्शिता के आगे उन ब्राह्मणों की एक भी न चल पाई। वे गुरु महाराज के महान् और उदात्त व्यक्तित्व के सामने हतप्रभ हो गए। उन्होंने गुरु महाराज की महिमा स्वीकार की और चले गए।

सन्ध्या हुई और जगन्नाथजी की सान्ध्य-आरती का समय आ पहुँचा। मन्दिर के प्रमुख पुजारी एवं अन्य विशिष्ट तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने गुरु महाराज को सन्ध्या की आरती में सम्मिलित होने का आमन्त्रण दिया। गुरु महाराज ने उनके आमन्त्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया। वे मन्दिर में प्रविष्ट हुए। उन्होंने देखा कि बहुत बड़े सोने के थाल में बहुत बड़ा दीपक रक्खा था। उस दीपक के चारों ओर अन्य छोटे-छोटे दीपक प्रकाशित हो रहे थे। वह बहुमूल्य मोतियों तथा हीरे-जवाहरातों से जड़ा हुआ था। उसमें तेल के स्थान पर घी भरा था। बड़े दीपक के पास चाँदी की छोटी-छोटी तश्तरियों में भोग लगाने के अनेक पदार्थ रखे थे। बहुत से पुजारी बेशकीमती चौरियों से जगन्नाथजी की मूर्ति को हवा कर रहे थे। अनेक वाद्य-यंत्र बजाए जा रहे थे। सभी लोग खड़े होकर आरती में सम्मिलित हुए। जगन्नाथजी की मूर्ति के सामने सोने का बड़ा थाल कलात्मक ढंग से दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे वृत्ताकार घुमाया जा रहा था। इन सबके साथ, एक स्तुति भी की जा रही थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरती होते समय, गुरु महाराज वहाँ से खिसककर अनन्त आकाश के चंदोवे के नीचे बैठ गए। उन्होंने चमकती हुई आँखों से विस्तृत और अनन्त आकाश का दर्शन किया, टिमटिमाते हुए असंख्य नक्षत्रों पर उनकी दृष्टि पड़ी। उनकी श्वासों-प्रश्वासों में प्रभु के अनन्त ऐश्वर्य महिमा और अपरंपार शक्ति की आरती स्वतः होने लगी। उनकी आँखें बन्द होकर परमात्मा की दिव्य विभूतियों में विचरण करने लगी। वे परम शान्त भाव से विराट् पुरुष की विराट् आरती करने लगे। उसी में तन्मय हो गए। बाह्य-ज्ञान शून्य हो गया। आरती समाप्त होने पर, मंदिर के पुजारियों को ज्ञात हुआ कि गुरु नानकदेव आरती में नहीं सम्मिलित हुए।

जगन्नाथ-मन्दिर के सारे पुजारी गुरु महाराज के व्यवहार से अत्यधिक क्षुब्ध हुए। गुरु महाराज के पास पहुँचकर अपने वचन पर न स्थिर रहने के लिए, उन्होंने उनसे उलाहना दिया। इस पर गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'भाइयो, मैंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी नहीं। जगन्नाथजी की आरती करने से मैं तटस्थ नहीं रहा। आप ही लोग जगन्नाथजी की आरती में सम्मिलित नहीं हुए। आप लोग मेरी आरती में नहीं सम्मिलित हुए। अतः उलाहना मुझे ही देना है।' वहाँ के सारे पुजारी और आरती में सम्मिलित होने वाले लोग गुरु जी की बातें सुनकर चक्कर में पड़ गए। उन्होंने जिज्ञासा की, 'हम लोग जान सकते हैं कि आप अकेले किस प्रकार की आरती कर रहे थे?'

गुरु महाराज ने मरदाना को संकेत किया। रवाव बजना शुरू हो गया। उन्होंने अपने प्रसिद्ध पद 'आरती' को गाना प्रारम्भ किया। सभी लोग किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होकर उनका पद सुनने लगे। पद इस प्रकार है

गगन मैं थालु, रवि चंदु दीपक बनै, तारिका मंडल जनक मोती।
धूपु मलआनलो, पवणु चवरो करै, सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती।
जनहता, सबद बाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥
सहस तव नैन, नन नैन हउ तोहि कउ सहस मूरति, नना एक तोही।
सहस पद विमल, नन एक पद, गंध बिनु, सहस तव गंध, इव चलत मोही॥
सभ महि जोति-जोति है सोइ। तिसकै चानणि सभ महि चानणु होइ।
गुरु साखी जोति परगटु होइ। जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा।
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जाते तेरै नामि वासा[1] ॥४॥७॥९॥

भावार्थ 'हे प्रभु, तुम्हारी विराट् आरती के निमित्त आकाशरूपी थाल में

---

१. राग धनासरी, आरती, महला १

F 8/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सूर्य और चन्द्रमा दीपक बने हुए हैं और तारामण्डल उस थाल में मोती के रूप में जड़े हैं। मलय चन्दन की सुगन्धि तुम्हारी आरती की धूप है। वायु चँवर कर रहा है। हे ज्योतिस्वरूप, वनों के खिले हुए सारे पुष्प तुम्हारी आरती के लिए पुष्प बने हुए हैं ॥१॥

'तुम्हारी सीमित आरती कैसे हो सकती है? भवखण्डन, तुम्हारी आरती कैसे हो सकती है? अनाहत शब्द तुम्हारी आरती में नगाड़े के रूप में बज रहा है ॥१॥ रहाउ ॥

'तुम्हारे सहस्रों नेत्र हैं, फिर भी एक भी नेत्र नहीं है। सहस्रों मूर्तियाँ तुम्हारी ही हैं, फिर भी तुम एक मूर्ति भी नहीं हो। तुम्हारे सहस्रों पवित्र चरण हैं, तथापि एक भी चरण नहीं है। इसी प्रकार, तुम्हारी एक भी घ्राणेन्द्रिय के बिना, सहस्रों घ्राणेन्द्रियाँ हैं। मैं तुम्हारे इस अद्भुत चरित्र पर मोहित हूँ ॥२॥

"हे ज्योतिस्वरूप परमात्मा, तुम्हारी ज्योति सभी में विद्यमान है। तुम्हारी ही ज्योति के प्रकाश से सारी वस्तुएँ प्रकाशित हो रही हैं। परमात्मा का यह अद्वितीय प्रकाश गुरु के उपदेश से अपने में प्रकट होता है। जो तुम्हें अच्छा लगता है, वही वास्तविक आरती है ॥३॥

'हरि के कमलरूपी चरणों में मेरा भ्रमररूपी मन सदैव लोभी बना रहता है। मुझे प्रतिदिन तुम्हारे प्रेमरूपी मकरंद की प्यास बनी रहती है। नानक का कथन है कि प्रभु, मुझ पपीहे को अपनी कृपा का जल दो, जिससे तुम्हारे नाम में मेरा निवास हो ॥४॥'

पद का गान समाप्त हुआ। गुरु महाराज की आँखें 'विस्माद' भाव में ऊपर उठ गईं। राजा-महाराजा, पुजारी, ब्राह्मणगण एवं सभी श्रोतागण स्तब्ध खड़े थे। उस समय उन सबको सच्चे जगन्नाथजी की अद्भुत विभूतियों का भान हो रहा था। कर्तार की करामात पर सभी विमुग्ध थे। उन्हें प्रत्यक्ष अनुभूति हो रही थी कि उस विलक्षण कारीगर ने आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र-गण, पृथ्वी, वायु, ज्योति आदि का निर्माण किया है। उसी की आज्ञा से सब मर्यादा में स्थित हैं और अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। सभी जड़-चेतन के अन्तर्गत उसी जगत्-प्रकाशक का प्रकाश भासित हो रहा है। ऐसे जगन्नाथ की शक्ति और महिमा को भूलकर लोगों ने मूर्त्तियों को ही सब कुछ समझ रखा है। गुरु महाराज के गाने ने उन लोगों को दिव्य दृष्टि प्रदान कर दी। वे सभी मौन खड़े थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि गुरु नानक महाराज अपना मौन भंग कर उनसे कुछ कहें, वार्ता करें और शिक्षा दें।

कुछ समय बाद गुरु महाराज ने 'सत् कर्त्तार' कहकर अपना मौन भंग किया। अपनी ज्योतिर्मयी, प्रेममयी एवं मृदुल दृष्टि से सबको कृतकृत्य कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया। उनकी चितवन ने लोगों का हृदय बाँध लिया। उस चितवन ने लोगों का अतःकरण निर्मल कर दिया और आत्मा का उत्थान कर दिया। लोगों ने झुक कर उन्हें दण्डवत प्रणाम किया तथा और शिक्षा देने की प्रार्थना की। गुरु महाराज ने उन्हें बतलाया, 'आप लोग प्रेम और सेवा से परमात्मा द्वारा निर्मित प्राणियों की सेवा कीजिए। सर्वनिर्माता परमात्मा का सदैव चिन्तन कीजिए। मनसा, वाचा, कर्मणा उस परमपिता की आराधना करना मनुष्य-जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। सभी प्राणियों के भीतर ज्योतिस्वरूप परमात्मा की प्रचण्ड ज्योति प्रकाशित है। माया, मोह, लिप्सा के कारण यह ज्योति दबी रहती है। गुरु कृपा से यह ज्योति प्रकट होती है।'

गुरु जी के उपदेश से मृतकों में नवीन जीवन का संचार हुआ। सभी में नए प्राण की ज्योति चमकी। सभी लोग आशा, उल्लास, पौरुष से भर गए। उन्हें नवीन आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

लोग प्रतिदिन गुरु नानक महाराज के पास उनका उपदेश सुनने के लिए आने लगे। उनके प्रेरणादायक गीतों को सुनकर लोग तन्मय हो जाते थे। उनकी वार्ता में उन्हें अपार रस प्राप्त होता था। इस प्रकार लोग गुरु महाराज के अभिन्न अंग हो गए। लोगों के शरीर और मन, गुरु के शरीर और मन से एक हो गए। थोड़े दिनों के बाद गुरु ने जाने की बात कही। परमात्मा का आदेश उन्हें एक स्थान पर अधिक दिनों तक रुकने के लिए मना कर रहा था। उनकी आवश्यकता तो समस्त विश्व के मनुष्यों के लिए थी। किन्तु लोगों ने बड़े प्रेम और विनय से आग्रह किया, 'गुरु जी महाराज, अभी हम लोग आध्यात्मिक जीवन में निरे बच्चे हैं। अभी हम सबकी आप रक्षा करें। हम लोग बिना आपका पद सुने रह नहीं सकते। आप हम लोगों की प्रार्थना ठुकराइए नहीं।'

गुरु महाराज उनके इस प्रेमपूर्ण आग्रह को ठुकरा न सके। अतः कुछ दिन और वहाँ रुक गए। दो अथवा तीन महीने और रुककर उन्होंने उन पौदों को सींचा, जिन्हें उन्होंने आध्यात्मिकता के बगीचे में लगाया था। जब उन्होंने पूर्ण रूप से यह अनुभव कर लिया कि लोग अब अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं, स्वावलम्बी हो चुके हैं और परमात्मा के प्रति उनकी निष्ठा परिपक्व हो चुकी है, तो वहाँ से लोगों का हृदय जीतकर विदा हुए। जहाँ पर गुरु जी ने अपना आसन जमाया था, वहाँ पर एक गुरुद्वारा निर्मित है। लोग यहाँ प्रतिदिन सुबह और शाम एकत्र होकर गुरु महाराज के उद्बोधक गीतों का गान करते थे। गुरु महाराज लोगों के हृदय में बस गए। इस प्रकार गुरु और शिष्य परस्पर एक होकर परमात्मा की आराधना में लग गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय अठारह

पंजाब की वापसी

मरदाना को अपनी मातृभूमि की याद बहुत सता रही थी। वह काफी यात्राएँ कर चुका था, काफी कठिनाइयों का सामना कर चुका था और यात्राओं में काफी भूख-प्यास भी सहन कर चुका था। गुरु नानक महाराज के अजीब आकर्षण के वशीभूत होकर उसे वर्षों घर छोड़े हो चुके थे। वह वर्षों बीहड़ जंगलों में, ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर और भयंकर मरुस्थलों में भटक चुका था। अनेक अवसरों पर तो हिंसक पशुओं को देखने पर, भय के कारण उसके प्राण-पखेरू उड़ से गए थे। इसे दैवी चमत्कार ही समझना चाहिए कि उन हिंसक पशुओं ने गुरु महाराज और मरदाना को हानि नहीं पहुँचाई। अतएव यदि वच सका, तो और बला वह अपने सिर लेने को तैयार नहीं था। उसने गुरु नानकदेव से परामर्श किया, 'महाराज, या तो मेरे साथ अब आप भी घर लौट चलिए, या मुझे, अकेले लौट जाने की आज्ञा दीजिए।' गुरु महाराज ने कहा, 'मरदाना, अधीर मत हो। थोड़ा धैर्य धारण करो। परमात्मा ने मुझे जो कार्य करने की आज्ञा दे रक्खी है, वह अभी पूरा नहीं हुआ है।'

यह सब कहने पर भी, गुरु महाराज के चरण पंजाब की ओर चल रहे थे। उन्होंने परमात्मा की मर्जी और हुक्म के अनुसार अपने रास्ते को चुना। किन नगरों, कस्बों, गाँवों, जंगलों मैदानों से वे गुजरे, इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता। हाँ, इस बात का उल्लेख अवश्य मिलता है कि पंजाब की वापसी में रुहेलखण्ड से जरूर गुजरे।

उस समय रुहेलखण्ड बड़ा तमोगुणी प्रदेश था। उस भूमि पर रुहेला सरदारों का आधिपत्य था। वे बड़े जंगली और नृशंस थे। मार्ग से गुजरनेवाले सभी यात्रियों और अजनबियों को पकड़कर गुलाम बना लेना उनका नित्य का कार्य था। गुरु महाराज जी का नवनीत हृदय इस क्रूर कार्य और गुलामी प्रथा के अत्याचारों से पिघल गया। अपने अभागे साथियों की दुर्दशा पर उनका हृदय कराह उठा। उन्हें गुलामों और गुलाम बनानेवाले, दोनों की ही दशा पर अपार करुणा उत्पन्न हुई। उन्होंने निरीह गुलामों को मुक्त करने का दृढ़ संकल्प किया ताकि उनका शरीर और आत्मा मुक्त गगन में साँस ले सकें और वे लोग परमात्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की भक्ति और प्रेम, सेवा-धर्म और मानव प्रेम की पवित्र सदस्यता में समान रूप से भागी हो सकें, जिसकी स्थापना में उन्होंने अपना परिवार और मातृभूमि छोड़ रखी थी।

गुरु नानकदेव ने मरदाना को कुछ दिनों के लिए पृथक् रहने की आज्ञा दे दी। उन्होंने अकेले रुहेलखण्ड जैसे तामसी प्रदेश में प्रवेश किया। वे शीघ्र ही गिरफ्तार करके गुलामी करने के लिए बेच दिए गए। उनका मालिक रुहेलों का प्रमुख सरदार था। उस सरदार का धर्म और लोक दोनों पर समान रूप से प्रभुत्व और प्रभाव था। निरा धोखा-कपट ही उसका धर्म था। इससे उस प्रदेश में उसका असाधारण प्रभुत्व था; इस कारण उसे बराबर उपहार और भेंटें मिलती रहती थीं। इन भेंटों के पाने से उसका हृदय द्रवीभूत होने के बजाय और भी कठोर बनता जाता था। उसके संसार सम्बन्धी शासन में क्रूर अत्याचारों का बोलबाला था।

उस सरदार ने गुलाम गुरु नानकदेव को घर की सेवा-टहल में लगा दिया। उस सरदार की स्त्री की एक अजीब सनक यह थी कि वह नए और असाधारण सुन्दर गुलामों से गृहस्थी सम्बन्धी सेवा-टहल कराती थी। किन्तु गुरु महाराज का यहाँ आना एक खास उद्देश्य के लिए था। वे परमात्मा द्वारा निर्मित निम्नतम प्राणी की सेवा भी बड़े चाव से कर सकते थे। भगवान् के प्रेम के नाम पर उन्हें नीच से नीच व्यक्ति की सेवा करने में अत्यधिक सन्तोष और आनन्द प्राप्त होता था। किन्तु एक क्रूर और अत्याचारी की सेवा करना उनकी मर्जी के विरुद्ध था। उन्होंने रुहेला सरदार को करुणापूर्ण दृष्टि से देखा। उनके नेत्रों की असाधारण ज्योति, उनके मस्तक के दिव्य तेज, उनके हृदय के असीम प्रेम और उनकी भय-विहीन शान्ति और पवित्रता ने उस अभिमानी और पाषाण-हृदय रुहेला पर विचित्र प्रभाव डाल दिया। गुरु महाराज की थोड़ी बातचीत, उनके कंठ के दिव्य संगीत और उनके महिमामय मुखमण्डल की भुवनमोहिनी मुस्कान ने सारी परिस्थिति को एकदम परिवर्तित कर दिया। परिणाम यह हुआ कि गुलाम मालिक बन गया और मालिक गुलाम। रुहेला सरदार गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़ा। वह परिवर्तित मनुष्य के रूप में गुरु के चरणों को छोड़कर खड़ा हुआ। उसके हृदय, मन और आत्मा में अपार आनन्द की वर्षा हो रही थी। इस आनन्द की लहर में उसके सारे पाप-ताप धुल गए। उसके मन और हृदय में अजीब हलकापन आ गया। वह सरदार गुरु महाराज का दास और शिष्य बन गया। गुरु महाराज के आदेशानुसार उसने सारे गुलामों को मुक्त कर दिया। शीघ्र ही नियमित सत्संग भी चालू हो गया। गुरु महाराज का सन्देश बिजली की लहर के समान रुहेलखंड के अन्य कस्बों में व्याप्त हो गया। बहुत दूर-दूर से लोग आ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आकर गुरु महाराज के चरणों पर गिरने लगे। उन्होंने उन लोगों को नवीन जीवन, नवीन प्रेरणा और नवीन प्रकाश दिया। उन्होंने उन लोगों की आत्मा को अनन्त ज्ञान व शक्ति, आनन्द और करुणा के स्रोत परमात्मा से नियोजित कर दिया। चारों ओर प्रसन्नता ही प्रसन्नता थी। गुरु नानकदेव ने उस बन्दी रुहेला को मुक्त करके नवजीवन प्रदान किया। उस दास बनानेवाले रुहेला सरदार को परत्मामा का सच्चा दास बना दिया। परमात्मा का दास बनने में उसने जिस अपार आनन्द और शान्ति का रसास्वादन किया, वह वर्णनातीत है।

कुछ दिनों बाद मरदाना आकर गुरु महाराज से मिला। उसने फिर पंजाब लौटने का आग्रह किया। उसने गुरु महाराज से कहा, 'महाराज, आपने बीबी नानकी को जो वचन दिया है, उसे याद रखिए। आपने उनसे प्रतिज्ञा की है कि जब भी वे बहिन के स्नेह एवं शिष्या की भक्ति के रूप में आपका स्मरण करेंगी, तभी आप उनके पास पहुँच जाएँगे। पिछली रात मैंने उन्हें स्वप्न में देखा है। वे आपकी लम्बी अनुपस्थिति से अत्यधिक दुखी और चिन्तित थीं। सच्चे प्रेमी अपने हृदय का संदेश कहीं भी भेज सकते हैं। उनके लिए स्थान की दूरी कोई महत्त्व नहीं रखती। निश्चय ही आपका कोमल और भावुक हृदय उनके अलौकिक प्रेम को अवश्य अनुभव करता होगा। फिर आप देर क्यों कर रहे हैं? उनके धैर्य और सहन-शक्ति की इतनी कड़ी परीक्षा क्यों ले रहे हैं? और बहुत से लोग हैं, जो आपके दर्शन के लिए बड़े उत्सुक हैं। कुछ लोग मुझे देखकर भी प्रसन्न होंगे। अतः अब हमें लौटना चाहिए।'

गुरु महाराज ने मुस्कराकर कहा, 'तुम्हारे सच्चे प्रेमी हृदय ने सचमुच ही प्रेमी हृदयों द्वारा भेजी तरंगों को ठीक रूप में ग्रहण कर लिया है। हाँ, अब हम लोग निश्चय ही पंजाब लौटेंगे।'

इस प्रकार वे दोनों पंजाब की ओर चल पड़े। लौटते समय गुरु महाराज जिस-जिस स्थान से गुजरे, उन सभी स्थानों पर अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते गए। अनेक अपवित्र आत्माओं को शुद्ध किया। निराश व्यक्तियों में आशा का संचार किया, कापुरुषों को साहसी बनाया, शुष्क हृदयों में प्रेम, भक्ति और सेवा की त्रिवेणी प्रवाहित की। जीवन से निराश यात्रियों में उत्साह भरके उन्हें मंजिल तक पहुँचाया। इस प्रकार गुरु महाराज जहाँ-जहाँ गए, वहाँ-वहाँ परमात्मा-भक्ति, मानव-प्रेम, निष्काम कर्मयोग, मानव-सेवा का पाठ पढ़ाते गए और लोगों को प्रसन्न, उत्साही, कर्मठ, पवित्र, ईश्वरभक्त बनाते गए।

गुरु नानकदेव और मरदाना १५०६ ई० में सुल्तानपुर पहुँचे। सारे शहर के लोगों ने उनका भव्य स्वागत किया। गुरु नानक की बहिन, नानकी बीबी के उल्लास और आनन्द की सीमा न रही। गुरु जी की सहधर्मिणी आनन्दातिरेक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कारण रोने लगीं। उनके दोनों पुत्र—श्रीचन्द और लक्ष्मीदास उनके चरणों पर गिर पड़े। सभी ने प्रार्थना की, 'अब, आप हम लोगों को छोड़िए नहीं।' गुरु महाराज ने उन्हें उपदेश दिया, 'आप सभी प्रसन्न और आनन्दित रहिए। आप लोगों का जो असीम प्रेम और स्नेह मेरे प्रति है, उसे मैं भलीभाँति जानता हूँ। साथ ही मेरा कर्त्तव्य भी जो आप लोगों के प्रति है, उससे भी मैं अनभिज्ञ नहीं हूँ। मेरे हृदय में आप सभी के प्रति अगाध प्रेम है। मुझे भी भगवान् ने मानव हृदय दिया है। किन्तु परमात्मा ने मुझे दूसरे कार्य में नियोजित किया है। संसार के सभी मनुष्य मेरे परिवार के प्राणी हैं। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। उन सबों की सेवा करना मेरा पुनीत कर्त्तव्य है। इसी कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए परमात्मा ने मुझे आदेश दिया है। मेरे विस्तृत परिवार के लोगों को मेरी आवश्यकता है। वे सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। अतः आप लोग प्रेम से, उल्लास से मुझे विदा दीजिए।'

गुरु नानक महाराज के हृदय में परमात्मा की जो अखण्ड और शाश्वत ज्योति प्रकाशित हो रही थी, उससे वे संसार के सभी प्राणियों के हृदय को प्रकाशित कर देना चाहते थे। अतः वे सुल्तानपुर में रुक न सके।

सुल्तानपुर में केवल एक दिन और एक रात व्यतीत करने पर, वे दोनों व्यक्ति अपनी मातृभूमि—तलवण्डी की ओर रवाना हुए। मार्ग में वे एक दिन लाहौर रुके। वहाँ उनका एक धनी शिष्य, मनसुख रहता था। मनसुख गुरु महाराज का परम भक्त और शिष्य था। तलवण्डी पहुँचकर, वहाँ से बाहर गुरु महाराज रुके। उन्होंने मरदाना से कहा, "भाई मरदाना, जाओ और लोगों को देख आओ।"

गुरु नानकदेव के आगमन की सूचना तलवण्डी भर में शीघ्र ही फैल गई। झुण्ड के झुण्ड लोग उनके दर्शन को आने लगे। उनके माता-पिता भी उनके पास आए। गुरु महाराज ने अपने माता-पिता के चरणों में झुककर प्रणाम किया। उन्होंने गुरु जी को छाती से लगा लिया और उनके ऊपर आँसुओं की वर्षा की। उन्होंने गुरु महाराज से आग्रह किया, 'बेटा, इस फकीरी बाने को छोड़ दो। दर-दर मारे-मारे घूमना अच्छा नहीं लगता। अब गृहस्थी में आओ।' गुरु महाराज ने उनसे कहा, 'भगवान् की मर्जी मानने ही में हम सबका कल्याण है। परमात्मा में दृढ़ विश्वास रखिए। मुझे परमात्मा ने जिस काम में लगाया है, वही कर रहा हूँ। मैं उसके हुक्म और मर्जी के विरुद्ध चलूँ, तो पानी से निकली हुई मछली की भाँति तड़प-तड़पकर मर जाऊँगा। मेरे लिए उस परमात्मा की मर्जी ही सब कुछ है। यही मेरा भोजन है, यही मेरा पानी है, यही मेरा वस्त्र है और यही मेरा सर्वस्व है। अभी उसके आदेश का पालन बहुत कुछ बाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

है। उसका आदेश पालन किए बिना मैं घर पर किस प्रकार रह सकता हूँ ? अभी बहुत-सी भूखी, प्यासी आत्माएँ दुःख से, पीड़ा से तड़प रही हैं। मुझे उनके पास जाना है। उन्हें शान्ति और आनन्द देना है। मैं उन मृतात्माओं को पर-मात्मा के नाम का अमृत पिलाकर जिलाऊँगा।' इस प्रकार गुरु महाराज ने अपने माता-पिता को सान्त्वना दी। वे तलवंडी में रुके नहीं। गुरु महाराज ने एक रात अपने पुराने शिष्य राय बुलार के साथ बिताई।

माता-पिता को अपने पुत्र के दृढ़ संकल्प के सामने झुकना पड़ा। चलते समय उन्होंने कहा, 'मैं फिर आऊँगा।' मरदाना सदैव की भाँति गुरु महाराज के साथ-साथ चल पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय उन्नीस

पंजाब में यात्राएँ

गुरु नानकदेव और मरदाना फिर अपनी यात्राओं पर निकल पड़े। रावी और चिनाब नदियों के किनारे-किनारे उन्होंने अपनी यात्राएँ कीं। सभी स्थानों पर गुरु जी ने परमात्मा के महिमा-सम्बन्धी पदों का गान किया और लोगों को परमात्मा को प्रसन्न करने और उनसे मिलने का मार्ग दिखलाया। कुछ दिनों के बाद वे दोनों पाकपटन की ओर मुड़े। उस स्थान पर शेख ब्राहम रहते थे और उनसे गुरु महाराज एक बार पहले भी मिल चुके थे। गुरु महाराज के आदेशानुसार शेख ब्राहम शारीरिक यंत्रणा सम्बन्धी तपस्या का परित्याग करके साम्यावस्था में आ गए थे और अपने पूर्वजों की गद्दी पर सुशोभित थे। गुरु नानक देव यह देखना चाहते थे कि जिस परमात्मा के नामरूपी बीज को शेख ब्राहम के पवित्र हृदय में बोया था, वह पौदे के रूप में उगकर फल-फूल रहा है अथवा ज्यों का त्यों है। वे शहर से चार मील की दूरी पर रुक गए। शेख ब्राहम के एक पवित्र और ईश्वर-परायण शिष्य शेख कमाल, जंगल में लकड़ियाँ लेने गए थे। शेख कमाल ने उस स्थान पर गुरु नानकदेव और उनके शिष्य मरदाना को देखा। मरदाना रबाब पर गुरु द्वारा निर्मित एक पद गा रहा था—

आपे पटी कलम आपि उपरि लेख भि तूं।
एको कहिए नानक दूजा काहे कू॥[1]

अर्थात् 'हे प्रभु तू आप ही पट्टी है, आप ही कलम है और उस पट्टी के ऊपर का लेख भी तू आप ही है। अतः नानक की दृष्टि में उस प्रभु को एक ही कहा जाना चाहिए, दूसरा किसलिए कहा जाए?'

शेख कमाल गुरु जी के पास गया और प्रणाम करके उनके पास बैठ गया। उसने प्रार्थना की, 'महाराज, अभी जो गाया जा रहा था, उसे पुनः सुनवाने की कृपा कीजिए।' मरदाना ने उसी को दुबारा सुनाया। इसके बाद वह अपनी लकड़ियाँ लेकर घर लौट गया। उसने अपने गुरु, शेख ब्राहम से सारी बातें विस्तार से कहीं और मरदाना द्वारा गाई पंक्तियों को सुनाया। शेख ब्राहम को

---

१. मलार की वार महला, १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनुभव हो गया कि वे पंक्तियाँ गुरु नानकदेव की हैं। हो न हो, वे पुनः आए हों। अतः वे तुरन्त गुरु महाराज के स्वागतार्थ वहाँ से चल पड़े।

शेख ब्राह्म सूफ़ी फ़क़ीर थे। उनमें सूफ़ियों के सभी गुण और कमियाँ मौजूद थीं। इस्लाम धर्म की संस्थापना अरब के रेगिस्तानों में हुई थी। तलवार और आगजनी के बल पर इसका प्रचार और प्रसार दूर-दूर के देशों में किया गया था। फारस और भारत के दर्शनशास्त्र के प्रभाव के कारण मुसलमान मजहब की एक शाखा सूफ़ी सम्प्रदाय में परिवर्तित हो गई थी। सूफ़ी लोग अपनी दार्शनिक विशेषताओं को रखते हुए, आखिरकार मुसलमान ही थे। शेख ब्राह्म सूफी होने के नाते मुसलमानों की कट्टरता और क्रूरता से बहुत दूर थे। फ़िर भी वे मुसलमानों के पैगम्बर, मुहम्मद के अनुयायी थे।

आपसी दुआ-सलाम के बाद, गुरु नानकदेव ने परमात्मा को हार्दिक धन्यवाद दिया कि उसने शेख ब्राह्म से दुबारा मिलने का अवसर दिया है। कुछ देर की मैत्रीपूर्ण वार्ता के बाद शेख ब्राह्म ने गुरु महाराज से कहा, 'महाराज, परमात्मा एक तो अवश्य है, पर उससे मिलने के लिए मध्यस्थ की आवश्यकता पड़ती है। पैगम्बर मुहम्मद ही ऐसे मध्यस्थ हैं, जो परमात्मा से हमारा साक्षात्कार करा सकते हैं।'

गुरु महाराज ने शेख ब्राह्म से इस प्रकार कहा, 'मेरे दोस्त, जैसा आप कह रहे हैं, वैसा ठीक नहीं है। हमें अकाल पुरुष और अजर, अमर परमात्मा की एकमात्र आराधना करनी चाहिए। जो व्यक्ति जीवन और मरण के वशीभूत होता है, उसकी उपासना हम क्यों करें? जीवन धारण करने और मरनेवाला व्यक्ति परमात्मा के दरबार में कैसे मध्यस्थता कर सकता है? परमात्मा के साक्षात्कार के लिए, साधक को ऐसे गुणों का अर्जन करना चाहिए, जो उसे प्रिय हों। पत्नी को पति से मिलने के लिए मध्यस्थों की आवश्यकता निरर्थक है। यदि उस पत्नी के अन्तर्गत सौन्दर्य और पातिव्रत गुण है, यदि वह विनम्र और मृदुभाषिणी है, यदि उसके हृदय में अपने पति के लिए पूर्ण और निष्कपट प्यार है, यदि वह अपने वचनों और कार्यों से अपने पति को प्रसन्न रख सकती है, तो वह स्वयं अपने पति से मिल लेगी। ठीक यही दशा परमात्मा के भक्तों की है। अरे शेख़, जब राजाधिराज (परमात्मा) स्वयं सभी क्षण मिलने के लिए सुलभ है, तो वज़ीरों और दरबारियों की क्या आवश्यकता है? इसके माने यह नहीं है कि प्रेमी परमात्मा के देश में जाने के लिए किसी की सहायता अथवा मार्ग-प्रदर्शन की आवश्यकता नहीं है। निस्सन्देह परमात्मा-प्राप्ति के मार्ग में ऐसे व्यक्तियों की सहायता और मार्ग-प्रदर्शन की आवश्यकता पड़ती है, जिन्होंने उसके देश में जाकर, उससे साक्षात्कार किया है। ऐसे लोग हमें निश्चय ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसका मार्ग बतला सकते हैं। उस परमात्मा की प्राप्ति के मार्ग में जो अड़चनें, विघ्न-बाधाएँ आती हैं, उनकी चेतावनी के लिए मार्गप्रदर्शकों की नितान्त आवश्यकता है। साधक का मन जब माया-मोह के चक्कर में पड़कर पथ-भ्रष्ट होने लगता है, तो अनुभवी व्यक्ति उसे माया-मोह से हटाकर सही रास्ते पर लगा देता है। साधक को इतनी ही सहायता अपेक्षित है। उसे यात्रा तो अपने आप करनी है। जब परमात्मा का शाश्वत दरबार बिलकुल निकट आ जाता है, तो साधक को उसके भीतर स्वयं अकेले प्रवेश करना पड़ता है। उसके गुणों पर रीझकर परमात्मा चाहे तो उसे अपने गले लगा ले, अथवा उसके अवगुणों को जानकर अपने यहाँ से लौटाकर दुबारा यात्रा करने का हुक्म देता है। ऐसी स्थिति में उस समय कोई मध्यस्थ सहायता नहीं कर सकता। अतएव मेरे दोस्त, विनम्र बनकर अपने अन्य साथियों की प्रेमपूर्ण सेवा करो। सत्य परमात्मा के प्रति अडिग भक्ति रक्खो। परमात्मा की प्राप्ति के लिए सतत जागरूक रहो। उसके द्वारा निर्मित प्राणियों की सेवा के माध्यम से उसकी उपासना करो। प्रतिक्षण तुम्हारे हृदय में सर्वशक्तिमान् प्रभु की प्रार्थना होती रहे। भगवान् के भक्तों से सदैव शिक्षा और सहायता लेकर उसके अनुरूप कार्य करने का प्रयत्न करो। तुम्हारा समस्त मन, हृदय और आत्मा इस प्रकार सेवा में तन्मय रहे। इस प्रकार परमात्मा द्वारा तुम्हारी निश्चय ही रक्षा होगी। निस्सन्देह प्रभु, परमात्मा तुम्हें प्रेम से अपने गले लगा लेगा।'

गुरु महाराज की सारी बातों को शेख़ ब्राहम बड़े ध्यान से सुनते रहे। वे जीवनपर्यन्त परमात्मा-प्राप्ति के मार्ग पर चलने का प्रयास करते रहे, पर भ्रम और अविश्वास के कारण सदैव परेशान रहे। उनके सारे संशय, भ्रम और अविश्वास दूर हो गए। गुरु महाराज के उपदेश और कृपायुक्त चितवन ने शेख़ ब्राहम के हृदय की मैल साफ कर दी और वे खरे सोने की तरह चमकने लगे। उनकी समस्त हीन मनोभावनाएँ और कलुषित मनोवृत्तियाँ पूर्णतया नष्ट हो गईं। शेख़ साहब को परमात्मा की महिमा गुरु महाराज में दिखलाई देने लगी। वे गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़े। उनके मस्तक में बिजली की लहर दौड़कर सारे शरीर में फैल गई। उस लहर ने उनकी समस्त रक्त-शिराओं में आनन्द और शान्ति की धारा प्रवाहित कर दी। गुरु महाराज ने उनकी पीठ पर अपना वरद-हस्त रक्खा। उनके स्पर्श ने शेख़ जी के सारे शरीर में नवीन तथा बलवती लहर का संचार किया। वे गुरु महाराज की आज्ञा से उठकर खड़े हुए। उनकी आँखों में नवीन प्रकाश दिखलाई पड़ रहा था, समस्त रक्त-शिराओं में नवीन रक्त का संचार हो रहा था, हृदय में शाश्वत आनन्द और पूर्ण प्रेम का सागर उद्वेलित हो रहा था और आत्मा पूर्णानन्द से परिपूर्ण हो रही थी। वे अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मनसा, वाचा, कर्मणा गुरु महाराज के शिष्य बन गए। शेख ब्राह्मण को नवीन जीवन प्रदान करके गुरु नानकदेव आगे चल पड़े।

वहाँ से गुरु महाराज दिपालपुर की ओर बढ़े। वहाँ से चलकर दिन समाप्त होते-होते वे एक छोटे से गाँव में पहुँचे। अपने अभ्यास और स्वभाव के अनुसार वे गाँव से बाहर किसी एकान्त स्थान को खोजने लगे। एकान्त में एक झोपड़ी देखकर उन्होंने दरवाजा खटखटाकर कहा, 'अरे भाई, हमें रात भर का निवास चाहिए।' उस झोपड़ी में एक कोढ़ी रहता था। खटखटाहट सुनकर उसने दरवाजा खोल दिया। कोढ़ी ने अपने दरवाजे पर एक ऐसे विचित्र अतिथि को देखा, जो गाँव के धनिकों के घरों को छोड़कर, एक उपेक्षित कोढ़ी के यहाँ आतिथ्य स्वीकार करने आया है। कोढ़ी ने गुरु महाराज से कहा, 'महाराज, जंगल के जानवर भी मेरे पास आने में घृणा करते हैं। मैं सभी की दृष्टि में उपेक्षित और तिरस्कृत हूँ। लोगों ने मेरा परित्याग कर दिया है और वे इस रास्ते से गुजरना भी पसन्द नहीं करते। आप कौन हैं, जो रात्रि में मेरी झोपड़ी पर पहुँचकर, मुझे 'भाई' कहकर सम्बोधित कर रहे हैं? आप कौन हैं, जो एक बहिष्कृत और तिरस्कृत व्यक्ति पर अपनी प्रेमवर्षा कर रहे हैं?'

गुरु महाराज ने झोपड़ी में घास-फूस पड़ी हुई फर्श पर अपना आसन जमा लिया। उन्होंने मरदाना से कहा, 'भाई मरदाना, रबाब उठाओ, परमात्मा का पद जबान पर आ गया है।' तदनन्तर गुरु जी ने एक पद का गान किया, जिसका भाव इस प्रकार है—

'जीव बारंबार दग्ध होता रहता है। वह दग्ध होकर खप जाता है और बहुत विकारयुक्त हो जाता है। जिन मनुष्य को गुरुवाणी भूल जाए, वह कोढ़ी के समान चीखता और बिलबिलाता है ॥१॥

'बहुत बोलना तो व्यर्थ बकना है। हरी, बिना बोले ही सब कुछ समझता है ॥१॥ रहाउ ॥

'जिसने हमारे कान, आँख और नाक बनाई है, जिसने जिह्वा प्रदान की, जो तुरन्त बोलती है, जिसने मन को, अर्थात् हमें माता के गर्भ की उष्णता में डालकर, फिर बचा रक्खा और जिस हरी की कृपा से कानों में हवा जाकर बजती है, अर्थात् ध्वनि उत्पन्न करती है और सारी बातें जाकर कंठ से उच्चरित होती हैं, उस परमात्मा का स्मरण प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए ॥२॥

'जितने भी मोह, सांसारिक प्रीति और स्वाद हैं, वे सब आत्मा को कलुषित बनाने के लिए कालिख हैं, जो उसे दागों से भर देते हैं। जो मनुष्य इन दागों को, इन दोषों को अपने मुँह में लगाकर जाता है, उसे परमात्मा के दरबार में बैठने को नहीं मिलता ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हे प्रभु, तेरी कृपा से तेरा नाम जपने को मिलता है। उसी नाम-जप से ही संसार-सागर से तरा जा सकता हैं, इसके अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय नहीं है। यदि कोई डूबा भी हो, तो नाम जपने से उसकी भी खोज ली जाती है और हरी उसकी सँभाल करता है। हे नानक, सच्चा हरी ही सबका दाता है ॥"[१]४।३।५॥

गाना समाप्त हुआ। कोढ़ी दिव्य संगीत सुनकर, अपनी सारी शारीरिक पीड़ाएँ भूल गया। अलौकिक आनन्द से उसका हृदय लबालब भर गया। वह गुरु महाराज के पवित्र चरणों में गिर पड़ा। तत्पश्चात् बिलकुल परिवर्तित, नवीन मनुष्य के रूप में खड़ा हुआ। गुरु महाराज के अनुपम संगीत ने उसे पूर्णता प्रदान कर दी। उसके शरीर, मन और आत्मा से कुष्ठ रोग दूर हो गए। आध्यात्मिक जगत् में उसका नवीन जन्म हुआ। रात भर गुरु महाराज उसके पास रुके। उसे अपना पद देकर, प्रातःकाल विदा हुए। उस गरीब, उपेक्षित, तिरस्कृत व्यक्ति से विदा लेकर, निरन्तर उसके हृदय में निवास किया। गुरु महाराज उस गरीब की झोपड़ी में अब भी विराजमान हैं, क्योंकि उस स्थान पर एक गुरुद्वारा बनाया गया है। वहाँ रात-दिन गुरु के पदों का गान होता है, जिससे संसार-सागर में थके यात्रियों को अनिर्वचनीय शान्ति प्राप्ति होती है।

कंगसर, कसूर और पट्टी आदि स्थानों से होते हुए, गुरु नानकदेव व्यास नदी पार करके सुल्तानपुर की ओर अग्रसर हुए। गुरु महाराज की प्रिय बहिन, बीबी नानकी और उनके अनन्य शिष्य उनसे मिलने के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। उन्होंने अपनी बहिन के पवित्र अन्तःकरण के आदेश का पालन करना आवश्यक समझा। जब भी बीबी नानकी को गुरु महाराज के दर्शन की उत्कट अभिलाषा हुई, वे तुरन्त उनकी सेवा में जाकर उपस्थित हुए। अपने भाई से मिलकर बीबी नानकी को जो आह्लाद और आनन्द प्राप्त हुआ, उसका वर्णन कौन कर सकता है ? उनके सभी शिष्यगण एवं नवाब दौलत खाँ गुरु जी के दर्शन से अत्यधिक प्रसन्न हुए। गुरु महाराज ने परमात्मा-सम्बन्धी प्रेम, भक्ति, सेवा भाव, निष्काम कर्म की उन्हें पुनः याद दिलाई।

एक या दो दिन रुकने के बाद, वे पूर्व दिशा में अग्रसर हुए। सतलज नदी पार करके, उन्होंने पंजाब के दूसरे भाग में यात्राएँ कीं। प्रत्येक स्थान पर, गुरु महाराज ने परमात्मा के ऐश्वर्य, महिमा, सर्वशक्ति सम्पन्नता, अन्तर्यामित्व और कृपालुता के गीत गाए और लोगों को आध्यात्मिक, पवित्र जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी। कुछ समय के बाद, वे फिर लौट पड़े। दुबारा सुल्तानपुर होते

१—जीउ तपत है...सरब दातार...। धनासरी, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हुए उन्होंने व्यास नदी को पार किया। वैरोवाल, जलालाबाद आदि स्थानों से होते हुए वे एक गाँव में पहुँचे। उस गाँव का नाम था—'कीरी पठानां दी।' उस गाँव के पठानों ने गुरु महाराज का दिव्य संगीत सुना। वे गुरु महाराज के चरणों में गिर पड़े और उन्होंने कहा, 'महाराज, यह आपकी आवाज़ नहीं है, यह खुदा की आवाज़ है।' उस गाँव के सारे पठान गुरु महाराज के अनन्य शिष्य हो गए। उन्होंने गुरु महाराज की प्रशंसा में अनेक गीत रचकर सुनाए।

गुरु नानकदेव ने अपनी यात्रा जारी रक्खी। गुरदासपुर जिले में बटाला नामक स्थान पर होते हुए, सैयदपुर पहुँचे। गुरु महाराज के आशारहित दर्शन से भाई लालो की प्रसन्नता की सीमा नहीं रही। उसने गुरु महाराज से वहाँ के पठान शासक के अत्याचारों का वर्णन किया। पठान के अत्याचारों को सुन कर गुरु जी का कोमल हृदय द्रवीभूत हो गया। उनके नेत्रों से अश्रुधार बहने लगी। उन्होंने दुःख से ठंडी आह भरी। अनजाने में उनके ओठों में कम्पन हुआ। उन्होंने अपने हृदय में मौन भाव से सर्वशक्तिमान् परमात्मा की प्रार्थना की। इसके पश्चात् उन्होंने लालो को संबोधित करके कहा, 'भाई लालो, इस अभागे देश के भाग्य में संताप के बाद संताप ही लिखा है। और भी दुःख और संताप इस देश पर आ रहे हैं। इन अत्याचारियों का सर्वनाश हो जाएगा, किन्तु इनके साथ-साथ कितने असहाय और निरपराध व्यक्तियों के जीवन भी जाएँगे। वे बेचारे मुसीबतों में बरबाद होंगे।'

इसके बाद गुरु जी महाराज ने मरदाना को रबाब बजाने का आदेश दिया। गुरु महाराज के चेहरे पर विलक्षण गंभीरता और उदासी थी। उन्होंने एक ऐसे पद का गान किया, जिसमें भविष्य में घटित होनेवाले शोक और विलाप का साकार चित्रण था। गुरु महाराज की भविष्यवाणी से सम्बन्धित पद का भाव इस प्रकार है—

'हे लालो, जैसे-जैसे पति, परमात्मा का हुक्म मेरे पास पहुँचता है, वैसे ही वैसे ज्ञान का प्रकाश मैं करता हूँ। (बाबर) पाप अर्थात् ज़ुल्म की बारात लेकर काबुल से चढ़ आया है और जबर्दस्ती हिन्दूरूपी कन्या का दान माँगता है। शर्म और धर्म दोनों ही छिप गए हैं और झूठ प्रधान होकर फिर रहा है। तात्पर्य यह कि झूठों का ही जोर और बोलबाला है। काजियों और ब्राह्मणों की बातें समाप्त हो चुकी हैं। तात्पर्य यह है कि काजियों और ब्राह्मणों को अब कोई नहीं पूछता है और अब उनके स्थान पर विवाह शैतान करवाता है (तात्पर्य यह है कि लड़कियों को बलात् छीनकर आक्रमणकारी अपनी पत्नी बना लेते हैं, पंडितों अथवा काजियों के द्वारा विवाह अथवा निकाह करने की आवश्यकता नहीं समझी जाती।) मुसलमानिनें दुखी होकर कुरान पढ़ रही हैं और खुदा के आगे दुआएँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर रही हैं। (मुगल) सिपाही मुसलमान पठानियों से ऊपर भी अत्याचार ढा रहे हैं। अन्य ऊँची-नीची हिन्दू स्त्रियों को भी इसी गिनती में समझ लो। खून के गीत गाए जा रहे हैं। हे नानक, स्थान-स्थान पर रक्त का केशर पड़ रहा है ॥१॥

'नानक' साहब—परमात्मा का गुण थाता है और इस मांस, अर्थात् लोगों से भरी हुई नगरी का आख्यान कहता है। जिस प्रभु ने यह सृष्टि रची है और पृथक्-पृथक् रंग में रँगी है, वह आप अकेला बैठा हुआ, सब कुछ देख रहा है। वह साहब, प्रभु सच्चा है, उसका न्याय भी सच्चा है। और वह सच्चे न्यायवाला हुक्म भी करेगा। शरीररूपी कपड़ा टुकड़े-टुकड़े हो जायगा और हिन्दुस्तान मेरे वाक्य को याद करेगा। मुगल संवत् ७८ में आएँगे और ९७ में चले जाएँगे और तभी एक और मर्द का चेला, शूरवीर उत्पन्न होगा। (यहाँ संवत् १५७८ विक्रम में बाबर के ऐमनाबाद के आक्रमण तथा संवत् १५९७ विक्रमीय में हुमायूं के भारत छोड़ने का संकेत है। 'मरद का चेला' का भाव शेरशाह सूरी से प्रतीत होता है, जिसने, मुगल राज्य को भारत से ध्वस्त कर अपना राज्य स्थापित किया। वह सचमुच 'मरद का चेला' कहलाने योग्य था, क्योंकि सर्वप्रथम इसी मुसलमान शासक ने हिन्दुओं और मुसलमानों के लिए समान कानून बनाने की चेष्टा की।) नानक कहता है कि मैं अपनी सच्ची बात कह रहा हूँ, क्योंकि सत्य बात सुनाने की यही सत्य बेला है। (बाबर के चले जाने पर, इस बात को सुनाने से क्या लाभ होगा ?[1])'

इसके बाद गुरु महाराज ने लालो को संबोधित करते हुए कहा, 'भाई लालो, मैं कौन हूँ, जो परमात्मा के विधान में हस्तक्षेप करूँ ? मैंने तो केवल उन शब्दों को कहा है, जो प्रभु ने मुझसे कहलवाया है। इस भूमि में जो बुरे कर्म और पाप, क्रूरता और दमन किए जा रहे हैं, उन्होंने ही अपने पापों का परिणाम भोगने के लिए भविष्य में आनेवाले अत्याचारों को आमंत्रित किया है। सर्व-शक्तिमान् परमात्मा का क्रोध बाबर के आक्रमण के रूप में प्रकट होगा। पाप ही पाप का शमन करेगा। किन्तु इसके साथ बहुत से निरपराध और असहाय व्यक्ति भी अत्याचारों और क्रूरताओं के शिकार होंगे। भावी अत्याचारों के दृश्यों को मैं ईश्वर की कृपा से स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ। थोड़े ही समय में बाबर का भयावह आक्रमण इस भूमि पर होनेवाला है। परमात्मा की लीला अपरम्पार है। उसकी मर्जी ही पूरी होगी। यदि तुम सुरक्षा चाहते हो, तो इस शहर को छोड़कर खिसक जाओ और यहाँ से कुछ मील की दूरी पर एक तालाब

---

१. जैसी मैं आवै...सच की बेला..., तिलंग, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

के समीप रहो। लूटपाट वाले और क्रूरता ढानेवाले विजेता उस ओर नहीं जाएँगे।'

एक ब्राह्मण ने टोकरी में फल लेकर गुरु महाराज के पास आकर समर्पित किया। उस ब्राह्मण ने गुरु नानकदेव से निवेदन किया, 'मेरे मित्र, आप प्रकोप के गीत गा रहे हैं ?' गुरु ने उत्तर दिया, 'आप यहाँ मत रहिए। यहाँ से तीन मील की दूरी पर एक तालाब है। अपने परिवार-सहित वहीं जाकर निवास कीजिए। यहाँ जो भी रहेंगे, वे सब मौत के घाट उतार दिए जाएँगे।' ब्राह्मण गुरु नानकदेव के परामर्शानुसार उसी तालाब के समीप जाकर बस गया। कुछ दिनों के पश्चात् बाबर ने सैयदपुर पर आक्रमण किया। उसने सारे शहर और आस-पास के गाँवों को तहस-नहस कर दिया। बाबर ने कत्लेआम किया। शहर के निवासी पठान और हिन्दू सामूहिक रूप में कत्ल किए गए और सारे मकान धराशायी कर दिए गए।

●

F 9

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय बीस

हमजा़ ग़ौस का परिष्कार

हिन्दू धर्म के प्रभाव के कारण मुसलमान मजहब में सूफ़ी सम्प्रदाय का आविर्भाव हुआ। सूफ़ी फ़कीरों की तपस्या और तितिक्षा हिन्दू साधकों से भी कठिन थी। तपस्या और ध्यान से सूफ़ी फ़कीर अपनी इच्छा शक्ति में विलक्षण विकास कर सिद्धियाँ भी प्राप्त कर लेते थे। वे अन्धविश्वासों और रूढ़ियों के पालन में कहीं-कहीं ब्राह्मणों से भी अधिक बढ़े-चढ़े थे। वे अपनी सिद्धियों के चमत्कारों का प्रदर्शन करने में परम दक्ष थे। निपुत्रियों को पुत्र और निर्धनों को धन प्रदान कर सूफ़ी फ़कीरों ने लोगों पर अपना प्रभुत्व जमा रक्खा था। चमत्कार-प्रदर्शन में वे सिद्धों और नाथपंथी योगियों की ही भाँति प्रसिद्ध थे। किसी से रुष्ट होने पर वे ईश्वरीय प्रकोप दिखाकर लोगों को आतंकित कर देते थे। इस प्रकार जनता में उनका भय और आतंक छाया था। इन्हीं सिद्धियों और चमत्कारों के बल पर वे धर्म परिवर्तन भी कर रहे थे। उनके भय से कभी-कभी कायर और भीरु हिन्दू, मुसलमान मज़हब स्वीकार कर लेते थे। हालाँकि कट्टर और अनुदार मुसलमान शासन से उनकी बनती नहीं थी, फिर भी वे अपने स्वाभाविक ढंग से मुसलमान मज़हब के प्रचार और प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहे थे।

बेचारे हिन्दू, मुसलमानों के दो प्रकार के अत्याचारों से कुचले जा रहे थे—पहले तो वे राजनीतिक दृष्टि से पंगु और निष्क्रिय हो चुके थे। मुसलमान शासकों की बर्बरता के कारण वे राजनीतिक अत्याचारों के विरुद्ध अपनी जबान नहीं खोल सकते थे। न तो उनमें आत्मसम्मान था और न आत्मविश्वास। दूसरे, धार्मिक मामलों में भी हिन्दू, मुसलमानों द्वारा बुरी तरह कुचले जा रहे थे। बेचारे हिन्दू निरीह थे। वे भेड़-बकरी की तरह मुसलमानों के धार्मिक और राजनीतिक अत्याचारों को सहने के आदी बन गए थे।

गुरु नानकदेव गिरे हुए हिन्दुओं को उठाना चाहते थे। वे उन्हें आत्म-विश्वासी, स्वाभिमानी तथा निर्भय बनाना चाहते थे। वे उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाकर, स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। वे उन्हें अत्याचारों का खुलकर सामना करना सिखाना चाहते थे। गुरु महाराज ने इस तथ्य को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हृदयंगम कर लिया था कि यह परिष्कार एक-दो दिन का काम नहीं और न किसी क्रान्ति से ही संभव है। अतः उन्होंने ऐसे उपाय सोचे जिससे जनता में धीरे-धीरे स्वावलम्बन आए और उसका स्वाभिमान जगे। इससे उनके हृदय में स्वतन्त्रता, समानता और भाईचारे का व्यवहार जाग्रत होगा। इसके अतिरिक्त मुसलमान शासकों को परिवर्तित करने के लिए उन्होंने अन्य साधनों का भी आश्रय लिया। मुसलमान शासकों के भीतर वे नैतिकता और सहृदयता का बीज बोना चाहते थे। दोनों के सामंजस्य से ही देश की राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों में परिष्कार संभव था। इसी से उन्होंने शासक और शासित, दोनों की मनोवृत्तियों के बदलने का प्रयास किया।

इन्हीं विचारों से प्रेरित होकर उन्होंने एक ओर जनता को निर्भय सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, घट-घटव्यापी परमात्मा के स्वरूप को बताकर उसकी उपासना पर बल दिया। साथ ही बहुदेववाद और मूर्तिपूजा आदि का खंडन करके उनमें एकता के बीज बोए। अन्धविश्वासों और रूढ़ियों का खंडन करके उन्हें उत्साही और स्वावलम्बी बनाने का प्रयास किया और जाति-पाँति, बड़े-छोटे का विभेद मिटाकर उन्हें सच्चे भाईचारे का व्यवहार सिखाया। इससे उन्होंने सबके भीतर समानता का अधिकार स्थापित किया। दूसरी ओर यथासम्भव वे निरंकुश, असहिष्णु, क्रूर और अत्याचारी मुसलमान शासकों से निश्शंक और निर्भय भाव से मिलकर उन्हें परमात्मा से भय करना सिखाया। साथ ही यह भी बताया कि बुरे कर्मों के परिणामों का फल भोगना अवश्यम्भावी है। उन्होंने उन्हें शिक्षा दी कि प्रजा का पालन पुत्रवत् करना शासक का सबसे बड़ा धर्म है। हिन्दू-मुसलमान दोनों को समान दृष्टि से देखना शासक का सबसे पुनीत कर्त्तव्य है। इसी दृष्टि से वे सिकन्दर लोदी ऐसे अनुदार शासक से मिले और उसकी दूषित मनोवृत्ति का परिष्कार किया। साथ ही मलिक भागो ऐसे नृशंस राज्याधिकारी से मिलकर, ग़रीब भाई लालो की प्रतिष्ठा स्थापित की। उन्होंने यह शिक्षा दी कि ईश्वर की सृष्टि में ग़रीब और अमीर, राजा और प्रजा, शासक और शासित, स्त्री और पुरुष, ऊँच और नीच सभी समान हैं। इसी प्रकार जब कभी सूफ़ी फ़क़ीरों को सिद्धियों और करामातों का दुरुपयोग करते सुना, तो वे उनके पास पहुँचे। उनसे वार्तालाप एवं तर्क-वितर्क करके उन्हें सही रास्ते पर लगाया। उन्हें यह समझाया कि हिन्दू और मुसलमान समान रूप से एक ही परमात्मा की सन्तान हैं। दोनों के साथ उन्हें प्रेम और समानता का व्यवहार करना चाहिए। विशेषतः धार्मिक व्यक्तियों का तो यह गुण भूषण है। इसके अतिरिक्त उन्होंने परमात्मा की महान् शक्ति का उपदेश देकर उन्हें रागात्मिका भक्ति का उपदेश दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सियालकोट शहर में, हमज़ा ग़ौस नामक मुसलमान फ़क़ीर रहते थे। उन्होंने अपनी सिद्धियों के चमत्कारों के बल पर शहर भर में आतंक मचा रखा था। एक खत्री के कोई पुत्र नहीं था। वह हमज़ा ग़ौस के पास गया और उनसे प्रार्थना की, 'पीर साहब, मेरे कोई पुत्र नहीं है। आप मुझे पुत्र की दुआ दीजिए। यदि मेरे पुत्र उत्पन्न हुए, तो पहला पुत्र मैं आपको भेंट करूँगा। ग़ौस पीर ने कहा, 'मैं खुदा से प्रार्थना करूँगा कि वह तुम्हें पुत्र दे। पर तुम अपनी प्रतिज्ञा न भूलना।'

समय आने पर उस खत्री के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र को पीर के पास ले जाकर कहा, 'मैं आपको इस लड़के को दे रहा हूँ। इसका मूल्य बताइए। मैं इसकी कीमत चुकाकर आपसे खरीद लूँगा, क्योंकि ऐसे अवसरों पर ऐसा विधान है।' हमज़ा ग़ौस खत्री के पुत्र को छोड़कर और कोई भी वस्तु लेने को राजी न थे। खत्री ने उस लड़के की तौल के बराबर सोना-चाँदी देने को कहा, लेकिन फ़क़ीर अपने हठ पर टिके रहे। खत्री अपने पुत्र को लेकर अपने घर वापस लौट गया।

पीर साहब अत्यधिक क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहा, 'मैं सारे सियालकोट शहर को तहस-नहस न दूँगा।' इतना कहकर वे एकान्त कोठरी में चले गए। उस कोठरी के ऊपर एक गुम्बज था। उन्होंने कोठरी के भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। अपने शिष्यों को आदेश दिया, 'तुम लोगों में से कोई भी मुझसे न मिले और न दूसरों को मिलने दो। मैं चालीस दिन का 'चिल्ला' रखकर सारे शहर को बरबाद कर दूँगा। उन्होंने अपनी साधना के प्रत्येक क्षण में इसी बात का ध्यान रक्खा कि खुदा सारे शहर पर प्रलय ढा दे।

पीर साहब के दृढ़ निश्चय की खबर शहर भर में बिजली की तरंग के समान फैल गई। जिन लोगों को फ़क़ीर की करामातों में विश्वास और आस्था थी, उन लोगों में कुहराम मच गया। बहुत से हिन्दू देवी-देवता मनाकर व्रत उपवास करने लगे। मुसलमान भी पीर-पैगम्बर मनाने लगे। किन्तु इन सब का कोई भी प्रभाव नहीं। लोगों का एक प्रतिनिधि मंडल पीर साहब के पास पहुँचा और उनकी कोठरी के पास पहुँचकर उस प्रतिनिधि-मण्डल ने आर्त्तनाद किया। किन्तु पीर साहब टस से मस न हुए।

सियालकोट के लोगों की भयानक स्थिति देखकर गुरु नानकदेव भाई लालो को छोड़कर, शहर पहुँच गए; क्योंकि वहाँ के लोगों की त्राहि-त्राहि की पुकार अज्ञात शक्ति द्वारा गुरु महाराज के कानों तक पहुँच चुकी थी। थोड़े ही दिनों में वे सियालकोट पहुँच गए। वे शहर के बाहर रुके और उन्होंने एक बेर के वृक्ष के नीचे अपना आसन जमाया। यह बेर वृक्ष एक पुरानी कब्र के पास था। पीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

की कोठरी का गुम्बज वहाँ से दिखलाई पड़ता था। कुछ देर विश्राम करने के बाद गुरु महाराज ने मरदाना को हमज़ा ग़ौस की कोठरी के पास भेजा। मरदाना ने पीर साहब के शिष्यों से कहा, 'सर्वशक्तिमान् परमात्मा के गुणों के गायक यहाँ आए हैं, और वे पीर साहब से बातें करना चाहते हैं।' पीर साहब के शिष्यों ने उत्तर दिया, 'हम पीर साहब की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते।' मरदाना चुपचाप गुरु महाराज के पास लौट गया। गुरु महाराज ने उसे दुबारा भेजा। मरदाना ने जाकर गुरु महाराज का संदेश कहा, 'मैं खुदा के नाम पर, सारी दुखी जनता के नाम पर प्रार्थना करता हूँ कि महाराज से मिलने का कष्ट करें। आपकी सहमति से वे आपकी सेवा में उपस्थित होंगे। यदि आप लोग मेरी बात नही मानेंगे, तो खुदा की मर्जी से पीर साहब का 'चिल्ला' आज ठीक दोपहर को टूट जायगा।' मरदाना की सारी बातें पीर साहब के शिष्यों ने सुनीं, पर वे लोग अपने दुराग्रह पर दृढ़ रहे। फिर भी वे मरदाना के शब्दों से चौकन्ने हो गए।

धीरे-धीरे यह खबर सारे शहर में फैल गई कि एक विचित्र वेशधारी भगवान् के भक्त शहर में आए हैं और उन्होंने पीर साहब से मिलकर बातें करने का निश्चय किया है। वे पीर साहब को समझा-बुझाकर उनका कोप शान्त करना चाहते हैं। पर अपनी बात में असफल होकर उन्होंने घोषणा की है कि पीर साहब का 'चिल्ला' व्रत टूट जाएगा और वे अपने संकल्प में सिद्धि न पा सकेंगे; क्योंकि इसमें परमात्मा की यही इच्छा है। लोगों का विशाल समुदाय गुरु जी के पास एकत्र हो गया। गुरु नानक महाराज की आँखें अधमुंदी थीं और वे थोड़ी-सी उस गुम्बज की ओर झुकी थीं, जिसके नीचे पीर साहब 'चिल्ला' व्रत साध रहे थे। मरदाना रबाब बाजे पर गुरु महाराज का एक प्रार्थना-गीत गा रहा था।

सारे लोग संशय-विपर्यय में पड़े थे। सूरज धीरे-धीरे आकाश में चढ़ने लगा। ज्यों ही सूरज बीच आकाश में पहुँचा और मध्याह्न हुआ, गुम्बज की ओर से एक अत्यन्त भीषण शब्द सुनाई पड़ा। ऐसा लगा जैसे भीषण वज्रपात होने से एक बहुत मजबूत इमारत चटक गई। सचमुच ही जिस गुम्बज के नीचे पीर साहब ध्यान में निमग्न थे, वह चटक गया। सूर्य की किरणें गुम्बज के दरार से पीर साहब के सिर पर पड़ने लगीं। किरणों के ताप से पीर साहब का ध्यान भंग हो गया। वे अत्यधिक भयभीत हुए कि कहीं गुम्बज सिर पर न गिर पड़े। शीघ्रता से उठकर, उन्होंने कोठरी का दरवाजा खोल दिया। भय के मारे, वे कोठरी के बाहर दौड़ पड़े।

इस प्रकार पीर साहब का 'चिल्ला' व्रत टूट गया। लोगों ने राहत की साँस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ली। सभी लोग गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़े। सब लोगों ने पीर के प्रकोप के दुष्परिणाम से बचाने के लिए गुरु महाराज को हार्दिक धन्यवाद दिया। पीर साहब अत्यन्त विनम्रता से गुरु नानकदेव के पास पहुँचे। गुरु महाराज ने कहा, 'एक व्यक्ति विशेष पर क्रुद्ध होकर, आप सारे शहर को बरबाद कर देना चाहते थे। यह न्याय नहीं है, सरासर अन्याय है।'

इस पर पीर ने उत्तर दिया, 'उस खत्री ने अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर अनैतिकता की है। इसलिए वह दण्ड का भागी है। पड़ोसी लोग इसलिए दोषी हैं कि उन्होंने खत्री पर दबाव नहीं डाला कि वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे।' इस पर गुरु महाराज ने पीर साहब को कोमल स्वरों में समझाया, 'लेकिन पीर साहब, पापियों और दुष्कर्मियों का सुधार करना चाहिए, न कि उनका सर्वनाश कर देना चाहिए। परमात्मा प्रेम-स्वरूप है। हम सब परमात्मा के सेवक हैं। हम सब को गुमराह और भूले-भटके लोगों को सही रास्ते पर लगाना चाहिए, उन्हें परमात्मा के दरबार में पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए। पापियों को यह समझाना चाहिए कि परमात्मा पापियों का उद्धार अपनी कृपा से करता है। सन्तों का हृदय नवनीत के समान होना चाहिए। उनका यह पुनीत कर्त्तव्य है कि वे पापियों को अपने प्रेम और भगवद्भक्ति से जीतें। सन्त लोग पापियों को क्षमा करते हैं, घृणा नहीं। हमारे देश में पहले से घृणा, अत्याचार का बोल-बाला है। हम ईश्वर के भक्तों को लोगों में प्रेम, मित्रता और सहृदयता के बीज बोने चाहिए।'

पीर साहब को अपनी गलती महसूस हुई। उन्होंने गुरु नानक महाराज के चरणों पर गिरकर, कहा, 'महाराज, मुझसे भारी गलती हुई। मैं गुमराह था। आप मेरे मार्ग-प्रदर्शक हैं। आपने मुझे परमात्मा की प्राप्ति का सच्चा रास्ता दिखाया है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपके आदेशानुसार जीवन व्यतीत करूँगा।' इस प्रकार गुरु महाराज ने पीर साहब के अन्तःकरण का परिष्कार करके, उन्हें शुद्ध पीर बनाया।

जिस बेर वृक्ष के नीचे गुरु महाराज ने अपना आसन जमाया था, वह अब भी मौजूद है और उसे 'बाबा का बेर' कहा जाता है। वहाँ एक गुरुद्वारा स्थित है, जो इस घटना का साक्षी है। चटके गुम्बजवाली कोठरी अब भी गुरुद्वारे के सामने मौजूद है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय इक्कीस

मियाँ मिट्ठा

सियालकोट शहर से कुछ मील की दूरी पर एक और प्रसिद्ध सूफ़ी फ़क़ीर रहते थे, जो अपनी सिद्धियों और चमत्कारों के लिए हमज़ा ग़ौस के समान ही प्रसिद्ध थे। आसपास के लोगों पर उनका बड़ा आतंक था। उनके बहुत से अनुयायी थे। मियाँ मिट्ठा की सिद्धियों के जोर से अनेक हिन्दुओं ने मुसलमान मजहब स्वीकार कर लिया। फ़क़ीर साहब स्वयं कठिन तपस्या में रत रहते थे। किन्तु उनमें प्रेम, सहानुभूति और सहृदयता आदि सद्गुणों का अभाव था। उनका हृदय शुष्क और पत्थर के समान था। परिणामस्वरूप उन्होंने अपने जीवन में जिस धर्म का मार्ग ग्रहण किया था, वह उन्हें ईश्वर-पथ से बहुत दूर विपरीत दिशा में खींचे ले जा रहा था। प्रेम, भक्ति और मानवता की धार जीवन की सरिता से एकदम सूख गई थी। इस कारण मियाँ मिट्ठा और लोगों को भी गुम-राह बना रहे थे। वास्तव में उनकी दशा ठीक उस व्यक्ति के समान थी, जो अपने घर से उत्साह में आनन्द-समुद्र का अमृत रस पीने के लिए तो रवाना होता है, पर समुद्र के किनारे पहुँचकर सीपियों और कंकड़ियों से खेलने में उलझकर अपना लक्ष्य भुला देता है। मिट्ठा इसी प्रकार की बाल-क्रीड़ा में उलझ गए थे। वे भीषण भ्रम में पड़ गए थे। उन्होंने आसपास के लोगों के धार्मिक विश्वास को पंगु और बंदी बना दिया था। लोग उनके छलावे में पड़कर आनन्द, शान्ति, जीवन और प्रकाश के स्रोत सर्वशक्तिमान् परमात्मा को भूल चुके थे।

गुरु महाराज ने यह बात सुनी। उन्होंने मियाँ मिट्ठा के अज्ञानान्धकार के गढ़ को ढहाकर उन्हें सच्चा प्रकाश दिखलाने का संकल्प किया। उन्हें गलत रास्ते से हटाकर सन्मार्ग दिखाने का बीड़ा उठाया। उन्होंने मियाँ मिट्ठा के स्थान पर पहुँचकर उनके पास के एक बगीचे में अपना डेरा जमाया। गुरु ने स्वर्गीय उद्बोधक गीत गाना प्रारम्भ किया। उनके स्वर को सुनकर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। जिन लोगों ने गुरु महाराज का अलौकिक संगीत सुना, उनके दिव्य स्वरूप का दर्शन किया, वे मन, बुद्धि और आत्मा से गुरु जी के अंग बन गए। उन्होंने गुरु महाराज को पूजना प्रारम्भ कर दिया। ऐसे प्रशंसकों में से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक पीर भी थे, जिनका नाम पीर अब्दुल रहमान था। रहमान मियाँ मिट्ठा के धार्मिक गुरु थे।

अब्दुल रहमान ने गुरु नानकदेव की महिमा का वर्णन मियाँ मिट्ठा से किया और उन्हें गुरु महाराज से मिलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की सलाह दी। सूफ़ी होते हुए भी मियाँ मिट्ठा संकीर्णता और कट्टरता से मुक्त नहीं थे। उन्होंने सुन रक्खा था कि गुरु महाराज हिन्दू हैं। अतः उन्हें यह अच्छा नहीं लगा कि एक प्रसिद्ध सूफ़ी फ़क़ीर हिन्दू साधु के पास जाए। हिन्दू साधु चाहे जितना महान् हो, पर उसके पास मुसलमान सूफ़ी फ़क़ीर का जाना—मियाँ मिट्ठा की दृष्टि में लज्जा और अपमान का विषय था। फिर भी जब अब्दुल रहमान ने बार-बार गुरु नानकदेव की प्रशंसा की और मियाँ मिट्ठा को गुरु नानकदेव से मिलने को कहा, तो वे अपने दुराग्रह से ढोले पड़ गए। वे अपने धार्मिक गुरु की आज्ञा शिरोधार्य कर गुरु महाराज से मिलने पहुँचे। जिस समय मियाँ मिट्ठा गुरु जी महाराज के पास पहुँचे, उस समय मरदाना रबाब के स्वर पर गुरु महाराज का एक पद गा रहा था। गुरु महाराज भाव-समाधि में स्थित थे। संगीत, गान और गुरु महाराज के मुखमण्डल की दिव्य ज्योति ने मिट्ठा के हृदय को उद्वेलित कर दिया। वे चुपचाप गुरु महाराज के पास बैठ गए। कुछ देर के बाद संगीत और गान समाप्त हुए। थोड़ी देर बाद गुरु नानकदेव ने अपनी आँखें खोलीं। उन आँखों से अमृत की वर्षा हो रही थी। उनमें शांति, आत्मतृप्ति और आनन्द की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही थी। उन्हें देखने मात्र से दर्शक के मन और हृदय अद्भुत शांति से परिपूर्ण हो जाते थे। उनमें प्रेमभाव, कोमलता, गम्भीरता, आनन्द, तृप्ति सब कुछ भरा था। वे इतनी पैनी थीं कि लोगों के हृदय में सीधा पैठकर, उनके कल्मषों को धो डालती थीं। उनके देखने से यह अनुभूति होती थी, कि अभी-अभी पति-परमात्मा से उनका मिलाप हुआ है और उसी की खुमारी उनमें झलक रही है।

मियाँ मिट्ठा सब कुछ किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर देख रहे थे। गुरु महाराज ने उनकी ओर अपनी आँखें मोड़ीं। मियाँ साहब ने अनुभव किया कि गुरु जी की चितवन ने उनके हृदय को भेद दिया है। उन्होंने अनुभव किया कि उनके अहंकार, घृणा, ईर्ष्या के सारे बीज नष्ट हो गए हैं। उनके शरीर का सम्पूर्ण अशुद्ध रक्त बूंद-बूंद करके निकल गया। उसके स्थान पर पवित्र रक्त उनकी धमनियों में प्रवाहित होने लगा। उनके मन और हृदय में शान्ति आ गई और उनकी आत्मा में आनन्द का सागर लहराने लगा।

गुरु महाराज ने प्रेमपूर्ण मुस्कान से उनकी अभ्यर्थना की और पूछा, 'आप कैसे हैं ?' गुरु महाराज के उस संक्षिप्त वाक्य ने सूफ़ी फ़क़ीर के भाव-जगत् को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जगा दिया। वे सामान्यावस्था में आ गए। उन्होंने गुरु महाराज के अभिवादन का प्रेमभाव से उत्तर देकर, उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने देखा कि गुरु जी के पास बहुत से हिन्दू और मुसलमान समान भाव से बैठे हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों को बैठे हुए देखकर उनका पुराना अहंकार फुफकारकर फिर जग पड़ा। उनकी धार्मिक कट्टरता फिर उबल पड़ी। उन्हें याद आ गया कि गुरु जी 'हिन्दू' हैं। उन्होंने अपने मन में सोचा, 'यदि यह व्यक्ति मुसलमान मजहब में परिवर्तित कर लिया जाए, तो कितना अच्छा हो।' गुरु जी से मिलकर सिद्धों, योगियों, पंडितों, काजियों और सूफी फकीरों, सभी धर्मावलम्बियों ने यही कामना अपने मन में की थी। उनकी महत्ता से प्रभावित होकर सभी ने उन्हें अपने-अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करने का प्रयास किया था। उन लोगों को पहले यह पता नहीं था, कि यह महिमामय व्यक्तित्व सभी धर्मों और सम्प्रदायों से ऊपर उठकर स्वयं उन्हें अपने धर्म और विश्वास में दीक्षित कर लेगा।

मियाँ मिट्ठा ने गुरु जी से तर्क-वितर्क करना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें जब इस बात का पता चला कि गुरु जी महाराज एक परमात्मा के उपासक हैं, तो उनके हर्ष की सीमा न रही। उन्होंने सोचा एक परमात्मा में विश्वास करने के कारण तो गुरु महाराज इस्लाम धर्म के बिलकुल निकट हैं, क्योंकि मुसलमान भी एक खुदा में विश्वास करते हैं। उन्होंने देखा कि आधा मैदान तो उन्होंने इसी समानता के कारण मार लिया। फिर उन्होंने दुबारा विचार किया, 'इस व्यक्ति ने हिन्दुओं के बहुदेववाद से तो अपने को मुक्त कर लिया है। यदि मैं इसके धर्म में मुसलमान-मज़हब के पैगम्बरवाद को जोड़ दूँ, तो मेरी कितनी शानदार विजय होगी। साथ ही इस्लाम-मजहब भी कितना गौरवान्वित होगा।'

इस बात पर विचार करते हुए मियाँ मिट्ठा ने परमात्मा के दरबार में एक मध्यस्थ की अनिवार्यता बतलाई और यह कहा, 'बिना मध्यस्थ के सहारे कोई भी व्यक्ति ईश्वर के दरबार में प्रवेश नहीं पा सकता। इस दृष्टि से पैगम्बर मुहम्मद ही सर्वश्रेष्ठ मध्यस्थ हैं। उनके अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति मध्यस्थ नहीं हो सकता।'

मियाँ साहब की जोश भरी बातें गुरु महाराज बड़े ध्यान से सुनते रहे। अन्त में गुरु महाराज ने मुस्कराकर कहा, 'मुझे तो एक सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, कृपालु परमात्मा में ही विश्वास है। मुझे उसे छोड़कर किसी अन्य में रंचमात्र विश्वास नहीं है। मेरी दृष्टि में परमात्मा के मिलाप के लिए किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है। यदि आप मध्यस्थ का सहारा लेते हैं, जिसे आप पैगम्बर कहते हैं, तो आप एक खुदा के उपासक नहीं रह जाएँगे। ऐसी स्थिति में आप अन्य धर्मावलम्बियों की निन्दा करके उन्हें 'काफिर' क्यों कहते हैं? आपके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मजहब में और उनके धर्म में थोड़ा ही अन्तर है। हिन्दू लोग अनेक देवी-देवता मानते हैं, आप केवल मुहम्मद पैगम्बर मानते हैं। इस दृष्टि से वे भी एक परमात्मा की ही उपासना करते हैं।'

फ़क़ीर ने उत्तर दिया, 'किन्तु हम मुहम्मद को खुदा नहीं मानते। हम केवल इतना विश्वास करते हैं कि कयामत के दिन मुहम्मद पैगम्बर की मध्यस्थता से हमारी रक्षा होगी। वह पापों से हमारा उद्धार करेगा। हमारी उपासना का लक्ष्य पैगम्बर नहीं हैं। वे तो साधन मात्र हैं। परन्तु हिन्दू तो अनेक देवी-देवताओं की उपासना करते हैं। उनके विचार इन देवी-देवताओं की परिधि से बाहर नहीं जा पाते। उनकी दृष्टि में तो सभी देवी-देवता परमात्मा हैं।'

गुरु ने उत्तर दिया, 'मेरे दोस्त, हिन्दू भी तुम्हारी तरह कह सकते हैं कि देवी-देवता परमात्मा के माध्यम मात्र हैं। वे लोग अपने शास्त्रों का प्रमाण देकर एक परमात्मा को सिद्ध कर सकते हैं और यह बता सकते हैं कि देवी-देवता एक परमात्मा के मिलाने के मध्यस्थ मात्र हैं।'

मियाँ मिट्ठा ने इस प्रकार तर्क उपस्थित किया, 'हाँ, वे सिद्ध तो भले ही कर सकते हैं, परन्तु उनका वास्तविक विश्वास इसमें है नहीं। हम तो यह पूर्णतया विश्वास करते हैं कि एक खुदा सभी का निर्माता और पालक है और हमें केवल उसी की उपासना करनी चाहिए।'

गुरु जी के चेहरे की मुस्कान और भी बढ़ गई और उन्होंने इस प्रकार कहा, 'मेरे दोस्त, आप यह ज़रा भी विश्वास नहीं करते कि एक ही खुदा सबका पिता है। यदि आप विश्वास करते तो मुसलमानों को छोड़कर अन्य मजहब माननेवालों के साथ, क्रूरता, अत्याचार, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष क्यों करते? यदि आप इस सत्य को मानते होते और अनुभव करते होते, तो मूर्त्तिपूजक हिन्दुओं को घृणा की दृष्टि से न देखते और उनके साथ इतना दुर्व्यवहार न करते। यदि आप एक खुदा मानते होते, और सभी मनुष्यों को उसका पुत्र समझते होते, तो अपने धर्म के प्रचार में अन्याय, अत्याचार और नृशंसता का सहारा न लेते। आपका धर्म इतने अंधे जोशवाला धर्म न होता। यदि आप इसकी यथार्थता स्वीकार करते होते, तो गुमराहों के प्रति भी आप करुणा, सद्भावना और मैत्री भाव रखते। अपनी सहानुभूति और प्रेम के बल पर उन्हें जीतने की कोशिश करते। प्रेम और सेवा के बल पर दूसरों को अपना बनाया जा सकता है। घृणा और द्वेष हमें परमात्मा के मार्ग से विमुख कर देते हैं। मेरी समझ में आप लोगों को यह जरा भी विश्वास नहीं है कि एक ही खुदा ने मुसलमानों और अभागे हिन्दुओं दोनों को बनाया है और दोनों ही उसकी सन्तान हैं। अतः यह किस प्रकार कहा जा सकता है कि आप एक खुदा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आपके धर्म और आचरण, करनी, कथनी और रहनी में एकता नहीं है, उनमें विभिन्नता है। अतएव यह आपके धर्म की बड़ी भारी त्रुटि है।'

फ़क़ीर साहब ने पूर्ण रूप से अनुभव कर लिया कि उन्हीं के तर्क के आधार पर उनकी पराजय हो गई। उन्होंने विषयान्तर करते हुए कहा, 'क्या आपको परमात्मा के न्याय-दिवस पर विश्वास है ?'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'जी हाँ ! प्रत्येक मनुष्य को, जो बोएगा, वही काटना होगा। उसके शुभ और अशुभ कर्मों के आधार पर उसका न्याय किया जाएगा।'

मियाँ मिट्ठा ने कहा, 'बिल्कुल ठीक। किन्तु आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि उस न्याय-दिवस पर बेचारे हिन्दू कितने अभागे और असहाय सिद्ध होंगे ? मृत्यु के उपरान्त मुसलमान दफ़नाए जाते हैं। उनका मृत शरीर ज़मीन को सौंप दिया जाता है। न्याय-दिवस पर जब खुदा का फरिश्ता अपनी तुरुही बजाएगा, तो ज़मीन सभी मुसलमानों के मृत शरीर को खुदा को सौंप देगी। तब वे बिहिश्त में ले जाए जाएँगे। पर बेचारे हिन्दुओं के भाग्य का क्या होगा ? उनका शरीर तो जला दिया जाता है। सारी हड्डियाँ जलकर खाक हो जाती हैं। और तितर-बितर हो जाती हैं। उन्हें अपना शरीर किस प्रकार वापस-मिलेगा ? वे इस लोक में तो जलाए ही जाते हैं, आगे भी खुदा के यहाँ सदैव जहन्नुम की आग में जलते रहेंगे।'

गुरु-महाराज ने उत्तर दिया, 'आपकी विचारधारा सही है। पर आप एक या दो चीजों को भुला रहे हैं। पहली बात तो यह कि जिन मुसलमानों का मृत शरीर दफनाया जाता है, वह ज़मीन में मिलकर बिलकुल मिट्टी हो जाता है। जिस प्रकार हिन्दुओं का मृत शरीर जलाए जाने पर खाक हो जाता है, उसी प्रकार मुसलमानों का भी मृत शरीर मिट्टी का हो जाता है। कुछ समय में सारी हड्डियाँ भी गलकर मिट्टी हो जाती हैं। आपका न्याय-दिवस आते-आते शरीर का कोई भी अवशिष्ट नहीं रह जाएगा। यदि इसके बावजूद मुसलमानों का शरीर कब्र में उठकर खड़ा हो जाएगा, तो हिन्दुओं का शरीर भी उसी प्रकार खड़ा हो जाएगा। दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि यदि हिन्दुओं का शरीर जलाए जाने पर खुदा का प्रकोप होता है, तो मुसलमान भी इस प्रकोप से नहीं बच पाएँगे। कारण यह कि अधिकांशतः मुसलमानों का मृत शरीर भी अग्नि में जलाया जाता है।'

गुरु महाराज की इस अजीब बात को सुनकर मियाँ मिट्ठा चौंक पड़े और उन्होंने जिज्ञासा की, 'यह किस प्रकार ?'

गुरु महाराज का उत्तर था, 'मेरे दोस्त, इस प्रकार—आप जानते ही होंगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि कुम्हार पुरानी कब्रों की मिट्टी के बहुत इच्छुक होते हैं, क्योंकि वह मिट्टी बड़ी कड़ी होती है। वे पुरानी कब्रों की मिट्टी खोदकर ले आते हैं। उस मिट्टी से वे अनेक भाँति के बरतन तथा ईंट आदि बनाते हैं। इसके बाद वे ईंटें और बरतन आवें की आग में पकाए जाते हैं। इस प्रकार मुसलमानों के मृत शरीर की मिट्टी भी जलाई जाती है। यदि आपका तर्क यथार्थ है, तो मुसलमान भी न्याय-दिवस के दिन रोएँगे, चिल्लाएँगे और विलखेंगे। अतः, मेरे दोस्त, आप गुमराह हैं। आप जिन बातों को कह रहे हैं, वे मनुष्य की कल्पना के बाहर की चीज हैं। इन सारी वस्तुओं को सृष्टि का रचयिता और पालक परमात्मा ही जान सकता है। अतः हमें परमात्मा और उसके पुत्रों को प्रेम करना चाहिए। इसी मार्ग का अवलम्बन करने से हम परमात्मा के प्रिय बन सकते हैं।'[1]

अब फ़क़ीर साहब और तर्क क्या दे सकते थे? शान्त हो गए। कुछ देर के बाद गुरु महाराज ने अपनी सहज मुस्कान से मियाँ मिट्ठा से इस प्रकार कहा, 'मेरे भाई, ईश्वर सभी प्राणियों के धर्मानुसार उनका न्याय करता है। उसकी दृष्टि में धर्म और जाति कुछ भी नहीं है। आप इस बात से गुमराह न हों कि चूंकि आपका धर्म इस देश में राजधर्म है और आप अत्याचार और अनाचार के बल पर अपना धर्म दूसरों पर लाद और थोप सकते हैं, इसलिए आप परमात्मा की दृष्टि से श्रेष्ठ और उच्च हैं। इस प्रकार के संकीर्ण, ईर्ष्यायुक्त और घृणापूर्ण विचारों को निकाल फेंकिए। यदि आपको सुअवसर प्राप्त हो, तो परमात्मा के प्रेमरस के अमृत का पान कीजिए।'

इस प्रकार अपने अलौकिक प्रेम और विलक्षण तर्क-शक्ति से गुरु नानकदेव ने फ़क़ीर का हृदय जीत लिया। मियाँ मिट्ठा गुरु महाराज के चरणों में गिर पड़े। गुरु महाराज ने उन्हें अपने गले से लगाकर परमात्मा के सच्चे नाम का दान किया। उन्हें मानव प्रेम, सहृदयता, मैत्री भाव, सहानुभूति, करुणा का अलौकिक पाठ पढ़ाया।

इस प्रकार गुरु महाराज ने निर्भयतापूर्वक उस युग के अत्यंत प्रभावशाली और शक्ति-सम्पन्न मुसलमान फकीरों का सामना करके उन्हें सही रास्ते पर लगाया।

---

१. मिटी मुसलमान की...जाणै करतारु...आसा की वार, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय बाईस

दुनीचन्द और करोड़िया

इसके बाद गुरु नानकदेव उत्तर दिशा की ओर अग्रसर हुए। लोगों में आध्यात्मिक भाव भरते हुए उन्हें प्रेम, सेवा, मानवता और भक्ति का पाठ पढ़ाते हुए, अनेक तड़पते हुए हृदयों को शान्त करते हुए, गुरु जी महाराज लाहौर पहुँचे। रावी नदी के तट पर उन्होंने अपना आसन जमाया। मरदाना ने रबाब की तान पर गुरु जी के उदात्त गीतों को गाना प्रारम्भ किया। मौज आने पर गुरु महाराज स्वयं परमात्मा के ऐश्वर्य, महिमा और कृपा सम्बन्धी गीतों को गाते थे। इसके अतिरिक्त उन पदों का भी गान करते थे, जो मनुष्यों को परमात्मा और अन्य मानवों के प्रति धर्म और कर्त्तव्य सूचित करते थे। इस प्रकार गुरु और शिष्य आकाश के चँदोवे के नीचे रावी तट पर विराजमान थे। रावी के तट की घनी घासें ही उनका गलीचा बनी थीं। प्रकृति की गोदी में बैठकर, वे दोनों परमात्मा के मिलन-सुख में तन्मय थे।

गुरु जी के गानों और उनके व्यक्तित्व के आकर्षण के प्रभाव से लोग उनके पास एकत्र होने लगे। उनके पास आकर अनेक अशान्त हृदय शान्त हो गए, अनेक चंचल आत्माएँ स्थिर होकर आनन्द-सागर में गोते लगाने लगीं, अनेक शुष्कों और नीरसों में प्रेम रस की धार बहने लगी और अनेक आशाहीनों में आशा का संचार हुआ।

दुनीचन्द लाहौर के अत्यन्त धनी व्यक्ति थे। उन्होंने लाहौर के आस-पास के क्षेत्र की भूमि, बादशाह से कृषि करने के लिए ले रक्खी थी। दुनीचन्द ने गुरु महाराज के सम्बन्ध में चर्चा सुनी। प्रत्येक की जबान पर उनका नाम था। गुरु जी के श्रवण मात्र से उनकी हृद्तंत्री के तार झंकृत हो गए। एक अज्ञात और अदृश्य शक्ति द्वारा दुनीचन्दजी मिलने के लिए प्रेरित कर दिए गए। उन्होंने गुरु महाराज के पास पहुँचकर निवेदन किया, 'गुरु महाराज, हमारे स्थान पर पधारकर अपनी चरणधूलि से मेरी कुटिया पवित्र कीजिए।' गुरु नानकदेव ने मुस्कराकर दुनीचन्द से कहा, 'भाई, मेरी भाँति परमात्मा के सेवकों का, आलीशान और आरामदेह महलों से दूर ही रहना अच्छा है। आपके शाही महल में मेरा जाना आपको बहुत महँगा पड़ेगा।'

दुनीचन्द ने अपने स्वर्गीय पिता का श्राद्ध किया था। उस श्राद्ध में सौ ब्राह्मण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कुछ साधु-महात्मा भोजन करने के लिए आमंत्रित किये गये थे। उन्हें बहुमूल्य दक्षिणाएँ भी दी गई थीं। ब्राह्मणों ने भोजनोपरान्त दुनीचन्द को यह आश्वासन दिया था, 'अब आपके स्वर्गीय पिता के लिए एक वर्ष खाने-पीने की किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी।' ऐसे ही अवसर पर गुरु नानकदेव को भी निमंत्रण दिया गया था। परन्तु गुरु का आगमन उन ब्राह्मणों और साधुओं के आगमन के समान नहीं था, जो भोजन करके और दक्षिणा लेकर विदा हो चुके थे। गुरु जी तो दूसरे ही उद्देश्य से गये थे। यदि चाहते, तो वे भी सुन्दर भोजन करके और दक्षिणा के रूप में मुँहमाँगा धन माँगकर चले आते। वे दुनीचन्द को कुछ और महान् 'सम्पत्ति' देना चाहते थे। उस सम्पत्ति की दृष्टि से तो दुनीचन्द भिक्षुक और दरिद्र मात्र थे। गुरु महाराज दुनीचन्द को ऐसी सम्पत्ति का स्वामी बनाना चाहते थे, जो इस लोक और परलोक दोनों में समान रूप से काम आती है।

ब्राह्मणों तथा अन्य निमंत्रित व्यक्तियों की भीड़ देखकर गुरु महाराज ने दुनीचन्द से प्रश्न किया, 'क्या मामला है, भाई? इतनी भीड़ क्यों इकट्ठी है?' दुनीचन्द से कहा, 'आज मेरे स्वर्गीय पिताजी का श्राद्ध-दिवस है। उसी में सब लोग भोजन करने आए हैं।'

गुरु महाराज ने पूछा, 'श्राद्ध किसलिए होता है?'

दुनीचन्द ने उत्तर दिया, 'ब्राह्मणों को खिलाकर, स्वर्गीय पिता की आत्मा को संतुष्ट करना, यही श्राद्ध का उद्देश्य है।'

गुरु महाराज ने प्रश्न किया, 'ब्राह्मणों को खिलाकर क्या आपने अपने स्वर्गीय पिता की क्षुधा शान्त कर दी है?'

दुनीचन्द ने उत्तर दिया, 'मैं ऐसा ही सोचता हूँ। ब्राह्मणों के प्रमुख ने मुझे आश्वासन दिया है कि मेरे पिता तथा अन्य पूर्वजों की आत्माओं के पास इतना पर्याप्त भोजन मिल गया है कि वह एक वर्ष तक चलेगा।'

गुरु महाराज ने मुस्कराकर फिर प्रश्न किया, 'और आपने उन पंडितजी की कही बात का विश्वास कर लिया है? आप कितने भोले हैं! यह कैसे सम्भव है कि इन ब्राह्मणों द्वारा किया गया भोजन पितृलोक में आपके पितरों के पास पहुँच गया है? इन ब्राह्मणों के पेट का भोजन किस साधन से पितृलोक तक आपके पूर्वजों तक पहुँचा दिया गया? मैं आपको बताता हूँ कि इस जगत् की वस्तुओं के प्रति आपके स्वर्गीय पिता की अतृप्ति लालसा आपके लिए निरन्तर सन्ताप का कारण बनी है। भूखे भेड़िए की भाँति वे अपनी क्षुधा-पूर्ति के लिए इधर-उधर घूमते रहते हैं, किन्तु उनकी लालसा कभी पूरी नहीं होगी।'

दुनीचन्द ने आश्चर्य भाव से गुरु जी की सारी बातें सुनीं। उन्होंने महान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुःख से आह भरी। फिर प्रश्न किया, 'सचमुच मेरे प्रतिवर्ष श्राद्ध करने और ब्राह्मण खिलाने के बाद भी मेरे पिताजी अतृप्त लालसा में भूख के संताप में मारे-मारे घूमते रहते हैं ? क्या वे वास्तव में भूखे भेड़िए हैं ?'

गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'आप स्वयं मेरी बात का निश्चय कर लीजिए। नदी के किनारे के जंगल में चले जाइए। एक झाड़ी में आपको भेड़िया मिलेगा। भेड़िए से आप भयभीत न होकर, उसके पास निर्भय भाव से चले जाइएगा। उससे पूछने पर सारी बातें आपको मालूम हो जाएँगी।'

दुनीचन्द गुरु द्वारा संकेत की हुई दिशा में अग्रसर हुए। कुछ मील दूर जाने के बाद करुण ध्वनि में उनके नाम की पुकार सुनाई पड़ी। वे उस दिशा में चले, जहाँ से ध्वनि आती हुई सुनाई पड़ी थी। वहाँ पहुँचने पर भूख से तड़पता हुआ एक भेड़िया उन्हें दिखलाई पड़ा। वहाँ पहुँचते-पहुँचते, भेड़िया अदृश्य हो गया। भेड़िये के स्थान पर एक आदमी खड़ा हुआ दिखाई पड़ा। वह आदमी ठीक दुनीचन्द के पिता की शक्ल का था, वैसी ही वेशभूषा भी धारण की थी। दुनीचन्द के पिता की आत्मा के प्रतिरूप ने उनसे कहा, 'तुमने प्रतिवर्ष जो ब्राह्मणों को खिलाया-पिलाया है, वह मेरे पास कुछ भी नहीं पहुँचा है। मैं सदैव इसी भाँति भूख से तड़पता ही रहता हूँ।'

दुनीचन्द ने पूछा, 'आपकी दशा इस प्रकार क्यों है ?'

दुनीचन्द के पिता की प्रेतात्मा ने उत्तर दिया, 'मेरे ही कर्मों और लालसाओं ने मुझे इस दशा में पहुँचा दिया है। मैंने संसार में केवल अपनी ही उन्नति के लिए जीवन पर्यन्त प्रयत्न किया। मैंने उस भूखे भेड़िए की तरह सदैव धन एकत्र किया, जो भूख के कारण अपने शिकार के पीछे पागल की भाँति दौड़ता है। अपने द्वारा अपहृत की हुई अपार सम्पत्ति से भी मैं तृप्त नहीं हुआ। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में भी धन एकत्र करने के अतिरिक्त और कोई बात नहीं सोचता था। इस प्रकार मरते दम तक मेरी सारी लालसा धन-संग्रह करने में केन्द्रीभूत रही। इसीलिए मरने के बाद भी मेरी लालसा ज्यों की त्यों बनी हुई है। अब तक मैं भेड़िये की भाँति अपनी अतृप्त लालसाओं का शिकार बना हुआ हूँ। किन्तु उस महान् पुरुष की अलौकिक कृपा से, मेरे मार्ग की सारी बाधाएँ दूर हो गई हैं, जिसने तुम्हें यहाँ मेरे पास भेजा है। उसकी कृपा का दिव्य प्रकाश मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है, उसी के सहारे मैं उच्च आध्यात्मिक लोक में जा रहा हूँ। अब मैं जाता हूँ। मैं तुम्हारे अपार प्रेम को धन्यवाद देता हूँ, जिसके बल पर तुमने उस महान् पुरुष को अपने यहाँ बुलाया है। उसी महान् पुरुष ने मुझे तुच्छ लालसाओं से मुक्ति दिलाई है। देखो, उसकी आज्ञा से अब मैं उच्च लोक में जा रहा हूँ। बेटा, याद रक्खो, जिस संसार में हम अभी निवास करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

हैं, उस संसार में मनुष्य की आत्मोन्नति उसके शुद्ध विचारों, भावों, कर्मों और चरित्र से संभव है। मेरी आत्मोन्नति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करो। अपनी ईमानदारी और गाढ़े परिश्रम से की गई कमाई में गरीबों और जरूरतमन्दों का भी हिस्सा लगाओ। इससे तुम्हारा और हमारा दोनों का कल्याण होगा। जाओ और उस महान् पुरुष की अभ्यर्थना करो, जो तुम्हारे यहाँ साक्षात् आध्यात्मिकता और पवित्रता के रूप में विराजमान है। वह महान् पुरुष तुम्हें जीवन क नया दृष्टिकोण देगा। जैसा वह व्यक्ति तुम्हें निर्देश करे, उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करो, वैसा ही विचार करो, वैसा ही कर्म करो। इससे तुम इस लोक और परलोक दोनों में ही प्रसन्न रहोगे।

दुनीचन्द अपने घर लौटे। आश्चर्य और श्रद्धा से वे गुरु महाराज के चरणों पर गिरे और उन्होंने प्रार्थना की, 'प्रभु, मुझे प्रकाश और ज्ञान दीजिए। मैं मोहान्धकार में हूँ।' गुरु महाराज ने उन्हें एक सुई दी और कहा, 'इस सुई को ले जाकर कहीं सुरक्षित स्थान में रख दीजिए। जब हम लोग परलोक में मिलेंगे, तो मैं इसे आपसे लूंगा।'

दुनीचन्द और चक्कर में पड़ गए। अपने पिता की प्रेतात्मा से मिलकर वे पहले ही चक्कर में पड़ चुके थे। वे इस दशा में नहीं थे, कि तत्क्षण इस विषय पर कुछ विचार कर सकते। उन्होंने यंत्रवत् सुई उठा ली। घर में जाकर, उन्होंने इस सुई को अपनी सहधर्मिणी को दी और कहा, 'गुरु महाराज ने इसे सुरक्षित रखने को कहा है। उन्होंने परलोक में इसे लेने को कहा है। हमें अत्यधिक सतर्क रहना है, ताकि यह कहीं खो न जाए।'

उनकी स्त्री पवित्र और विचारशील महिला थीं। उन्होंने तत्क्षण अपने पति से कहा, 'मेरे स्वामी, गुरु महाराज ने हमारे सामने एक विकट पहेली रखी है। इस सुई को भला, हम परलोक में किस प्रकार ले जा सकेंगे? सारी सांसारिक धन सम्पत्ति यहीं रह जाएगी। हमारे साथ हमारा जीव मात्र जाएगा। इस अजीब माँग के पीछे, गुरु महाराज का कोई गूढ़ मन्तव्य दिखाई पड़ता है। हमें उनके पास चलकर, सुई उन्हें देकर इसका रहस्य पूछना चाहिए।'

दुनीचन्द अपनी स्त्री-सहित गुरु नानकदेव के पास उपस्थित हुए। उन्होंने सुई उनके सामने रख दी और प्रार्थना की, 'महाराज, इस सुई को हम परलोक में नहीं ले जा सकेंगे। यदि संभव होता, तो वहाँ आपके निमित्त भारी से भारी बोझ ले चलते।'

गुरु जी ने मुस्कराकर पूछा—'वे सात झंडे क्या हैं, जो आपके महल पर लहरा रहे हैं?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुनीचन्द ने कहा, 'वर्तमान प्रथा के अनुसार, वे मेरी सम्पत्ति के सूचक हैं कि कितना धन मेरे पास है। प्रत्येक झंडा एक करोड़ रुपये का द्योतक है।'

गुरु नानक महाराज ने कहा, 'यह सारा धन आपका है। इसे आप परलोक में किस प्रकार ले जा सकेंगे ? क्या आपने कभी आगामी जीवन के सम्बन्ध में भी विचार किया है ? उस जीवन में आपकी क्या आवश्यकताएँ होंगी ?'

दुनीचन्द और उनकी स्त्री ने सिर झुकाए हुए कहा, 'गुरु महाराज, अब आप ही बताइए कि इस धन का हम क्या करें ? आप बताएँ कि आगामी जीवन में हमें किन वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी और उन्हें वहाँ हम किस प्रकार ले जा सकेंगे ?'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों और जरूरतमन्दों को बाँट दो। परिश्रम करके ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाओ और पास-पड़ोस के जरूरतमन्दों को अपनी उस गाढ़ी कमाई में से बाँटो। सभी प्राणियों को अपने सगे भाई की भाँति प्रेम करो और उनकी सेवा करो। परमात्मा का ध्यान करो और उनकी कृपा के लिए प्रार्थना करो। परमात्मा के नाम का धन, पवित्र और उदात्त विचार, प्रेम और सेवा के पवित्र कर्म आपके आगामी जीवन में सहायक सिद्ध होंगे।'

इस प्रकार गुरु महाराज ने दुनीचन्द और उनकी स्त्री को 'हरी नाम' का प्रसाद देकर उन्हें कृतार्थ किया। वे दोनों गुरु जी के शिष्य हो गए। उन्होंने अपना सारा धन गरीबों को दे दिया और अपने महल को धर्मशाला बना दिया। उस धर्मशाले में प्रेम, दान, सेवा और भक्ति का अनुष्ठान चलता रहा। वहाँ सभी जरूरतमन्दों और गरीबों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती थी। वे गुरु महाराज के सिद्धान्तों, आदर्शों के मशालची बने और उन्होंने संसार के अनेक थके-माँदे भूले-भटके लोगों को विश्राम दिया और उनका मार्ग-प्रदर्शन किया।

कुछ दिनों और रुकने के बाद, गुरु महाराज ने तलवण्डी को प्रस्थान किया। उनके वृद्ध माता-पिता ने गुरु महाराज को अभी तक अपना घुमक्कड़ पुत्र मात्र समझ रखा था। किन्तु इस यात्रा में उन्होंने अपने माता-पिता को आध्यात्मिक प्रकाश प्रदान किया। उन दोनों ने अब उन्हें पुत्र मात्र न समझकर अपना गुरु और उद्धारक माना। उन्होंने गुरु जी को संसार की चहारदीवारी में कैद करने का सारा विचार त्याग दिया। उन्होंने अब पूर्णतया अनुभव कर लिया कि 'नानक' मेरे ही लिए नहीं, वल्कि सारे संसार के प्राणियों के कष्ट-उद्धार के लिए इस संसार में अवतीर्ण हुआ है। गुरु महाराज ने राय बुलार से भी उनके अन्तिम दिनों में मिलकर उन्हें शान्ति प्रदान की।

अपने माता-पिता एवं शिष्यों से विदा लेकर गुरु महाराज फिर अपने 'मिशन'

F 10

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर चल पड़े । अपनी जन्मभूमि के आस-पास के स्थानों की यात्रा करने के अनन्तर, गुरु महाराज रावी के दाहिने तट पर, सुन्दर और रमणीक एकान्त स्थान में रमे । चारों ओर विस्तृत मैदान के उर्वर खेतों की हरियाली, मंद-मंद प्रवाहित रावी नदी, एकान्त स्थल, प्रकृति की रमणीक गोदी आदि ने गुरु महाराज को एकान्त-चिन्तन के लिए अनुप्रेरित किया । वहाँ उन्होंने अपने अद्वितीय आध्यात्मिक गीतों का गान किया । उस एकान्त और रमणीय स्थल में उन्होंने परमात्मा के अहर्निश ध्यान में अपना समय बिताया । उन्होंने परमात्मा के ऐश्वर्य, महिमा, सर्वज्ञता सम्बन्धी एवं मानव के कर्त्तव्य, सेवा, प्रेम, मैत्री, सहिष्णुता, संयम, विराग सम्बन्धी पदों को गाया । लोगों ने गुरु के अलौकिक गीतों और सत्संग में उनकी शिक्षाएँ सुनीं । अपनी पुरानी भूल, अज्ञानता, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि पर उन्हें घृणा हुई । परमात्मा के मिलन के लिए उनके हृदय में तड़पन उत्पन्न हुई । गुरु जी के आदेशानुसार लोगों ने ईश्वर-चिन्तन में लग कर शुद्ध सत्वगुणी जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया । प्रेम, सेवा और भक्ति उनके जीवन के लक्ष्य बने । 'हाथ से काम, मुँह से नाम' का उच्च भाव लेकर लोग अपनी कर्मसाधना में लगे । इस प्रकार प्रत्येक हृदय में गुरु महाराज का आसन जम गया ।

करोड़िया

गुरु नानकदेव की यश-सुरभि चारों दिशाओं में व्याप्त हो गई । हिन्दू, मुसलमान, साधु-संन्यासी, पीर, फकीर, किसान, ज़मीन्दार, गरीब-अमीर, आस्तिक, अन्यायी, क्रूर, आदि सभी ने गुरु नानकदेव की शरण ली और उनके शिष्य बने । मन और हृदय से पवित्र होकर, परमात्मा की प्राप्ति के लिए तत्पर हुए । इसके लिए उन्होंने दुर्गुणों का परित्याग और सद्गुणों का संग्रह किया । परमात्मा की भक्ति में तन्मय होकर वहाँ के लोगों ने पारस्परिक घृणा, ईर्ष्या और द्वेष का त्याग किया और ऊँच-नीच तथा अमीर-गरीब सभी भाई-भाई की तरह रहने लगे ।

लाहौर में 'करोड़िया' नामक एक खत्री रहते थे । वे वहाँ के अफ़सर थे । गुरु नानकदेव द्वारा की गई इस नवीन क्रान्ति को वे फूटी आँख से भी नहीं देख सकते थे । वे विदेशियों के अत्याचारपूर्ण शासन के यंत्र थे । वे इस बात को भली-भाँति अनुभव करते थे कि जब तक सामान्य जनता का चरित्र नीचा बनेगा और जब तक उनमें ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद-भाव बना रहेगा, तब तक उनके स्वामियों का प्रभुत्व अक्षुण्ण और सुरक्षित बना रहेगा । गुरु महाराज द्वारा प्रतिपादित ऐक्य भाव, समानता, सहिष्णुता, मैत्री भाव, एवं भाईचारे के बर्ताव को वे किस प्रकार सहन कर सकते थे ? उन्होंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनुभव किया कि गुरु द्वारा 'ईश्वर से भय मिश्रित प्रजातंत्रवाद' की स्थापना उनके स्वामी के प्रभुत्व के लिए बड़ी खतरनाक है। अतः करोड़िया ने गुरु के बढ़ते हुए प्रभाव को समाप्त करने का संकल्प किया। वहाँ से गुरु महाराज को निकालने के लिए घोड़े पर सवार होकर, पैदल सिपाहियों का एक जत्था लेकर, वे चल पड़े। लोगों ने करोड़िया के इस जघन्य संकल्प को जानकर, उन्हें कोसना प्रारम्भ किया। कुछ लोगों ने तो उनके सामने उनकी भर्त्सना भी की और कुछ लोगों ने मन ही मन उन्हें भला-बुरा कहा। कुछ लोगों ने साहस करके उन्हें समझानें-बुझाने का प्रयास किया। कुछ समय तक तो उन्होंने लोगों की अच्छी सलाहों का विरोध किया। लेकिन थोड़ी ही देर बाद उनका दूषित हृदय चक्कर काटने लगा। उनके दिमाग़ में बवण्डर आ गया। वे संज्ञाशून्य हो गए और उनकी ज्ञानेन्द्रियों की सारी चेतनाशक्ति जाती रही। गुरु नानकदेव के प्रेम की तरंगों से प्रभावित होकर पशुओं ने भी आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। इस पर करोड़िया के अंतरंगों ने उन्हें सलाह दी, 'आप विनम्रतापूर्वक गुरु महाराज के पास जाकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण कीजिए।' अन्त में वे इस बात पर राजी हो गए। वे घोड़े पर से उतर गए। जिस दिशा में गुरु महाराज का निवास था, उस दिशा को झुककर उन्होंने प्रणाम किया और नंगे पाँव उनके दर्शन के लिए वे आगे बढ़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने गुरु महाराज के चरणों में झुककर प्रणाम किया। उनकी आत्मा ऐसे विलक्षण आनन्द की अनुभूति करने लगी, जैसी अनुभूति उन्हें जीवन भर में कभी नहीं हुई थी। उनके हृदय मे गुरु जी के आशीर्वाद से शान्ति की धार बहने लगी। उन्होंने आध्यात्मिक जीवन के रस का स्वाद चक्खा। वे इसी आनन्द में तीन दिन तक गुरु महाराज के सान्निध्य में रुक गए। अहर्निश अपनी आँखों से गुरु महाराज के आकर्षक, तेजस्वी स्वरुप का दर्शन करते, हरी नाम के अमृत-रस के आस्वादन से अपने को तृप्त करते रहे। इस प्रकार गुरु नानक महाराज और उनके शिष्यों की सत्संगति में उन्होंने अपने जीवन का परिष्कार कर डाला। उनके मस्तिष्क और हृदय का सारा कालुष्य धुलकर स्वच्छ हो गया। उनकी सारी निम्न वासनाएँ और लालसाएँ नष्ट हो गईं। गुरु महाराज के अमर संगीत ने उन्हें एक नवीन अमरलोक का दर्शन करा दिया। उनके जीवन का मार्ग एकदम परिवर्तित हो गया।

गुरु नानकदेव के सम्मानार्थ और अपने पापों तथा अज्ञान से मुक्ति पाने के स्मरणार्थ करोड़िया ने उस स्थान पर एक गाँव बसाया, जिसे गुरु महाराज ने अपने निवास से पवित्र किया था। उस गाँव का नाम गुरु महाराज के आराध्य देव और गुरु के नाम पर रक्खा गया—कर्त्तारपुर। उसी गाँव में उन्होंने एक धर्मशाला का निर्माण कराया। गाँव और धर्मशाला तथा उसके आस-पास की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमि गुरु नानकदेव के चरणों में समर्पित कर दी। इस स्थान पर महाराज कुछ दिनों तक रुके। गुरु जी के पिता भी अपने परिवार सहित यहाँ आए। गुरु महाराज ने अपनी विचित्र वेशभूषा छोड़कर साधारण लोगों के समान कपड़े-लत्ते पहन लिए। सत्संगति का कार्यक्रम नित्य प्रति चलता था। तभी से सभी सिक्खों में यह साधना सार्वभौमिक हो गई। प्रातःकालीन और सायंकालीन आराधना के अनन्तर यहाँ के सभी लोगों को गुरु महाराज के लंगर से भोजन मुफ्त कराया जाता था। इसमें किसी प्रकार के धर्म और जाति का भेदभाव नहीं रक्खा जाता था। परमात्मा के इस पवित्र चौके में सभी स्त्री-पुरुष, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर एक साथ बैठकर प्रेमपूर्वक—गुरु के लंगर का प्रसाद ग्रहण करते थे। सभी लोग एक अत्यंत सुसंगठित परिवार के सदस्य थे। उस परिवार के सारे सदस्य एक-दूसरे की आवश्यकताओं पर ध्यान देते थे। प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे की भलाई के लिए अपने को न्यौछावर करने पर कटिबद्ध रहता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय तेईस

पश्चिम की यात्राएँ—मक्का

गुरु नानकदेव ने इस प्रकार पंजाब में लोगों के जीवन और चरित्र का निर्माण करके 'परमात्मा से भय मिश्रित प्रजातंत्रवाद' की स्थापना की। वह प्रजातंत्रवाद आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित था। उसमें प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे को अधिक से अधिक सुविधा देना चाहता था। प्रातःकाल और सायंकाल परमात्मा की प्रार्थना में सम्मिलित होकर अपने ताप को शान्त करके, नवीन आध्यात्मिक रहनी के लिए प्रेरणा ग्रहण करते थे। इसके बाद गुरु जी पुनः अपनी धार्मिक यात्रा पर चल पड़े, क्योंकि परमात्मा का आदेश उन्हें इस कार्य के लिए तीव्रता से अनुप्रेरित कर रहा था। वे विभिन्न देशों की भूमि तक ईश्वर प्रेम, सेवा, भक्ति और मानवता का संदेश पहुँचा देना चाहते थे। अतः वे मरदाना को साथ लेकर अपने मिशन पर चल पड़े। इस बार उनके चरण पश्चिम दिशा में मुड़े। भाई गुरदास ने अपनी 'वारां' में गुरु महाराज की इस यात्रा का वर्णन किया है।[1] उन्होंने मक्का के तीर्थयात्रियों की भाँति नीला वस्त्र धारण किया, हाथ में फकीरों के समान एक सोंटा लिया, अपने पदों का संग्रह बगल में दवाया। एक टोंटीदार लोटा भी अपने साथ रक्खा और अपनी प्रार्थना के निमित्त मुसलमानों की तरह एक 'मुसल्ला' भी बैठने को ले लिया। इस प्रकार की वेशभूषा में सुसज्जित होकर, गुरु महाराज एक सच्चे 'हाजी' के रूप में दिखाई पड़ रहे थे।

उन दिनों सूरत के बंदरगाह से मक्का जाने के लिए जहाज मिलते थे। गुरु जी 'सूरत' की तरफ चल पड़े। वे थोड़ी-थोड़ी दूर पर रुकते हुए, 'हरीनाम' का बीज लोगों के हृदय में बोते हुए और मानवता तथा सेवा का पाठ पढ़ाते हुए रास्ता तय करने लगे। रास्ते भर वे वर्षा ऋतु के कल्याणकारी बादल के समान लोगों की शुष्क-हृदय-भूमि में सत्यनाम, विश्वास, भक्ति और ज्ञान की जलवृष्टि करते गए। वे लोगों को नवीन जीवन-दान देना चाहते थे। उनकी उपस्थिति सर्वत्र अपेक्षित थी। यथासमय सिन्ध से होते हुए वे या तो पैदल चलकर अथवा कराची से जहाज द्वारा सूरत पहुँचे। सूरत से जहाज पर सवार होकर, वे अरब के समुद्री तट पर पहुँचे। वहाँ से पैदल यात्रा करके वे मक्का पहुँचे।

---

१. वारां भाई गुरदास जी, वार, १, पउड़ी, ३२, ३३ और ३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अरब के रेतीले मार्ग से पैदल चलते-चलते, गुरु महाराज थककर चूर-चूर हो गए थे। उन्हें कुछ दिन के लिए पूर्ण विश्राम की आवश्यकता थी। किन्तु ऐसी स्थिति में भी वे अपना उद्देश्य भूले नहीं थे। वे एक रात्रि भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहते थे। वे इस प्रकार का विचित्र आचरण और व्यवहार करते कि लोग उनसे अपने आप आर्कषित हो जाते थे। उनके जीवन से इस प्रकार अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं—हरिद्वार में जब सारे हिन्दू पूर्व दिशा में जल दे रहे थे, तो उस समय गुरु जी महाराज ने पश्चिम दिशा में जल उलचकर सारे दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आर्कषित कर लिया। कुरुक्षेत्र के सूर्यग्रहण के अवसर पर जब सारे तीर्थयात्री स्नान कर रहे थे औरं दान दे रहे थे, उस समय हिरन का मांस पकाकर तीर्थयात्रियों को हैरत में डालकर जबर्दस्ती अपने पास बुला लिया। इसी प्रकार पुरी में जगन्नाथजी की आरती से दूर-दूर हटकर, सारे पंडितों, पुजारियों को चुम्बक की भाँति अपने पास खींच लिया। इस प्रकार अत्यधिक भीड़ से युक्त और कोलाहलपूर्ण वातावरण में वे अपनी प्रत्युत्पन्न मति से अपने सिद्धान्तों के प्रचार का मौका ढूंढ़ निकालते थे। मक्का में भी उन्होंने इसी उपाय का अवलम्बन लिया। मक्का के मुसलमानों की कट्टरता और धर्मान्धता से वे भली-भाँति परिचित थे, फिर भी उन्होंने अपनी उसी विधि का प्रयोग किया। वे जानते थे कि 'काबा' की ओर पैर करके कोई भी मुसलमान नहीं लेट सकता। ऐसा करना उनकी धार्मिक-परम्परा के सर्वथा विरुद्ध था। इस प्रकार की अशिष्टता वर्तने से काज़ी और मुल्ला उनके प्राणों तक के गाहक हो सकते थे। कोई भी कट्टर धर्मान्ध मुसलमान उनकी जान ले सकता था। फिर भी उन्हें परमात्मा द्वारा दी गई आज्ञा तो पूरी करनी ही थी। उन्हें सर्वशक्तिमान् परमात्मा की अलौकिक शक्ति में दृढ़ विश्वास और आस्था थी। इसके साथ उन्हें स्वयं पर भी पूर्ण विश्वास था। गुरु महाराज का परमात्मा में अहर्निश निवास था और परमात्मा का भी उनके हृदय में सदैव वास था। अतः वे किससे और किस प्रकार भयभीत होते ? इसी दृढ़ निश्चय से वे अपना पैर काबा की ओर करके विश्राम करने लगे।

गुरु नानकदेव को 'काबा' की ओर पैर करके विश्राम करते देखकर मक्का के तीर्थयात्रियों में तहलका मच गया। तुरन्त ही भयानक हो-हल्ला मच गया। लोगों ने उन्हें घेर लिया और बुरी तरह से डराने-धमकाने लगे। जीवन नामक एक मुसलमान भारत से हज करने आया था। वह बहुत जोश में था। उसने गुरु महाराज के समीप पहुँचकर लात जमाया और कहा, 'अरे अधर्मी और नास्तिक, तू कौन है जो 'खुदा' की ओर अपने पैरों को करके सो रहा है ?' गुरु नानक महाराज ने अत्यन्त शान्त और मृदु शब्दों में इस प्रकार उत्तर दिया, 'मेरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्यारे भाई, इतनी जल्दबाजी और क्रोध न करो। मैं बहुत ही थका-माँदा हूँ, और मुझे आराम करने की सख्त जरूरत है। आप मेरे पैर, उस दिशा में घुमा सकते हैं, जहाँ खुदा न हो।' इस पर जीवन ने अत्यधिक क्रोधावेश में गुरु महाराज के दोनों पैरों को कसकर पकड़ लिया। गुरु महाराज के चरण पकड़ने से उसके शरीर में हल्की सी सिहरन हुई, पर धार्मिक कट्टरता के आवेश में उसने इसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। उसने तैश में आकर गुरु महाराज के पैर घसीट कर कावा से विपरीत दिशा में कर दिए। इसके वाद जीवन ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, तो वह परम आश्चर्य से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। 'कावा' उस दिशा में स्थित दिखलाई पड़ा, जिस दिशा में गुरु महाराज के पैर घसीटकर किए गए थे। उसने फिर क्रोध में आकर गुरु महाराज के चरण, घसीटकर कावा से विपरीत दिशा में करना चाहे। पर परमाश्चर्य ! 'कावा' गुरु जी के चरणों की ही दिशा में परिक्रमा करने लगा। जिस दिशा में गुरु महाराज के चरण घसीट-कर किए जाते, उसी दिशा में घूमकर कावा भी स्थित हो जाता।

इस पर गुरु महाराज ने जीवन से कहा, 'तुम देख नहीं रहे हो कि खुदा का निवास सभी दिशाओं में समान रूप से है ? निश्चय ही खुदा प्राण का प्राण और जीवन का जीवन है। इसी खुदा से सारे प्राणी उत्पन्न होते हैं, उसी में स्थित रहते हैं और उसी में चलते-फिरते हैं। अरे आदमी, अपना हृदय बन्द न करो, उसे खोलो। धर्म में सच्ची आस्था और विश्वास करो।' सारे तीर्थयात्रियों ने इस अलौकिक और रहस्यमयी घटना को आश्चर्य-चकित नेत्रों से देखा। उनके आश्चर्य और भय की सीमा न रही। उन्होंने बाध्य होकर गुरु महाराज को इच्छानुसार सोने के लिए छोड़ दिया।

प्रातःकाल होते-होते गुरु नानकदेव सभी लोगों की चर्चा के विषय बन गए। विभिन्न देशों के काजी, पीर, मुल्ला, फकीर आदि तीर्थयात्री, गुरु महाराज के सन्निकट एकत्र हो गए। उनमें से कुछ हिन्दुस्तान देश के भी थे। ऊच के मखदूम रुकनदीन, पीर बहाउद्दीन, जतीलाल, शेख ब्राहम, कमालदीन और जलालदीन उनमें से प्रमुख थे। वे सब गुरु महाराज से धार्मिक शास्त्रार्थ करना चाहते थे। उन्हें इस बात की जानकारी हो चुकी थी कि गुरु महाराज हिन्दुस्तान के हैं। अतएव शास्त्रार्थ के लिए रुकनदीन नेता के रूप में चुने गए। रुकनदीन का पहला प्रश्न यह था, 'आप हिन्दू हैं, अथवा मुसलमान ?'

गुरु जी ने उत्तर दिया, 'न मैं हिन्दू हूँ, न मुसलमान ? मैं परमात्मा का एक तुच्छ सेवक हूँ और मानवता का पुजारी हूँ।'

दूसरा प्रश्न था, 'पर आपकी दृष्टि में हिन्दू अधिक पवित्र हैं अथवा मुसलमान ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु महाराज ने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'हिन्दू अथवा मुसलमान अपने में कोई ऊँचा-नीचा नहीं है। धर्म अथवा मजहब किसी व्यक्ति को ऊँचा और नीचा नहीं बनाता, वल्कि व्यक्ति का वास्तविक जीवन उसे ऊँचा अथवा नीचा बनाता है। मनुष्य की इहलोक और परलोक की उन्नति उसके उन शुभ कर्मों पर निर्भर रहती है, जो वह अपने अन्य साथियों के साथ इस लोक में करता है। इसके अतिरिक्त उसकी आत्मोन्नति में प्रेम, सहृदयता, सहिष्णुता, मैत्रीभाव और सेवा का भी बहुत बड़ा हाथ होता है। केवल मौखिक सहानुभूति नहीं, बल्कि वास्तविक कार्य और आचरण, आध्यात्मिक उन्नति में सहायक सिद्ध होते हैं। धर्म और मजहब तो ऐसी रंगत हैं, जो शीघ्र ही धूमिल हो जाती हैं, वे मनुष्य की अन्तरात्मा पर कोई प्रभाव नहीं डालते। धर्म और मजहब व्यक्ति की अन्तरात्मा को प्रेम के रंग में नहीं रँग सकते। हिन्दू और मुसलमान, दोनों धर्मों के वास्तविक आचरण को देखकर मैं इसे बहुत स्पष्ट रूप से कह देना चाहता हूँ कि दो में से कोई भी धर्म परमात्मा के दरबार में पहुँचाने में समर्थ नहीं हैं। उन दोनों धर्मों में से किसी में भी प्यार नहीं शेष रह गया है। दोनों ही एक दूसरे की निन्दा करते हैं और गाली देते हैं। उनके हृदय में परमात्मा के लिए कोई स्थान नहीं, क्योंकि परमात्मा प्रेमस्वरूप है। हिन्दुओं का राम और मुसलमानों के रहीम और अल्लाह एक दूसरे के जानी दुश्मन हो गए हैं। मेरी समझ में हिन्दू अथवा मुसलमान कोई भी परमात्मा की सच्ची उपासना नहीं करता। इसके बावजूद वे शैतान की, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि की उपासना करते हैं।'

इस प्रकार बड़ा लम्बा और गंभीर वाद-विवाद हुआ। सभी काजियों, मुल्लाओं, पीरों और फकीरों ने गुरु महाराज को पराजित करने के लिए अपनी-अपनी बुद्धि और तर्कशक्ति का प्रयोग किया। किन्तु गुरु नानकदेव का परमात्मा में शाश्वत निवास था, जहाँ से उन्हें ज्ञान और बुद्धि का अजस्र स्रोत अहर्निश प्राप्त होता रहता था। उनकी आत्मा और हृदय में परमात्मा के प्रेम की अपार धारा प्रवाहित होती रहती थी, जिसका प्रवाह उनके शरीर की रक्त-शिराओं में होता रहता था। ऐसे अपराजित व्यक्ति को भला कौन पराजित कर सकता था ? शीघ्र ही सभी प्रश्नकर्ताओं को गुरु महाराज की महत्ता स्वीकार कर लेनी पड़ी। सभी उनके सामने नतमस्तक हो गए और उनसे शिक्षा पाने की लालसा प्रकट की। उनके नए शिष्यों में सबसे अनन्य और प्रिय शिष्य ऊच के मखदूम रुकनदीन प्रमाणित हुए। थोड़े ही समय में गुरु महाराज की प्रशंसा की धूम सारे मक्का शहर में मच गई। उनका प्रेम भरा संगीत लोगों की जबान पर चढ़ गया। इस प्रकार हिन्दुस्तान के पीर—गुरु नानकदेव ने अपनी मृदुता, सहजता और प्रेम के बल पर मक्का के सारे लोगों का हृदय जीत लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कुछ समय के उपरान्त गुरु नानकदेव वहाँ से जाने को उद्यत हुए। उनके नए शिष्यों—काज़ियों, मुल्लाओं, फकीरों और पीरों—ने गुरु महाराज से और अधिक रुकने की अनुनय-विनय की, किन्तु उन्हें तो अपना सन्देश दूर-दूर के देशों के लोगों को भी देना था। उनकी आवश्यकता गुरु महाराज को बलात् अपनी ओर खींच रही थी। अतः उन सभी लोगों को गुरु जी की मर्जी के सम्मुख झुकना पड़ा। अंत में मखदूम रुकनदीन ने गुरु महाराज से अपना कोई स्मृति-चिह्न छोड़ने को कहा। गुरु महाराज ने अपने खड़ाऊँ उतारकर रुकनदीन को दिए। कुछ समय तक तो वे काबा में बडी प्रतिष्ठा से रक्खे गए। भारत लौटने पर मख़दूम रुकनदीन उन खड़ाउओं को ऊच ले आए। भवालपुर रियासत में स्थित ऊच की मस्जिद में वे धार्मिक चिह्न बड़े आदर भाव से रक्खे गए हैं और ख़ास-ख़ास मौक़ों पर श्रद्धालुओं क़ो दिखलाए जाते हैं।

मक्का से गुरु नानकदेव मदीना की ओर बढ़े। वहाँ के विद्वानों ने भी गुरु महाराज से शास्त्रार्थ किए। किन्तु उन्हें भी गुरु महाराज के सामने नतमस्तक होना पड़ा। जिन लोगों ने गुरु जी का प्रेम और भक्ति से पूर्ण प्रेरणादायक संगीत सुना, वे सब उनके शिष्य बन गए। मदीना से वे फिर उत्तर दिशा की ओर मुड़े और मिस्र देश तथा अफ्रीका के कुछ प्रान्तों की यात्राएँ कीं। अफ्रीका से लौटकर गुरु महाराज ने तुर्की तक अपनी यात्रा की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय चौबीस

बग़दाद की यात्रा

इसके बाद गुरु नानकदेव के चरण दक्षिण की ओर मुड़े और वे कुछ दिनों में बग़दाद पहुँच गए। इस यात्रा का भाई गुरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वारां' में उल्लेख किया है।[1] बाद के लेखकों ने भी इस यात्रा का उल्लेख किया है।

बग़दाद भी मुसलमान मज़हब का अत्यन्त शक्तिशाली केन्द्र रहा है गुरु महाराज के साहस का यह ज्वलन्त प्रमाण है कि कट्टर और असहिष्णु मुसलमानों के उस गढ़ में जाकर अपने सिद्धान्तों की विजय-पताका फहराई और उन्हें सच्चा मार्ग प्रदर्शित किया। मक्का में जाकर, उन्होंने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया था कि परमात्मा अन्धविश्वासों और रूढ़ियों से परे है, परमात्मा का निवास किसी दिशा विशेष में ही नहीं है, बल्कि वह सर्वत्र समान रूप से व्याप्त है। बग़दाद में भी मुसलमानों की संकीर्ण विचारधारा को नया मोड़ देना था, इसीलिए गुरु महाराज ने वहाँ अपने अदम्य साहस का परिचय दिया।

शहर के कुछ बाहर, उनकी निगाह एक 'कब्रगाह' पर पड़ी, जहाँ की कुछ कब्रें बड़ी अच्छी दशा में दिखलाई पड़ीं। उन्होंने अपने ठहरने का स्थान उसी कब्रगाह को चुना। दूसरे दिन ब्राह्म मुहूर्त में गुरु महाराज जगे और उन्होंने मरदाना को रबाब बजाने का आदेश किया। कुछ समय तक वे चुपचाप मरदाना का संगीत सुनते रहे। तत्पश्चात् उन्होंने गंभीर और मृदु स्वर में स्वयं गाना प्रारम्भ किया। उनका दिव्य आध्यात्मिक संगीत सुनकर सारी प्रकृति स्तब्ध हो गई। उनका स्वर प्रातःकाल की शान्त वेला में बड़ी दूर तक गूंज उठा। उस मुसलमानी संस्कृति के केन्द्र में संगीत पहले कभी नहीं सुना गया था। मुसलमानी कानून द्वारा वहाँ संगीत पर प्रतिबन्ध था। जिन लोगों ने गुरु महाराज के उस दिव्य संगीत को सुना, सभी आश्चर्यचकित हो गए। ऐसा कौन व्यक्ति हो सकता था, जो बग़दाद में मुसलमानी कानून का उल्लंघन करे? सूर्योदय होने तक संगीत का कार्यक्रम चलता रहा। राहगीर विलक्षण आकर्षण शक्ति से अपने आप खिंच आए। संगीत की विलक्षण स्वरलहरी मृग आदि पशुओं तथा सर्प आदि हिंसक जन्तुओं को भी मोह लेती है। ब्राह्म मुहूर्त की उस पवित्र वेला में, जिन बग़-

१. वारां, भाई गुरदास जी, वार १, पउड़ी ३५, ३६ और ३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दादियों ने उस अलौकिक संगीत को सुना, सबके सब विचित्र भाव-जगत् में विचरण करने लगे। इस्लामी कानून जहाँ का तहाँ ताक में रखा रहा। सभी श्रोतागण अपना-अपना कार्य भूलकर, मंत्रमुग्ध से होकर यंत्रवत् वहीं खड़े रहे। संगीत-विषयक उनकी सारी विरक्ति जाती रही। सबके सब उस ठगौरी के प्रभाव में आ गए। चुपचाप उसके रस में निमज्जित हो गए।

कुछ समय के उपरान्त गुरु नानकदेव का संगीत थम गया। सब लोगों की निगाहें उस अलौकिक गायक के चेहरे पर पड़ीं। गुरु के मुखमण्डल पर अलौकिक तेज की छटा थिरक रही थी। उस अलौकिक तेज से सबकी आँखें चौंधिया गईं। गुरु महाराज के दिव्य शरीर से निकलती हुई अनुपम, विलक्षण और तेजस्विनी धार ने लोगों को वशीभूत कर लिया। गुरु महाराज के अपरिचित होने पर भी, सभी दर्शकों ने श्रद्धा से नत होकर उन्हें प्रणाम किया।

इसके बाद गुरु नानकदेव उठकर सीधे खड़े हो गए। मुसलमान अज़ान देते समय जैसे एक-एक उँगली अपने दोनों कानों पर लगा लेते हैं, ठीक उसी मुद्रा में गुरु जी ने मुल्ला की भाँति मीठी और गंभीर वाणी में 'अज़ान' लगाया। परन्तु उनके 'अज़ान' की शब्दावली मुल्लाओं की शब्दावली से बिलकुल भिन्न थी। गुरु जी के 'अज़ान' की शब्दावली अरबी तो अवश्य थी, पर उसमें केवल एक परमात्मा और उसकी महिमा का गुणगान था, मुहम्मद के पैगम्बर होने का जिक्र नहीं था। इसके अतिरिक्त उस 'अज़ान' में गुरु महाराज ने कुछ संगीतमय पंजाबी शब्दों को भी जोड़ दिया। इस प्रकार इस्लाम मज़हब के विरोध में उसी के गढ़ में गुरु महाराज का यह दूसरा अपराध था।

प्रातःकाल की निस्तब्धता में गुरु जी द्वारा उच्चरित 'अज़ान' के शब्द बग़दाद में बड़ी दूर तक गूँज उठे। आवाज भी अजनबी और अपरिचित थी। इस प्रकार की 'अज़ान' की शब्दावली बग़दाद के लोगों के लिए बिलकुल नई थी। उस 'अज़ान' में मुहम्मद के नाम का कहीं जिक्र भी नहीं था। साथ ही उसके अंत में कुछ ऐसे शब्द जोड़े गए थे, जिनका 'कुरान' में कहीं हवाला नहीं था। तब तक 'अज़ान' का उच्चारण गुरु जी की संगीतमयी वाणी में होता रहा, तब तक लोग उसे मूक होकर सुनते रहे। ज्यों ही उन्होंने 'अज़ान' समाप्त किया, सारे बग़दाद शहर में हंगामा मच गया। लोग कहने लगे, 'यह कौन शख्स है जिसने कुरान के पवित्र कानून को तोड़ने की हिम्मत की है ? यह शख्स बड़े-बड़े फ़क़ीरों के मज़ार के पास गाता रहा और अब इसने 'अज़ान' का भी मज़ाक किया है। ज़रूर यह कोई बहुत बड़ा 'काफिर' है। इन दोनों क़सूरों के लिए, इसे कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए।'

जो व्यक्ति गुरु महाराज का संगीत सुनने के लिए, उनके पास खड़े थे, वे शहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लौट पड़े। उन लोगों ने सूचना दी, 'जो अजनबी क़ब्रगाह के पास बैठा है, उसने अपनी भाषा में गाना गाया है। इसके बाद उसका अर्थ हमारी बग़दादी भाषा में समझाया है। उसने बताया है कि आकाश और पाताल के लोकों की संख्या असंख्य है। उनकी इतनी अधिक संख्या है कि गिननेवाला गिनते-गिनते थक भले ही जाए, पर गिनने में उनका पार नहीं पा सकता।' इस्लाम धर्म के विरुद्ध, यह तीसरा अपराध था। यह अपराध और अधिक भयानक अपराध था। 'कुरान' में केवल सात लोक ऊपर के और सात ही नीचे के माने गए हैं। अतः गुरु जी द्वारा अनन्त लोकों का होना बताया जाना, 'कुरान' और मुहम्मद पैगम्बर के अस्तित्व को चुनौती देना था।

इस प्रकार बग़दादियों की दृष्टि में गुरु नानकदेव ने तीन बार मुसलमानी कानून तोड़ा था। जब इन धार्मिक अपराधों की सूचना, वहाँ के सबसे बड़े मजहबी नेता, अर्थात पीर को दी गई, तो उसने तुरन्त ही अपने आदमियों द्वारा गुरु महाराज को अपने पास बुलवाया। पीर की आज्ञा सुनकर गुरु महाराज ने मुस्कराकर कहा, 'दोस्तो, जाकर अपने मालिक से कह दो कि जो व्यक्ति अपने को परमात्मा के चरणों में समर्पित कर चुका है और उसकी सेवा कर रहा है, वह इस प्रकार की अभिमानपूर्ण आज्ञा को नहीं सुनेगा, चाहे आज्ञा देनेवाला कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो। सबका स्वामी, जिसकी आज्ञा से मैं इतनी दूर तक यहाँ आया हूँ, वह मुझे अभी इस स्थान को छोड़ने की आज्ञा नहीं दे रहा है। मुझे किसी के खयाली वहमों को पूरा करने का अवसर नहीं है। अपने पीर साहब से कहना कि खुदा का चारण आपको उनकी महिमा का गीत सुनाने आया है। उन्हें यहाँ आकर परमात्मा के ऐश्वर्य-सम्बन्धी गीत सुनना चाहिए। बादशाहों के बादशाह के सेवक के सम्मुख किसी भी व्यक्ति को अपना अधिकार नहीं दिखलाना चाहिए।'

पीर के आदमियों ने गुरु नानकदेव के पास स जाकर उनकी सारी बातें पीर साहब से कहीं। गुरु जी की बातों को सुनकर पीर साहब की शक्ति और अभिमान का सर्प फुफकार मारकर, फन फैलाकर गुरु महाराज को डसने के लिए तैयार हो गया। एक घुमक्कड़ काफ़िर द्वारा किया गया अपमान पीर साहब को असह्य प्रतीत हुआ। गुरु महाराज ने मुलमानी कानून को तीन बार भंग किया ही था, पीर साहब की आज्ञा तोड़ना अपराधों की सूची में एक और अपराध जुड़ गया। अतः वे अब किसी भी प्रकार दया के पात्र नहीं रह गए थे। तुरन्त ही पीर साहब ने फ़तवा जारी किया, इस्लाम मजहब की इस प्रकार उपेक्षा करनेवाले शख्स को श्रद्धालु मुसलमानों द्वारा पत्थर फेंककर मार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

डालना चाहिए।' ऐसा फ़तवा जारी करके उन्होंने लोगों को प्रोत्साहित किया कि ऐसे काफिर को जरूर पत्थर के ढेलों से मार डालना चाहिए।

पीर की आज्ञा पाकर कट्टर मुसलमानों की अपार भीड़ पत्थरों के ढेले लेकर आवेश में गुरु महाराज और मरदाना की ओर बढ़ी। वे दोनों परम पिता, कर्त्तार की गोदी में निश्चिन्त भाव से बैठे थे। भीड़ के भीषण, उग्र और आतंकपूर्ण स्वरूप को देखकर भाई मरदाना घवड़ा गया। किन्तु गुरु महाराज ने मरदाना को ढाढ़स देते हुए कहा, 'भाई मरदाना, घवड़ाओ मत। साहस रक्खो। सर्वशक्तिमान् परमात्मा की करामात देखो। जिन्होंने मनसा, वाचा और कर्मणा अपने को परमात्मा के चरणों में सौंप दिया है, उन्हें कौन-सा भय किस प्रकार भयभीत कर सकता है? जिसे परमात्मा में पूर्ण विश्वास है, उसे कौन सा भय डिगा सकता है? अतः शांत रहो, निर्भय रहो।'

जब भीड़ समीप पहुँच गई, तो गुरु नानकदेव ने अपने मीठे, गम्भीर और आकर्षक राग में परमात्मा के ऐश्वर्य, महिमा एवं शक्ति सम्बन्धी पदों का गाना प्रारम्भ किया। ज्यों ही उग्र लोगों ने गुरु जी के संगीत का श्रवण किया, त्यों ही उनके हृदय की धड़कन तेज़ हो गई और उनके पैर लड़खड़ाने लगे। वे हाथ, जो गुरु महाराज को पत्थर फेंकने के लिए ऊपर उठे थे, जहाँ के तहाँ उसी दशा में अचल और स्थिर हो गए। उन हाथों को लकवा-सा मार गया। सारी शक्ति जाती रही। जो लोग क्रोध में अन्धे और पागल होकर गुरु महाराज की हत्या करने आए थे, वे पशुओं के समान मूक, तथा पत्थर की तरह जड़ होकर अपने-अपने स्थान पर मूर्तिवत् स्थित हो गए। वे गुरु महाराज के दिव्य संगीत सुनने में एकदम तन्मय हो गए। धीरे-धीरे उनका सारा क्रोध पानी होकर बह गया। सबके सब परमात्मा के उस अद्भुत गायक के प्रति श्रद्धानत हो गए।

पीर साहब अपने घर पर बैठकर गुरु महाराज के उस दुस्साहस पर मनन कर रहे थे, जिसने उनके स्वाभिमान, मर्यादा, प्रतिष्ठा पर उनके गढ़ में ही गहरा धक्का लगाया था। अभी किसी व्यक्ति ने इस प्रकार का दुस्साहस नहीं किया था। उन्होंने इस प्रकार चिन्तन करना प्रारम्भ किया, 'मैं उस महान् साहसी अजनबी को देखना चाहता हूँ। पर मेरे जाने से सारे लोग यही कहेंगे कि ऐसे काफ़िर को देखकर पीर साहब ने इस्लाम मज़हब की प्रतिष्ठा को नीचे गिराया है। जिस शख्स ने तीन-तीन बार इस्लाम मज़हब के पवित्र कानूनों को तोड़ा है और पीर साहब की आज्ञा को भी उल्लंघन किया है, मेरे भीतर उस व्यक्ति से मिलने की उत्कट अभिलाषा हो रही है। पर अब तक लोगों ने उसे पत्थर की मार से मार डाला होगा। कदाचित् मैं होता, तो मैंने उसे बचा लिया होता।

पीर साहब इसी ऊहापोह में पड़े थे कि कुछ आगन्तुकों ने आकर सारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घटना का ब्योरेवार वर्णन किया। इस समाचार ने पीर साहब की सारी हिचकिचाहट दूर कर दी। पीर साहब तुरन्त ही तैयार होकर गुरु नानकदेव से मिलने चल पड़े। उनके साथ उनका छोटा पुत्र भी था। ज्यों ही वे कब्रगाह के समीप पहुँचे, उन्हें गुरु नानक महाराज की आकर्षक और मीठी संगीत-ध्वनि सुनाई पड़ी। उस समय वे बग़दादी बोली में अपना एक तत्काल का रचा पद गा रहे थे। पीर साहब अपने पुत्र-सहित शीघ्र ही उस स्थान पर पहुँच गए, जहाँ गुरु महाराज मरदाना के साथ रेतीली जमीन पर बैठे हुए, स्वर्गीय संगीत गा रहे थे। गुरु महाराज के मुख-मण्डल पर प्रेम की अनोखी मुस्कान थिरक रही थी। उनकी आँखें पीर साहब की ओर मुड़ीं। उन आँखों में शान्ति, प्रेम और आनन्द की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही थी। गुरु महाराज के ओठों की विलक्षण मुस्कान, उनकी भुवनमोहिनी प्रेमपूर्ण चितवन ने पीर साहब का हृदय बन्दी बना लिया। उस समय पीर साहब को साक्षात् अनुभव हुआ कि इस अजनबी शख़्स का यही आकर्षण मुझसे इस्लाम मज़हब की मर्यादा एवं पीर के पद के गौरव को विस्मृत कराके, जबर्दस्ती अपनी ओर खींच रहा था। उन्होंने गुरु महाराज को झुककर प्रणाम किया और उन्हीं के समीप रेतीली भूमि पर चुपचाप बैठ गए।

गुरु महाराज पर पत्थर फेंकनेवाले लोग, अपने हाथों के पत्थर पहले ही गिरा चुके थे। वे लोग चुपचाप गुरु जी के समीप खिसक आए, क्योंकि उन्हें इस बात की उत्कट जिज्ञासा थी कि पीर और अजनबी शख़्स के बीच किस प्रकार की वार्ता होती है। पारस्परिक औपचारिक अभिवादन के अनन्तर पीर साहब को गुरु द्वारा इस्लाम धर्म के विरोध में किए गए अपराधों की याद आई। उन्होंने गुरु जी द्वारा उन अपराधों की सफ़ाई चाही।

अतएव पीर साहब का सबसे पहला यही प्रश्न था, 'संगीत मनुष्य के चित्त के आवेगों को उत्तेजित करता है, फिर भी आप संगीत से इतना प्रेम क्यों करते हैं? यह तो इन्द्रिय-सुख-वादियों का सस्ता मनोरंजन है। ईश्वर-परायण व्यक्तियों को मस्तिष्क और हृदय की उत्तेजना की कोई भी आवश्यकता नहीं है। उनकी वृत्ति अन्तर्मुखी और शान्त होनी चाहिए। उनके लिए तो संगीत का त्याग अपेक्षित है। इसी कारण, हमारे धर्म में—इस्लाम धर्म में संगीत का निषेध है।'

गुरु महाराज ने मुस्कराकर उत्तर दिया, 'आपने संगीत के प्रयोग का ग़लत अर्थ लगाया हैं। संगीत अच्छी और बुरी दोनों ही प्रकार की भावनाओं को जाग्रत करने के लिए अत्यन्त शक्तिशाली माध्यम है। मनुष्य के मस्तिष्क पर इसका विलक्षण, सूक्ष्म और शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। संगीत पाषण-हृदय को भी द्रवीभूत कर देता है और उसे लचीला बना देता है। यह आत्मा को अन्तर्मुख करके उसे सत्वगुण से परिपूर्ण कर देता है। यह मस्तिष्क को अपनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ओर बलात् आकर्षित कर लेता है। यह अशान्त और चंचल मन को लोरियाँ देकर शान्त और स्थिर कर देता है और मनुष्य के पशुत्व को देवत्व में परिणत कर देता है। ऐसी दशा में, भला संगीत किसी धर्म के विरुद्ध किस प्रकार हो सकता है? जिस सबसे बड़े कलाकार ने इस जगत् को चित्रित किया और उसका निर्माण किया, उसने भी संगीत के ऊपर न कोई रोक लगाई और न ही उसे निषिद्ध किया। प्रकृति के बाह्य रूप में सर्वत्र संगीत का साम्राज्य पाया जाता है। वन के वृक्षों की मरमर ध्वनि, झरनों का कल-कल निनाद, पक्षियों का कलरव, प्रातःकाल की सुरीली वायु-ध्वनि, भ्रमरों की सुमधुर गुञ्जार—सबके सब प्रकृति के विराट् संगीत में योग दे रहे हैं। आन्तरिक दृष्टि से सभी के हृदय इसी संगीत-लहरी में अपनी गति और लय मिला रहे हैं। समस्त जगत् में विश्वव्यापी अनाहत राग ध्वनित हो रहा है। रक्त की समस्त शिराओं में इसी सर्वव्यापी संगीत की तान सुनाई पड़ रही है। मनुष्य जब भी एकान्त में आनन्द भाव में स्थित होता है, अकस्मात् उसके कंठ से गान फूट पड़ता है। काफिले में सफर करते हुए, ऊँटों के सवार एकान्त स्थल में अपनी रागिनी छेड़कर मानसिक तृप्ति का अनुभव करते हैं। बादलों को देखकर मोर स्वतः ऊँचे स्वर में अलापने लगते हैं, वसन्त की आम्र-मंजरियों में कोयल 'कुहू कुहू' बोलने लगती है, हरे-भरे मैदानों में पशु तक रँभाने लगते हैं। अतः ऐसे पवित्र संगीत पर रोक लगाने का साहस किसमें है? संगीत से उदात्त भावनाओं का सृजन होता है, और मलिन संस्कारों का परिष्कार होता है मनुष्यों की मलिन भावनाओं की शुद्धि के लिए यह रामबाण है। यही कारण है कि मैं स्वयं गाता हूँ और दूसरों को गाना सिखाता हूँ। इस संगीत के माध्यम से सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापी परमात्मा की महिमा का गुणगान करके लोगों में सात्विक भावनाओं का संचार करता हूँ। कीर्त्तन के द्वारा आत्मा, परमात्मा की अखण्ड शक्ति और विभूतियों के साथ युक्त हो जाती है। इसके माध्यम से हमारा साक्षात्कार उस शाश्वत सत्ता से हो जाता है, जिससे सबकी उत्पत्ति होती है, जिसमें सब स्थित रहते हैं और जिसमें सब लीन होते हैं। इसी से ज्ञान, प्रकाश, आनन्द और शान्ति के अजस्र स्रोत से सदैव के लिए जुड़ जाते हैं और अखण्ड परमात्मा का हममें निवास हो जाता है। इन्हीं कारणों से संगीत हमारा धर्म है। इसके अतिरिक्त आपके पैगम्बर भी संगीत के प्रतिकूल नहीं थे। इस बात का उल्लेख मिलता है कि वे अपनी स्त्री को लेकर संगीत-कक्ष में गए थे। मुझे आश्चर्य है कि आपने कैसे विश्वास कर लिया कि संगीत धर्म का विरोधी है?'

गुरु की सारी बातें सुनकर पीर साहब अत्यन्त सन्तुष्ट और प्रभावित हुए। इसके बाद उन्होंने गुरु महाराज से दूसरे अपराध का जवाब चाहा, 'मैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि आप जैसे धार्मिक व्यक्ति 'कुफ्र' करने पर आमादा हों। आपने 'अजान' में मुहम्मद पैगम्बर का नाम क्यों नहीं लिया ?'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'इसका केवल यही कारण है कि मैं उस एक परमात्मा का उपासक हूँ, जिसकी जोड़ का और कोई दूसरा है ही नहीं। परमात्मा के साथ पैगम्बर मुहम्मद का नाम न जोड़कर मैं आपके इस्लाम धर्म के एकेश्वरवाद के और निकट ही हुआ हूँ। मुझे स्वयं बड़ा आश्चर्य है कि खुदा के साथ पैगम्बर को जोड़कर एकेश्वरवाद किस प्रकार सिद्ध कर सकते हैं ? खुदा अकेला है, उसके लिए किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं। एक ओर तो आप लोग हिन्दुओं को इस बात के लिए धिक्कारते हैं कि वे बहुदेववाद के उपासक हैं और दूसरी ओर खुद पैगम्बरवाद चलाकर उसी बात की पुष्टि करते हैं। इसके अलावा यदि आप एक खुदा में विश्वास करते हैं और सृष्टि का निर्माणकर्ता और पालक उसी को मानते हैं, उसी को सर्वव्यापी मानते हैं, तो आप उसी खुदा के बनाए हुए अन्य लोगों को घृणा और हेय की दृष्टि से क्यों देखते हैं ? आपके धर्म से जो मतभेद रखते हैं, उनके ऊपर जुल्म क्यों ढाते हैं ? उन्हें क्यों मौत के घाट उतार देते हैं ? यदि आप उन्हें खुदा की सच्ची सन्तान मानते होते, तो उन्हें भी अपना सगा भाई समझते और उनके साथ प्रेम, दया और करुणा का भाव बरतते और उनकी सेवा के लिए सदैव तैयार रहते। क्या आप उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं करते ? क्या यह कहना सत्य नहीं है कि आप एक खुदा में विश्वास नहीं करते, बल्कि पैगम्बर में विश्वास करते हैं ? आपको याद रखना चाहिए कि परमात्मा-साक्षात्कार एक आदमी, एक राष्ट्र और युग की बपौती नहीं है। आप लोगों का केवल यही विश्वास है कि सत्य का कथन केवल मुहम्मद पैगम्बर ने किया है। इसीलिए आप उन लोगों से झगड़ते हैं, जिनका इस सम्बन्ध में आपसे मतभेद है। फिर भी आप लोग खुदा से प्रेम और उनकी सेवा करने का दम्भ करते हैं। वास्तविकता तो यह है कि आप लोग अपने ही लोगों से घृणा करते हैं और उन पर भीषण अत्याचार करते हैं। क्या यही सब होना चाहिए ?'

पीर साहब ने शर्म से अपना सिर नीचे कर लिया और कहा, 'हिन्दुस्तान के महान् पीर, आपने ठीक ही कहा है। हमारे विश्वास और आचरण तथा क्रिया में बहुत बड़ा पतन हो गया है। पैगम्बर के शब्दों का गलत अर्थ लगाकर उनका दुरुपयोग किया जाता है। हठधर्मी और धर्मान्ध मुसलमान कुरान की कुछ आयतों का दूसरा ही अर्थ लगाते हैं। यह बड़े दुःख की बात है। इस्लाम के नाम पर मानवता के प्रति क्रूरताएँ बरती गई हैं और अत्याचार ढाए गए हैं। इस बात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पर मैं आपसे पूर्णतः सहमत हूँ। हाँ, एक बात से मैं ज़रा भी सहमत नहीं हूँ कि आप कहते हैं कि ऊपर और नीचे अनन्त लोक हैं। इस सम्बन्ध में मुहम्मद पैग़म्बर का कथन है कि ऊपर और नीचे सात-सात ही लोक हैं। आप मुहम्मद की बातों का खण्डन करते हैं। आपका तीसरा अपराध तो प्रमाणित है ?'

गुरु महाराज ने कहा, 'इस अपराध के लिए मैं अपने को दोषी मानता हूँ। किन्तु मैंने अपना बयान गलत नहीं दिया है। हाँ, यदि आपका अन्तःकरण पवित्र है, तो आपको मेरे कथन की वास्तविकता पर पूर्ण विश्वास हो जाएगा। सचमुच परमात्मा के अनन्त लोक में इसकी अनुभूति शुद्ध अन्तःकरण में हो सकती है।'

पीर का पुत्र अपने पिता और गुरु नानकदेव की वार्ता बड़े ध्यान से सुन रहा था। वह तुरन्त ही बोल उठा, 'ओ अल्लाह के सच्चे फ़कीर, क्या आप उन अनन्त लोकों को दूसरों को नहीं दिखला सकते ? मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपनी अद्‌भुत आध्यात्मिक शक्ति से यह कार्य भी कर सकते हैं। यदि आप उन अनन्त लोकों की झाँकी मुझे दिखा सकेंगे तो मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँगा।'

गुरु महाराज ने कहा, 'बहुत अच्छा, आप अपना हाथ मुझे दीजिए। अब अपनी आँखें बन्द कर लीजिए और अल्लाह का चिन्तन कीजिए।' उस नवयुवक को ऐसी अनुभूति हुई कि वह बहुत ही तेजी से गुरु नानकदेव के साथ आकाश में उड़ा जा रहा है। वे तब तक ऊपर उड़ते गए, जब तक उस नवयुवक का देश और काल का समस्त ज्ञान नष्ट नहीं हो गया। उसके सम्मुख अनन्त आकाश के अतिरिक्त और कुछ भी भाव न हुआ। तदनन्तर उसे असंख्य महान् वृत्त दिखलाई पड़े। उन वृत्तों में स्वर्ग के दिव्य शरीरों के दर्शन हुए। वहाँ से ऊपर और नीचे के अनन्त लोकों के दर्शन से उस नवयुवक की आँखें चौंधिया गईं। उसे यह अनुभव हुआ जैसे वह असंख्य वर्षों से उड़कर लोकों को देख रहा है, पर उन लोकों का न आदि है और न अन्त। उसने गुरु महाराज से प्रार्थना की, 'महान् पीर, अब मुझे अपने पिता के पास पहुँचा दीजिए। मुझे आपकी बात पर पूरा विश्वास हो गया। मैंने बहुत से लोकों को देख लिया। अब और लोकों को देखने की इच्छा नहीं है। मेरा मन उन्हें देखने से भर गया है।'

इसके बाद गुरु महाराज छोटे पीर को लेकर नीचे की ओर मुड़े। कुछ देर के बाद उसने अपनी आखें खोलीं। आँखें खोलने पर उसे विदित हुआ कि वह बग़दाद के क़ब्रगाह में अपने पिता के पास बैठा हुआ है। उसने अपने अनुभव अपने पिता को सुनाए। जब उसने वर्षों उड़ने की बात कही, तो उसके पिता पीर साहब ने कहा, 'नहीं, नहीं, तुम तो केवल कुछ ही मिनटों तक यहाँ सोते रहे और यहीं थे। कहीं और जगह नहीं गए थे, परन्तु तुम्हारी चितवन में अजीब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवर्तन है, इससे प्रतीत होता है कि तुम जो कुछ बयान कर रहे हो, वह सब बिलकुल सही है। मेरी भी इच्छा थी कि ऐसा अनुभव मुझे भी होता।'

गुरु नानकदेव ने पीर साहब को इस प्रकार आश्वासन दिया, 'यह आध्यात्मिक अनुभूति आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। आपको अपने विश्वास की वृद्धि करनी चाहिए। यदि आप अपना हृदय और मन पवित्र कर लेते हैं और अपनी आत्मा अल्लाह के चरणों में समर्पित कर दें, तो आपको मेरी कही हुई बातों पर विश्वास हो जाएगा।'

इस प्रकार गुरु महाराज ने पीर साहब पर अपनी आध्यात्मिक विजय प्राप्त कर ली। पीर साहब गुरु महाराज के चरणों में गिर पड़े और उनके आशीर्वाद से अभिषिक्त हुए। पीर साहब को अपनी अन्तरात्मा में ज्ञान के विलक्षण प्रकाश की अनुभूति हुई। बग़दाद के उन समस्त लोगों ने, जो एकत्र होकर गुरु नानकदेव और पीर साहब की वार्ता सुन रहे थे, गुरु महाराज के चरणों में अपने सिर झुका दिए। गुरु महाराज ने सबको 'नाम' का अपार धन देकर नए आध्यात्मिक जीवन का दान दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय पचीस

पंजा साहब

बग़दाद की यात्रा के बाद, गुरु नानकदेव भारत लौटे। पेशावर होते हुए, सिन्धु नदी पार करके पंजाब पहुँचे। थोड़े ही समय में हसन अब्दाल नामक स्थान पर पहुँचे। यह स्थान रावलपिंडी से तीस मील की दूरी पर स्थित है। नगर के बाहर एक ठण्डे पर्वत के मूल में उन्होंने अपना आसन जमाया। वली कन्धारी नामक एक मुसलमान फकीर पहाड़ की चोटी पर रहते थे। वहीं एक झरना था। उसी झरने के पास वली कन्धारी ने अपनी एक कुटिया बना ली थी। उस आसपास के क्षेत्र में जल का साधन केवल वही एक झरना था। आसपास के सारे लोग उसी के जल से अपना गुजारा करते थे। वली कन्धारी के संकीर्ण मनोवृत्ति के चमत्कारी फ़कीर थे। आसपास के क्षेत्र में गुरु महाराज की प्रसिद्धि और लोकप्रियता सुनकर, फ़कीर को बड़ी ईर्ष्या हुई। वली कन्धारी कुछ शिष्यों ने गुरु महाराज की आध्यात्मिकता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्रशंसा सुनकर फ़कीर का संकीर्ण हृदय क्रोध से भभक उठा। वली कन्धारी ने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं गुरु-सहित यहाँ के सारे निवासियों को पानी के बिना मार डालूंगा। अतएव उन्होंने झरने के उस सोते को बन्द कर दिया, जिससे जल बहकर नीचे जाता था और उससे लोग अपना जीवन-निर्वाह करते थे। जब कभी नीचे के लोगों पर फ़कीर क्रुद्ध होते थे, तभी वे झरने का नीचेवाला सोता बन्द कर देते और बहुत अनुनय-विनय करने पर उसे खोलते थे। सोता बन्द होने से आसपास के लोग बिना पानी बहुत कष्टित हुए। लोगों में त्राहि-त्राहि मच गई। लोगों की सारी प्रार्थनाएँ फ़कीर के गुरु महाराज से ईर्ष्या-जनित क्रोध के कारण निरर्थक सिद्ध हुईं। फ़कीर ने गुरु महाराज की ओर अपनी उँगली का संकेत करते हुए कहा, 'उसी के पास जाओ।'

वहाँ के सारे लोग बड़े संकट में थे। लोगों ने अपने संग्रह किए हुए थोड़े जल में से प्यासे मरदाना को जल देने से साफ इन्कार कर दिया और कहा, 'अपने गुरु जी से प्रार्थना क्यों नहीं करते ?'

गुरु महाराज ने यह आशा की थी कि वली का हृदय पसीज जाएगा, क्योंकि वे अपने को परमात्मा का खोजी कहते थे। किन्तु उन्हें इस बात का जल्द ही पता लग गया कि फ़कीर का हृदय उतना ही कठोर है, जितना कि वह पहाड़,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ पर वे निवास करते हैं। गुरु नानकदेव तब तक आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग नहीं करते थे, जब तक लोक-कल्याण के निमित्त उसका प्रयोग अनिवार्य नहीं हो जाता था। अतएव उन्होंने परमात्मा के नाम पर वली के हृदय में दया उत्पन्न करने के लिए मरदाना को उनके पास भेजा। मरदाना अत्यधिक प्यासा था। उसने वली के पास पहुँचकर प्रार्थना की, 'फ़कीर साहब, मैं प्यास से मर रहा हूँ। एक बूंद भी पानी नहीं मिल रहा है। खुदा के नाम पर पानी पिलाकर मेरा प्राण बचाइए और साथ ही दया करके इस सोते को खोलने की कृपा कीजिए, क्योंकि खुदा के सारे बन्दे प्यासे मर रहे हैं।' वली साहब ने मरदाना की प्रार्थना अभिमानपूर्वक ठुकरा दी और मरदाना से कहा, 'अपने पीर के पास जाओ। यदि उसमें शक्ति है, तो एक नया सोता निकालकर, लोगों की तकलीफ़ दूर कर सकता है। यदि उसमें इस प्रकार की कोई शक्ति नहीं है, तो उससे कह दो कि वह मेरे पास आये और यहाँ के लोगों को बरगलाना बन्द कर दे।' इसके अलावा क्रोधावेश में फकीर साहब न जाने और क्या अनाप-शनाप बक गए।

बेचारा मरदाना प्यासा ही गुरु नानकदेव के पास लौट आया और उसने अपने गुरु जी से सारा समाचार विस्तार से कहा। गुरु जी ने दुबारा और तिबारा, मरदाना को वली कन्धारी के पास भेजा। बेचारे मरदाना ने मानवता के नाम पर अनेक-अनुनय-विनय की; पर वली साहब का पाषाण-हृदय रंच मात्र भी द्रवीभूत नहीं हुआ। इस पर गुरु नानकदेव ने अपने बैठनेवाले स्थान से एक छोटा पत्थर उठाकर मरदाना से कहा, 'भाई मरदाना, इस स्थान को खोदो।' मरदाना ने गुरु महाराज की आज्ञा का पालन किया। महान् आश्चर्य की बात हुई—थोड़ा ही खोदने से उस स्थान पर एक जल-स्रोत निकल आया, जिसका जल अत्यन्त स्वच्छ, शीतल और मीठा था। उस जल ने सबसे पहले गुरु महाराज के पवित्र चरणों को धोकर अपने को पुनीत किया। उस जलस्रोत के निकलते ही, वली साहब का जलस्रोत एकदम सूख गया। नया जलस्रोत पुराने जलस्रोत की अपेक्षा अधिक बड़ा था। चारों ओर अनेक नालियों से जल प्रवाहित होने लगा। वहाँ के आस-पास की सारी भूमि जल से परिप्लावित हो गई। इस प्रकार गुरु जी महाराज ने वली के भीषण अत्याचारों से ही लोगों को त्राण नहीं दिलाया, बल्कि जल के आधिक्य से वहाँ की बंजर भूमि को भी उर्वरा भूमि में परिवर्तित कर दिया। सब जगह स्वच्छ, शीतल और मीठा जल दिखाई देने लगा।

गुरु जी के इस चमत्कार को देखकर वली कन्धारी और भी आगबबूला हो गया। अत्यधिक क्रोधावेश में उसने गुरु नानकदेव पर भारी शिला लुढ़का दी। वह भयानक रूप से लुढ़कती और गड़गड़ाती हुई नीचे आई। गुरु महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उस समय दातून कर रहे थे। उस लुढ़कती शिला को नीचे आते देखकर उन्होंने अपने पंजे से उसे रोक दिया। गुरु महाराज के पंजे के स्पर्श से, वह जहाँ को तहाँ अचल हो गई। उस शिला पर गुरु जी के पंजे का निशान बन गया। यह अब भी उसी दशा में स्थित है। और उस पर गुरु महाराज के पंजे का निशान अंकित है। उसे लोग आदर भाव से 'पंजा साहब' कहकर सम्बोधित करते हैं।

इस प्रकार वली कन्धारी का सारा अहंकार चकनाचूर हो गया। वे गुरु महाराज से नीचे मिलने के लिए उतरे। उन्होंने गुरु महाराज के चरणों में गिर कर प्रणाम किया और अपनी भयंकर भूलों के लिए क्षमा-याचना की। गुरु नानकदेव जन्मजात उदारमना थे। वे पापियों से घृणा नहीं करते थे, बल्कि उनके जघन्य कृत्यों पर उन्हें करुणा होती थी। वे उन्हें अज्ञानान्धकार से निकालकर सच्चे मार्ग पर लगाना चाहते थे। गुरु महाराज ने वली कन्धारी को क्षमा ही नहीं किया, बल्कि उनके शुष्क और अभिमानी अन्तःकरण को सरस, कोमल और अभिमान-विहीन बना दिया। उनके भीतर आध्यात्मिक धारा प्रवाहित कर दी। गुरु महाराज ने वली कन्धारी से कहा, 'वली साहब कृपया यह न भूलिए कि परमात्मा प्रेमस्वरूप है। जो व्यक्ति प्रेम में निवास करता है, वह परमात्मा में निवास करता है। जिसके हृदय में प्रेम नहीं है, वह यह जान ही नहीं सकता कि परमात्मा क्या है। अतः ऐसे व्यक्ति को न तो सच्चे आनन्द की प्राप्ति हो सकती है और न शाश्वत शान्ति की। यदि आप इस रहस्य को जान लेंगे, तो आप मनुष्य मात्र की सेवा में जुट जाएँगे, क्योंकि संसार के सारे मनुष्य एक ही खुदा की सन्तान हैं। उस समय आप मनुष्यों के दुःखों, क्लेशों से उदासीन होकर, पर्वत के एकान्त में नहीं बैठ सकते। आपसे जितना भी बन पड़ेगा, आप उन्हें ऊंचा उठाने की चेष्टा करेंगे और उन्हें दुःखों से छुटकारा दिलाने के लिए तत्पर होंगे। आप, लोगों से मिलकर उनके साथ एक हो जाएँगे, उनके दुःखों और सुखों में शरीक होंगे, और उन्हें परमात्मा के चरणों में लगाएँगे। इस प्रकार का कार्य करने पर आप सच्चे धार्मिक बन जाएंगे, क्योंकि प्रेम, सेवा और भक्ति ही सच्ची उपासना है तथा उच्च विचार, दयापूर्ण भाव, शुभ कर्म ही सच्ची प्रार्थना है।'

गुरु नानकदेव के उपदेश से वली कन्धारी का हृदय एकदम पवित्र हो गया और उनके अन्तर्गत नवीन शुद्ध जीवन का प्रादुर्भाव हुआ। जिस स्थान पर गुरु महाराज बैठे थे, उस स्थान पर एक गुरुद्वारा निर्मित है, जिसका नाम 'पंजा साहब' है। वर्षों बीत जाने पर भी उस शिला में गुरु जी के पंजे (पाँचों उँगलियों) का निशान ज्यों का त्यों बना हुआ है। यदि कोई व्यक्ति उस शिला के समीप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ा होकर, उस पर्वत चोटी की ओर दृष्टिपात करे, जहाँ वली कन्धारी की कुटिया बनी थी, तो उसे पूर्ण निश्चय हो जाएगा कि वहाँ से यह शिला अवश्य नीचे की ओर लुढ़काई गई होगी। किन्तु अब वह शिला काट-छाँट दी गई है।

हसन अब्दाल में कुछ दिनों तक ठहरने के बाद, गुरु महाराज अपने घर, कर्त्तारपुर लौटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय छब्बीस

दक्षिण की यात्रा

जिस मानवता की करुण पुकार और परमात्मा के आदेश से गुरु नानकदेव ने सुल्तानपुर के आकर्षण को त्यागकर देश-विदेशों में अपने मिशन की पूर्ति के निमित्त भ्रमण किया था, वही पुकार और वही आदेश उनके कानों में अब भी गूंज रहे थे। उन्होंने पूर्व दिशा में ब्रह्मा और पश्चिम दिशा में मिस्र, तुर्की और रूसी तुर्किस्तान की यात्राएँ की थीं। इन स्थानों में हिन्दू और मुसलमान दोनों के धार्मिक गढ़ों में जाकर वहाँ के धार्मिक व्यक्तियों को यह समझाया कि आप लोग जिस धार्मिकता का दम्भ करते हैं, उसका आचरण वास्तविक जीवन में नहीं करते हैं। अपनी यात्राओं में गुरु जी महाराज जिन-जिन प्रभावशाली व्यक्तियों से मिले, उन सबको उपदेश दिया कि आगामी जीवन में धर्म विशेष, मौखिक कथन, अथवा किसी महान् धार्मिक व्यक्ति अथवा पैगम्बर में विश्वास काम नहीं आते, बल्कि व्यक्ति की वास्तविक रहनी सहायक सिद्ध होती है। मनुष्य के जीवन में सच्चे विचार, सच्चे भाव और सच्चे कर्म का सामंजस्य आवश्यक है। धर्म इसी जीवन से सम्बन्धित है। धर्म तो मनुष्यों के बीच केवल विभाजन की रेखा खींच देते हैं। लोग धर्म के बाह्य रूप में उलझे रहते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, मारकाट करते हैं। धर्म के आन्तरिक रूप को कोई विरला ही व्यक्ति जान पाता है। गुरु महाराज जहाँ कहीं भी गए, उन्होंने मनुष्यों के चरित्र को ऊँचा उठाने का भरसक प्रयास किया और उन्हें सच्चे धर्म के अनुरूप रहने का रास्ता बताया। उनकी शिक्षा का वास्तविक सार यह है, 'सच्चाई प्रत्येक वस्तु से बड़ी है। लेकिन सच्चाई से जीवन व्यतीत करना उससे भी महान् है। मन और आत्मा के नियंत्रण से सत्यस्वरूप, प्रेमस्वरूप परमात्मा की उपलब्धि होती है।

गुरु महाराज का अनेक पीरों, मुल्लाओं, फकीरों, दरवेशों ब्राह्मणों, विद्वानों, योगी-यतियों, सिद्धों, नाथपंथियों, दार्शनिकों, रहस्यवादियों आदि से साक्षात्कार हुआ। उन सबों ने अपने तर्क द्वारा गुरु जी को परास्त करना चाहा। किन्तु गुरु नानकदेव ने उनके अन्तःकरण के उस मर्मस्थान को स्पर्श किया, जिससे उन सबको मुंह की खानी पड़ी। वे स्वयं परास्त हुए और गुरु महाराज की शिक्षा के अनुरूप जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य हुए। सभी स्थानों पर गुरु महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने अपने अन्तरंग शिष्यों को अपने उपदेशों और शिक्षाओं का उत्तरदायित्व सौंप-कर उन्हें प्रेम, सेवा, सहानुभूति, ज्ञान, भक्ति, त्याग के संदेश देने को कहा। इस प्रकार जहाँ-जहाँ वे गए, वहाँ-वहाँ, पवित्रता, आध्यात्मिक उत्थान और एकता के स्थायी आन्दोलन की संस्थापना करते गए।

गुरु महाराज ने अपनी यात्राएँ पूर्व और पश्चिम दिशा में तो पर्याप्त रूप में कर ली थीं, पर अभी तक उत्तरी और दक्षिणी सीमा के प्रदेश एकदम अछूते थे। अतः उन्होंने मानवता की पुकार और परमात्मा के आदेशानुसार अब दक्षिणी प्रदेशों की यात्रा करने का संकल्प किया। गुरु नानकजी ने मरदाना को कर्त्तार-पुर रहने का आदेश दिया, ताकि वह गुरु जी के पद वहाँ के भक्तों को सुना सके। अन्य प्रसिद्ध भक्त भी, जैसे भाई भगीरथ आदि को कर्त्तारपुर ही रुकने का आदेश दिया। ऐसे भक्तों को इसलिए कर्त्तारपुर रहने का आदेश दिया गया, जिससे वे अपने जीवन के उच्चादर्शों द्वारा अन्य लोगों को अनुप्राणित कर सकें। सन् १५११ ई० में गुरु नानकदेव अपने दो शिष्यों, सैंदी और सीहो को साथ लेकर दक्षिण की ओर रवाना हुए। इस बार भी उन्होंने अपनी विचित्र वेशभूषा धारण की। उन्होंने पैरों में खड़ाऊँ धारण की, सिर, भुजाओं और पैरों के चारों ओर एक रस्सी लपेटी, हाथों में फ़क़ीरी सोंटा लिया। इस प्रकार विचित्र वेषभूषा धारण कर वे दक्षिण की ओर बढ़े। भटनेर, भटिंडा आदि स्थानों से होते हुए, वे हिसार जिले के सिरसा नामक स्थान पर पहुँचे। वहाँ पर वे मुसलमान फ़क़ीरों के एक समुदाय से मिले। उन फ़क़ीरों में सिद्धियों और चमत्कारों की बातें बताई जाती थीं। उस क्षेत्र के लोग उन फ़क़ीरों से अत्यधिक आतंकित और त्रस्त थे। वे भोली-भाली जनता को गुमराह कर रहे थे। जनता में यह प्रचार कर रहे थे कि फ़क़ीर और मुल्ला ही उनके रक्षक हैं। अन्य फ़क़ीरों की भाँति, वहाँ के फ़क़ीर भोले-भाले हिन्दुओं को मुसलमान मजहब के मजबूत शिकंजे में जकड़ रहे थे।

वहाँ के सभी फ़क़ीरों ने गुरु नानकदेव को घेर लिया। उनके अगुआ ख्वाजा अहमद शकूर थे। वे वादविवाद और तर्क में गुरु महाराज को परास्त करने आए थे। वे विजेता गुरु जी को हराकर अपनी धाक लोगों पर जमाना चाहते थे। इस प्रकार वे फ़क़ीरों को ही नहीं, बल्कि मुसलमान मजहब को भी ऊंचा उठाना चाहते थे। गुरु जी की शिक्षाओं और उपदेशों से मुसलमान मजहब की शिक्षाओं और प्रचार-प्रसार में बड़ी बाधा पहुँच रही थी। इसीलिए लोगों की दृष्टि में गुरु जी को नीचा दिखाने के लिए उन्होंने गुरु नानकदेव से प्रश्न किया, 'क्या आपने धार्मिक साधकों की तरह तपस्या की है?' गुरु महाराज जी का सहज उत्तर था, 'हमें ऐसी तपस्याओं की आवश्यकता नहीं है। जब सांसारिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोगों से शरीर मन और हृदय दूषित हो जाते हैं, तभी उनकी शुद्धि के लिए तपस्या की आवश्यकता पड़ती है। पर तपस्या को साधन मात्र मानना चाहिए, साध्य नहीं। तपस्या को ही सिद्धि मान लेना भयंकर भूल है। वह तो साधन मात्र है। शरीर को कष्ट देकर उसे जीर्ण-शीर्ण बना देना महान् पाप है। जब शरीर ही निस्तेज और पंगु बना दिया जाएगा, भला तब आत्मा की प्राप्ति किस प्रकार हो सकेगी? शरीर आत्मा का वाहन है। वाहन के बिगड़ जाने पर आत्मा किस प्रकार आगे बढ़ेगी? हाँ, शरीर का आवश्यकता से अधिक पोषण करना, तथा आत्मा को शुष्क रखना यह भी बुरा है। मनुष्य का मन उस जंगली हिरन की तरह चंचल है, जो दिन-रात हरी-हरी घास के पीछे दौड़ता रहता है। इसी प्रकार अशिक्षित और चंचल मन सदैव सांसारिक भोगों के पीछे दौड़ता रहता है। निस्सन्देह, मन का नियंत्रण परमावश्यक है। किन्तु आप लोगों ने जो तपस्या की प्रणाली निकाली हैं, वह सर्वसाधारण के लिए शक्य नहीं है। उनके लिए यह अति कठोर है। इसके अतिरिक्त यह परमात्म-प्राप्ति के लिए निश्चित साधन भी नहीं माना जा सकता। अधिकतर ऐसा देखा जाता है कि जो व्यक्ति अधिक तपस्या में रत होते हैं, उन्हें अपनी तपस्या का भीषण अहंकार हो जाता है। ऐसे व्यक्ति उन व्यक्तियों को तुच्छ दृष्टि से देखने लगते हैं, जो उनकी साधन-प्रणाली के अनुरूप नहीं चल सकते। अहंकार, द्वेष, घृणा आदि से युक्त मन परमात्मा की प्राप्ति के लिए उपयुक्त नहीं होता। मेरा मार्ग सहज मार्ग है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिसके हृदय में परमात्मा का पूर्ण प्रेम लबालब भरा है, वह जगत् के तुच्छ भोगों में नहीं फँस सकता। उसके मन और हृदय तथा समस्त भाव एक ही परमात्मा में केन्द्रीभूत रहते हैं। अतः उसे परम शांति और आनन्द की प्राप्ति होती है। जिस व्यक्ति में परमात्मा के दिव्य प्रेम का जागरण हो जाता है, जिसकी आत्मा में ईश्वर-मिलन की उत्कट अभिलाषा है, वह इधर-उधर नहीं भटकता। ऐसे व्यक्ति की समस्त इन्द्रियाँ पूर्णतः उसके वशीभूत होती हैं। वह तो वायु से भी अधिक सूक्ष्म तत्त्व पर जीवन धारण कर सकता है, वह बिना भोजन के भी जीवित रह सकता है। वह जितने दिनों तक चाहे उतने दिनों तक बिना भोजन के भी रह सकता है। ऐसी स्थिति में भी उसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होगी। अतः वह कठोर तपस्या और आत्म-पीड़न से घृणा करता है। आत्म-पीड़न के स्थान पर, वह लोक-कल्याण और लोक-सेवा के निमित्त तपस्या का प्रयोग करता है।'

मुसलमान फकीरों ने इस बात का पूर्ण अनुभव कर लिया कि गुरु जी को तर्कों द्वारा कोई भी व्यक्ति पराजित नहीं कर सकता। अतएव उन लोगों ने गुरु जी महाराज को चालीस दिन का 'चिल्ला' व्रत करने का आमंत्रण दिया, क्योंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

वे लोग 'चिल्ला' व्रत करने जा रहे थे। उन लोगों को पूर्ण विश्वास था कि गुरु महाराज चालीस दिनों की भूख और प्यास नहीं सहन कर सकेंगे। गुरु महाराज उनके भयंकर अहंकार को चूर्ण करना चाहते थे, ताकि वे परमात्मा के सम्बन्ध में सच्ची बात श्रवण कर सकें। अतः उन्होंने विनीत भाव से कहा, 'जैसी आप लोगों की मर्जी हो।' इसके बाद प्रत्येक फकीर चिल्ला व्रत करने के लिए एक एक पानी से भरी सुराही और चालीस जइयाँ लेकर अपनी-अपनी कोठरी में घुस गए। गुरु नानकदेव ने इनका भी परित्याग कर दिया। चालीस दिनों के उपरान्त फ़कीर अपनी-अपनी कोठरी से बाहर निकले। उनका शरीर जीर्ण-शीर्ण और निस्तेज हो गया था। वे कंकाल मात्र रह गए थे। किन्तु नानक महाराज पहले ही की भाँति स्वस्थ और प्रसन्न थे। निरन्तर चालीस दिनों तक परमात्मा के सान्निध्य में रहने के कारण, उनका मुखमण्डल और अधिक भव्य हो गया था और कान्ति अधिक प्रदीप्त हो गई थी। फकीरों ने जब गुरु जी के इस स्वरूप का दर्शन किया, तो वे गुरु महाराज की इस बात से पूर्ण संतुष्ट हो गए कि मनुष्य केवल आहार से ही जीवित नहीं रहता। वे सबके सब गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़े और उन्होंने गुरु जी से ज्ञान तथा प्रकाश पाने की प्रार्थना की। गुरु महाराज ने उनमें परमात्मा के नाम का बीजारोपण किया। उन्होंने उन फकीरों को यह शिक्षा दी कि संसार में किस प्रकार अनासक्त होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए। जिस प्रकार कमल का पत्ता, जल से ही पोषक-तत्त्व ग्रहण कर, जल से पृथक् रहता है, उसी प्रकार भगवान् के भक्तों को संसार से पोषक तत्त्व ग्रहणकर उससे निर्लिप्त होना चाहिए।

गुरु महाराज उस स्थान पर चार महीने से अधिक ठहरे। उनकी यात्रा और विजय की स्मृति में वहाँ एक गुरुद्वारा स्थित है। फकीरों की कोठरियाँ भी तीर्थयात्रियों को दिखाई जाती हैं।

उस स्थान से गुरु महाराज और दक्षिण की ओर बढ़े। बीकानेर, अजमेर, जैसलमेर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, इन्दौर, होशंगाबाद आदि स्थानों में होते हुए, उन्होंने नर्मदा नदी पार की। नर्मदा नदी पार करके, वे महाराष्ट्र प्रदेश में प्रविष्ट हुए। उस प्रदेश की यात्रा करके वे नरसिंहपुर पहुँचे। नरसिंहपुर में उस समय 'बनजारा' लोग रहते थे। गुरु महाराज के पहुँचने पर, ठीक उसी समय बनजारों के सरदार के एकलौते पुत्र का देहान्त हुआ था। सारा शहर शोकाकुल था। उस अवसर पर गुरु महाराज ने अपना एक महत्त्वपूर्ण पद सुनाया, जिसमें संसार की नश्वरता और क्षणभंगुरता का चित्रण है। उस पद से बनजारा लोगों को अत्यन्त शान्ति और सन्तोष प्राप्त हुआ। साथ ही उन्हें बड़ी प्रेरणा मिली। वे ईश्वर की मर्जी की प्रबलता समझकर शान्त हो गए। परमात्मा ही जीवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

देनेवाला है और वही लेनेवाला है। उस पर किसी का वश नहीं है—इस तथ्य से उन्हें अत्यधिक सन्तोष हुआ। परिणाम यह हुआ कि सारे बनजारों ने गुरु महाराज का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। उनकी सन्तानें आज तक गुरु महाराज में अपूर्व निष्ठा और श्रद्धा रखती हैं।

गुरु महाराज ने अपनी मिशनरी यात्रा जारी रक्खी। वे और दक्षिण की ओर बढ़ते गए और सभी महत्त्वपूर्ण स्थानों में गए। जहाँ कहीं भी उन्होंने अत्याचारी, क्रूर और गुमराह धार्मिकों के सम्बन्ध में सुना, जो ईश्वर के नाम पर अत्याचार कर रहे थे, रूढ़ियों और अन्ध परम्पराओं का प्रचार कर जनता का शोषण कर रहे थे, उनके पास गुरु महाराज ने जाना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझा। उन्होंने लोगों के मुँह से आसपास के एक नरभक्षी जाति के अत्याचारों की करुण गाथा सुनी। उस जाति के लोगों का सरदार कौदा था। आसपास के लोग उन नरभक्षियों के आक्रमणों से अत्यधिक आतंकित और संत्रस्त थे। लोगों की इस विपत्ति से गुरु महाराज का कोमल हृदय द्रवीभूत हो गया। उनके दोनों नए शिष्यों ने गुरु महाराज के इस दुस्साहस के लिए मना किया। गुरु जी ने कहा, 'दोस्तो, मुझे वहाँ जाने से मना क्यों कर रहे हो? उस जाति में ऐसी अनेक प्यासी आत्माएँ हैं, जिन्हें अमृत की आवश्यकता है। क्या मैं उनकी आवश्यकता की पूर्ति किए बिना, यहाँ से ऐसे ही गुजर जाऊँ? मैं उनके पास अवश्य जाऊँगा, क्योंकि उन्हें मेरी नितान्त आवश्यकता है।' इस पर उन दोनों ने कहा, 'महाराज, वे आपको मारकर खा जाएँगे।' गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'यदि मुझे मारकर खा जाएँगे, तो इससे उनकी शारीरिक भूख शान्त हो जाएगी। हालाँकि, मेरी यह प्रबल आकांक्षा है कि मैं उनकी आत्मिक क्षुधा की निवृत्ति करूँ। तुम लोग डरो नहीं। परमात्मा अत्यन्त महान् है, साथ ही परम कृपालु और रक्षक है। मुझे तो उनके प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना ही है।'

अतएव गुरु महाराज परमात्मा के आदेशानुसार अपने दोनों शिष्यों को लेकर कौदा के निवासस्थान की ओर चल पड़े। शीघ्र वे उसके स्थान पर पहुँच गए। तीन-तीन हृष्टपुष्ट व्यक्तियों को अपनी ओर आते देखकर कौदा के हर्ष की सीमा न रही। कौदा नरमांस खाने की अभिलाषा से अपने ओठ चाटने लगा और साथ ही अपनी योजनाएँ बनाने लगा। दहकती हुई आग पर एक तेल से भरा कड़ाहा रख दिया गया और उन तीनों शिकारों की प्रतीक्षा की जाने लगी। गुरु नानक महाराज अपने दोनों शिष्यों को लिये वहाँ पहुँच गए। कौदा तीनों व्यक्तियों को कसकर बाँध देना चाहता था, परन्तु अब उसे उसकी आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। उन तीनों व्यक्तियों की मुद्रा से भागने का कोई भी चिह्न दिखाई नहीं पड़ता था। उसने कड़ाहे के तेल का स्पर्श किया। आग की सारी उष्णता समाप्त हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

गयी थी। तेल तो आग पर रखने के पहले से भी अधिक ठंडा प्रतीत हुआ। उसने तेल खौलाने की लाख चेष्टा की, पर अपने संकल्प में असफल हो गया। अन्त में निराश होकर, उसने उन तीन व्यक्तियों में से एक को जिन्दा ही आग में भूनना चाहा। गुरु नानकदेव को अपने सबसे अधिक निकट देखकर उन्हें अपनी भुजाओं में कसकर पकड़ लिया। गुरु महाराज पकड़े जाने पर मुस्कराए और उन्होंने 'सत्त कर्तार' का उच्चारण किया। कौदा हैरान था, क्योंकि उसने जीवन भर में आज तक किसी भी व्यक्ति को मृत्यु से इस प्रकार हँसी करते नहीं देखा था। उसने दहकती आग में गुरु जी को फेंक दिया। पर बड़े आश्चर्य की बात यह हुई कि आग गुरु नानकदेव को जला न सकी। गुरु महाराज आग में खड़े, कौदा की ओर देखकर मुस्करा रहे थे। कौदा गुरु जी की मुस्कान का रहस्य नहीं समझ पा रहा था। इसके बाद उसके समस्त शरीर में हल्की सी कँपकँपी दौड़ गई। गुरु महाराज जलती हुई आग से बाहर निकल आए। कौदा किंकर्तव्य-विमूढ़-सा खड़ा रहा। उसने गुरु जी को दुबारा आग में डालने का प्रयास नहीं किया। उसके मस्तिष्क की समस्त चेतना शक्ति पंगु हो गई। वह जड़वत्, मूर्तिवत् जिस स्थिति में था, उसी स्थिति में ज्यों का त्यों खड़ा रहा। वह परम आश्चर्य से गुरु महाराज की ओर निहार रहा था। उसने देखा कि गुरु महाराज के चेहरे पर दिव्य मुस्कान थी। ऐसी मुस्कान उसने जीवनपर्यन्त नहीं देखी थी। उस महिमामय पुरुष के नेत्र बन्द थे, और मुँह ऊपर की ओर उठा था। गुरु जी की इस मुद्रा में उसे शान्ति और आनन्द की साकार प्रतिमा दिखलाई पड़ी। तद-नन्तर गुरु जी महाराज ने एक पद का गान अत्यन्त मीठी और गम्भीर ध्वनि में किया। इस गान की मधुरिमा से कौदा के हृदय का भारी और असह्य भार उतरना प्रारम्भ हो गया। उसकी आत्मा पर आच्छादित घने, काले और भयंकर बादलों के पर्त हटते दिखलाई पड़े और उन छँटे हुए बादलों के बीच से आनन्द-दायिनी आध्यात्मिक किरणों का प्रकाश पड़ने लगा। उसके हृदय की पहले की कोई प्रसुप्त वस्तु जगने लगी। उसे अपने अन्तःकरण में आध्यात्मिक प्रकाश का ज्योतिपुञ्ज दिखलाई पड़ा। उस प्रकाशपुञ्ज में उसका सारा अज्ञानान्धकार नष्ट हो गया। कौदा को अपनी खोई हुई आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति हुई और गुरु महाराज जी को अपना खोया हुआ और गुमराह शिष्य मिल गया। कौदा गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़ा। गुरु जी के चरणों के स्पर्श से उसके शरीर के सारे कल्मष जाते रहे और उसकी आत्मा नवीन आध्यात्मिक ज्योति से जगमगा उठी। गुरु महाराज ने कौदा से कहा, 'अपनी जाति-बिरादरियों में इसी ज्ञान-ज्योति को प्रकाशित करना तुम्हारा पुनीत धर्म है।' इस प्रकार वह नर-भक्षक से नर-शिक्षक के रूप में परिणत हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके बाद दक्षिण में प्रमुख नगरों की यात्रा करते हुए, गुरु महाराज कोमरीन अन्तरीप पहुँचे। वहाँ से उन्होंने लंका की समुद्री यात्रा की। लंका के राजा, शिवनाभ ने किसी व्यापारी के मुख से गुरु महाराज की महिमा सुन रक्खी थी। परिणामस्वरूप राजा मन ही मन अपने को गुरु महाराज का शिष्य मान चुके थे। व्यापारी, मनसुख द्वारा गुरु महाराज के परमात्मा विषयक पदों के गाने से शिवनाभ के हृदम को बड़ी शान्ति प्राप्त हुई थी। वह गुरु जी के दर्शन के लिए परम उत्सुक हो गये थे। वे मनसुख के साथ गुरु महाराज का दर्शन करने पंजाब जाना चाहते थे, किन्तु मनसुख ने यात्रा स्थगित कर दी और राजा शिवनाभ से इस प्रकार कहा, 'गुरु महाराज अपने अनन्य शिष्यों के प्रगाढ़ प्रेम से आर्कपित होकर दूर-दूर प्रदेशों की यात्रा करते रहते हैं। अतएव आपकी भक्ति में गम्भीरता, स्थिरता और दृढ़ता की भावना होनी चाहिए। मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपकी इस प्रगाढ़ भक्ति से खिचकर, वे आपके पास अवश्य आवेंगे। यह इतना ही ध्रुव निश्चय है, जिस प्रकार सूर्य पूर्व में उदय होते हैं। गुरु महाराज की यह इच्छा तनिक भी नहीं रहती कि लोग धार्मिक भावुकता के वशीभूत होकर अपने कर्मों का परित्याग करें। शुभ कर्मों के सम्पादन को वे परमात्मा की उपासना समझते हैं। उनकी यह प्रवल इच्छा होगी कि आप अपने राजधर्म को प्रेम भाव और सेवावृत्ति से पालन करें। इसके अतिरिक्त यह भी निश्चय नहीं कि वे किस समय कहाँ रहते हैं ? कौन जान सकता है कि किस समय, किस प्रदेश में रहेंगे ? जहाँ कहीं मानवता को संत्रस्त और आतंकित देखते हैं, परमात्मा के आदेशानुसार वहीं चल पड़ते हैं। अतः मेरा यही कथन है कि आप उनसे आन्तरिक प्रेम और भक्ति करें, साथ ही धैर्य से प्रतीक्षा करें, वे आपके पास निस्सन्देह आएँगे। आपके प्रगाढ़ प्रेम की शक्ति उन्हें आपके पास खींच लावेगी।'

मनसुख की बात सुनकर, राजा शिवनाभ वैसा ही आचरण करने लगे। उनके प्रेम और भक्ति की उत्कटता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। साथ ही उनका विश्वास भी बढ़ता गया और वे गुरु महाराज के आगमन की प्रतीक्षा आतुरता से करने लगे। राजा शिवनाभ के सम्बन्ध में गुरु के प्रति अपार भक्ति की बात सुनकर, अनेक पाखण्डी और धूर्त व्यक्ति गुरु नानक बनकर उनके पास गए। किन्तु वे सभी प्रपंची और धूर्त, राजा शिवनाभ की जिज्ञासा-निवृत्ति न कर सके। अतः उनकी आशा निराशा में परिणत होने लगी। पाखण्डियों ने उन्हें सतर्क और जागरूक बना दिया। परिणाम यह हुआ कि राजा शिवनाभ ने राजाज्ञा जारी कर दी कि जो भी व्यक्ति अपने को गुरु नानकदेव बताएगा, उसे अनेक परीक्षाएँ देनी पड़ेंगी। ऐसे व्यक्तियों को अत्यन्त स्वादिष्ट और पौष्टिक खाने-पीने की वस्तुएँ दी जाती थीं। अत्यन्त सुन्दर रमणियाँ उनकी परिचर्या के निमित्त भेजी जाती थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे अपने हाव-भाव, सेवा-परिचर्या से उन्हें वशीभूत कर लेती थीं। कोई भी पाखण्डी इन प्रलोभनों से बच नहीं पाता था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे शिवनाभ की निराशा बढ़ती गई।

ऐसे संशय, विपर्यय और निराशा के समय में गुरु नानकदेव वहाँ पहुँचे और राजा के एक बगीचे में उन्होंने अपना डेरा जमाया। उनके अनोखे व्यक्तित्व और दिव्य संगीत से प्रभावित होकर बहुत भारी संख्या में लोग उनके पास आने लगे। शिवनाभ ने भी यह बात सुनी कि एक विचित्र वेशभूषा धारी साधु अपने दो शिष्यों के साथ बगीचे में ठहरे हैं और सारा शहर उनके दिव्य संगीत को सुनने के लिए उमड़ पड़ा है। किन्तु वे कई बार धोखा खा चुके थे। अतः न वे स्वयं गुरु महाराज के पास गए और न उन साधु को गुरु नानक समझने का विश्वास ही किया। उन्होंने गुरु महाराज की परीक्षा लेनी आवश्यक समझी। दिन के अन्त में अत्यन्त सुन्दर रमणियाँ गुरु महाराज के पास भेजी गईं। उन सभी लोगों को स्थान छोड़ने की तुरन्त आज्ञा दी गई, जो उनके पास बैठे थे। किसी व्यक्ति को प्रविष्ट होने के लिए आज्ञा नहीं दी गई। गुरु महाराज और उनके साथी उन अपवित्र सुन्दरियों का सामना करने के लिए अकेले छोड़ दिए गए। उन मोहनियों ने अपने-अपने नृत्य-संगीत तथा हाव-भाव दिखलाने प्रारम्भ कर दिए। गुरु महाराज ने उनकी ओर दृढ़ स्नेहपूर्ण दृष्टि से उसी प्रकार देखा, जिस प्रकार पिता अपनी चंचल और अस्थिर सन्तान को देखता है। उन्हें आज्ञा दी, 'बैठ जाओ और सर्वशक्तिमान् परमात्मा का स्मरण करो।' गुरु महाराज के महिमामंडित मुखमण्डल को देखकर, जो मोहिनियाँ उन्हें जीतने चली थीं, वे स्वयं जीत ली गईं। गुरु नानकदेव की पैनी और गम्भीर चितवन ने उनके कलुषित हृदयों में प्रविष्ट होकर, उनकी समस्त दूषित विचारधाराओं और भावनाओं को प्रक्षालित कर दिया। वे गुरु महाराज के चरणों पर गिर पड़ीं। उन्होंने अपने अन्तःकरण में अलौकिक आध्यात्मिक प्रेरणा की अनुभूति की। वे बिलकुल परिवर्तित रूप में राजा शिवनाभ के पास लौटीं।

शिवनाभ उन मोहनियों के मुखमण्डल की दिव्य प्रभा और अपार आनन्द को देखकर पूर्ण सन्तुष्ट हो गए कि गुरु नानक महाराज महती अनुकम्पा करके मेरे पास पधारे हैं। उन्हें अब और किसी परीक्षा की आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। 'आखिरकार, वे आ ही गए।' ऐसा कहकर वे आनन्दविभोर होकर नाचने लगे। वे अपनी रानी और पुत्र को लेकर बगीचे में गए। वे सुन्दरियाँ सचमुच ही सही थीं। गुरु महाराज के मुखमण्डल की अलौकिक प्रभा, शान्ति और आनन्द ने शिवनाभ के संशय, विपर्यय और निराशा को तत्क्षण दूर कर दिया। उनके दर्शन मात्र से शिवनाभ के अन्तःकरण में अपार प्रेरणा, स्फूर्ति, आशा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धा, प्रेम और भक्ति का संचार हुआ। उनके चिरअभिलषित दैवी अतिथि ने अपने दिव्य दर्शन से उन्हें कृतकृत्य कर दिया। राजा शिवनाभ ने गुरु के चरण-कमलों में साष्टांग प्रणाम किया। उनकी अन्तरात्मा में नवीन और आनन्द का संचार हुआ। उनके हृदय की सारी भाग-दौड़, सारी चंचलता और व्याकुलता सदैव के लिए शान्त हो गई। उनकी उत्कट प्रतीक्षा और दृढ़ विश्वास धन्य हो गए। 'न मालूम कितने जंगलों, पहाड़ों, नदियों, मैदानों को पार करके, समुद्र की यात्रा करके उनके गुरु, उनके स्वामी उन्हें अपनाने को उनके पास आए हैं।' इस विचार से राजा शिवनाभ ने गुरु महाराज के चरणों को बड़ी दृढ़ता से पकड़ लिया और आनन्द की अश्रुवर्षा से उन्हें अभिषिक्त कर दिया।

रानी और राजकुमार ने भी गुरु के चरणों में झुककर प्रणाम किया और उनका अमोघ आशीर्वाद प्राप्त किया। गुरु के आदेशानुसार तीनों ही उठकर खड़े हो गए, बहुत देर तक वे तीनों चुपचाप बैठे रहे और गुरु महाराज के दर्शन से अपनी आँखों, हृदय तथा आत्मा को तृप्त करते रहे। रक्त की प्रत्येक शिराओं में वे उस आनन्द को भरते रहे और अनिर्वचनीय शान्ति प्रत्येक श्वास में अनुभव करते रहे। अन्त में राजा शिवनाभ ने अपनी आनन्ददायिनी शान्ति को तोड़ते हुए कहा, 'अपने अयोग्य किन्तु भाग्यशाली दासों और दासियों पर आपने बड़ी दूर से आकर कृपा की है। क्या आप थोड़ी दूर तक और चलने की कृपा करेंगे? क्या आप नगर में प्रविष्ट होकर इस प्रसन्न दास को अपनी उपस्थिति से कृतार्थ करने की अनुकम्पा करेंगे?'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'मेरे दोस्त, मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा। इस स्थान पर हम लोग बहुत अच्छी तरह से हैं।' किन्तु राजा अपने आग्रह पर डटे रहे। इस पर गुरु महाराज जी ने मुस्कराकर कहा, 'अच्छा, मैं चलूंगा, पर पैदल नहीं।'

'अरे गुरु महाराज, आपको पैदल चलने की क्या आवश्यकता है? हाथी अथवा घोड़ा, अथवा जिस सवारी पर भी चढ़ना आप पसन्द करेंगे, वह आप की सेवा में भेज दी जाएगी।'

गुरु महाराज ने मुस्कराकर कहा, 'किन्तु मैं राजा की पीठ पर सवारी करूंगा।'

राजा शिवनाभ ने उत्तर दिया, 'इससे बढ़कर मेरी प्रसन्नता की और वस्तु क्या हो सकती है? अच्छा, आप आएँ और मेरी पीठ पर सवार हों। मैं आपको अपनी पीठ पर लेकर नगर से होकर गुजरूंगा, ताकि नगर के सारे लोग मेरी अपार प्रसन्नता जान सकें।

ऐसा कहकर राजा शिवनाभ तैयार होकर बैठ गए और गुरु महाराज को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

पीठ पर बैठने को कहा। गुरु नानकदेव राजा की अनन्य भक्ति और श्रद्धा को देखकर अत्यधिक आह्लादित हुए। उन्होंने राजा को आज्ञा दी, 'जाइए और अपने राजमहल के समीप एक धर्मशाला का निर्माण कराइए। मैं आपके राजमहल में नहीं जाऊँगा। धर्मशाला तैयार हो जाने पर उसी में जाऊँगा।'

शीघ्रातिशीघ्र धर्मशाला निर्मित करा दी गई। गुरु महाराज ने वहाँ पहुँच कर अपना आसन जमाया। लोग गुरु महाराज के परमात्म-विषयक संगीत सुनने के लिए भारी संख्या में एकत्र होने लगे। उनके संगीत में आनन्द, शान्ति वैराग्य, ईश्वर-भक्ति, सेवा आदि भावों की वर्षा होती थी। नगर के भीतर और बाहर के लोग आ-आकर गुरु महाराज के चरणों में गिरकर, उनसे उपदेश लेकर उनके धर्म में दीक्षित होन लगे। शिवनाभ उन लोगों में सबसे अधिक श्रद्धालु भक्त थे। अतः उस देश में गुरु महाराज ने उन्हें अपने सिद्धान्तों का प्रचारक नियुक्त किया।

कुछ दिनों के बाद गुरु महाराज ने राजा शिवनाभ से विदा लेकर सारे लंका की यात्रा की। सभी स्थानों पर उनका भव्य स्वागत हुआ। लोगों ने उनके धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तों को बड़े उत्साह और चाव से सुना। गुरु महाराज द्वारा यात्रा किए हुए सारे स्थानों के लोगों ने उनके धर्म को स्वीकार किया और उनके द्वारा गाए गए गीतों का गान किया।

कहा जाता है कि राज शिवनाभ के साथ ठहरने में गुरु महाराज ने 'प्राण संगली' नामक आध्यात्मिक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ में परमात्मा के शान्त भवन का वर्णन है। साथ ही परमात्मा के ध्यान की पद्धति भी बतलाई गई है। आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का भी प्रतिपादन किया गया है। किन्तु प्रक्षिप्त अंशों के जुड़ जाने अथवा अधूरी होने के कारण इसका संकलन 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में नहीं किया गया। इसका संकलन भाई बन्नो की प्रति में मिलता है। इसका ऐतिहासिक महत्त्व है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय सत्ताईस

दक्षिण से वापसी

लंका का भ्रमण कर और वहाँ अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर गुरु महाराज वहाँ से वापस हुए। उन्होंने रामेश्वरम्, नागापटन, तंजोर, वेगमपुरा आदि स्थानों की भी यात्राएँ कीं। उन्होंने सभी प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा की। प्रत्येक स्थान पर लोगों की अपार भीड़ उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ी थी। सभी लोगों ने गुरु महाराज के महिमामय स्वरूप का दर्शन किया और उनके पदों को सुना। परिणामस्वरूप लोग अपने मन, हृदय और आत्मा से परिवर्तित हो गए। योगियों, पीरों और पंडितों के पीछे दौड़कर उन्होंने आत्मसाक्षात्कार करना चाहा था, पर सब व्यर्थ सिद्ध हुआ। गुरु महाराज के उपदेश से जगत् के प्रपंचों और अपवित्रताओं के बीच शुद्ध और निर्लिप्त भाव से जीवन व्यतीत करना सीखा। प्रत्येक स्थान पर उन्होंने धर्मशाला की संस्थापना कराई। किसी अनन्य और परमात्म-परायण शिष्य को वहाँ का प्रमुख धर्म-प्रचारक नियुक्त किया। उनमें से अनेक धर्मशालाएँ अब भी स्थित हैं।

बीजापुर से लगभग सौ मील की दूरी पर एक गहन वन था, जिसका नाम था 'कजलीवन'। लोगों से गुरु महाराज ने सुना कि कजलीवन में योगियों का एक बहुत प्रसिद्ध पीठ है। उस पीठ के योगियों का आस-पास की जनता पर बहुत प्रभाव था। वे अपनी उग्र तपस्या एवं सिद्धियों के बल पर लोगों को आतंकित किए थे और बलात् अपनी पूजा कराते थे। उनके क्रोध से भयभीत होकर, अथवा सांसारिक ऐश्वर्य पाने की अभिलाषा से आस-पास के लोग उनके मठ में नाना प्रकार की बड़ी-बड़ी भेंटें चढ़ाया करते थे। यदि लोग उन योगियों की आवश्यकता-पूर्ति में असफल होते थे, तो वे बलपूर्वक उनसे अपनी माँगें पूरी कराते थे। अतएव योगीगण समाज के ऊपर भार-स्वरूप बने थे, क्योंकि वे दूसरों की कमाई पर बलपूर्वक अपना जीवन बिताते थे और स्वयं अकर्मण्य हो गए थे।

गुरु महाराज की प्रबल इच्छा हुई कि ऐसे कपटी और छली धार्मिकों के भयंकर पाश से लोगों का उद्धार किया जाय। साथ ही उन गुमराह और दूसरों को गुमराह बनानेवाले योगियों को आत्महनन करनेवाली तपस्याओं से मुक्त कराके उन्हें सही रास्ते पर लगाया जाय। अतएव उन्होंने योगियों के निवास-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

स्थान की ओर अपने चरण बढ़ाए। वहाँ पहुँच कर गुरु महाराज मुख्य फाटक से कुछ दूरी पर बैठ गए। प्रकृति की गोद में यह अत्यन्त रमणीक और एकान्त स्थान था। वहाँ प्रकृति की रमणीयता देखकर गुरु महाराज परमात्मा के ध्यान में रम गए। वे घण्टों शान्ति और आनन्द के भाव में निमग्न रहे। सूर्योदय होने पर आस-पास के लोग उपहार और भेंट लेकर योगियों के मठ में जाने लगे। ज्योंही वे गुरु महाराज के समीप से गुजरने लगे, त्योंही गुरु जी और उनके शिष्यों को देखकर, उनके मन में उनके पास बैठने की बड़ी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हुई। उनमें से कुछ लोगों ने इस रहस्यमयी, नवीन प्रेरणा को ईश्वरीय प्रेरणा समझकर गुरु महाराज के पास बैठ गए और उनके दिव्य दर्शन से अपनी आँखें तृप्त करने लगे। गुरु महाराज के पास बैठने पर, उन्हें इतनी शान्ति और आनन्द की अनुभूति हुई कि वे लोग योगियों के पास जाना एकदम भूल गए। योगियों के पास से लौटते हुए लोगों में से भी कुछ लोग आकर उनके पास बैठ गए।

शीघ्र ही आश्रम के योगियों को यह बात विदित हो गई कि एक रहस्यमय, विचित्र वेशभूषाधारी व्यक्ति ने विना एक भी शब्द बोले उनके शिष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया और वे मंत्रमुग्ध-से बैठे उसकी अलौकिक छवि निहार रहे हैं। योगियों के प्रमुख, भरथरी नामक योगी, उत्सुकतावश गुरु महाराज को देखने आश्रम से बाहर निकल आए। किन्तु गुरु महाराज के ऊपर एक दृष्टि डालते ही भरथरीजी को अनुभव हुआ कि यह अजनबी साधु अजनबी नहीं है, बल्कि यह वह महान् व्यक्ति है, जिसकी वे लम्बी अवधि से प्रतीक्षा कर रहे हैं। एक बार अपनी ध्यानावस्था में महान् योगी, भरथरी को संसार में गुरु नानकदेव के अवतीर्ण होने का पता लगा था। गुरु महाराज ने भरथरीजी को आश्वासन दिया था, 'मैं आपके आश्रम में आऊँगा और आपके सारे संशयों को निवृत्त करूँगा।'

भरथरी योगी ने गुरु नानकदेव के पास पहुँचकर उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। उन्होंने जिज्ञासा प्रकट की, 'हे महाराज, हे प्रभु, आपका शुभ नाम क्या है, कौन-सा आपका देश है और किस उद्देश्य से आप यहाँ पधारे हैं?' गुरु के एक शिष्य ने उत्तर दिया, 'ये गुरु नानक महाराज हैं, समस्त संसार इनका देश है, सभी को सर्वशक्तिमान् परमात्मा का संदेश देना और मोहाच्छन्न प्राणियों को आध्यात्मिक जीवन में नियोजित करना इनका उद्देश्य है। इसी उद्देश्य से ये विचरण करते रहते हैं। योगी भरथरी की आँखें आनन्द से चमक उठीं। उन्हें अनुभव हुआ कि उनकी ध्यानावस्था की बात गलत नहीं है। कृतज्ञता के आभार से उन्होंने गुरु महाराज के चरणों में प्रणाम करके निवेदन किया, 'सर्वशक्तिमान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए कि मैंने अन्त में आपका दर्शन कर ही लिया। आपके दर्शन के निमित्त मेरी प्रतीक्षा बहुत उत्कट और बहुत लम्बी रही।'

गुरु नानकदेव ने कृपा भरी मुस्कान से योगी भरथरी का स्वागत किया। इसके बाद भरथरीजी ने फिर कहना प्रारम्भ किया, 'मैंने सांसारिक वासनाओं के त्याग के लिए अपने मन और हृदय को पवित्र करने का प्रयास किया। अन्तः-करण की शुद्धि के लिए, मैंने अनेक प्रकार की उग्र और लम्बी तपस्याएँ कीं। मेरे विचार से बिना उग्र तपस्या किए, परमात्मा का साक्षात्कार असम्भव है। किन्तु उग्र तपस्याएँ करने के बावजूद भी मुझे वह शान्ति और आनन्द नहीं प्राप्त हुआ, जो ईश्वर साक्षात्कार के अनन्तर प्राप्त होता है। मुझे यह भी ठीक नहीं भान हो रहा है कि मैं सही मार्ग पर ही चल रहा हूँ। यदि हठयोग का सम्पादन निरर्थक है, तो परमात्म-साक्षात्कार का दूसरा क्या मार्ग है। वह कौन सा पथ है, जिससे आत्मा की प्यास शान्त हो? हम योगी मदिरा का सेवन भी करते हैं, ताकि जगत् और उसके प्रलोभनों को भूल जायँ। इस प्रकार मदिरा का सहारा लेकर शाश्वत सत्य पर अपना विचार केन्द्रीभूत करने की चेष्टा करते हैं। परन्तु यह पद्धति भी प्रभावशाली नहीं जान पड़ती, क्योंकि जब मदिरा के नशे का असर जाता रहता है, तो हम लोग आनन्द से बहुत दूर हो जाते हैं। क्या जगत् के प्रपंचों, वासनाओं और प्रलोभनों से पूर्ण और शाश्वत वैराग्य सम्भव है? जगत् के प्रति पूर्ण और शाश्वत वैराग्य हुए बिना, परमात्मा से प्रेम होना असम्भव है। इस प्रकार मैं अपने को डाँवाडोल स्थिति में पाता हूँ। योगाभ्यास के द्वारा अपनी ध्येय-प्राप्ति में असफल हुआ हूँ। क्या मैं इसका परि-त्याग कर दूँ? इसे छोड़ने के अनन्तर मेरे लिए कौन-सा मार्ग सुगम होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मेरी शंकाओं का निवारण करके मुझे सही पथ दिखावेंगे। क्या आप मेरे ऊपर दया करके मेरा मार्ग निर्दिष्ट करने की अनुकम्पा करेंगे?'

गुरु नानकदेव ने भरथरी की समस्त शंकाओं का दो पदों में समाधान किया। वे दोनों पद गुरु ग्रन्थसाहिब के आसा राग में संग्रहीत हैं। उनका भाव नीचे दिया जा रहा है—

'हे योगी, गुरु के शब्द को मन में बसाना ही मेरी मुद्रा है और मैं क्षमा को कंथा के रूप में बरतता हूँ।' परमात्मा जो कुछ करता है, उसे भला करके मानना ही मेरा सहज योग है और इसी सहज योग के द्वारा अलौकिक निधि प्राप्त करता हूँ ॥१॥

हे बाबा, जो जीव परमात्मा से युक्त है, वह युग-युगान्तरों से योगी है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्योंकि उसका योग, परम-तत्त्व—हरी से हुआ है। ऐसे सहज योगी ने माया से रहित, निरंजन के अमृतवत नाम को प्राप्त कर लिया है। ज्ञान ही उसे शरीर में अमृत रस के आस्वादन की प्रतीति कराता है ॥१॥ रहाउ ॥

'मैं शिवनगरी (आत्मस्वरूप) में आसन लगाकर बैठता हूँ, सारी कल्पनाओं तथा वादविवादों को—झगड़ों को मैंने त्याग दिया है। गुरु का शब्द मेरे लिए शृंगी की शाश्वत ध्वनि है, यह सुहावना और पूर्ण नाद, तात्पर्य यह कि अनाहत नाद अहर्निश होता रहता है ॥२॥

'विचार ही मेरा खप्पर है, ब्रह्मज्ञान की बुद्धि-वृत्ति मेरा डंडा है, परमात्मा को सर्वत्र विद्यमान समझना मेरी विभूति है। हरि की कीर्ति का गान हमारी मर्यादा (प्रथा, रीति, प्रणाली अथवा परम्परा) है तथा माया से अतीत अथवा परे रहना ही गुरमुखों का पंथ है ॥६॥

'नाना वर्णों और अनेक रूपों में, परमात्मा की जो सर्वव्यापिनी ज्योति—सत्ता रम रही है, वही हमारी अधारी है। नानक कहते हैं, हे भरथरी योगी सुनो, वास्तविक योगी वही है, जो परब्रह्म परमात्मा में एकनिष्ठ ध्यान लगाता है।'[1] ॥४॥३॥३७॥

योगी भरथरी के मदिरा-पान सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर गुरु नानकदेव ने मदिरा के आध्यात्मिक रूपक द्वारा बड़े सुन्दर ढंग से दिया। इस पद में सहज साधनों का भी उल्लेख उन्होंने किया है। पद का भाव इस प्रकार है।

'परमात्मा के ज्ञान को गुड़ बनाओ, ध्यान को महुआ और शुभ कर्मों को बबूल की छाल। इन सबको एक में मिला दो। श्रद्धा को भट्टी और प्रेम को पोचा बनाओ (पोचा—भाप ठंडी रखने के लिए अर्क निकालने वाले पात्र के ऊपरी भाग में गीली मिट्टी और गीले कपड़े लपेट देते हैं। उसी को पोचा कहा जाता है।) इस प्रकार अमृत रसवाली मदिरा चुवाओ ॥१॥

'हे बाबा, नामरूपी अमृत रस पीकर मन मतवाला हो जाता है और सहजावस्था के रंग में रंग जाता है। अहर्निश प्रेम की लिव—एकनिष्ठ धारणा—लग गई है और मन ने अनाहत शब्द को ग्रहण कर लिया है ॥१॥ रहाउ ॥

'जिसके ऊपर प्रभु कृपा दृष्टि करता है, उसी को पूर्ण सत्य का प्याला सहज भाव से पिलाता है। जो अमृत रूपी मदिरा का व्यापारी होता है वह तुच्छ सांसारिक मद से क्यों प्रेम करे? ॥२॥

'गुरु की शिक्षा अमृत-वाणी है, उसके पीते ही शिष्य प्रामाणिक हो जाता

---

१. गुर का सबदु....लिव एकं—रागु आसा, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। जो साधक परमात्मा के दरवाजे पर, उसके दर्शन का प्रेमी होता है, वह मुक्ति और वैकुण्ठ क्या करेगा ? ॥३॥

'जो परमात्मा की स्तुति में रत है, वह सदैव वैरागी है। वह जीवन रूपी जुए की बाजी में अपना जन्म नहीं हारता है। नानक कहते हैं कि हे भरथरी, सुनो, नाम रूपी अमृत की धार में योगी मस्त हो जाता है।'[१] ४॥४॥३८॥

गुरु महाराज की बातें सुनकर योगी भरथरी को पूर्ण निश्चय हो गया कि योगियों के हठयोग की अपेक्षा गुरु महाराज द्वारा प्रतिपादित सहज योग सुगम और श्रेयस्कर है। उन्होंने संकल्प कर लिया कि वे गुरु के सहज योग में दीक्षित होंगे। परन्तु उनके अन्य साथी एवं शिष्य गुरु नानकदेव के सिद्धान्तों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। अपनी शिष्यमण्डली की गुरु के प्रति सहज श्रद्धा और आकर्षण देखकर, योगीगण अत्यधिक क्रुद्ध और क्षुब्ध थे। अतः योगीगण एक समुदाय बनाकर गुरु महाराज से तर्क-वितर्क करने आए। पर तर्क-वितर्क और वाद-विवाद में सब-के-सब योगी पराजित हो गए। उन लोगों ने भी गुरु नानकदेव को अपना आध्यात्मिक गुरु मान लिया।

उस स्थान पर और बहुत से लोग गुरु नानक महाराज के सहज धर्म में दीक्षित हुए। गुरु महाराज की यात्रा और उपदेश की स्मृति में उस स्थान पर एक गुरुद्वारे का निर्माण हुआ, जहाँ पर नाम की साधना चलती है और गुरु नानकदेव के पदों का गान अत्यन्त श्रद्धा से किया जाता है।

कजलीवन से रवाना होकर, गुरु महाराज दक्षिण के पश्चिमी भाग से उत्तर दिशा में अग्रसर हुए। मार्ग में उन्होंने नासिक, बम्बई, सूरत, काठियावाड़, जूनागढ़, द्वारिका एवं सोमनाथ आदि स्थानों की यात्राएँ कीं। प्रत्येक स्थान पर वे प्रसिद्ध पीरों, मुल्लाओं, पंडितों-ब्राह्मणों आदि से मिले और उन्हें परमात्म-साक्षात्कार का सच्चा मार्ग दिखलाया। उन लोगों का अपने क्षेत्र में बहुत अधिक प्रभाव था। अतः गुरु नानकदेव के सहज मार्ग में उनके दीक्षित होने पर क्षेत्र के अन्य लोगों ने भी उनका अनुसरण किया।

इसके बाद गुरु महाराज ने सिन्ध और बहावलपुर के क्षेत्र में प्रवेश किया। सतलज नदी पार करके उन्होंने शुजाआबाद की यात्रा की। वहाँ से वे ऊच नगर में प्रविष्ट हुए। ऊच में उन्होंने एक प्रख्यात मुसलमान पीर, अहमद हुसन जलालदीन से धार्मिक शास्त्रार्थ किया। शास्त्रार्थ में पराजित होकर पीर, अहमद हुसेन ने गुरु नानकदेव का मत स्वीकार किया और उन्हें अपना धार्मिक गुरु माना। पीर

---

१. गुड़ करि गिआनु...अंमृत धारे—रागु आसा, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

साहब के समस्त अनुयायियों ने उनका अनुसरण किया। १५१५ ई० में गुरु महाराज अपनी जन्मभूमि पधारे। थोड़े दिन रुकने के बाद, वे अपनी बहिन के पास सुल्तानपुर गए। वहाँ से वे कर्तारपुर गए, जहाँ उन्होंने अपने परिवार को रख छोड़ा था। इस प्रकार वे चार वर्ष के ऊपर अपनी यात्रा पर रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय अट्ठाईस

उत्तर की यात्रा—१

ब्रह्मदास और कमाल

कुछ दिनों तक कर्त्तारपुर में रुकने के पश्चात्, गुरु नानक महाराज विश्व-कल्याण के निमित्त पुनः अपनी मिशनरी यात्रा पर चल पड़े। यह यात्रा लगभग १५१६ ई० से प्रारम्भ हुई। अब की बार उनके चरण उत्तर दिशा में अग्रसर हुए। उनकी वेशभूषा भी बदल गई। सिर और पैर में चमड़े का पहनावा पहना। शरीर पर भेड़ की खाल का चोगा धारण किया और मस्तक पर केशरिया तिलक लगाया। इस बार उन्होंने दो नए शिष्यों को अपने साथ लिया। एक का नाम हस्सू था, जो लोहारी का व्यवसाय करता था और दूसरे का नाम सिहान था, जो रंगरेज का कार्य करता था। मरदाना को कर्त्तारपुर ही छोड़ दिया, ताकि वहाँ के भक्तों को ईश्वर-सम्बन्धी संगीत सुनावें। सदैव की भाँति इस यात्रा में भी गुरु महाराज ने मार्ग में जितने प्रख्यात स्थान मिले और जहाँ-जहाँ उनकी शिक्षा की नितान्त आवश्यकता थी, उन-उन स्थानों का विचरण किया। सभी स्थानों में लोगों को निष्काम कर्मयोग, ईश्वर-भक्ति, प्रेम, सेवाभाव, भ्रातृप्रेम का संदेश दिया। वे दोनों प्रकार के व्यक्तियों के पास गए। एक ओर तो उन धार्मिक नेताओं से मिले, जिनका लोगों पर प्रभाव था। ऐसे नेताओं में पीर, फ़क़ीर, ब्राह्मण, पंडित, योगी, यती, संन्यासी सभी वर्ग थे। ये सब अपने उद्देश्य से विमुख होकर अपनी सिद्धियों और चमत्कारों के बल पर जनता को आतंकित और गुमराह किए थे। साथ ही स्वयं भी विलासमय और आलस्ययुक्त जीवन व्यतीत करते थे। उनसे मिलकर, उनके प्रमाद पर प्रहार करके, उन्हें ईश्वरोन्मुख और जनसेवी बनाया। दूसरी ओर वे ऐसे व्यक्तियों से मिले, जिनका सांसारिक दृष्टि से प्रभुत्व था। इस कोटि में, राजा, जागीरदार, ज़मीन्दार, तालुकेदार, ऊँचे सरकारी कर्मचारी आदि आते हैं। ये लोग शासन को प्रजापालन और प्रजा की सेवा न समझ कर, उसे भोग, विलास, अहंकार, अत्याचार की वस्तु मान बैठे थे। ऐसे व्यक्तियों से मिलकर उन्हें वास्तविक राजधर्म की शिक्षा दी। उन्हें प्रजापालन, सच्ची सेवा, मानवधर्म का वास्तविक रहस्य समझाया, संसार के भोग-विलासों, धन-सम्पत्ति, मान-मर्यादा की नश्वरता और क्षणभंगुरता बता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

कर, उन्हें सच्ची रहनी रहने के लिए अनुप्रेरित किया। और सर्वशक्तिमान् परमात्मा की अनन्य भक्ति प्राप्त करने के लिए उन्हें उद्‌बोधित किया। बड़े लोगों द्वारा गुरु महाराज के आध्यात्मिक सिद्धान्तों को स्वीकार कर लेने पर, सामान्य लोगों का उनका अनुकरण करना स्वाभाविक था। परिणाम यह हुआ कि जिन-जिन स्थानों पर गुरु महाराज पधारे, उन-उन स्थानों पर धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति अपने आप होती गई।

अपने दो शिष्यों को साथ लिए हुए, गुरु नानकदेव उत्तर दिशा में बढ़ने लगे। कुछ समय पश्चात् वे जम्मू होते हुए कश्मीर पहुँचे। अनन्तनाग तथा उसके आसपास के स्थानों की यात्रा करते हुए, गुरु महाराज मार्त्तण्ड के युगल झरने के पास पहुँचे। प्रकृति के जन्मजात उपासक होने के नाते, गुरु महाराज उस स्थान की रमणीयता से अत्यधिक प्रभावित हुए। गुरु महाराज ने अपना आसन मत्तन नामक स्थान पर जमाया। यह स्थान दोनों झरनों की नीची झील के पास है। यह चारों ओर प्रकृति के स्वाभाविक सौन्दर्य में घिरा हुआ है। प्रकृति के नाना रूपों और वर्णों का यहाँ प्राचुर्य है। प्रकृति की गोद में वे परम शान्त भाव से बैठकर, परमात्मा के चिन्तन में पूर्णतया निमग्न हो गए। इस स्वच्छन्द और एकान्त वातावरण में, परमात्मा के सान्निध्य में, उन्होंने जीवन, प्रकाश, ज्ञान, भक्ति, प्रेम और आनन्द का जो अमृतपान किया, उसका रस अन्य लोगों को वितरण करने लगे। वे बेचारे सांसारिक भोगों, विलासों, धन-सम्पत्ति एवं मान-मर्यादा को अब तक सर्वस्व समझ बैठे थे। वे उस स्थान पर लगभग तीन सप्ताह तक ठहरे। जिन चरवाहों ने गुरु जी का दिव्य संगीत सुना, वे अत्यधिक प्रभावित होकर, उनके पास आ गए। उनके जीवन में महान् परिवर्तन हो गया। उन चरवाहों के माध्यम से गुरु महाराज की यश-सुरभि आस-पास व्याप्त हो गई। कश्मीर की घाटियों में अनपढ़ चरवाहों द्वारा गुरु जी के दिव्य पद गूंज उठे। उन चरवाहों के जीवन में अपूर्व उल्लास, आनन्द, शान्ति, सन्तोष, और उत्साह का संचार हुआ। उन सबको नवीन जीवन प्राप्त हुआ।

कुछ समय के पश्चात् गुरु नानकदेव की उपस्थिति का ज्ञान ब्रह्मदास नामक परम विद्वान् ब्राह्मण को हुआ। ब्रह्मदासजी कश्मीर के विद्वान् ब्राह्मणों के अग्रणी माने जाते थे। प्राचीन शास्त्रों से सम्बन्धित ग्रन्थों से लदे हुए दो ऊँट ब्रह्मदास के साथ चलते थे। उन्होंने उन सभी ग्रन्थों का अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्मता से किया था। उन सभी ग्रन्थों पर वे अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण शास्त्रार्थ करके, बड़े-बड़े विद्वानों को पराजित कर देते थे। अपने गले में वे सदैव अपने उपास्य देव की पत्थर की बनी हुई मूर्ति डोरी में बाँध कर लटकाए रहते थे। अनोखी रहनी, विचित्र वेशभूषा तथा राजसी ढंग से चलने के कारण पण्डित ब्रह्मदास अत्यधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आकर्षक तथा प्रभावशाली प्रतीत होते थे। उन्होंने गुरु महाराज की विचित्रता लोगों के मुख से सुनी। यह भी सुना कि 'वे चमड़े का लबादा पहनते हैं और मछली खाते हैं तथा पास के झरने के पास अपना आसन जमाए हैं।' उन्होंने यह भी सुना कि एक गड़रिया उस अजनबी, विचित्र वेशभूषाधारी व्यक्ति के पास हँसी-मज़ाक करने गया था, पर उनके अलौकिक व्यक्तित्व से ऐसा प्रभावित हुआ कि उनके चरणों में गिर कर क्षमायाचना की और अन्त में उनका शिष्य बन गया। उस अजनबी व्यक्ति के उपदेश से उस गड़रिए का सारा जीवन ही परिवर्तित हो गया। उस गड़रिए के कण्ठ में विलक्षण मिठास आ गई और वह अपने सुरीले कण्ठ से अत्यधिक भावपूर्ण गीत गाने लगा। वे गीत भी उसी अजनबी व्यक्ति द्वारा रचे गए हैं। अन्य बहुत से लोगों ने उस व्यक्ति के चरणों का स्पर्श किया है। उसके चरणों के स्पर्श मात्र से उनका जीवन एकदम परिवर्तित हो गया है। उन सबों ने उस व्यक्ति में पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया है और उसे 'गुरु महाराज' कहना प्रारम्भ किया है। इन सब बातों को ब्रह्मदासजी ने बड़े ध्यान से सुना। उनका अन्तःकरण गुरु जी के दर्शन के लिए अत्यधिक उत्सुक हुआ। पर विद्या का अहंकार उनका सबसे बड़ा मार्ग-अवरोधक सिद्ध हुआ। अतः उन्होंने गुरु महाराज के पास जाने का संकल्प त्याग दिया, क्योंकि इससे उनकी प्रतिष्ठा पर बहुत आँच आती।

ब्रह्मदास की इसी अनिश्चित अवस्था में उनके एक मुसलमान मित्र कमाल मिले। कमाल परमात्मा के सच्चे जिज्ञासु थे। उन्होंने जन-शून्य जंगलों, पहाड़ों में उग्र तपस्या की थी। पर उनका अभीष्ट नहीं सिद्ध हो पाया था। परमात्मा की अनुकम्पा उन पर नहीं हो पाई। अतः उनका हृदय सदा की भाँति अतृप्त ही रहा। उनके मन में परमात्मा के साक्षात्कार के लिए भीषण द्वन्द्व छिड़ा था। उनके मित्र, ब्रह्मदास का सारा पाण्डित्य उन्हें सन्तोष न दे सका। अतः उनकी आत्मा परमात्मा की प्राप्ति के लिए छटपटा रही थी।

संयोग से उसी दिन कमाल अपने मित्र, ब्रह्मदास से मिलने गए। ब्रह्मदास ने गुरु के सम्बन्ध में सारी बातें बताईं। कमाल की अन्तरात्मा ने उन्हें आदेश दिया, 'जाकर उस अजनबी का दर्शन करो। कदाचित् उसी व्यक्ति से तुम्हें, उस वस्तु की प्राप्ति हो जाय, जिसकी तलाश तुम लम्बी अवधि से कर रहे हो। जिस अमृत की प्राप्ति के लिए तुम रात-दिन भटक रहे हो, हो न हो, उसकी प्राप्ति उसी अजनबी व्यक्ति द्वारा हो।'

कमाल ने अपनी अन्तरात्मा का आदेश स्वीकार किया। वे तत्क्षण गुरु नानकदेव के पास गए। गुरु जी के दर्शन मात्र से उनके जीवन का कायाकल्प हो गया। जिस वस्तु की उपलब्धि उन्हें अनेक वर्ष की उग्र तपस्या से नहीं हुई थी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

उस वस्तु की उपलब्धि गुरु नानकदेव के दर्शन मात्र से हो गई। श्रद्धा और भक्ति से गद्गद होकर कमाल ने गुरुदेव के चरणों में झुककर प्रणाम किया। प्रणाम करते ही, आनन्द की अद्वितीय लहर उनके सारे शरीर में दौड़ गई। उनकी प्रसुप्त अन्तरात्मा अकस्मात् जाग पड़ी। उन्होंने अपनी अन्तरात्मा में पवित्रता की अखण्ड ज्योति का दर्शन किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि जिस परमात्मा की खोज मैं जंगलों और पहाड़ों के एकान्त में करता था, उसे वहाँ न पा सका, किन्तु गुरु महाराज के दर्शन मात्र से उसकी उपलब्धि अपने ही हृदय में सहज भाव से हो गई। उन्हें अनुभव हुआ कि 'सत्यं, शिवं और सुन्दरम्' परमात्मा राजाधिराज के रूप में उनके हृदय के सिंहासन पर विराजमान हैं, पर अज्ञानता और भ्रम के कारण उसकी तलाश बाहर की जा रही थी। इससे कमाल को जिस आनन्द की अनुभूति हुई, उसकी कल्पना उन्हें स्वप्न में भी नहीं हुई थी। वे मनसा, वाचा और कर्मणा गुरु महाराज के शिष्य बन गए। कमाल गुरु महाराज के पर्यटन के साथी हो गए और तब तक उनके साथ रहे, जब तक गुरु ने उन्हें यह आदेश नहीं दे दिया, 'भाई कमाल तुम यहीं कुर्रम घाटी में रहो और मेरे सिद्धान्तों का सर्वसाधारण में प्रचार करो।'

ब्रह्मदास को जब अपने मित्र, कमाल के परिवर्तन के सम्बन्ध में ज्ञात हुआ, तो वे भी गुरु नानकदेव के पास गए। परन्तु उनकी विद्या का अहंकार भी उनके साथ ही साथ गया। उनके पुस्तकीय ज्ञान के सारे ग्रन्थ भी ऊँटों पर लद कर उनके साथ गए। उन्होंने गुरु नानकदेव से शास्त्रार्थ और तर्क-वितर्क करना चाहा। गुरु जी के पास पहुंच कर ब्रह्मदास ने उन्हें प्रणाम किया और उनके पास बैठ गए। तत्पश्चात् उन्होंने गुरु जी से यह प्रश्न किया, 'महाराज आप चमड़े का लबादा क्यों पहनते हैं और मछली क्यों खाते हैं?'

गुरु नानकदेव ने हँसकर जवाब दिया, 'पंडितजी महाराज, वस्त्र विशेष के पहनने में, या भोजन विशेष के करने में ही पवित्रता नहीं रहती। सच्ची पवित्रता तो मनुष्य के अन्तःकरण में रहती है। यह पवित्रता मनुष्य के चरित्र का संस्कार करती है और साथ ही अन्य मनुष्यों के साथ व्यवहार में उच्चता और समानता लाती है। ऐसे ही भोजन और वस्त्र का परित्याग करना चाहिए, जिनसे शरीर में उत्तेजना और रोग उत्पन्न होते हैं, साथ ही भावनाओं, इच्छाओं और विचारों में कालुष्य आता हो। भोजन और वस्त्र की अनावश्यक औपचारिकता के पालन से मनुष्य के हृदय और शरीर संकुचित एवं संकीर्ण हो जाते हैं। इससे अन्तःकरण में स्थित परमात्मा की अखण्ड ज्योति के ऊपर राख पड़ जाती है। आपने जितने अधिक ग्रन्थों का अध्ययन ज्ञान के निमित्त किया है, उतनी ही आपके हृदय की ग्रन्थि और भी दृढ़ हुई। परमात्मा-विषयक ज्ञान में अभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप अनाड़ी ही हैं। आपने अध्ययन के बोझ से अपनी आत्मा के ऊपर और भी अधिक भार लाद लिया है। अतः सूक्ष्म होने के स्थान पर, उसकी स्थूलता बढ़ी है। सच्चा ज्ञान ही मनुष्य की जीवन-यात्रा में सहायक सिद्ध होता है और उसी से परमात्मा का साक्षात्कार होता है। दृढ़ विश्वास ही सच्चे ज्ञान का मूल है, प्रेम के विविध रूप उसकी शाखाएँ हैं। आपके शुष्क हृदय में विश्वास और प्रेम का अभाव है। अतः आप और परमात्मा में कैसे अभिन्नता और एकता हो सकती है? ईश्वर प्रेमस्वरूप है। जिसके हृदय में विशुद्ध प्रेम विद्यमान है, उसके हृदय में परमात्मा का निवास है। ऐसी स्थिति में जीवात्मा और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं रह जाता।'

गुरु की शिक्षा सुनकर, ब्रह्मदास को अपनी गलती महसूस हुई। फिर भी उनके दार्शनिक मस्तिष्क ने उन्हें कुछ प्रश्न और पूछने को बाध्य किया। अतएव उन्होंने फिर गुरु महाराज से प्रश्न किया, 'सृष्टि का निर्माण किस प्रकार हुआ? सृष्टि के अनारम्भ में कौन-सा तत्त्व विद्यमान था? उस समय सृष्टि निर्माता, परमात्मा कहाँ था?'

गुरु नानक महाराज ने ब्रह्मदास के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया—

'वह कौन-सी बेला थी, कौन समय था, कौन तिथि थी, कौन वार था, कौन-सी ऋतु थी, कौन महीना था, जिस समय सृष्टि-रचना हुई? पंडितों को सृष्टि-रचना के समय का पता नहीं है, क्योंकि यदि वे जानते होते, तो पुराणों में इसका उल्लेख अवश्य करते। काजियों को भी सृष्टि-रचना के वक्त का पता नहीं है, क्योंकि यदि वे जानते होते, तो कुरान में इस बात का अवश्य उल्लेख करते। सृष्टि-रचना की तिथि और वार को योगी भी नहीं जानते। कोई भी सृष्टि-रचना की ऋतु अथवा महीना नहीं जानता। जो कर्त्ता सृष्टि को साजता है, वही इस रहस्य को जान सकता है।'[1]

इसके बाद गुरु महाराज ने अपना कथन जारी रक्खा, 'इतना जानना पर्याप्त है कि समस्त सृष्टि परमात्मा द्वारा रची गई है। वह परमात्मा सृष्टि के कण-कण में विराजमान होते हुए भी, उससे परे है। परमात्मा का स्वरूप जानने के लिए हमें परमात्मा के ही समान हो जाना है। इसके लिए एक ओर हमें सारे प्राणियों को अनन्य प्रेम करना चाहिए और उनकी सेवा करनी चाहिए तथा दूसरी ओर सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापी परमात्मा से अनन्य भक्ति और प्रेम करना चाहिए और अहर्निश उसके चिन्तन में तन्मय रहना चाहिए। इसे तो

---

१. कवणु सु वेला...आपे जाणों सोई...जपु जी, पउड़ी २१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

ब्रह्मदास ने कभी किया नहीं है। अतः वह परमात्मा का स्वरूप और उसकी महिमा किस प्रकार जान सकता है ?'

गुरु महाराज की इन बातों को सुनकर ब्रह्मदास को अपनी कमियों का भान हुआ। वे तत्क्षण श्रद्धा-भाव से गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े। उन्होंने गुरु जी से प्रार्थना की, 'गुरु महाराज, मेरे ऊपर कृपा कीजिए। मुझे ज्ञान का प्रकाश दीजिए।' गुरु महाराज जी ने उनकी इच्छा पूर्ण की। ब्रह्मदास के पाण्डित्य का सारा अहंकार पानी-पानी हो गया। वे गुरु नानकदेव के अनन्य शिष्य बन गए। उन्होंने अपने सारे ग्रन्थ आग के हवाले किए और अपने गले में लटकती पत्थर की मूर्त्ति को निकाल फेंका। गुरु नानकदेव ने उस स्थान को छोड़ते समय, पंडित ब्रह्मदास को वहाँ का धर्मप्रचारक बनाया और उनसे कहा, 'आप इस स्थान पर मेरे सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार कीजिए।' ब्रह्मदास ने गुरु नानक महाराज की आज्ञा शिरोधार्य की और उन्होंने पूर्ण श्रद्धा, भक्ति और उत्साह से गुरु जी के सिद्धान्तों का निष्काम भाव से प्रचार किया। इस प्रकार जिस प्रकाश को गुरु जी ने उनके हृदय में प्रज्वलित किया था, उस प्रकाश को उन्होंने अन्य लोगों में भी प्रज्वलित करने का प्रयास किया। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय उन्तीस

उत्तर की यात्रा—२

मानसरोवर

ब्रह्मदास को धर्मप्रचार का उत्तरदायित्व सौंपकर गुरु नानकदेव ने उस स्थान को छोड़ दिया और कश्मीर की यात्रा की। इस यात्रा में वे लगभग दो सप्ताह तक श्रीनगर में रुके। वहाँ से वे मत्तन होते हुए और उत्तर की ओर बढ़े। अनेक ऊँचे पर्वतों को लाँघते हुए गुरु महाराज कैलाश पर्वत पर पहुँचे। वहाँ से मानसरोवर झील पहुँचे। मानसरोवर झील पर अनेक प्रसिद्ध सिद्धों से उनकी मुलाकात हुई। उनमें से एक प्रसिद्ध सिद्ध-योगी भरथरी दक्षिण के कजलीवन में गुरु महाराज से मिल चुके थे। भरथरी ने गुरु नानकदेव की महत्ता स्वीकार कर ली थी। उस स्थान पर पहुँचने से सिद्धों में खलबली मच गई। सिद्ध लोग उन ठंडे प्रदेशों में प्रमादपूर्ण आलस्यमय जीवन व्यतीत करते थे। वे मदिरा-पान करते थे और आसपास के लोगों को आतंकित कर अपना जीवन व्यतीत करते थे। सिद्धों की सिद्धि और चमत्कारों के आकर्षण और भय से लोग उन्हें अपनी गाढ़ी कमाई भेंट रूप में दे आते थे। इस प्रकार लोगों की गाढ़ी कमाई के बल पर सिद्ध लोग गुलछर्रे उड़ा रहे थे। गुरु नानकदेव को उन सिद्धों ने अपने विलासमय जीवन का सबसे बड़ा अवरोधक समझा।

एक विचार से सिद्धगण और भी हैरान हुए। मानसरोवर तक पहुँचना साधारण व्यक्ति की शक्ति के परे की बात थी। सिद्धों ने तो हठयोग की क्रियाओं के द्वारा असाधारण सहनशक्ति प्राप्त कर ली थी, इससे उनके वहाँ पहुँचने में कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। गुरु महाराज और उनके शिष्यों के शरीर देखने से यह प्रतीत नहीं हो पाता था कि ये लोग किस प्रकार मानसरोवर आए होंगे? बात यह है कि उनके शरीर इस प्रकार तपस्या और सहन-शक्ति के आदी नहीं प्रतीत होते थे। तो फिर वे इतनी ऊँचाई पार करके, मार्ग की भयंकर कठिनाइयाँ सहन कर किस प्रकार मानसरोवर तक पहुँचे?

अतएव इन सिद्धों का गुरु महाराज से प्रथम प्रश्न यही हुआ[1]—'आपको इतनी ऊँचाई पार कराके कौन-सी शक्ति यहाँ लाने में समर्थ हुई है?' गुरु जी ने

---

१. इस वार्ता का संकेत भाई गुरदास की वारों में मिलता है। पउड़ी २८ से ३१ तक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

उत्तर दिया, 'मैंने प्रेम और विनम्रता से सर्वशक्तिमान् परमात्मा की आराधना की। वे ही सारी शक्तियों के स्रोत हैं। उन्हीं की कृपा से मैं इतनी ऊँचाई पार करके आ रहा हूं।'

सिद्धों ने पुनः प्रश्न किया, 'आपका शुभ नाम क्या है, और कौन-सा धर्म है ?'

गुरु जी ने उत्तर दिया, 'मेरा छोटा-सा नाम 'नानक' है। परमात्मा का चिन्तन करके, मैंने अपने अभीष्ट की प्राप्ति की है। मैं अपने को परमात्मा का तुच्छ सेवक समझता हूँ। मैंने अपने को उसके चरणों में समर्पित कर दिया है। परमात्मा और उसके द्वारा निर्मित प्राणियों से प्रेम और उनकी सेवा करना, यही हमारा धर्म है।'

इसके बाद सिद्धों ने जिज्ञासा की 'नीचे की दुनिया का क्या हाल है ?' इस प्रश्न ने गुरु नानकदेव को सिद्धों की रहनी और उनकी अकर्मण्यता पर कटाक्ष करने का अच्छा मौका दे दिया। वे बोले, 'अरे दोस्तो, नीचे की दुनिया का बहुत बुरा हाल है। झूठ और पाप, अत्याचार और दमन, वासना और लालच, लड़ाई और लूटपाट, व्याधि और महामारी का नीचे की दुनिया में बोलबाला है; ये सब सारे संसार को क्षत-विक्षत और तहस-नहस कर रहे हैं। सारे संसार में अंधकार छाया है। आजकल वहाँ सच्चाई और ईमानदारी का पाना असम्भव है। जिस प्रकार अमावस्या की रात्रि में चन्द्रमा को पाना असम्भव है, उसी प्रकार नीचे की दुनिया में सत्य का पाना असम्भव है। भारत में सत्य और न्याय का चन्द्रमा तो एकदम लुप्त हो गया है। मैंने उस सत्य और न्याय को ढूंढ़ निकालने के लिए कमर कसी है। किन्तु मेरी खोज, विफल, सर्वथा विफल प्रतीत हो रही है। आप लोगों ने मुझसे पूछा, 'दुनिया के क्या समाचार हैं ?' क्या आप लोगों ने कभी अपनी अभागिनी मातृभूमि के उद्धार के सम्बन्ध में सोचने का प्रयास किया है ? मैं बताता हूँ कि इस समय हमारी मातृभूमि पाप, बुराई और भयंकर दुःख के पाश में बुरी तरह जकड़ी है और वह व्याकुल होकर करुण-क्रन्दन कर रही है। किन्तु आहत मानवता से जो करुणापूर्ण संगीत सुनाई पड़ रहा है, वह आप लोगों के लिए ऐसा सुमधुर संगीत है, जो आप लोगों को सुलाने के लिए लोरियों का काम दे रहा है। देश में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो इस करुणापूर्ण स्थिति से लोगों को छुटकारा दिला सके। अतएव परिवर्तन किस प्रकार हो सकेगा ? जो लोग मातृभूमि का उद्धार करने में समर्थ थे, वे लोग अपने इस पुनीत कर्त्तव्य से पराङ्मुख हो गए हैं। आप लोगों की भाँति जो हिन्दू समाज के सार हैं, वे अपने को पर्वतों की कन्दराओं में छिपाए हैं। पाप, गुलामी और अन्धकार के इस भीषण युग में आप लोगों को समाज का नेता होना चाहिए था, किन्तु महान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःख और क्षोभ की बात है कि आप लोगों ने उन बेचारे असहाय गरीबों को उनके अभागे भाग्य पर छोड़ दिया है। इस मानसरोवर झील के किनारे फूलों की सुसज्जित शैया पर लेटकर आप लोग मदिरा का पान कर रहे हैं। यहाँ आप लोग देवताओं की भाँति विश्राम कर रहे हैं। फिर भी आप लोग मुझसे पूछ रहे हैं—'दुनिया का क्या समाचार है ?' सच बात तो यह है कि आप लोग जनता का रक्तशोषण कर, आराम की जिन्दगी बिता रहे हैं। अतएव आप लोग शोषित और दुखी जनता के दुःखों में और योग दे रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि आप लोग इस प्रमादपूर्ण और विलासितायुक्त जीवन में कौन-सी भलाई देख रहे हैं ? आप लोग जनता के प्रति, परमात्मा के प्रति एवं स्वयं अपनी आत्मा के प्रति कर्त्तव्यों की अवहेलना कर रहे हैं। सच्चा धर्म हमें शुद्ध कर्म करना सिखाता है, ईश्वर की सच्ची आराधना सिखाता है, यह आपको अपनी मातृभूमि का सच्चा सेवक बनाना सिखाता है। आप लोगों ने सच्चे धर्म का परित्याग कर दिया है, क्योंकि न आप लोग अपने समाज के प्रति जागरूक हैं, न धर्म के प्रति, न अपने प्रति और न देश के प्रति। सच्चा धर्म मानवता की सेवा करना सिखाता है। अपने शरीर, मन, बुद्धि का सही प्रयोग ही वास्तविक धर्म है। आप लोग उस सच्चे धर्म का परित्याग कर, मदिरा के नशे में अलमस्त पड़े हैं। आपको देश-दुनिया की फिक्र नहीं है। अपनी चमड़ी को बचाकर, प्रमादी होकर, एकान्त में पड़े रहना, सच्चे धर्म का आचरण नहीं है। आपको दुनिया का हाल जानने का क्या अधिकार है ? गरीबों के लिए, दुखियों के लिए, शोषितों के लिए आप लोग शव के समान हैं।'

सिद्धों ने गुरु नानक के कथन का उत्तर दिया, 'किन्तु हमारे सम्प्रदाय के सभी लोग हमारी तरह संसार से विरक्त नहीं हुए हैं। हममें से बहुत से सिद्ध, लोगों के घर-घर, दरवाजे-दरवाजे पर जाते हैं। निश्चय ही वे सिद्ध अपने कर्त्तव्यों का पालन करते होंगे और लोगों को मानसिक और आध्यात्मिक शिक्षा देते होंगे।'

गुरु महाराज ने सिद्धों की बात का खण्डन करते हुए कहा, 'मेरे दोस्तो, ऐसी बात नहीं है। आपके भाई-बन्धु योगीगण का भी पतन सामान्य लोगों की भाँति ही हो गया है। उनके ज्ञान और गुण दोनों में बहुत कमी आ गई है। शरीर के अंगों में विभूति का लगाना ही उनके लिए योग रह गया है। सुबह से लेकर शाम तक द्वार-द्वार भीख माँगना ही उनका काम है। उनमें से कोई योगी इस प्रकार नहीं रह गया है, जो शोषित, प्रताड़ित, संत्रस्त गिरी हुई और गुम-राह जनता को सच्चा मार्ग दिखा सके। प्राचीनकाल में जो धार्मिक व्यक्ति लोगों का मार्ग-निर्देशन करते थे, उन्हें सुधारते थे, आजकल वे ही धार्मिक कुमार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पकड़ हुए हैं। उन्होंने धर्म ऐसी महान् वस्तु को मज़ाक और खिलवाड़ बना लिया है। आजकल के धार्मिक व्यक्ति दरवाजे-दरवाजे भीख माँग कर, लोगों को डरा-धमकाकर जबर्दस्ती अपनी माँगों को पूरा कराते फिरते हैं। अपने तथा अपने परिवार की उदरपूर्ति के चक्कर में रात-दिन पड़े रहते हैं। सामान्य जनता की दशा अत्यंत शोचनीय हो गई है। सही-ग़लत, भले-बुरे का विवेक एकदम नष्ट हो गया है। दबाये जाने के कारण, लोग पशु के समान हो गए हैं। दूसरों का अधिकार और स्वत्व छीनने की कोशिश में उनकी सारी शक्ति लगी रहती है। अपने आराम के लिए दूसरों को सताना युग का धर्म हो गया है। सामाजिक बन्धन एकदम ढीले पड़ गए हैं। वैवाहिक सम्बन्ध की आध्यात्मिक उच्चता समाप्त हो गई है। विवाह भोग का प्रतिरूप समझा जाने लगा है। वैवाहिक पवित्रता नष्ट हो चुकी है। सारे देश में पाप और अत्याचार छाए हैं। जिन राजाओं का कर्त्तव्य प्रजा की सुरक्षा के लिए सुन्दर और दृढ़ कानून बनाना है, जिनका कर्त्तव्य प्रजा के जीवन, धन, सम्पत्ति, मान-मर्यादा की रक्षा करना है, वे ही आजकल सबसे बड़े अपराधी बने हैं। इस प्रकार गड़रिया स्वयं अपनी भेड़ों को नष्ट-भ्रष्ट कर रहा है। शासकगण स्वयं अपनी प्रजा के ऊपर जुल्म ढा रहे हैं, स्वयं अपनी प्रजा का भक्षण कर रहे हैं। काज़ी तथा अन्य राज्याधिकारी भ्रष्ट हो गए हैं। वे रिश्वत लेते हैं और प्रजा को उसके अधिकारों से वंचित कर देते हैं। अनेक अत्याचारों और गुलामी से कुचले जाने के कारण, शिक्षा और दीक्षा के अभाव में, लोग लक्ष्य-विहीन और पतित हो गए हैं। उनकी आत्मा का हनन हो गया है। शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से उनका ह्रास हो चुका है। वे अपना आत्मविश्वास और पौरुष खो चुके हैं। अत्याचार से दबाए जाने के कारण सत्य के प्रति उनकी निष्ठा खत्म हो चुकी है। ऐसी दशा में अत्याचारों और बुरे शासन को रोकने के लिए कोई संगठन नहीं है। संसार को रक्षा कैसे की जा सकती है? उसका रक्षक कौन हो सकता है?'

गुरु जी की बातों से सिद्धगण अत्यधिक प्रभावित हुए। सिद्धों ने गुरु महाराज द्वारा की गई भर्त्सना की सार्थकता को अनुभव किया, किन्तु उनमें यह शक्ति नहीं थी कि अपने विलासमय जीवन को, मदिरा-पान को, प्रमाद को त्यागकर विशुद्ध जीवन, त्यागमय जीवन, सेवामय जीवन व्यतीत कर सकें। उन्होंने मन-ही-मन सोचा, 'जिस व्यक्ति को संसार की परिस्थितियों का गहरा ज्ञान है, जिसकी संसार के कल्याण के प्रति इतनी सुन्दर भावना है, जिसमें इतनी आशा, इतना उत्साह और इतनी कर्मठता है, ऐसा व्यक्ति यदि हमारे सम्प्रदाय में दीक्षित कर लिया जाय, तो कितनी अच्छी बात हो जाय। यदि यह हमारे सम्प्र-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाय में नई स्फूर्ति, नई शक्ति और नया प्राण आ जाय।' ऐसा सोचकर उन सिद्धों ने गुरु महाराज को अतुल सम्पत्ति का लोभ देकर वशीभूत करना चाहा। उन्होंने गुरु महाराज से मानसरोवर झील से एक घड़ा पानी भर ले आने को कहा। झील के तट पर जाने से गुरु महाराज को यह ज्ञात हुआ कि मानसरोवर का सारा किनारा बहुमूल्य रत्नों में परिवर्तित हो गया है। किन्तु कामनाविहीन निस्पृह गुरु नानकदेव ने उन रत्नों को मिट्टी समझ कर, उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। सांसारिक प्रलोभनों की दृष्टि से गुरु नानकदेव को अपराजेय समझ कर, उन्होंने गुरु जी को धार्मिक शास्त्रार्थ में पराजित करने का विचार किया। किन्तु शास्त्रार्थ में भी सिद्धों को मुँह की खानी पड़ी। सिद्धों के प्रश्न के उत्तर में गुरु नानकदेव ने अनेक पदों का गान किया। वे पद 'गुरु ग्रंथ साहब' में संग्रहीत हैं। एक पद का भाव इस प्रकार है:—

'योगी विषयों की घाटी से उतर कर सत्संग के सरोवर में स्नान करे। वह न कुछ बके, न बोले, कार्य करते हुए भी, मौन होकर हरि का गुणगान करता रहे। जिस प्रकार जल आकाश-मण्डल में समाया रहता है, उसी प्रकार योगी अफुर ब्रह्म—शून्य मण्डल में समाया रहे। सच्चे नाम रूपी रस को मथ कर महा आनन्द को प्राप्त करे ॥१॥

'ऐ मेरे अन्तःकरण, ऐसे ज्ञान को सुनो कि परमात्मा सभी स्थानों में परिपूर्ण है और सबको धारण कर रहा है ॥१॥ रहाउ ॥

'यदि कोई साधक सत्य परमात्मा को व्रत-नियम करके धारण कर ले, तो उसे काल संताप नहीं दे सकता, सद्गुरु के शब्द द्वारा वह साधक क्रोध को जला दे और दशम द्वार के निवास स्थान में सहज-समाधि लगा कर बैठ जाय। इस प्रकार गुरु रूपी पारस मणि का स्पर्श करके परम पद को प्राप्त करे ॥२॥

'साधक मन की परम शान्ति और आनन्द की प्राप्ति के लिए परम तत्त्व—परमात्मा का मंथन करे; परिपूर्ण सरोवर में अपने को इस प्रकार धोवे कि रंच-मात्र मैल न रहे। वह जिस प्रभु को प्रेम करता है, उसी के समान हो जाय। वह परमात्मा की मर्जी पर अपने को छोड़ दे और यह समझे कि जो कुछ कर्त्तार करता है, वही भला है ॥३॥

'गुरु वर्फ के समान शीतल है, साधक उसकी शीतलता में अपनी त्रिविध अग्नि, अर्थात् दैहिक, दैविक और भौतिक ताप बुझा दे। सेवा की वृत्ति को विभूति बनाकर शरीर पर लगावे। तीनों गुणों को लांघकर अपनी सहजावस्था के घर में आना ही उसका दर्शन हो, परमात्मा की पवित्र कीर्ति का वाणी द्वारा गुणगान करना शृंगी बजाने का नाद हो ॥४॥

'आन्तरिक ज्ञान का होना ही महान् रस का तत्त्व हो तथा गुरु के वचनों पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार करना ही तीर्थस्थान हो। मन के अन्तर्गत मुरारी—परमात्मा का निवास स्थान है, इसको हृदय में धारण करना वास्तविक पूजा है। परमात्मा की शाश्वत और अखण्ड ज्योति के साथ अपनी ज्योति मिला देना वास्तविक योग है ॥५॥

'बुद्धि में एक भाव का होना ही रस में अनुरक्त होना है। वह श्रेष्ठ पुरुष, आन्तरिक साधक तख्त पर बैठने वाले राजा—परमात्मा में समा जाता है। वह स्वामी के आदेशानुसार कर्म करता है। अव्यक्त परमात्मा जो सभी का नाथ है, चर्म-दृष्टि से देखा नहीं जा सकता। उसके दर्शन के लिए दिव्यदृष्टि चाहिए ॥६॥

'जिस प्रकार जल में उत्पन्न होकर कमल जल से निर्लिप्त रहता है, उसी प्रकार संसार रूपी जल में परमात्मा की ज्योति व्याप्त है और वह सर्वत्र परिपूर्ण होते हुए भी निर्लेप है। अतएव यह कैसे कहा जा सकता है कि अमुक व्यक्ति परमात्मा के समीप है और अमुक व्यक्ति उससे दूर है, अमुक व्यक्ति अच्छा है और अमुक व्यक्ति बुरा है? मैं तो उस गुणों के भाण्डार परमात्मा को सर्वत्र विराजमान देखकर उसका गुणगान करता हूँ ॥७॥

'भीतर और बाहर उस परमात्मा को छोड़कर, जो उसे भला लगता है, वही फिर होता है। ऐ भरथरी (योगी), सुनो, नानक विचार की बातें कह रहा है कि प्रभु का निर्मल नाम ही मुझ नानक का आधार है[1] ॥१॥८॥१॥'

गुरु नानकदेव की तर्कपूर्ण और अनुभवयुक्त बातें सुनकर समस्त योगी मौन हो गए, उनका सारा अभिमान ध्वस्त हो गया। उन्होंने गुरु जी के शब्दों की सार्थकता तो अनुभव कर ली, पर उन पर आचरण करने को प्रस्तुत नहीं थे। सिद्धगण अपने विलासमय और प्रमादपूर्ण जीवन का त्याग करने के लिए तैयार नहीं थे। उनमें भरथरी नामक एक योगी ने, जो गुरु नानकदेव से दक्षिण के कजलीवन में मिल चुके थे, उनका शिष्य होना स्वीकार किया। आगे हम देखेंगे कि भरथरी अपने सम्प्रदाय को त्याग कर कर्त्तारपुर में बस गए।

सिद्धों की इस पराजय और बाद में अचल बटाला नामक स्थान की पराजय से सिद्धों का प्रभाव आस-पास की भूमि से बिलकुल क्षीण हो गया। पर्वतीय प्रदेश-वासियों ने सिद्धों द्वारा मुक्ति पा जाने पर, सम्मान और कृतज्ञता में गुरु नानकदेव की भक्ति प्रारम्भ कर दी। गुरु नानकदेव वहाँ बड़े सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से याद किए जाते हैं। जिन लोगों ने उन स्थानों का पर्यटन किया है, उनके कथन से इसकी पुष्टि होती है। मानसरोवर झील के चारों ओर के गुफा-

१. उतरि अवघटि...मेरा आधारु, आसा, असटपदी, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्दिरों में अन्य मूर्तियों के साथ गुरु नानक की मूर्ति भी आस-पास के लोगों द्वारा पूजी जाती है। तिब्बत एवं भारत के तीर्थयात्री इन मूर्तियों को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। मानसरोवर पर चीनियों का अधिकार होने के कारण अब तीर्थ-यात्राएँ समाप्तप्राय हैं।

मानसरोवर से गुरु महाराज पीछे की ओर मुड़कर नेपाल, सिक्किम, भूटान और तिब्बत आदि देशों में प्रविष्ट हुए। तत्पश्चात् वे चीन भी गए। इस यात्रा में वे कम से कम नानकिंग तक अवश्य गए। वहाँ उन्होंने एक धर्मशाला स्थापित करवाई। तब से कुछ चीनियों ने भी उनकी उपासना प्रारम्भ की थी। बाद में कुछ चीनी तीर्थयात्री अमृतसर का स्वर्ण-मन्दिर देखने आए। वे इस मन्दिर को 'वाहिगुरु मन्दिर' कहकर संबोधित करते थे। चीन की यात्रा समाप्त करके गुरु महाराज ने तिब्बत की दुबारा यात्रा की और ल्हासा तक पहुँचे। वहाँ से वे पर्वतों को लांघते हुए कश्मीर पहुँचे और जम्मू होते हुए मैदान में उतरे। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय तीस

बाबर का आक्रमण

पाठकों को स्मरण होगा कि १५०१ ई० में गुरु नानकदेव ने भारत पर मुगलों के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी। उस समय अपनी मातृभूमि को बाबर के हाथ पराजय पर पराजय ही प्राप्त हो रही थी और अपनी पैतृक भूमि पर अधिकार करना उसके लिए बिलकुल अनिश्चित-सा हो रहा था। गुरु महाराज ने अपनी भविष्यवाणी में कहा था, 'इस भूमि में भयंकर रक्तपात, लूटपाट, बलात्कार और बरबादी होगी।' यह भविष्यवाणी सैयदपुर अथवा ऐमनाबाद में की गई थी। संवत् १५७५ विक्रमीय अथवा १५२१ ई० में सैयदपुर बाबर के क्रोध का शिकार हुआ।

उत्तर की यात्रा करके लौटते समय, गुरु महाराज ने अपने ध्यान में हिन्दुस्तान पर बाबर के जिहाद को स्पष्ट रूप से देख लिया था। उन्हें भान हो गया था कि बाबर की शक्तिशाली और मदान्ध सेना तेजी से भारत की ओर आ रही है। उन्हें यह भी प्रतीत हो गया था कि इसका परिणाम क्या होने वाला है? जहाँ उनका अनन्य शिष्य भाई लालो रहता था, उस सैयदपुर पर वज्रपात का ज्ञान गुरु महाराज को पहले से हो गया था। बाबर के आक्रमण से भविष्य में सताए जानेवाले व्यक्तियों के प्रति उनका कोमल हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो गया। उनके अन्तरतम हृदय की राष्ट्रीय भावना उनमें तेजी से उमड़ पड़ी। पर वे अपने देश की रक्षा के निमित्त कर ही क्या सकते थे? उनके पास सेना तो थी नहीं, जिसकी सहायता से वे देश को सर्वनाश से बचा पाते अथवा आक्रमणकारी बाबर को अत्याचार, मारकाट, लूटपाट और बलात्कार करने से रोक सकते। फिर भी देशवासियों के प्रति असीम प्रेम और प्रगाढ़ मैत्री ने उन्हें रुकने नहीं दिया। कदाचित् किसी दूसरे ढंग से गुरु महाराज उस क्रूर आक्रमणकारी का हृदय परिवर्तित कर सकें। किसी भी दशा में वे अपने अभागे और अत्याचार पीड़ित भाइयों के साथ रहकर उनके दुःख में सम्मिलित होना चाहते थे। इसके लिए गुरु जी महाराज अधिक से अधिक मूल्य चुकाने को तैयार थे। इसके लिए वे अपने प्राणों की बाजी लगाने को उद्यत थे। वे उस दुर्भाग्य को तो नहीं टाल सके जो लोगों के सिर पर निकट भविष्य में आने वाला था, पर हाँ, उनके दुख में सम्मिलित होकर, अपनी आँसुओं से, अपनी करुणा से, अपने भ्रातृभाव से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी सहानुभूति और ममता से उनके दुःखों के भार को अवश्य हल्का कर सकते थे। मानवता के असीम प्रेमी होने के कारण उनके दुर्भाग्य का संगी बनने के अतिरिक्त, गुरु महाराज के लिए दूसरा चारा ही क्या था ? आन्तरिक प्रेम की सच्ची कसौटी दुःख ही है। जों व्यक्ति दुखी, प्रताड़ित, पीड़ित एवं शोषितों के दुःख में सम्मिलित होकर उसके साथ आँसू बहाता है, उसे धैर्य देता है, उसमें आशा और उत्साह का संचार करता है, वही सच्चा मानव है, वही सच्चा समाज सुधारक है, वही सच्चा राष्ट्रप्रेमी है, वही ज्ञानी, भक्त और ईश्वरपरायण भी है।

इस बात को ध्यान में रखकर गुरु नानकदेव जम्मू से सियालकोट गए और वहाँ से थोड़े ही समय के बाद सैयदपुर पहुँचे। तब तक बाबर की सेना के आक्रमण का कोई समाचार नहीं मिला था। किन्तु यह आक्रमण शीघ्र ही हुआ। यह बाबर का तीसरा आक्रमण था। उसने १५२०-२१ में भारत की सीमा को पार किया। पहले तो उसने भीरा को तहस-नहस किया, तत्पश्चात् सियाल-कोट की ओर बढ़ा। जिन स्थानों पर बाबर के आक्रमण हुए, वहाँ के निवासियों की अवस्था 'साँप छछूंदर के समान' हो गई। यदि वे अपने को आत्मसर्मापित कर देते, और आक्रमणकारियों को सामान तथा रसद पहुँचाते, तो बाबर के लौट जाने पर, वे लोग दिल्ली के बादशाह के क्रोध का शिकार होते। यदि वे आक्रमणकारियों के प्रति विरोध प्रकट करते, तो वे बाबर के कोपभाजन बनते। बाबर की सेना उनकी हत्या करती, लूटपाट मचाती और भीषण अत्याचार करती, उनके घर जला देती तथा उनकी स्त्रियों को अपने साथ जबर्दस्ती ले जाती। सियालकोट के निवासियों ने तो आत्मसमर्पण कर दिया और अपनी धन-सम्पत्ति की रक्षा की, किन्तु बाबर की कामुक सेना से उनकी स्त्रियाँ न बच सकीं।

१५२१ ई० में बाबर सैयदपुर पहुँचा। सैयदपुर के पठान शासकों ने बाबर के आक्रमण का सामना करने का विचार किया। वहाँ के पीरों और मुल्लाओं ने प्रतिज्ञा की कि वे अपने तंत्र-मंत्र के बल से आक्रमणकारी को भगाने में पूरी सहायता करेंगे। विलासपूर्ण जीवन से पठानों की शक्ति का ह्रास हो चुका था। इसके अतिरिक्त मुगल सैनिकों की बन्दूक के आगे, पठानों के तीर, भाले एवं अपनी ही सेना कुचलने वाले हाथी निकम्मे सिद्ध हो चुके थे। मुग़लों और पठानों की लड़ाई में, पठानों को मुँह की खानी पड़ी। सभी पठान युद्ध में काम आए।

मुगल सैनिकों ने सारे शहर में लूटपाट और रक्तपात मचा दिया। जितने भी पुरुष दिखाई पड़े, सब के सब तलवार के घाट उतार दिए गए। ऊँचे और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीचे खानदान की हिन्दू अथवा मुसलमान सभी स्त्रियों के बाल पकड़ कर धूल-भरी गलियों में घसीटा गया। मार-पीटकर, डरा-धमकाकर उनसे छिपी हुई धनराशि, लाल-रत्नों एवं अन्य बहुमूल्य सामग्री के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गई। विजयोन्माद एवं मदिरा के नशे में चूर सैनिकों ने बाल, वृद्ध एवं स्त्रियों में से किसी को भी नहीं छोड़ा। स्त्रियों एवं बच्चों को कैदी बना लिया गया और जितने लोग मौत से बचे थे, सभी को बन्दी बना लिया गया। उन सबको लूट की सामग्री ढोने को मजबूर किया गया। ऐसा वह जिहाद—पवित्र युद्ध था। आस-पास के सभी गाँवों के स्त्री-पुरुषों के साथ यही व्यवहार किया गया। इस प्रकार चारों ओर तलवार, आगजनी, लूटपाट और बलात्कार का बोलबाला था।

गुरु नानकदेव का सैयदपुर में आगमन सुनकर, भाई मरदाना शीघ्र ही उनसे आकर मिला। इस प्रकार ज्योंही बाबर की सेना सैयदपुर पहुँची, त्योंही भाई मरदाना गुरु नानक के पास आकर मिला, गुरु नानकदेव और मरदाना, दोनों ही बन्दी बना लिए गए। गुरु महाराज को बोझ ढोने का काम दिया गया और मरदाना को मुगलों के एक सेनापति मीर खाँ के घोड़े का सईस बनाया गया।

गुरु महाराज को अपने सिर के बोझ का भार बिलकुल न जान पड़ा, क्योंकि उनके मृदुल और देशभक्ति पूर्ण हृदय पर बड़ा भारी बोझ लदा था। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने देश के स्त्री-पुरुषों की करुण अवस्था को देखा। उन्हें अनुभव हुआ कि उनके हृदय पर भीषण भार लदा है। उन्होंने देखा कि जो स्त्रियाँ किसी बाहरी व्यक्ति को आँखों से देखना भी पाप समझती थीं, वे ही नंगे बदन क्रूर, अत्याचारी, आक्रमणकारियों के साथ दौड़ाई गईं। इन अत्याचारपूर्ण, हृदयविदारक दृश्यों के देखने से उनका हृदय विदीर्ण हो गया। उनका रोम-रोम रो उठा। उन्होंने मरदाना से कहा, 'मरदाना रबाब उठाओ। ईश्वरीय भाव आ गया है। घोड़ा छोड़ दो। यह हम लोगों के पीछे-पीछे चलेगा।' मरदाना ने गुरु के आदेश का पालन किया। रबाब का स्वर झंकृत हो उठा। आसपास के लोग, मरदाना को रबाब बजाते देखकर आश्चर्य में पड़कर सोचने लगे, 'यह विलक्षण पाषाण-हृदय फ़क़ीर है, जो लोगों को ऐसी विपत्ति में देखकर भी रबाब बजा रहा है।' इसके अनन्तर गुरु नानकदेव का स्वर भी गूंज उठा। उन्होंने जिस पद का गान किया, उसका भाव इस प्रकार है—

'जिन स्त्रियों के सिर के माँग में पट्टी थी और उस माँग में शृङ्गार के लिए सिन्दूर डाला गया था, उनके उन सिरों की केशराशि कैंची से मूंड़ दी गई है और धूल उड़कर उनके गले तक पहुँचती है। जो महलों के भीतर निवास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करती थीं, उन्हें अब बाहर सारे लोगों के समीप बैठने का स्थान भी नहीं मिलता ॥१॥

'हे बाबा (परमात्मा), नमस्कार है, तुझे नमस्कार है। हे आदिपुरुष, तेरा अन्त नहीं पाया जा सकता। तू नाना भाँति के वेश धारण कर देखता है ॥१॥ रहाउ ॥

'वे स्त्रियाँ विवाहिता थीं और अपने प्यारे पतियों के पास सुशोभित थीं। वे उन पालकियों में बैठ कर आई थीं, जो हाथी दाँत के टुकड़ों से जड़ी थीं। उन स्त्रियों के ऊपर पानी छिड़का जाता था और हीरे-मोती से जड़े हुए पंखे उनके पास चमकते थे ॥२॥

'एक लाख रुपये तो उनके खड़े होने पर न्यौछावर किए जाते थे और एक लाख रुपये उनके बैठने पर। अर्थात् उन स्त्रियों के ऊपर रुपयों की वर्षा होती थी। उनके बैठने-उठने पर लाख-लाख रुपए न्यौछावर दिए जाते थे। जो स्त्रियाँ गरी-छुहारे खाती थीं और सेजों पर रमण करती थीं, उनके गले में रस्सी पड़ी हुई है और मोती की लड़ियाँ टूट रही हैं ॥३॥

'धन और यौवन दोनों ही उन स्त्रियों के वैरी सिद्ध हुए, क्योंकि उन्होंने अपने रंग में उन स्त्रियों को लगा रक्खा था। जब परमात्मा की आज्ञा हुई, तब यमदूतों—निर्दयी और क्रूर सिपाहियों को हुक्म हुआ और वे उन स्त्रियों की प्रतिष्ठा गँवाकर, उन्हें लेकर चल पड़े। अतएव यदि उसे अर्थात् परमात्मा को अच्छा लगता है, तो वह बड़प्पन देता है और यदि उसे अच्छा नहीं लगता है, तो वह सजा देता है ॥४॥

'यदि पहले से ही सचेत हुए होते और परमात्मा का स्मरण किए होते, तो यह सजा क्यों मिलती? तत्कालीन राज्य करनेवालों ने रंग और तमाशों के चाव में अपने कर्त्तव्य-पालन का स्मरण गँवा दिया, अर्थात् डटकर बाबर का तो मुकाबला न किया और न प्रजा की ही रक्षा की। इसी कारण अब बाबर की दुहाई (आज्ञा) हो गई है, जिसके फलस्वरूप कुमारों को भी रोटियाँ खाने को नहीं मिलती हैं ॥५॥

'एक—मुसलमानों के नमाज का वक्त खो गया है, अर्थात् नष्ट हो चुका है, और एक—हिन्दुओं की पूजा भी जाती रही। बिना चौके के हिन्दू-स्त्रियाँ कैसे स्नान करें, चन्दन लगावें और पूजा करें? जिन व्यक्तियों ने कभी राम नाम नहीं चेता था, वे ही अब मुगलों को प्रसन्न करने के लिए 'खुदा' शब्द कहते हैं, फिर भी जालिम, उन्हें 'खुदा' भी नहीं कहने देते ॥६॥

'जिन स्त्रियों के पति जीवित अपने घर लौट आए हैं, उनकी स्त्रियाँ उनसे मिल-मिलकर कुशल-मंगल का समाचार पूछती हैं। कोई-कोई स्त्रियाँ, जिनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतियों को बाबर के नृशंस सिपाहियों ने मार डाला है, उनके भाग्य में यही लिखा है कि वे बैठ-बैठकर जीवन पर्यन्त अपने दुःखों पर रोती रहें। नानक कहते हैं कि जो कुछ उस परमात्मा को अच्छा लगता है, वही होता है। मनुष्य की क्या सामर्थ्य है ?[1] ७॥११॥'

गुरु जी का करुण, दिंव्य, भक्तिपूर्ण और आत्मोद्बोधक संगीत समीप और दूर की संत्रस्त और दुखी जनता द्वारा सुना गया। उसे सुनकर प्रत्येक व्यक्ति अपना दुःख भूल गया। सभी के विचार परमात्मा की ओर उन्मुख हो गए। संयोगवश मीर खाँ भी उसी मार्ग से गुजरा। मीर खाँ ने देखा कि उसका घोड़ा मरदाना के पीछे-पीछे चल रहा है, जब कि मरदाना रबाब बजाता हुआ चल रहा है। मीर खाँ ने देखा कि गुरु महाराज का मुखमण्डल अलौकिक तेज से प्रकाशित है। उनके सिर पर भारी बोझा लदा है, फिर भी उनके चेहरे पर जरा भी शिकन नहीं है। उनके हृदय से निकला संगीत कैदियों को ऐसी शान्ति और सुख दे रहा है, जैसे ग्रीष्म की उष्णता से व्याकुल प्राणियों को जलवृष्टि आनन्दित और प्रफुल्लित करती है। मीर खाँ ने गाने के अर्थ को तो बिलकुल नहीं समझा, किन्तु उसके अलौकिक प्रभाव को उसने भलीभाँति अनुभव कर लिया। जो व्यक्ति उसका अर्थ समझ रहे थे, वे मंत्रमुग्ध हो गए थे। उसने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया और सोचा, 'यह विलक्षण व्यक्ति कौन है जो इतनी विपन्नावस्था में भी गा सकता है और कैदियों को शान्ति प्रदान कर सकता है ?' ऐसा सोचते हुए वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ गया।

अन्त में सभी कैदी सैनिक-शिविर में पहुँच गए। कैदियों को विजयिनी सेना के लिए अनाज पीसने की आज्ञा दी गई। नानकदेव और मरदाना को भी चक्की पीसने का आदेश प्राप्त हुआ। गुरु महाराज ने अपने चारों ओर निरीक्षण किया, तो उन्हें अनुभव हुआ कि जो व्यक्ति धन-सम्पत्ति, भोग-विलास, मान-मर्यादा के नशे में चूर थे, वे अपनी चमड़ी बचाने के लिए चक्की चला रहे हैं। उनके हाथों में छाले पड़ गए हैं, वे चक्की चलाने में एकदम असमर्थ हैं, फिर भी भय से चक्की चलाए जा रहे हैं। इस दृश्य से उनका हृदय एकदम करुणा से विदीर्ण हो गया। उन्होंने दुःख, करुणा और क्षोभ से ठीक उसी भाँति ठंडी आह ली, जिस प्रकार अपने पुत्र और पुत्रियों को विपत्ति में देखकर उनका पिता ठंडी आहें भरता है। किन्तु तुरन्त ही गुरु नानकदेव की अन्तरात्मा उस कर्तार से युक्त हो गई जो सभी प्रकार के दुःखों और सुखों का निर्माता है। उसकी शान्ति और आनन्ददायिनी गोद में बैठकर वे अपने बन्दीपन तथा अपने निर्धारित कार्य

---

१. जिनि सिरि सोहनि...किआ मानुख, रागु आसा, असटपदी, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भूल गए। उनकी आँखें स्वतः बन्द हो गईं। उस समय के आनन्द, शान्ति और समता की साक्षात प्रतिमा प्रतीत होने लगे। मरदाना उनके बगल बैठ कर रबाब बजा रहा था।

मीर खाँ ने मार्ग में गुरु जी को पद गाते सुना था। कैदियों के ऊपर उसका क्या प्रभाव पड़ा था, इसे भी अनुभव कर चुका था। उसने अपने अनुभव की चर्चा बाबर से की। साथ ही गुरु नानकदेव के अलौकिक व्यक्तित्व की प्रशंसा भी की। बाबर ने अपनी भावना इस प्रकार अभिव्यक्त की—'यदि मुझे यह ज्ञात होता कि इस शहर में इस प्रकार के पहुँचे हुए फकीर रहते हैं, तो मैं इस पर आक्रमण न किए होता।' इसके बाद मीर खाँ को लेकर बाबर बन्दियों के शिविर में पहुँचा। उन लोगों ने गुरु महाराज को ध्यानावस्था में देखा, उनके बगल बैठकर मरदाना रबाब बजा रहा था। बाबर और मीर खाँ खड़े होकर उन दोनों विचित्र कैदियों को टकटकी लगाकर देखने लगे। उन्हें देखकर वे दोनों महान् आश्चर्य में पड़ गए। थोड़ी देर के बाद गुरु नानकदेव ने अपनी आँखें खोलीं और एक पद गाना प्रारम्भ किया। उस पद में परमात्मा की महत्ता और जीवात्मा की तुच्छता का वर्णन था। साथ ही उसमें भगवान् के अनन्त, शाश्वत और सर्वव्यापी प्रेम तथा मनुष्य के हृदय की क्रूरता एवं मिथ्याभिमान का चित्रण था। उस पद के गान ने बाबर के हृदय की प्रसुप्त मानवता और कोमलता को जगा दिया। बाबर ने मीर खाँ से कहा, 'इस पवित्र फकीर के चेहरे पर मुझे खुदा का दर्शन हो रहा है।' भारत के भावी बादशाह ने गुरु नानकदेव के पास पहुँच कर कहा, 'मैंने आपकी इज्जत नहीं की, इसके लिए मैं आपसे माफी चाहता हूँ। आपके लिए मैं क्या करूँ? मुझसे आप कुछ भेंट स्वीकार कीजिए।'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'अपने लिए मुझे किसी प्रकार की भेंट की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यदि आप ईश्वर के तुच्छ सेवक को सचमुच ही भेंट देना चाहते हैं, तो आप इन सारे कैदियों को छोड़ने की कृपा कीजिए। साथ ही उनकी लूटी हुई सम्पत्ति उन्हें वापस कर दीजिए।'

बादशाह ने तुरन्त ही सारे कैदियों को छोड़ने एवं उनकी लूटी हुई सम्पत्ति को वापस करने का आदेश जारी कर दिया। सारे कैदी रिहा कर दिए गए और जहाँ तक सम्भव हो सका, उनकी सम्पत्ति भी वापस कर दी गई। सैनिकों की जो टुकड़ियाँ शहर में जगह-जगह पर तैनात की गई थीं, वे भी वापस बुला ली गईं। रिहा किए हुए और सम्पत्ति वापस पाए हुए कैदियों ने अपने मुक्तिदाता की रिहाई के बिना वहाँ से जाने से इन्कार कर दिया। बाबर ने उन कैदियों की बात मानकर गुरु नानकदेव को भी मुक्त कर दिया। उसने गुरु महाराज से प्रार्थना की, 'खुदा के सच्चे फकीर, पास ही में मेरा शिविर है, वहाँ मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना दर्शन देने की कृपा कीजिए।' गुरु महाराज ने कहा, 'जैसी भगवान् की मर्जी होगी, वैसा होगा।' ऐसा कहकर वे मुक्त कैदियों के साथ बाबर से विदा हुए।

सैयदपुर पहुँचकर गुरु जी ने अत्यन्त हृदय-विदारक दृश्य देखा—सारे शहर में मनुष्यों की असंख्य लाशें बिखरी पड़ी थीं। सारी सड़कें और गलियाँ खून से भरी थीं। इस दृश्य से उनका हृदय द्रवीभूत हो गया। उन्होंने मरदाना को आज्ञा दी, 'मरदाना, रबाब उठाओ। परमात्मा का शब्द मेरे हृदय में आया है।' उन्होंने उस समय जो शोकपूर्ण गीत गाया, उसका भाव इस प्रकार है—

'तुम्हारे वे खेल, अस्तबल और घोड़े कहाँ हैं? तुम्हारे नगाड़े और शहनाइयाँ भी नहीं दिखाई पड़ रही हैं, वे कहाँ हैं? तलवारों की म्यानें तथा रथ कहाँ हैं? वे लाल, आकर्षक और रोबीली वर्दियाँ कहाँ हैं? वे दर्पण और वे सुन्दर मुख कहाँ हैं? यहाँ तो नहीं दिखाई पड़ रहे हैं ॥१॥

'हे हरी, यह जगत् तेरा है, तू ही इसका स्वामी है। एक क्षण में तू इसे स्थापित करता है, और दूसरे क्षण नष्ट कर देता है। तू अपने इच्छानुसार सुवर्ण दौलत भाइयों को बाँट देता है ॥१॥ रहाउ ॥

'तुम्हारे वे घर, दरवाजे, मंडप और महल कहाँ हैं? वे सुन्दर सराएँ कहाँ हैं? जिसे देख कर नींद नहीं पड़ती थी, वे सुखदायिनी सेजें और उन्हें सुशोभित करने वाली कामिनियाँ कहाँ हैं? वे पान देनेवाली तमोलिनें और परदे में रहने वाली स्त्रियाँ कहाँ हैं? वे सब माया की छाया के समान विलीन हो गई हैं ॥२॥

'इस सोने—दौलत के कारण बहुत से लोग नष्ट हो गए। और बहुत से लोग इसी दौलत के कारण कुमार्ग में पड़कर विलीन हो गए। यह धन बिना पाप किए आता नहीं और मरने के साथ भी नहीं जाता। जिसे हरी, स्वयं नष्ट करना चाहता है, उसकी अच्छाइयों को बलात् छीन लेता है ॥३॥

'जब हिन्दुस्तान के निवासियों ने मीर (बाबर) को बढ़कर दौड़ते हुए सुना, तो करोड़ों पीरों ने उसे रोकने के लिए टोने-टोटके किए, किन्तु उन दोनों-टोटकों का कुछ भी परिणाम न निकला और बड़े स्थान तथा निवासस्थान और वज्र के समान सुदृढ़ महल जलकर खाक हो गए; शाहजादे टुकड़े-टुकड़े करके मिट्टी में मिला दिए गए। पीरों के कागज के परचों से, जिन पर टोने-टोटके लिखे गए थे, कोई भी मुगल अन्धा नहीं हुआ, अर्थात् टोने-टोटके से मुगलों का कुछ भी बाल-बाँका नहीं हुआ ॥४॥

'मुगलों और पठानों में भयानक लड़ाई हुई। रण में तलवारें खूब चलाई गईं। मुगलों ने तान-तानकर तुपकें चलाईं और पठानों ने हाथी उत्तेजित करके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे बढ़ाया। जिनकी चिट्ठी परमात्मा के यहाँ से फाड़ दी गई थी, अरे भाई, उनका मरना आवश्यक हो गया (पंजाब में यह प्रथा प्रचलित है कि मौत की खबर की चिट्ठी का सिरा फाड़ दिया जाता है) ॥५॥

'जिन स्त्रियों की दुर्दशा मुगलों ने की, उनमें से कुछ हिन्दुवानियाँ, कुछ तुरकानियाँ, कुछ भाटिनें और कुछ ठकुरानियाँ थीं। उनमें से तुरकानियों के बुरके सिर से पैर तक फाड़ दिए गए और कुछ को, अर्थात् हिन्दुवानियों को श्मशान में निवास मिला, अर्थात् मार डाली गईं। जिन स्त्रियों के सुन्दर पति घर नहीं लौटे, उन बेचारियों ने अपनी रातें किस प्रकार काटीं ? ॥६॥

'कर्त्ता—प्रभु स्वयं ही करता और कराता है। उस कर्त्ता की बातें किससे कह कर सुनाई जायँ ? हे प्रभु, दुःख-सुख सब तेरी ही आज्ञा से होते हैं, अतएव किसके पास जाकर रोया जाय ? वह हुक्म का स्वामी हरी, सभी को अपने हुक्म में चलाता है और स्वयं विकसित होता है। नानक कहते हैं कि जो कुछ उसका लिखा होता है, वही प्राप्त होता है[1] ॥७॥१२॥'

यह खबर शीघ्र ही चारों ओर फैल गई कि गुरु नानक के कहने से बाबर ने सैयदपुर के सारे कैदियों को रिहा कर दिया, उनकी धन-सम्पत्ति उन्हें लौटा दी गई तथा सैनिकों की चौकियाँ, शहर से वापस बुला ली गईं। जो लोग बाबर के आक्रमण के भय से शहर छोड़ कर भाग गए थे, वे अपने घरों को वापस आने लगे। बचे-खुचे लोगों ने एक-दूसरे का स्वागत किया और अपने मरनेवालों का ग़म मनाया। मृतकों की लाशें साफ कर दी गईं और घरों का बसना प्रारंभ हो गया।

गुरु नानक को पता चला कि अभी तक कुछ व्यक्ति बाबर की कैद में हैं। आस-पास के गाँवों के बहुत से लोग रिहा नहीं किए गए थे। कुछ लोग शंका के कारण पकड़े गए थे। बाबर की सेना के कुछ उच्च पदाधिकारियों ने सैयदपुर तथा आस-पास के गाँवों की कुछ सुन्दर स्त्रियों को अपने पास रख लिया था। सुन्दर स्त्रियों का अपहरण करना भी उस जिहाद—पवित्र युद्ध, का एक प्रकार का पुरस्कार था। गुरु महाराज के कोमल हृदय को कैसे शान्ति और सन्तोष मिल सकता था, जबकि उनके बहुत से भाई और बहिनें मरण से भी बुरी दशा में थे ? वे लोग गुलामी, बेइज्जती और दुःख का जीवन व्यतीत कर रहे थे। अतः वे बाबर के शिविर की ओर अकेले ही अग्रसर हुए।

अभी प्रातःकाल ही था। पक्षीगण वृक्षों पर तथा झाड़ियों और आकाश में कलरव कर रहे थे। देशवासियों की असहाय और दीन अवस्था पर मनन करते

---

1. करता तू खेल...लिखिआ पाईऐ...। रागु आसा, असटपदी, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुए, गुरु महाराज चले जा रहे थे। बाबर के शिविर के निकट पहुँच कर गुरु महाराज ने गंभीर और कोमल स्वर से पद का गान प्रारम्भ कर दिया। उस पद में उन्होंने आक्रमणकारियों की क्रूरता और अत्याचार तथा भारतीयों की दीनता, विपन्नता का साकार चित्रण किया। इस पद में उन्होंने परमात्मा को भी यह विपत्ति ढाने के लिए उलाहना दिया। पद का भाव इस प्रकार है—

'हे परमात्मा बाबर ने खुरासान पर शासन किया, खुरासान को अपना समझ कर तू ने बचा रक्खा और बेचारे हिन्दुस्तान को बाबर के आक्रमण द्वारा आतंकित किया। हे कर्त्ता, तू इन सब खेलों का जिम्मेदार है, अपने ऊपर दोष न लेने के लिए, मुगलों को यम रूप में बनाकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण कराया। इतनी मारकाट हुई कि लोग करुणा से चिल्ला उठे, किन्तु हे प्रभु, तुझे क्या जरा भी दर्द नहीं उत्पन्न हुआ ? ॥१॥

'हे स्वामी, तू तो सभी का कर्त्ता—निर्माता है, केवल मुगलों का नहीं, हिन्दुओं का भी है, यदि कोई शक्तिशाली व्यक्ति किसी शक्तिशाली व्यक्ति को मारता है, तो मन में क्रोध नहीं उत्पन्न होता ॥१॥ रहाउ ॥

'पर यदि शक्तिशाली सिंह निरपराध पशुओं के झुण्ड पर आक्रमण कर, उन्हें मारता है, तो उन पशुओं के स्वामी को कुछ तो पुरुषार्थ दिखाना ही चाहिए। (यहाँ निरपराध पशुओं का तात्पर्य निरीह प्रजा से है और उनके स्वामी का अभिप्राय लोदी और पठान शासकों से है) इन पठान कुत्तों ने हीरे के समान हिन्दुस्तान को बिगाड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। (तात्पर्य यह है कि पठान शासक मुगलों के सामने अड़े नहीं और हिन्दुस्तान ऐसा बहुमूल्य देश अपनी अकर्मण्यता से गँवा बैठे।) इनके मरने के बाद, इनकी कोई खोज-खबर नहीं लेता। इस प्रकार हे प्रभु, तू स्वयं ही मिलाता है और फिर तू ही वियोग भी कराता है। इन सब संयोग और वियोग के खेलों में अपनी बड़ाई आप ही देखता है ॥२॥

'यदि कोई अपना बड़ा नाम रखता है, तो मन में बहुत स्वाद का अनुभव करता है। किन्तु खसम—पति परमात्मा की दृष्टि में, वह निरा कीड़ा है, जो दाने चुगता फिरता है। जो व्यक्ति, बार-बार अहंभाव से मर कर जीवित हो, तभी वह कुछ पा सकता है। नानक तो प्रभु के नाम की प्रशंसा करता है।'[1] ३॥५॥३९॥

बाबर ने उपर्युक्त पद को सुना। वह इसका अर्थ समझने में समर्थ नहीं था। किन्तु प्रभातकालीन वायु के द्वारा तीव्र भर्त्सना बाबर के हृदय में तीर की भाँति

---

१. खुरासान खसमाना...नामु बखाणे...। रागु आसा, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा घुसी। उसने परमात्मा के उस अद्भुत गायक—गुरु नानकदेव को अपने पास बुलवाया। उसने देखा—'यह तो सैयदपुर का वही पहुँचा हुआ फकीर है, जिसने सारे कैदियों की रिहाई कराई थी।' बाबर ने श्रद्धा से गुरु महाराज को अपने पास बैठाया और उनसे पद का अर्थ पूछा। गुरु महाराज ने पद का भावार्थ बाबर को समझाया। उन्होंने उस अंश पर बहुत जोर दिया, जिसमें निरीह जनता पर बाबर के सैनिकों की क्रूरता एवं निरीह जनता की करुणा का वर्णन था। बाबर ने गुरु जी की भर्त्सना की न्यायसंगतता और सार्थकता की अनुभूति की। बाबर पश्चात्ताप और ग्लानि से भर गया। उसने परमात्मा के उस भक्त की कृपा-याचना का प्रयास किया, जो केवल अपने देशनिवासियों के दुःख से आर्द्र नहीं हुआ था, बल्कि जिसने क्रूर और अत्याचारी आक्रमणकारी के प्रति अपना रोष भी प्रकट किया और उसकी भर्त्सना की। गुरु नानक महाराज की अनन्य भक्ति और परम निर्भीकता से उसका हृदय भयभीत हो गया। उसने गुरु महाराज के साथ अत्यधिक श्रद्धापूर्वक व्यवहार किया और प्रार्थना की, 'आप मेरे साथ रहकर और परमात्मा सम्बन्धी पदों को गाकर, मेरा आत्मिक उत्थान करने की अनुकम्पा कीजिए।'

गुरु नानकदेव ने उसके साथ केवल तीन दिन रुकना स्वीकार किया। इस अवधि में उन्होंने परमात्म-भक्ति सम्बन्धी अनेक पदों को बाबर तथा उसके अमीरों को सुनाया। उन्होंने भारत के भावी सम्राट् से राजा के कर्त्तव्य और धर्म तथा प्रजा के अधिकारों के सम्बन्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण बातें कहीं। किन्तु गुरु नानक महाराज की ठंडी आहें उन लोगों के सम्बन्ध में बराबर निकलती रहीं, जो बाबर के कैदी अब भी बने थे। तीसरे दिन गुरु महाराज को उन कैदियों को देखने का अवसर मिला, जो कठोर श्रम में जोते गए थे। अपने देशवासियों की इस करुणापूर्ण दशा से गुरु महाराज अत्यधिक द्रवीभूत हो गए। वे भाव-समाधि में स्थित हो गए। गुरु महाराज की इस दशा को देखकर बाबर ने सोचा कि कदाचित् 'अल्लाह का फकीर' दुनिया से कूच करने वाला है। इस विचार से वह बहुत गमगीन हो गया। किन्तु कुछ समय के पश्चात् गुरु महाराज ने अपनी आँखें खोलीं और साम्यावस्था में आ गए। उनके मुखमण्डल पर अप्रतिम प्रकाश था। बाबर ने उनके इस तेजस्वी रूप को देखा और कहा, 'अरे अल्लाह के फकीर, मुझे अपना आशीर्वाद दो।'

गुरु महाराज ने बाबर से कहा, 'यदि तू अल्लाह की मेहरबानी चाहता है, तो तू सारे स्त्री-पुरुष कैदियों को जल्द से जल्द रिहा कर दे।' गुरु जी की बात का वह इन्कार न कर सका। उसने उनकी रिहाई की राजाज्ञा तुरन्त जारी की। आँखों में आनन्द के आँसू भरे हुए तथा अत्यन्त कृतज्ञ भाव से सारे कैदी बन्दी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिविर से मुक्त हुए। बाबर ने इसके बाद गुरु महाराज से फिर प्रार्थना की, 'ओ खुदा के सच्चे बन्दे, अब तुम खुदा से प्रार्थना करो कि हिन्दुस्तान में मेरी सल्तनत पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती जाय।'

गुरु महाराज ने बाबर से इस प्रकार कहा, 'यदि तुझे हिन्दुस्तान में अपनी सल्तनत कायम करने की ख्वाहिश है, तो हिन्दुस्तानियों के साथ मिलकर एक हो जा। इस मुल्क को अपना मुल्क समझ और यहीं का वासिन्दा होकर रह। हिन्दू-मुसलमान दोनों को एक तरह अपनी रिआया समझ। तेरा राज इंसाफ और मेहरबानी का हो। पराजितों के साथ भी मेहरबानी का बरताव कर और जो लड़ाई नहीं करना चाहते, उन्हें सता मत। जुआ खेलना, शराब पीना तथा बुरी लतों को छोड़ दे। खुदा की सच्ची इबादत कर।'

कहना न होगा कि गुरु नानकदेव के उपदेश का बाबर ने अपने भावी जीवन में पालन करने की भरसक कोशिश की। इतिहास इस बात का साक्षी भी है। जिन लोगों ने बाबर की शक्ति, साहस, दृढ़ता और प्रभाव के सम्बन्ध में अध्ययन किया है, उन्हें गुरु नानकदेव के राष्ट्रीय भावों के सम्बन्ध में किसी टीका-टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। गुरु नानकदेव संसार के क्रूरतम व्यक्ति से भी अत्यन्त निर्भीकता से मिले। ऐसे क्रूरतम व्यक्ति से मिले, जिसके एक भ्रू-कटाक्ष मात्र से लाखों मनुष्य तलवार के घाट उतारे जा सकते थे। अपनी तर्कपूर्ण, भावयुक्त और सक्षम वार्ता से बाबर ऐसे नृशंस व्यक्ति को महान् उदार शासक के रूप में परिवर्तित किया। इस प्रकार गुरु नानकदेव ने अपने देश और देशवासियों की जो सेवा की, वह अप्रतिम है और अविस्मरणीय रहेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय एकतीस

पाँचवीं यात्रा

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण--चारों दिशाओं की विस्तृत यात्रा करने के बाद गुरु नानकदेव लगभग आठ वर्ष तक कर्त्तारपुर में ठहरे। उन चारों यात्राओं में बीस वर्ष से अधिक व्यतीत हुए थे। कर्त्तारपुर में बसने पर गुरु महाराज ने अपनी विरक्त-वेशभूषा का परित्याग करके सामान्य गृहस्थ की वेशभूषा धारण की। उनका यह कार्य भी परम्परा और रूढ़ि के विरुद्ध था। उनका कार्य सामान्य संस्कारों और विचारधारा के प्रतिकूल था। प्राचीन विचारधारा के अनुसार जिस व्यक्ति ने गृहस्थाश्रम का त्याग करके विरक्तों की वेशभूषा धारण कर ली हो, तो वह न तो दुबारा गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर सकता है और न गृहस्थों के समान वेशभूषा ही धारण कर सकता है। यदि वह इस प्रकार का आचरण करता है, तो समाज में निन्दनीय माना जाता है। गुरु नानक महाराज लोगों को यह दिखलाना चाहते थे कि सच्चा धार्मिक व्यक्ति प्रवृत्ति अथवा निवृत्ति मार्ग में से किसी मार्ग का अनुसरण कर सकता है। इसी प्रकार वह विरक्त अथवा गृहस्थ की वेशभूषा धारण करने में पूर्ण स्वतन्त्र है। वह किसी प्रकार के आचारात्मक बंधन में बन्दी नहीं बनाया जा सकता। जब उसकी अन्तरात्मा का परमात्मा से शाश्वत संयोग है, तो यह नगण्य है कि वह किस आश्रम में रहता है और कौन-सा व्यवसाय करता है। वह जिस स्थिति में भी रहे, कभी गलत काम नहीं कर सकता।

इसके अतिरिक्त गुरु नानकदेव प्रवृत्ति और निवृत्ति, ग्रहण और त्याग, लोक और परलोक के पूर्ण सामंजस्य के जीवनपर्यन्त प्रतिपादक रहे। उन्होंने अपने इस सिद्धान्त का अपने जीवन भर प्रतिपादन किया कि मनुष्य को अपने जीवन के सुख-दुःख, राग-विराग, हर्ष-विषाद, बंधन-मुक्ति, जीवन-मरण के बीच पूर्ण त्यागी एवं अन्तर्मुख रहना चाहिए। संसार के जंजालों और प्रपंचों के बीच भी उसकी स्थिति 'पद्मपत्रमिवाम्भसा' की होनी चाहिए। उनके सिद्धान्त का सार था कि मनुष्य 'मरजीवा' बने, अर्थात् वासनाओं और लालसाओं के प्रति उदासीन होकर, शुद्ध, निष्काम, सेवापरायण जीवन व्यतीत करे। उन्होंने सर्वसाधारण के सम्मुख एक जीवन्त आदर्श रक्खा कि मनुष्य की रहनी किस प्रकार की होनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहिए। उन्होंने परिवार, मित्रों एवं शिष्यों के बीच जीवन व्यतीत किया, एक सद्गृहस्थ की भाँति उनके सुखों और दुःखों में सम्मिलित हुए। किन्तु साथ ही प्रतिक्षण परमात्मा के चिर सान्निध्य में रहे।

अपने जीवन में उन्होंने पूर्ण सामंजस्य दिखलाया। उन्होंने खेतों में परिश्रमी कृषक की भाँति कार्य किया, रसोईघर में जाकर उसकी देख-रेख की और गुरु-गद्दी पर बैठकर लोगों को सच्चे धर्म की शिक्षा दी। प्रत्येक कार्य करते हुए वे सम स्थिति में साक्षी भाव से स्थित रहे। परमात्मा का ध्यान एक क्षण के लिए भी नहीं भूले। शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए, उन्होंने खेतों में गेहूँ आदि के बीज बोए, पर साथ ही आध्यात्मिक विकास के लिए उन्होंने 'हरी नाम' का बीज साधकों की हृदय-भूमि में बोया। उनके भक्तों की हृदय-भूमि में इस नाम रूपी बीज की फसल उगी। मनुष्यों के इस वृद्ध पिता ने उनके भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के कल्याणों की चिन्ता की। दुनिया के इस विस्तृत परिवार के प्रेम के निमित्त उनकी सहधर्मिणी ने भी उनका पूरा-पूरा हाथ बँटाया।

अचल बटाला की यात्रा

इस प्रकार के जीवन-यापन में वर्ष-पर-वर्ष बीतते गए। इन वर्षों में गुरु महाराज को लम्बी यात्रा करने की इच्छा नहीं हुई। वे पचास वर्ष से ऊपर के हो गए थे। उन्होंने उस पचास वर्ष की अवस्था में बीस वर्ष से भी अधिक लम्बी यात्राएँ की थीं। फिर भी उन्होंने कभी-कभी आस-पास के क्षेत्रों में छोटी-मोटी यात्राएँ कीं। यदि किसी प्रेमी हृदय की उत्कट इच्छा होती थी, तो वे उसके प्रेम की पूर्ति के लिए आकर्षित होकर उसके पास अवश्य पहुँचते थे। एक अवसर पर उन्हें कर्त्तारपुर से दूर लम्बी यात्रा करनी पड़ी। उन्होंने सुना कि शिवरात्रि के पर्व पर गुरदासपुर जिले के अचल बटाला नामक स्थान पर एक बहुत बड़ा मेला लगने वाला है। उस अवसर पर सिद्ध अथवा योगी बहुत बड़ी संख्या में वहाँ एकत्र होने वाले थे। गुरु नानक के अद्भुत प्रभाव के कारण लोगों के बीच सिद्धों का रंग फीका पड़ गया था। अतः सिद्धों, योगियों का उनसे क्षुब्ध होना स्वाभाविक था। अतएव उन्होंने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करने का अन्तिम प्रयास किया।

हम जानते हैं कि गुरु महाराज सिद्धों के पाखण्ड का भंडाफोड़ करने के लिए उनके प्रख्यात मठों तक पहुँचे थे। उन्होंने शास्त्रार्थ करके, उनके तर्कों की धज्जियाँ-धज्जियाँ उड़ाकर उन्हें करारी मात दी थी। इस प्रकार लोगों में उनके फैले हुए आतंक और भय को बहुत कम कर दिया था। फिर भी सिद्धगण अपने नष्ट होते हुए प्रभाव को पुनः जीवित करना चाहते थे। अतः गुरु नानकदेव ने भी संकल्प किया कि अचल बटाला में उनके रहे-सहे प्रभाव को भी नष्ट कर दिया जाय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके रहे-सहे प्रभाव को भी नष्ट कर दिया जाय, क्योंकि इससे लोग सच्ची भक्ति भूल कर, गुमराह हो रहे थे। अतः साठ वर्ष से कुछ अधिक होते हुए भी गुरु महाराज ने कर्त्तारपुर से अचल बटाला के लिए प्रस्थान किया। यह उनकी पाँचवीं और अन्तिम यात्रा थी। यह यात्रा गुरु महाराज की इच्छा के विपरीत थी, क्योंकि यात्रा बहुत लम्बी थी। इस बार उनकी वेशभूषा सामान्य गृहस्थ की वेशभूषा थी।

अचल बटाला के इस मेले में सिद्धगण अप्रत्याशित रूप से बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हुए थे। अपनी योग-शक्ति का प्रदर्शन कर वे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करके, उन्हें अपने अधीन बना रहे थे। इतने बड़े संगठित प्रयास की अवहेलना किस प्रकार की जा सकती थी? सिद्धों को यह नहीं ज्ञात था कि इस अवसर पर एक ऐसे महान् पुरुष का आगमन हो रहा है, जो दक्षिण के कजली वन में, मानसरोवर की झील के तट पर तथा अन्य प्रसिद्ध स्थानों पर शास्त्रार्थ में उनकी मान्यताओं का खण्डन करके, उन्हें ध्वस्त कर चुका है। इस बार भी वह उन्हें निचोड़ कर नीरस कर देगा और उनके मिथ्या अभिमान एवं शक्ति का भंडाफोड़ कर देगा।

गुरु महाराज ने मेले से कुछ हटकर अपना आसन जमाया। मरदाना का रवाब झंकृत होने लगा। गुरु का गंभीर और कोमल कण्ठ भी मुखरित हो उठा। परमात्मा की शक्ति एवं भक्ति सम्बन्धी पदों का गान प्रारम्भ हो गया। रवाब की ध्वनि के साथ गुरु महाराज की संगीत-लहरी गूँज उठी। अजीब समाँ बँध गया। जिन्होंने उस सुमधुर संगीत को सुना, वे सब खिंचकर बलात् गुरु महाराज के समीप आने लगे। शीघ्र ही लोगों का विशाल समुदाय गुरु महाराज के पास एकत्र हो गया। इस समुदाय में से कुछ लोग तो बैठ गए और कुछ स्थान न मिलने के कारण खड़े रहे। सारे के सारे लोग मंत्रमुग्ध होकर, गुरु महाराज के भक्तिपूर्ण पदों को सुनने लगे। वे आनन्द और शान्ति के भाव में स्थित हो गए। लोगों के गुरु नानक के पास चले जाने से सिद्धों का स्थान बिल्कुल खाली हो गया। उन लोगों ने समझा कि यह हमारी भीषण अवहेलना और घोर अपमान है। इसका मूल कारण गुरु नानकदेव को समझ कर, सिद्धगण गुरु महाराज के पास पहुँचे। गुरु जी महाराज उस समय विशाल-जन-समुदाय में विराजमान थे। अतः सिद्धों का सर्वप्रथम प्रयास यह था कि इतने लोगों की दृष्टि में गुरु नानकदेव की प्रतिष्ठा हीन की जाय। सिद्धों में गुरु नानकदेव को संबोधित कर कहा, 'आपने विरक्त जीवन और उसकी वेशभूषा का परित्याग किया है। इससे स्पष्ट विदित है कि आप अपने शरीर, मन एवं आत्मा को विरक्त-जीवन के अनुकूल नहीं बना सके। आप से विरक्त जीवन सध न सका। इसी कारण जगत् के मोह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और आसक्ति में पड़कर, विरक्त-जीवन का परित्याग किया। नहीं तो इतने दिनों तक विरक्त जीवन व्यतीत करने के बाद, आपका गृहस्थ धर्म में पुनः प्रवेश करना किस प्रकार संभव था ? आपने विरक्त जीवन में जो थोड़ी-बहुत क्षमता अर्जित की थी, उसे अब आपने मिट्टी में मिला दिया। अब आप लोगों को यह उपदेश देने आये हैं कि वे आपके अनुभव से सांसारिक जीवन व्यतीत करें। आप आत्म-साक्षात्कार और परमात्मा की प्राप्ति में असफल हुए हैं, इसीलिए आप लोगों को यह सिखा रहे हैं कि लोग, निवृत्तिमार्ग का परित्याग कर, प्रवृत्तिमार्ग को ग्रहण करें। सचमुच ही आप महान् उपदेशक हैं और यह गंवार जनता बड़ी ही पवित्र एवं धार्मिक है, जो हम लोगों के महान् उपदेशों को त्यागकर आपके गाने-बजाने पर रीझ गई !!'

गुरु महाराज ने मुस्कराते हुए बड़ी शान्ति से उत्तर दिया, 'मेरे मित्रो, आप लोग गलती पर हैं। आप लोग संसार-त्याग का दम्भ भरते हैं। इसी कारण आप लोग गृहस्थों से घृणा करते हैं। किन्तु साथ ही उनके द्वार पर जाकर भीख माँगने में न तो आप लोगों को लज्जा लगती है और न हिचक होती है। यह सचमुच आप लोगों का महान् त्याग है। दूसरों की कमाई पर विलास-मय जीवन व्यतीत करना और उन्हीं से घृणा करना, जो आपकी आवश्यक-ताओं और माँगों की पूर्ति करते हों, सचमुच यह आपका बड़ा ऊँचा और आदर्श सिद्धान्त है !! यह निस्सन्देह, बड़ा ऊंचा धर्म है !!! मुझमें इस प्रकार की कमियाँ अवश्य हैं। मेरी समझ में सच्चा त्याग वह है, जिसमें त्याग का भी त्याग हो। संसार की अपवित्रताओं और प्रलोभनों के मध्य जो पवित्र और निर्लिप्त भाव से रहता है, वही सच्चा त्यागी है। मेरी सम्मति में मनुष्य मात्र को परमात्मा की प्राप्ति के लिए अनुप्राणित करना—यही वास्तविक धर्मानुष्ठान है। जीवन के सामान्य व्यवहारों में पवित्र और निष्काम बुद्धि रखनी परमात्मा की सच्ची उपासना है। इस प्रकार जीवन-यापन में मनुष्य को छोटी से छोटी वृद्धि दैनिक क्रियाएँ भी उपासना का स्वरूप धारण कर लेती हैं। किन्तु इसके अतिरिक्त उपासना का अपने में पृथक् महत्त्व भी है। भगवान् की श्रद्धा और भक्ति की प्राप्ति उपासना की चरम सिद्धि है। अपने देशवासियों के बीच प्रेम, सेवा और भक्ति का जीवन व्यतीत करना, यही हमारा धर्म है। अपने जीवन के सामान्य व्यापारों का निष्ठापूर्वक प्रतिपादन करते हुए अनन्त परमात्मा से युक्त रहना एवं दूसरों को भी युक्त करना यही आदर्श धार्मिक जीवन है। इसी बात को करने का मैं प्रयास करता हूँ। यही मैं जीवनपर्यन्त और लोगों को सिखाता रहा। इसी पर आचरण करने की सभी को आवश्यकता है, और आप लोगों के लिए तो इसकी खास आवश्यकता है, क्योंकि आप सिद्धगण उन्हीं की गाढ़ी कमाई पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना जीवन व्यतीत करते हैं।'

गुरु जी की उपयुक्त बातों का सिद्धगण कोई उत्तर न दे सके। अतएव उन लोगों ने गुरु नानकदेव तथा वहाँ के अन्य लोगों को अपने योग के चमत्कारों से आतंकित करना चाहा। गुरु महाराज शान्त भाव से स्थिर होकर बैठे थे। वे परमात्मा की महिमा सम्बन्धी पदों को गा रहे थे। सारी भीड़ शान्त बैठी थी। गुरु के आध्यात्मिक पदों के श्रवण से वह मंत्रमुग्ध थी। वे इतने तन्मय थे कि उन्होंने विक्षुब्ध सिद्धों की ओर देखा तक नहीं। सिद्धों ने गुरु महाराज से कहा, 'आपने निश्चय ही इन्हें तथा अन्य लोगों को कुछ चमत्कार दिखाया होगा। यदि चमत्कार न दिखाया होता, तो आपकी ओर इतने व्यक्ति कैसे आकर्षित हुए होते? आप क्या हमें भी कुछ चमत्कार दिखा सकते हैं?''

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'मेरे मित्रो, सच्ची बात तो यह है कि मैंने योग और योगियों की भली-भाँति कसौटी की है। उस कसौटी में उनमें मुझे कोई सार वस्तु प्राप्त नहीं हुई। आप लोग विश्वास मानिए कि निर्वाण पद ऐसे साधनों से कहीं प्राप्त हो सकता है, जिनके पीछे आप सब दौड़ रहे हैं। आत्मा की प्यास बुझाने के लिए मनुष्य को उस व्यक्ति के उपदेश को जीवन में व्यवहृत करना चाहिए, जो परमात्मा के द्वारा इस कार्य विशेष के लिए नियुक्त किया गया है। मेरे मित्रो, मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ। परमात्मा के गुणों का यह विनीत गायक उसकी शक्ति और इच्छा के जो गीत गा रहा है, उसे ध्यान से आप लोग सुनें। अनन्त और शाश्वत परमात्मा के नाम के गुणगान के अतिरिक्त मुझमें और कोई चमत्कारपूर्ण शक्ति नहीं है। मुझे ऐसी शक्ति की कोई आवश्यकता भी नहीं है।'

'ऐसा कहकर गुरु महाराज ने एक पद का गान किया, जिसका भाव यह है:—

'यदि मैं आग पहन लूँ अथवा बर्फ में घर बना लूँ, तात्पर्य यह कि मेरे अन्तर्गत इतनी शक्ति आ जाय कि मैं आग में बैठ सकूँ, लोहे को भोजन बना लूँ, सारे दुखों को पानी की भाँति बड़े शौक से पी जाऊँ, सारी पृथ्वी को अपनी हाँक में चला लूँ अर्थात् समस्त भूमण्डल पर मेरा आधिपत्य हो, सारे आकाश को (जो अनन्त ब्रह्माण्ड, सूर्य, नक्षत्रगण और तारामण्डल आदि को धारण करने से बहुत भारी है) तराजू के एक पलड़े पर रखकर, पिछले पलड़े पर टंक-माशा रखकर आसानी से तौल लूँ, अपने शरीर को इतना अधिक बढ़ा लूँ कि कहीं समा न सके और सबको नाथ लूँ, अर्थात् अपनी आज्ञा में चलाऊँ, मेरे मन में इतनी शक्ति हो कि जो चाहूँ, वह करूँ और कहकर दूसरों से भी करा सकूँ, फिर भी ये सारी सिद्धियाँ तुच्छ हैं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जितना बड़ा साहब है, उतने ही बड़े उसके दान हैं; यदि आज्ञाओं का स्वामी और भी अनन्त सिद्धियों का दान मुझे दे दे, तो ये सब भी तुच्छ ही हैं !'

'हे नानक, सच्ची बात तो यह है कि जिस प्राणी पर प्रभु कृपादृष्टि करता है, उसे अपने सच्चे नाम के माध्यम से बड़ाई प्रदान करता है। तात्पर्य यह है कि सभी सिद्धियाँ एवं चमत्कारों से बढ़कर प्रभु के नाम की प्राप्ति है।'[1]

गुरु नानकदेव ने सिद्धियों और चमत्कारों की असार्थकता सिद्ध करके, उनके मनचाहे विषय पर लड़ाई मोल लेना बिल्कुल अस्वीकार कर दिया। इससे सिद्ध-गण गुरु महाराज के ऊपर और अधिक क्षुब्ध हुए। उन्होंने गुरु महराज से प्रश्न किया, 'आपका धर्म, विश्वास एवं दर्शन क्या है ?' इस प्रश्न के द्वारा वे उन्हें निरस्त्र और पराजित करना चाहते थे। किन्तु इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने गुरु जी की महत्ता की अनुभूति की। ऐसी अनुभूति पहले अन्य प्रश्नकर्ता भी कर चुके थे। उन्होंने अपनी बुद्धि, तर्कशक्ति एवं प्रत्युत्पन्नमति से सारे सिद्धों को निरुत्तर कर दिया। बाद में इस वादविवाद के सार को पद-बद्ध करके, 'सिद्ध-गोष्ठ' का नाम दिया। इसका संकलन 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में किया गया है। इस गोष्ठी में गुरु महाराज ने जगत् के व्यापारों के बीच रहते हुए भी भक्ति और निष्काम जीवन की श्रेष्ठता त्यागमय जीवन की निष्क्रियता पर स्थापित की है। निवृत्ति-मार्ग की अपेक्षा प्रवृत्तिमार्ग को अधिक सहज और सुलभ माना गया है।

सिद्ध गोष्ठ के अनुसार इस गोष्ठी का परिणाम यह हुआ कि सिद्धों नें गुरु नानकदेव की महत्ता स्वीकार कर ली और उन्हें अपना गुरु मान लिया। सिद्धों ने गुरु महाराज से प्रार्थना की, 'आप अपने नाम रूपी अनन्त धन में से कुछ हमें भी देने की अनुकम्पा कीजिए।' गुरु महाराज ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और उनकी नवीन आध्यात्मिक प्यास को अपनी उपदेश-सरिता से बुझाया। उन सिद्धों ने गुरु महाराज को साष्टांग प्रणाम किया और उनके शिष्य बनकर उनके प्रेम-बन्धन के दास बन गए। उनमें से बहुतों ने अपनी सिद्ध वेशभूषा का परित्याग किया और गुरु जी के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत किया। ऐसे शिष्यों में भरथरी का नाम उल्लेखनीय है। वे गुरु महराज से दक्षिण के कजलीवन में पहले मिल चुके थे। इस प्रकार सिद्धों का प्रभाव और शक्ति पूर्णतया समाप्त हो गई। उनकी संख्या भी उत्तरोत्तर क्षीण होती गई। सामान्य जनता सिद्धों के इस आतंकपूर्ण प्रभाव से मुक्त होकर गुरु महाराज की अत्यधिक ऋणी हुई और उसने अपनी कृतज्ञता जीवनपर्यन्त स्वीकार की। अचल बटाला में सिद्धों का

---

१. माझ की वार, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवरात्रि समारोह अन्तिम समारोह सिद्ध हुआ। गुरु महाराज और सिद्धों की इस गोष्ठी का साक्षी वहाँ निर्मित एक गुरुद्वारा है। यह गुरुद्वारा गुरु महाराज की विजय की स्मृति में बनाया गया था।

मुल्तान की यात्रा

अचल बटाला में सिद्धों पर विजय प्राप्त कर, गुरु नानकदेव मुल्तान की ओर अग्रसर हुए। मुल्तान में फकीरों की बहुत बड़ी संख्या लोगों पर अत्याचार कर रही थी और उन्हें गुमराह कर रही थी। भक्त प्रह्लाद का मन्दिर एवं शम्सतब्रेज की समाधि को देखकर गुरु नानकदेव ने अपने अलौकिक प्रेम, सेवा एवं भक्ति का सन्देश लोगों को दिया। गुरु महाराज ने आगे बढ़कर समीपवर्ती नदी के तट पर अपना आसन जमाया। उस समय मुल्तान में फकीरों और भिखमंगों की भरमार थी। बहुत से गुंडे और बदमाश फकीरी लिबास में लोगों को सताकर अपनी जीविका चलाते थे। जनता उनके अत्याचारों से परेशान थी। उन फकीरों और साधुओं में से बहुतों का आध्यात्मिक जीवन से कोई सरोकार नहीं था। इस माने में वे पाषाण की भाँति जड़ थे। वे लोगों की अज्ञानता और अन्धविश्वासों का नाजायज फायदा उठा रहे थे। वे लोग इस बात से भय-भीत और सशंकित भी थे कि कहीं कोई सच्चा साधु आकर उनकी काली करतूतों का भंडाफोड़ न करे, नहीं तो उनकी चोर बाजारी सदैव के लिए समाप्त हो जायगी। गुरु नानकदेव उस क्षेत्र में थोड़े ही दिन रहे। किन्तु अल्प अवधि में ही उनका नाम वहाँ के लोगों की जबान पर चढ़ गया। उनकी कीर्ति की सुरभि चारों ओर व्याप्त हो गई। इससे उन फकीरों के मन में और भी भय उत्पन्न हुआ, क्योंकि उन लोगों ने पहले से ही सुन रक्खा था कि यह वही व्यक्ति है, जिसने प्रसिद्ध पीरों और फकीरों, साधुओं, पंडितों के मिथ्याडम्बर और पाखण्ड का भंडाफोड़ किया है। इस कारण वे फकीर और साधु और अधिक चिन्तित, भयभीत तथा दुखी हुए।

अतएव मुल्तान के सारे फकीर एकत्र हुए और गुरु नानकदेव को वहाँ से निकालने की युक्ति सोचने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि गुरु जी को जल्द वहाँ से निकाल दिया जाय, नहीं तो वे अपने ईश्वर-सम्बन्धी गानों और शास्त्रार्थ द्वारा उनके सारे प्रभाव का सत्यानाश कर देंगे। परन्तु वे लोग गुरु नानकदेव के पास सीधे-सीधे पहुँचने में सशंकित थे, क्योंकि उनमें गुरु जी से तर्क-वितर्क करने के साहस का अभाव था। साथ ही उन्हें यह भी निश्चय था कि वाद-विवाद और शास्त्रार्थ में गुरु जी पराजित होने वाले व्यक्ति नहीं हैं। अतः उन्होंने गुरु जी के पास अपना संदेश भेजने का एक विचित्र उपाय ढूंढ़ निकाला। उन्होंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु महाराज के पास दूध से लबालब भरा एक प्याला भेजा। उस प्याले में एक बूंद भी दूध और रखने की जगह नहीं थी। इसका अर्थ यह था कि मुल्तान शहर में इतने अधिक फकीर भरे पड़े हैं कि अब एक भी साधु और फकीर के लिए स्थान नहीं है। जिस प्रकार प्याले में एक बूंद भी रखने की गुंजाइश नहीं है, उसी प्रकार मुल्तान शहर में अब एक भी और अधिक साधु अथवा फकीर के रहने की गुंजाइश नहीं है।

दूध के प्याले को फकीरों की हार्दिक भेंट समझकर, मरदाना ने गुरु महाराज से उसे ग्रहण करने की प्रार्थना की। किन्तु गुरु नानकदेव ने अपनी प्रत्युत्पन्नमति से तुरन्त फकीरों की युक्ति को भाँप लिया। उन्होंने मुस्कराकर अपना सिर हिलाया और उस प्याले में चमेली का एक सुन्दर फूल डाल दिया और लाने वाले को आज्ञा दी कि इसे ठीक ऐसी ही दशा में भेजने वाले के पास पहुँचा दिया जाय। उन्होंने फूल डालकर यह संकेत किया कि जिस प्रकार दूध से लबालब भरे इस प्याले में चमेली के पुष्प की गुंजाइश है, उसी प्रकार इस मुल्तान शहर में मुझ ऐसे तुच्छ भक्त की गुंजाइश भी हो सकती है। जिस प्रकार चमेली का फूल दूध में रहते हुए भी दूध से पृथक् और निर्लिप्त है, उसी प्रकार मैं भी मुल्तान शहर में रहते हुए भी मुल्तानियों से पृथक् और निर्लिप्त हूँ, जिस प्रकार पुष्प अपनी सुरभि प्याले के दूध में फैला रहा है, उसी प्रकार मैं भी परमात्मा की महिमा की सुगन्धि सारे मुल्तानियों में फैलाऊँगा।

इसका परिणाम यह हुआ कि थोड़ी ही देर बाद कुछ प्रसिद्ध फकीर गुरु महाराज जी के पास शास्त्रार्थ करने के लिए पहुँचे। उन्हें यह आशा थी कि वे तर्क-वितर्क में गुरु महाराज को पराजित कर देंगे। किन्तु उन लोगों को जल्द ही प्रतीत हो गया कि फकीरों को ऐसे बौनों द्वारा गुरु महाराज ऐसे महान् पुरुष को पराजित करना असंभव है। अन्त में उन लोगों ने गुरु महाराज की महत्ता स्वीकार करके, उन्हें अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया। गुरु नानकदेव ने उन फकीरों को अपने धर्म और सिद्धांत में दीक्षित किया और उन्हें नया आध्यात्मिक जीवन प्रदान किया। गुरु जी ने उन फकीरों को बोध कराया कि उनका मिथ्या त्याग किस भाँति आध्यात्मिक विकास और प्रगति में उनका बाधक हो रहा है। गुरु जी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि संसार के प्रलोभनों और प्रपंचों के बीच पवित्र और निर्लिप्त जीवन व्यतीत करना ही सच्चा त्याग है। उन फकीरों के अनुयायी और भक्त भी गुरु के चरणों में गिरकर उनके शिष्य और भक्त बन गए। वे सभी गुरु महाराज के पवित्र संगठन में मनसा, वाचा, कर्मणा सम्मिलित हो गए।

तब से सूफी फकीरों ने गुरु महाराज की आध्यात्मिक महत्ता को भली-भाँति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वीकार कर लिया। बड़े गौरव से इस बात का स्मरण करते हैं कि गुरु महाराज उनके आध्यात्मिक गुरु एवं निर्देशक रहे। अपने जीवनकाल में गुरु नानकदेव ने सूफी फकीरों में अपने प्रति इतनी श्रद्धा उत्पन्न करा दी थी कि एक दिन प्रातःकाल पीर बहाउद्दीन ने काबा की ओर अपनी पीठ करके कर्त्तारपुर की ओर अपना मुख करके नमाज़ पढ़नी प्रारम्भ की। बहाउद्दीन के हज़ारों अनुयायियों में से जब एक ने साहस करके इसका कारण पूछा, तो उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया, 'मेरे दोस्तो, मुझे खुदा का नूर इसी दिशा में नज़र आ रहा है। अतएव जहाँ खुदा है, उसी ओर मुँह करके मैं अपनी नमाज़ पढ़ रहा हूँ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय बत्तीस

कर्त्तारपुर का जीवन

अचल बटाला और मुल्तान की यात्राएँ गुरु महाराज की अन्तिम यात्राएं मानी जा सकती हैं। १५३१ ई० के लगभग गुरु नानकदेव कर्त्तारपुर पहुँचे और वहाँ लोगों के वृद्ध पिता की भाँति रहने लगे। वे सुदूर स्थानों की यात्रा कर चुके थे और वहाँ के लोगों को प्रेम, भक्ति, निष्काम कर्म और सेवा का सन्देश दे चुके थे। जहाँ-जहाँ भी वे गए, वहाँ-वहाँ लोगों का विशाल समुदाय उनके परमात्म-सम्बन्धी संगीत सुनने को उसी प्रकार आकर्षित हुआ, जिस प्रकार रेगिस्तान के प्यासे लोगों का समुदाय वहाँ के किसी नखलिस्तान को देखकर उसकी तरफ दौड़ा पड़ता हो। जब वे उन स्थानों को छोड़कर वापस लौटे, तो उपदेश का कार्य उनके श्रद्धालु शिष्यों द्वारा चलाया गया। प्रायः अधिकांश स्थानों पर गुरुद्वारों का निर्माण हुआ। उन गुरुद्वारों में भजन, कीर्तन और सत्संग की त्रिवेणी अब तक प्रवाहित हो रही है। इन गुरुद्वारों में भ्रातृभाव, सेवा और प्रेम का विलक्षण स्वरूप देखने को मिलता है। अत्यन्त श्रद्धालु और भक्त वहाँ के संचालक रहते हैं। प्रातः और सायं सभी सिक्ख गुरुद्वारे में आकर भजन, कीर्तन और सत्संग में सम्मिलित होते हैं। दिन में अत्यन्त निष्ठापूर्वक अपने कार्य करते हैं। इस प्रकार उनका शरीर कार्यों में और मन परमात्मा में रहता है। यह सब गुरु नानकदेव के अलौकिक व्यक्तित्व का परिणाम था। चीन और मिस्र में, जहाँ गुरु नानकदेव के कोई प्रचारक न जा सके, वहाँ के लोग भी बड़े आदर, सम्मान, श्रद्धा और भक्ति से उनके नाम का स्मरण करते हैं।

कर्त्तारपुर के सिक्खों ने गुरु नानक के सिद्धान्तों, उपदेशों और दर्शन को व्यावहारिक जीवन में स्वरूप देने का भरसक प्रयास किया। गुरु महाराज ने जीवनपर्यन्त कर्म और भक्ति निवृत्ति और प्रवृत्ति के विलक्षण सामंजस्य का प्रतिपादन किया। उन्होंने यह बताया कि जीवन में दोनों ही की नितान्त आवश्यकता है और उनका साथ-साथ निर्वाह होना चाहिए। परमात्मा की प्राप्ति के लिए संसार से विरक्त होकर निष्क्रिय जीवन बिताना भयंकर प्रवंचना थी। ईश्वर की संतानों की सेवा से विमुख होकर, उसकी प्राप्ति करना अत्यन्त कठिन है। शुभ और निष्काम कर्म किए बिना उपासना और भक्ति संभव नहीं है। निवृत्तिमार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईश्वर की प्राप्ति के लिए अपूर्ण और अधकचरा मार्ग हैं। इसमें स्वाभाविकता की संभावना नहीं दिखाई पड़ती। परमात्म-प्राप्ति तो सहज मार्ग से ही संभव है। इसी प्रकार प्रवृत्तिमार्ग में सबसे बड़ा यह खतरा है कि लोग सांसारिक प्रलोभनों में फँसकर संसार के निर्माता को ही भूल जाते हैं। वे अपने बाल-बच्चों, धन-सम्पत्ति के चक्र में पड़कर आनन्दरूप परमात्मा से विमुख हो जाते हैं। गुरु महाराज ने दोनों मार्गों के बीच अप्रतिम समन्वय स्थापित किया। उन्होंने समझाया कि प्राणि मात्र परमात्मा की सन्तान हैं। उनसे निस्वार्थ प्रेम करना चाहिए। इसी प्रेम के माध्यम से परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। विश्व-प्रेम ही परमात्म-प्रेम की सीढ़ी है। अतएव सांसारिक जीवन का परित्याग नहीं करना चाहिए। हाँ, संसार के प्रलोभनों और आकर्षणों में उदासीन वृत्ति रखनी चाहिए। इसी वृत्ति का कवच बनाकर संसार-संग्राम में जूझना चाहिए। संसार के सारे कार्यों को करते हुए आत्म-समर्पण भाव और साक्षी-वृत्ति रखनी चाहिए। अतः गृहस्थ जीवन को आध्यात्मिक जीवन का माध्यम बनाना चाहिए।

गुरु नानकदेव इस बात में पूर्ण विश्वास रखते थे कि जो साधक आध्यात्मिक भाव में जाग गया है, उसके लिए निष्काम कर्म और भक्ति परमात्मा के दरबार में पहुँचने की सीढ़ियाँ बन जाती हैं। ऐसा साधक किसी भी कार्य के संपादन के पूर्व परमात्मा की सहायता के लिए प्रार्थना करता है। कोई भी कर्म तब तक आध्यात्मिक कर्म नहीं कहा जायगा, जब तक वह प्रारम्भिक प्रार्थना से युक्त न हो। कार्य के मध्य और अन्त में प्रभु का चिन्तन समस्त कर्म को उपासनामय बना देता है। इसी सूक्ष्मता की ओर ध्यान रखते हुए गुरु नानकदेव ने प्रभु के प्रतिक्षण चिन्तन पर बहुत बल दिया। ऐसे निष्काम कर्मयोगी की सारी दृष्टि ब्रह्ममयी हो जाती है। उसका प्रभु से शाश्वत संयोग अहर्निश बना रहता है। कर्मयोग एवं उपासना की इस समन्वयात्मक वृत्ति की प्रबलता का जैसा आदर्श गुरु नानकदेव ने हमारे सम्मुख रक्खा, वैसा आदर्श राजा जनक के जीवन को छोड़कर अन्यत्र पाना दुर्लभ है। गुरु महाराज का यह प्रबल प्रयास था कि इसी रस में सारे मानव निमग्न रहें। लोक-कल्याण की इतनी प्रबल भावना बहुत कम धार्मिकों में पाई जाती है। इसी आदर्श के बल पर गुरु महाराज ने 'लहना' को अपना अंग ही बनाकर उन्हें 'अंगद' की संज्ञा दी और उसी का दर्शन 'अंगद' में करके, उन्हें साक्षात् गुरु के रूप में प्रणाम किया। मेरी राय में किसी भी धर्म-उपदेशक में इतनी उदात्त और विशाल भावना नहीं पाई जाती। सिद्धों एवं अन्य विरक्तों को वे अपना उपदेश दे चुके थे। गुरु महाराज की दृष्टि में सच्चा विरक्त वही है, जो अपने संग्रहीत अध्यात्म धन में से अन्य व्यक्तियों को साझीदार बना सके। यह धन दूसरों को लुटाने पर और अधिक बढ़ता है। गुरु महाराज इसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यावहारिक प्रयोग जीवनपर्यन्त करते रहे। कर्त्तारपुर में रहकर उन्होंने इसी का जीवन्त आदर्श लोगों के सम्मुख रखा।

उन्होंने कर्त्तारपुर में कृषक का जीवन व्यतीत किया। किन्तु वे साधारण कृषक नहीं थे। उनका भौतिक कृषक रूप आध्यात्मिक कृषक के रूप में अभिव्यक्त हुआ। इसीलिए जहाँ एक ओर वे सामान्य भूमि को जोतकर गेहूँ आदि के बीज बोकर सुन्दर फसल पैदा करते थे, वहाँ दूसरी ओर वे साधकों की हृदय-भूमि को साधनों द्वारा उर्वरा बनाकर, उसमें प्रभु के नाम का बीज बोकर, ईश्वर-साक्षात्कार की सुन्दर फसल पैदा करते थे। वे वहाँ के सभी लोगों की पिता के समान निगरानी रखते थे। वे अपनी सन्तानों की भौतिक सुविधा के लिए, खेतों में काम करते थे। विभिन्न प्रदेशों के आए हुए उनके शिष्यगण भी इस कार्य में गुरु महाराज को पूर्ण सहयोग देते थे। कर्त्तारपुर की यह बस्ती इतनी पवित्र और आनन्दमय थी कि वहाँ प्रत्येक व्यक्ति कृषि आदि का कार्य करने में अपने को कृतकृत्य समझता था। वहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के कल्याण और उत्थान में अपने जीवन को सार्थक समझता था। फ्रेडरिक पिनकाट के शब्दों में कर्त्तारपुर 'ईश्वर से भयभीत प्रजातंत्र के भ्रातृभाव' का अद्भुत उदाहरण था। इस बस्ती में ऐसा क्रान्तिकारी आदर्शवाद व्यवहार में प्रयुक्त हो रहा था, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति संसार में परमात्मा और परमात्मा में संसार को देखने की चेष्टा करता था। वहाँ मानवता के प्रति प्रेम और सेवाभाव परमात्मा की आराधना और भक्ति के साधन माने जाते थे। वहाँ का प्रत्येक व्यक्ति शरीर से तो काम करता था और मन से परमात्मा का स्मरण और चिन्तन। वे सदैव परमात्मा में निवास करते थे और परमात्मा उनमें निवास करता था। ऐसा था गुरु नानकदेव का उच्च और आदर्श परिवार। उनका परिवार जगत् की ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, संघर्ष आदि से मुक्त था। कर्त्तारपुर को गुरु नानक महाराज ने इस भूतल का स्वर्गलोक बना दिया। वहाँ के लोगों का आदर्श जीवन देखकर बड़े-बड़े स्वार्थी और अहंकारी भी द्रवीभूत होकर परिवर्तित हो जाते थे।

गुरु नानकदेव द्वारा संस्थापित परमात्मा के लंगर में स्त्री-पुरुष, युवा-वृद्ध, बालक, हिन्दू-मुसलमान, गरीब-अमीर, ऊँच-नीच सभी का एक समान स्वागत प्रत्येक क्षण होता था। दिन के प्रत्येक घण्टे में सभी के लिए भोजन-पानी तैयार रहता था। उसके साथ-साथ लोगों को परमात्मा के प्रेम का भोजन और शाश्वत जीवन का जल भी स्वच्छन्दतापूर्वक प्राप्त होता था। इस प्रकार गुरु नानकदेव के अखण्ड और अपार भाण्डार से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की निरन्तर पूर्ति होती थी। वहाँ भूखों को भोजन, प्यासों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पानी, बीमारों को सेवा, दुखियों को सान्त्वना अहर्निश प्रदान की जाती थी। कहने का तात्पर्य यह कि उस बस्ती में जाने से विविध तापों से शान्ति मिल जाती थी।

प्रत्येक दिन सभी लोग अमृत वेला—ब्राह्म मुहूर्त्त में उठ जाते थे। नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर स्नान करके गंभीर ध्यान में बैठ जाते थे। तदनन्तर वे लोग गुरु द्वारा रचित परमात्मा के पदों का गान करते थे। इसके बाद सभी लोग गुरु द्वारा रचित 'आसा दी वार' का पाठ करते थे। विश्व-कल्याण के लिए प्रार्थना करके सुवह की संगत समाप्त हो जाती थी। इसके अनन्तर सभी को प्रसाद मिलता था। तव सभी लोग अपने निर्धारित कार्य में लग जाते थे। कुछ लोग खेत में कार्य करने निकल पड़ते थे। कुछ रसोईघर में भोजन बनाने में सहायता देते, कुछ लोग चक्की पीसने में लग जाते, कुछ कातने-बुनने और कुछ सीने-पिरोने में लग जाते। इस प्रकार सभी लोग कार्य में तत्पर हो जाते। हाथों से वे काम करते, जिह्वा से प्रभु के नाम का जप और मन से भगवान् का चिन्तन करते। दोपहर को सभी लोग लंगर में प्रसाद पाने के लिए एकत्र होते। इस लंगर का सारा खर्च गुरु नानकदेव के भाण्डार से चलता था। कर्त्तारपुर के लोगों की कोई निजी सम्पत्ति नहीं थी। उस बस्ती के सभी लोगों की कमाई गुरु की संपत्ति मानी जाती थी। गुरु नानक के भाण्डार में अपनी कमाई समर्पित करने में लोगों को अपार आनन्द प्राप्त होता था। इस समर्पण में सभी अनिर्वचनीय शांति और आनन्द की अनुभूति करते थे। सभी लोग दिन भर किसी न किसी काम में जुटे रहते थे। संध्या को सब लोग फिर एकत्र होते थे। संध्याकाल कीर्तन और प्रार्थना करने के वाद, सब लोग साथ-साथ भोजन करते। भोजन करके के बाद सभी लोग रात्रि में विश्राम करने के लिए चले जाते। पर सोने के पूर्व सभी लोग शान्त होकर 'सोहिला' का पाठ करते थे। सोते समय अपने को परमात्मा की गोद में डालकर सुख और निश्चिन्तता की नींद सोते थे। कर्त्तारपुर के सारे लोग गुरु जी द्वारा निर्धारित इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करते थे। गुरु जी महाराज सभी लोगों को इसी प्रकार का जीवन बिताने के लिए अनुप्रेरित करते थे।

भाई मरदाना का कर्त्तारपुर में देहान्त हुआ। मरदाना ने अपना समस्त जीवन गुरु जी की सेवा में अर्पित कर दिया था। वह गुरु नानक के संगीत के साथ रवाव बजाता था। रवाव बजाने के साथ, वह उच्चकोटि का गायक भी था। गुरु महाराज की अधिकांश यात्राओं में साथ-साथ रहा। मरदाना के शरीर छोड़ने के पूर्व गुरु महाराज ने उससे जिज्ञासा की, 'भाई मरदाना, तुम्हारा शरीर जलाया जाय अथवा दफनाया जाय ?' जन्म से वह मुसलमान था, पर विश्वास से सिक्ख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतः इस सम्बन्ध में गुरु नानकदेव की इच्छा ही मरदाना की इच्छा थी। उसने गुरु जी के प्रश्न का इस प्रकार उत्तर दिया, 'आपकी कृपा से शरीर छूटने पर, जब मैं शाश्वत आनन्द में विलीन हो जाऊँ, तो चाहे इस शरीर को दफनाया जाय अथवा जलाया जाय। आपकी जैसी इच्छा हो, वैसा करें। मैं आपको और आपके भक्तों को सदैव प्रभु की महिमा का गीत सुनाता रहा, इसी नाते मुझ पर कृपा करके भवसागर से पार कर दीजिएगा।' गुरु महाराज ने मरदाना के ऊपर वरदहस्त रखकर उसे आशीर्वाद दिया और उसके शव को जलाने की आज्ञा दी। गुरु महाराज ने मरदाना के पुत्र को अपने दरबार का रबाब-वादक तथा संगीतज्ञ नियुक्त किया।

गुरु नानकदेव के सिक्ख विभिन्न सुदूर प्रदेशों में फैले हुए थे, फिर भी वे सब अपने को एक ही बहुत बड़े परिवार का अंग मानते थे। गुरु महाराज उस परिवार के परम स्नेही और वयोवृद्ध पिता के रूप में पूजे जाते थे। प्रत्येक सिक्ख, चाहे जिस प्रदेश में हो, अपने परिवार के कल्याण और उन्नति के लिए क्रियाशील था। भूखों को खिलाना, नंगों को वस्त्र देना, गृह-विहीनों को रहने की व्यवस्था करना, सेवा और सहानुभूति पूर्ण अन्य इसी प्रकार के कार्यों को करना, प्रत्येक सिक्ख के लिए शान्ति और आनन्द का विषय बन गया। प्रत्येक वर्ष उन स्थानों के सिक्खों की मण्डली आ-आकर कर्त्तारपुर एकत्र होती थी, जिन स्थानों की गुरु महाराज ने अपने पूर्ववर्ती जीवन में यात्रा की थी। कर्त्तारपुर सिक्खों का पवित्र तीर्थस्थान और आध्यात्मिक केन्द्र समझा जाने लगा। प्रत्येक आगन्तुक सिक्ख अपनी गाढ़ी कमाई का कुछ अंश गुरु के परिवार को अवश्य देता था। गुरु के भाण्डार में अन्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं की निरन्तर वृद्धि होती रहती थी। वे वस्तुएँ आवश्यकतानुसार लोगों को बाँट दी जाती थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय तैंतीस

प्रेम की कुछ और विजएँ

सन्त बालक—बूढ़ा

एक दिन कर्त्तारपुर में गुरु नानकदेव एक वृक्ष की छाया में बैठे थे। गाय चराते हुए एक बालक उनके पास से गुजरा। गुरु महाराज ने उस बालक की अलौकिक विचित्रताओं का निरीक्षण किया। भविष्य में इस बालक को गुरु नानक के प्रसिद्ध और आदरणीय शिष्य होने का गौरव प्राप्त हुआ। गुरु जी ने उस बालक को बुलाकर, अपने पास बैठाया और उसका नाम पूछा। बालक ने उत्तर दिया, 'गुरु जी महाराज, मेरा नाम बूढ़ा है और मैं रामदास का जाट हूँ।' गुरु जी ने उससे कहा, 'बस, अब जाओ और अपनी गायें चराओ।' किन्तु बालक अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ। उसने गुरु जी से कहा, 'किन्तु गुरु महाराज अपने आनंद की बात मुझे भी बताइए। आपने मुझे क्यों बुलाया?' गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'अभी, इतने ही से काम चल जायगा। जिस मन्तव्य से मैंने तुम्हें अपने पास बुलाया था, वह काम पूरा हो गया। तुम जा सकते हो।'

बूढ़ा गुरु महाराज की आज्ञा से वहाँ से चला गया। किन्तु उसने अपने गुरु को पहचान लिया। उसका हृदय प्रसन्नता से नाचने लगा। रात भर वह सो न सका। सारी रात उसकी कल्पना की आँखों के सम्मुख गुरु का महिमामय प्रसन्न मुखमण्डल दिखलाई देता रहा। वह बार-बार गुरु महाराज को प्रणाम करता रहा। दूसरे दिन बड़े तड़के कुछ मक्खन की भेंट लेकर वह गुरु जी के सामने उपस्थित हुआ। गुरु के दरबार में पहुँचकर अपनी तुच्छ भेंट गुरु के सामने रख दी और प्रार्थना की, 'गुरु महाराज, जन्म-मरण के बन्धन से मुझे छुटकारा देने की कृपा कीजिए।' गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'अभी तुम निरे बच्चे हो। जाओ और मौज करो।' उन्होंने सोचा, ऐसा गम्भीर विचार इस अवस्था के लड़कों में पाया जाना अति दुर्लभ है। 'प्यारे बच्चे, तुम मुझे पहले यह बताओ कि तुम में इस प्रकार का विचार कैसे उत्पन्न हुआ?' गुरु जी ने पूछा।

बूढ़ा ने उत्तर दिया, 'गुरु जी महाराज, वह इस प्रकार हुआ—'कुछ दिन हुए पठानों का एक गिरोह हमारे गाँव से गुजरा। उन्होंने हमारी सारी फसलें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़बर्दस्ती काट ली। उनमें पक्की और कच्ची सभी थीं। उन्होंने खेतों में कुछ भी न छोड़ा। हम सभी असहाय और लाचार थे। हमारी दिन-दहाड़े लूट हुई। पर उन अत्याचारियों का कुछ न कर सके। तब से यह विचार मेरे मस्तिष्क में सदैव मंडराता रहा है—'यदि हम सब पठानों से अपनी फसल न बचा सके, तो हमें मृत्यु के मुख से कौन बचा सकता है? मृत्यु तो पठानों से भी अधिक भयंकर और शक्तिशालिनी है। कौन जान सकता है कि किस समय मौत का पंजा जवान, बूढ़े या बच्चे पर पड़ेगा? कच्ची फसल के समान कौन और किस समय इस मृत्यु का शिकार होगा, इसे कौन बता सकता है?' इस विचार ने मुझे अशान्त, अस्थिर और अधीर बना दिया है। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुन रक्खा था। ज्यांही आपने मुझे अपने पास बुलाया, त्यांही मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मेरे भीतर के तत्त्व को किसी ने छू लिया है। मुझे पूर्ण बोध और विश्वास हो गया कि आप मेरे भय को दूर भगा देंगे। आप में इस भय को दूर करने की पूर्ण शक्ति है। इस प्रकार मेरी अभिलाषा की पूर्ति आप अवश्य करेंगे। यही कारण है कि आपकी आज्ञा के बिना मैं दुबारा आपके पास आया हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपनी अस्वीकृति देकर मुझे भगायेंगे नहीं। मुझे सदैव के लिए अपना दास बना लीजिए।'

गुरु महाराज ने उत्तर दिया, 'बच्चा होते हुए भी तुममें अनुभवी बूढ़े का दिमाग है। तुम बूढ़ों की-सी बातें भी कर रहे हो। अच्छा ठीक है, मेरे बुड्ढे बालक! मैं जो बता रहा हूं, उसे ध्यान से सुनो और सदा के लिए इस बात को अपने हृदय और आत्मा में धारण कर लो। परमात्मा मृत्यु से कहीं अधिक शक्तिशाली है। यदि तुम उसके सच्चे सेवक बन जाओ, तो मृत्यु का हाथ तुम्हें छू भी न पाएगा। अतएव सदैव परमात्मा का स्मरण करो। उस परमात्मा से प्रेम और भक्ति करो और दिल से उसकी सेवा करो। तुम्हारा शरीर परमात्मा के प्राणियों की प्रेमपूर्ण सेवा में सदैव लगा रहे। तुम्हारा शरीर, मन, हृदय, बुद्धि और आत्मा सर्वशक्तिमान् परमात्मा से निरन्तर युक्त रहें। तब तुम्हें मृत्यु से डरने की कोई संभावना न रहेगी।'

बूढ़ा भाई 'भाई बुड्ढा' हो गए। वे गुरु महाराज के साथ रहने लगे। वे परमात्मा की महिमा सम्बन्धी पदों का गान बड़े चाव के साथ सुनते थे। साथ ही गुरु महाराज एवं उनके भक्तों की सेवा तन, मन से करते थे। बहुत थोड़े समय में उनकी गणना गुरु नानकदेव के अनन्य और सम्माननीय शिष्यों में होने लगी। गुरु महाराज भाई बुड्ढा के ऊपर इतने अधिक प्रसन्न हुए कि गुरुगद्दी दिए जाने के अवसर पर गुरु अंगद के मस्तक पर केशरिया तिलक उन्हीं के हाथों से लगवाया। भाई बुड्ढा इस संसार में एक सौ सात वर्ष तक जिए। उन्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवनपर्यन्त प्रत्येक नवीन गुरु के सिंहासनारूढ़ होने पर उनके मस्तक पर टीका लगाने का सम्मान प्राप्त होता रहा। उन्होंने गुरु नानक के पाँच उत्तराधिकारी गुरुओं के मस्तक पर टीका लगाया।

शेख मालो और उबरे खाँ

गुरु नानकदेव की लम्बी यात्राएँ तो समाप्त हो गई थीं पर वे आस-पास के स्थानों में कभी-कभी भ्रमण कर आते थे। एक बार वे पड़ोस के क्षेत्र में भ्रमण करने निकले थे। उबरे खाँ और शेख मालो गहरे दोस्त थे। पहले शेख मालो को गुरु नानकदेव से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मालो को गुरु महाराज में अल्लाह का साक्षात् स्वरूप दिखलाई पड़ा। अतः उसने अपने को गुरु महाराज के चरणों में समर्पित कर दिया। गुरु महाराज ने उसके आध्यात्मिक नेत्र खोल दिए। वह एकदम परिवर्तित हो गया। उसे गुरु जी द्वारा परमात्मा के नाम का अद्भुत प्रसाद प्राप्त हुआ। इस प्रकार उसे परमात्मा के दरबार का मार्ग प्राप्त हो गया। उसने ऐसे आनन्द का रसास्वादन किया था, जिसे वह स्वर्ग के सम्पूर्ण ऐश्वर्यों एवं भोगों के रस से भी बदलने को तैयार नहीं था। वह परमात्मा के शाश्वत मिलन की पूर्ण आशा में था। इसके लिए वह निर्वाण पद भी छोड़ने को उद्यत था।

शेख मालो का मित्र, उबरे खाँ भी परमात्मा का खोजी था। वह अनेक पीरों और फकीरों के चरण में बैठकर, उनसे सत्संग कर चुका था, परन्तु उसके हृदय की अशान्ति दूर न हो सकी थी। परमात्मा के साक्षात्कार के लिए उसके हृदय और आत्मा में जो क्षुधा उत्पन्न हुई थी, उसे कोई निवृत्त न कर सका था। एक बार शेख मालो उबरे खाँ से मिला। शेख मालो के चरित्र, व्यवहार एवं बाह्य परिवर्तनों को उबरे खाँ ने तुरन्त भाँप लिया। उसने मन ही मन विचार किया, 'अच्छा, ऐसा प्रतीत होता है कि मालो किसी पहुँचे हुए फकीर से मिल चुका है, तभी तो वह प्रेम और प्रकाश के विलक्षण रंग में रँग गया है।' ऐसा सोचकर उसने अपने दोस्त मालो से पूछा, 'भाई मालो, तुम्हें यह आनन्दावस्था किस प्रकार प्राप्त हुई ?'

मालो ने उत्तर दिया, 'मैं अभी बता रहा हूँ, क्योंकि मित्र को मित्र के आनन्द में सम्मिलित होना चाहिए और विशेषकर उस मित्र को और भी, जिसमें उस आनन्द का अभाव है। पर मुझे इस बात की आशंका है कि आप उस आनन्द को पा सकेंगे, क्योंकि इस आनन्द और प्रकाश का स्रोत उस व्यक्ति से प्रवाहित हो रहा है, जो संयोग से हिन्दू वंश में उत्पन्न हुआ है। मुझे भय है कि आपका मुसलमानी अभिमान आपको आनन्द प्राप्ति से वंचित रखेगा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उबरे खाँ ने उत्तर दिया, 'जब मैं जानता हूँ कि मेरा वह विद्वान् दोस्त, जिसके धार्मिक जोश के कारण बहुत से लोग मुहम्मद पैगम्बर के झण्डे के नीचे आ चुके हैं, एक 'हिन्दू' को अपना बना चुका है, तो मैं अपना अहंकार कैसे कायम रख सकूँगा ? मैं उनके पास जाऊँगा, उनका दर्शन करूँगा और विनम्र होकर उनसे खुदा के सम्बन्ध में जिज्ञासा करूँगा।'

अतएव उबरे खाँ गुरु महाराज के पास उपस्थित हुआ। उस समय गुरु महाराज गाँव से कुछ दूरी पर विराजमान थे। मार्ग में जाते समय उबरे खाँ ने गुरु महाराज के ज्ञान और शक्ति की परीक्षा करने के लिए प्रश्नों की एक तालिका बना ली। उसने यह निश्चय कर लिया कि यदि गुरु जी इन प्रश्नों की कसौटी पर खरे उतरेंगे, तभी मैं उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान करूँगा, अन्यथा मैं अपनी मर्यादा का परित्याग नहीं करूँगा। किन्तु उबरे खाँ ने ज्योंही गुरु नानकदेव का तेजस्वी मुख देखा, त्योंही उसके सारे प्रश्नों की तालिका विस्मृत हो गई और अपनी प्रतिष्ठा एवं मर्यादा का सारा अहंकार ढह गया। गुरु महाराज की एक चितवन ने उबरे खाँ का हृदय उसी प्रकार फँसा लिया, जिस प्रकार शिकारी अपने काँटे में मछली फँसा लेता है। किन्तु इस फँसाव में उसे अलौकिक आनन्द की सिहरन प्रतीत हो रही थी। वह सीधे गुरु महाराज के पास पहुँचा और थोड़ा नमित होकर उनके पास बैठ गया।

गुरु महाराज ने खुली पुस्तक के समान उबरे खाँ के मन का अध्ययन कर लिया। अतएव उन्होंने उबरे खाँ से कहा, 'मेरे दोस्त, अपने को मजहब और शक्ति के अहंकार में मत उलझाओ। हिन्दू अथवा मुसलमान कोई भी परमात्मा को कम या अधिक प्यारा नहीं हो सकता। अतएव किसी खास धर्म के अनुयायी होने के कारण वह यह दावा नहीं कर सकता कि मैं बड़ा और श्रेष्ठ हूँ। निष्काम कर्म, प्रेम, सेवा, सहानुभूति, दया, सज्जनता आदि गुणों से मनुष्य के सच्चे चरित्र का निर्माण होता है। श्रेष्ठ चरित्र और सुन्दर आचरण के बल पर मनुष्य आध्यात्मिक विकास में प्रगति करता है और परमात्मा के दरबार में पहुँचता है। एक दूसरे से बड़ा बनने का झगड़ा बहुत ही विनाशकारी है। इससे हृदय का अहंकार बढ़ता है और आध्यात्मिक प्रगति का ह्रास होता है। मेरे दोस्त, परमात्मा का सदैव चिन्तन करो और प्रतिक्षण उसकी आराधना में लगो। तब तुम किसी से घृणा करना बन्द कर दोगे। घृणा करने के स्थान पर, तुम्हारे अन्तर्गत गंभीर और सर्वव्यापी प्रेम भर जाएगा। उस समय तुम्हें सारी सृष्टि परमात्मा-मयी दिखलाई पड़ने लगेगी। सृष्टि का प्रत्येक प्राणी तुम्हें परमात्मा की सन्तान प्रतीत होगी। उनके साथ तुम उसी प्रकार प्रेम करने लगोगे, जिस प्रकार परमात्मा से करोगे। सभी प्राणियों की निस्वार्थ सेवा करने लगोगे। संक्षेप में परमात्मा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साक्षात्कार के अनन्तर साधक का अहंभाव नष्ट हो जाता है और वह अत्यन्त विनीत और कोमल हो जाता है।'

उबरे खाँ को गुरु नानकदेव में पूर्ण गुरु के दर्शन हो गए। श्रद्धा-विनत होकर उसने गुरु जी के चरणों में प्रणाम किया। गुरु जी के चरणों का स्पर्श करते ही, उबरे खाँ के शरीर, मन और चित्त में आध्यात्मिकता की बिजली कौंध गई। अहंकारी उबरे खाँ कोमल, विनीत, श्रद्धालु, भक्त उबरे खाँ में परिणत हो गया। वह मनसा, वाचा एवं कर्मणा गुरु का दासानुदास हो गया। उसने गुरु के उपदेशानुसार प्रेम, सेवा एवं भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया। उबरे खाँ की पत्नी का हृदय भी, उसके पति के आध्यात्मिक प्रकाश की चिनगारी से प्रकाशित हो गया। गुरु के न देखने पर भी वह उनकी अनन्य शिष्या हो गई। गुरु महाराज की अदृश्य शक्ति ने बिना किसी इन्द्रियों के ज्ञान का अवलम्बन लिए, उसके हृदय में अनुपम प्रकाश भर दिया। उसका अन्तःकरण अत्यन्त कोमल और पवित्र हो गया। कोमल और पवित्र अन्तःकरण में परमात्मा का निवास होता है।

अब्दुल रहमान

उसी क्षेत्र में एक अत्यन्त दुरभिमानी और शक्तिशाली पीर रहता था, जिसका नाम अब्दुल रहमान था। उबरे खाँ को एक हिन्दू द्वारा शिष्यत्व ग्रहण करने की बात सुनकर, अब्दुल रहमान उसे खरी-खोटी सुनाने आया। किन्तु उबरे खाँ के हृदय में गुरु नानकदेव के शब्दवेधी बाण विंध चुके थे। उसका जीवन बदल चुका था। अतः अब्दुल रहमान की फटकार सुनकर वह तनिक भी विचलित नहीं हुआ। इसके बाद अब्दुल रहमान ने गुरु जी के सम्बन्ध में अनाप-शनाप बकना प्रारम्भ किया। पर फिर भी, उबरे खाँ ने अपना मानसिक संतुलन नहीं खोया। उसने परम शान्त भाव से अब्दुल रहमान को सलाह दी, 'आप उनके पास जाकर अवश्य मिलिए।' उबरे खाँ के शब्दों को सुनकर अब्दुल रहमान कड़ककर बोला, 'मैं उसे यहाँ से भगा दूँगा।' ऐसा कहकर वह चल पड़ा।

संयोग से उसी दिन गुरु नानकदेव अन्यत्र जाने को तैयार हुए। उन्हें एक अनन्य भक्त की उत्कट अभिलाषा बलात् अपनी ओर आकर्षित कर रही थी और साथ ही एक अन्य व्यक्ति को तीव्र आध्यात्मिक प्यास लगी थी, उसकी प्यास बुझाने के लिए वे और शीघ्रता में थे। उस समय वे कामदार रेशमी चादर ओढ़े थे। उस चादर को उबरे खाँ की पत्नी ने उपहार के रूप में भेंट करवाया था। उबरे खाँ भी गुरु महाराज के साथ ही चल रहा था। अब्दुल रहमान भी गाँव से आता हुआ दिखाई पड़ा। उबरे खाँ को अब्दुल रहमान की धमकी याद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आई। वह कुछ डर गया। गुरु महाराज ने उबरे खाँ की ओर देखकर कहा, 'मेरे दोस्त, साहस करो। जिस परमात्मा के हम सेवक हैं, वह हम लोगों का मार्ग प्रदर्शक और रक्षक है। अतः दोस्त, घबड़ाओ मत।'

पीर अब्दुल रहमान ने गुरु नानकदेव और उबरे खाँ की ओर देखा। उसने अपने मन में विचार किया—'कैसी रोबीली पोशाक पहने है, फिर भी लोग कैसे मूर्ख हैं कि इसे त्यागी साधु कहते हैं।' वह खड़ा होकर सोचने लगा—'क्या मैं इसी मार्ग से उसकी उपेक्षा करके, बिना उसकी ओर देखे चला जाऊँ, जिससे मुसलमान की स्वाभिमान-वृत्ति का पता चले, अथवा उससे प्रेम से मिलकर, उससे वार्ता कर, उसके शिष्यों की कही हुई बातों को आजमाऊँ ? साथ ही इस बात की भी परीक्षा हो जायगी कि उसके सम्बन्ध में उसके शिष्यों की कही हुई बातें कहाँ तक सही हैं ?' इन्हीं विचारों में निमग्न, अब्दुल रहमान को इसका भान नहीं हुआ कि गुरु महाराज उसके बहुत निकट आ गए थे। अकस्मात् ज्योंही उसकी दृष्टि गुरु महाराज के तेजस्वी मुख पर पड़ी, त्योंही उसके समस्त संकल्प समाप्त हो गए। वह अपने घोड़े से नीचे उतर पड़ा और उसने गुरु जी को प्रणाम किया। किन्तु ऐसा करने पर भी अभिमान ने उसका साथ नहीं छोड़ा। वह सोचने लगा, 'मैं इस साधु से कुछ प्रश्न पूछूँ, अथवा बिना कुछ कहे सुने चला जाऊँ ?' गुरु महाराज ने उसके अन्तःकरण में प्रविष्ट होकर, उसके विचार जान लिए और उससे कहा, 'मेरे दोस्त, बाह्य वेशभूषा देखकर उलझो मत, भ्रम में न पड़ो। सच्चा त्याग तो हृदय में रहता है बाहरी वेशभूषा में नहीं। बाह्य लक्षणों से आन्तरिक त्याग की प्रवृत्ति नहीं जानी जा सकती। जो हृदय सांसारिक प्रपंचों और प्रलोभनों से मुक्त और निर्लिप्त है, उसके लिए किसी प्रकार की वेश-भूषा, कोई अन्तर नहीं उत्पन्न कर सकती। इन सब वस्तुओं की ओर उसकी दृष्टि नहीं जाती। उसे तो सभी वेशों में सभी मनुष्यों और सभी धर्मों में एक ही खुदा नज़र आता है।'

गुरु महाराज की अनुभवयुक्त वाणी से पीर अब्दुल रहमान का सारा अहंकार गलकर पानी हो गया। अत्यन्त विनम्र होकर उसने प्रार्थना की, 'मुझे ज्ञान दीजिए, प्रेम दीजिए, भक्ति दीजिए और साथ ही नवीन जीवन प्रदान कीजिए।' ऐसा कह कर वह गुरु के चरणों पर गिर पड़ा। गुरु महाराज ने उसे आशीर्वाद देकर नवीन जीवन प्रदान किया। उसने गुरु महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया और वह मानवता का पुजारी बन गया।

F 15/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय चौंतीस

ज्योती-ज्योति में समाहित होना

कर्त्तारपुर के निवास के समय गुरु नानकदेव ने प्रेम की और भी अनेक विजय प्राप्त कीं। उनमें से हम केवल एक का उल्लेख करेंगे, क्योंकि सिक्खों के निर्माण और संगठन में इस विजय का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बाबा लहना का जन्म संवत् १५६१ विक्रमीय, वैशाख सुदी १ को फिरोजपुर जिले के 'मत्ते की सरांय' नामक स्थान में एक समृद्ध खत्री परिवार में हुआ था। उनका विवाह अमृतसर जिले के 'खडूर' के निवासी एक धनी परिवार में हुआ था। मत्ते की सरांय में उनकी सारी धन-सम्पत्ति डाकुओं द्वारा लूट ली जाने पर, बाबा लहना खडूर में आकर बस गए। वे दुर्गा के उपासक थे। वे धनी-मानी और शक्तिशाली एवं धर्मपरायण व्यक्ति थे। जन्मजात नेतृत्व की प्रतिभा के कारण, दुर्गा के अन्य उपासकों द्वारा नेता मान लिए गए। वे प्रति वर्ष दुर्गा के उपासकों का एक दल जुलूस के रूप में लेकर काँगड़ा जिले की ज्वालामुखी देवी के मन्दिर पर जाया करते थे। वहाँ पर्वत से ज्वालामुखी की जो लपट निकलती थी, उसी को भोली-भाली जनता देवी के रूप में मानकर पूजती थी।

अपने उपासना-कक्ष में गूँथे हुए आटे के दीपक में वे घी जलाते थे। दीपक के प्रकाश को वे ज्वालामुखी देवी का प्रतीक मानकर आराधना करते थे। भक्ति भाव में वे घंटों दीपक के प्रकाश को देखते रहते। कभी-कभी उनके अन्तःकरण का प्रकाश उनकी आराध्या देवी के प्रकाश से मिलकर एक हो जाता था। आनन्दानुभूति में वे भाव-विभोर होकर दीपक के चारों ओर नृत्य करने लगते थे।

बाबा लहना इस प्रकार अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। उधर गुरु नानकदेव भी बाबा लहना की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके मन में यह अभिलाषा थी कि गुरु-गद्दी का भार किसी अद्वितीय पुरुष के कंधे पर डाला जाय। उनकी अन्तर्दृष्टि ने बाबा लहना के सम्पूर्ण गुणों को देख लिया था। अन्त में गुरु नानकदेव और बाबा लहना के मिलन का संयोग एक अनोखे माध्यम से हुआ।

खडूर गांव में गुरु नानकदेव का एक विनम्र शिष्य रहता था, जिसका नाम था—भाई जोधा। एक दिन प्रातःकाल बाबा लहना स्नान करने जा रहे थे। वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding-IKS-MoE-Grant-2

रात भर देवी की आराधना में जगे थे। दीपक के प्रकाश में दुर्गा की ज्योति के दर्शन में उन्होंने अपनी सारी रात बिताई थी। मार्ग में उन्होंने भाई जोधा के मुख से गुरु नानक के एक पद का गायन सुना। पद के शब्दों ने बाबा लहना के हृदय पर चोट की। उनके हृदय का सात्विक तत्त्व बड़े वेग से जग पड़ा, वे चुपचाप खड़े होकर भाई जोधा का गायन सुनने लगे। गान समाप्त होने पर बाबा लहना ने भाई जोधा से पूछा, 'भाई जोधा, जो हृदयस्पर्शी पद आप गा रहे थे, वह किसका बनाया हुआ है ?' भाई जोधा ने उत्तर दिया, 'यह परमात्मा का शब्द है। हम लोगों के कल्याण के लिए गुरु नानकदेव इसे इस वसुंधरा पर लाए हैं।'

'गुरु नानकदेव' का नाम सुनकर बाबा लहना चौंक उठे। उनके नाम का गंभीर, किन्तु अज्ञात सम्बन्ध बाबा लहना से पहले से ही जुड़ा हुआ था। गुरु जी के एक अनन्य शिष्य के द्वारा इस नाम के मधुर उच्चारण ने बाबा लहना के विचारों और भावों को उद्वेलित कर दिया। परिणामस्वरूप वे महान् भाव से निमग्न हो गए। थोड़ी देर के बाद उन्होंने भाई जोधा से कहा, 'भाई जोधा, इस पद को मुझे याद करा दो।' इससे बढ़कर भाई जोधा को और कौन-सी प्रसन्नता हो सकती थी कि गुरु महाराज का पद एक सुयोग्य अधिकारी को बताया जाय ? बाबा लहना ने उस पद को याद कर लिया। वे सारे दिन उस पद को बड़े उल्लास से गाते रहे।

जिस महान् पुरुष के पद ने बाबा लहना के हृदय को सम्मोहित कर लिया था, उससे साक्षात्कार के लिए उनके हृदय में उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हुई। ज्वालामुखी देवी के मन्दिर में जब वार्षिक समारोह का समय आया, तो बाबा लहना ने अपने साथियों से अनुरोध किया, 'भाई, इस बार जब हम लोग ज्वालामुखी देवी का दर्शन करने चलें तो कर्त्तारपुर से होते हुए चलें।' सभी लोगों ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया। तीर्थयात्रा में जब तीर्थयात्रियों का समुदाय कर्त्तारपुर के पास रुका, तो बाबा लहना, गुरु महाराज के दर्शन करने चल पड़े। कर्त्तारपुर से थोड़ी दूर पर बाबा लहना ने एक वृद्ध को देखा। वृद्ध महाशय से जिज्ञासा की, 'भाई, गुरु नानक महाराज का निवासस्थान कहाँ है ?' वृद्ध ने मुस्करा कर उत्तर दिया, 'मेरे साथ-साथ चलिए, मैं आपको उनके पास पहुँचा दूँगा।' वृद्ध जी आगे-आगे चले और घोड़े पर सवार भाई लहना उनके पीछे-पीछे। धर्मशाला के मुख्य फाटक पर पहुँचकर वृद्ध जी ने लहना से कहा, 'अब आप अपने घोड़े से उतर जाइए। घोड़ा यहीं एक खूँटे में बाँध दीजिए और धर्मशाला में प्रवेश कीजिए। वहाँ आपको गुरु जी का दर्शन होगा !'

बाबा लहना धर्मशाला में प्रविष्ट हुए। वहाँ उनकी गुरु जी के एक शिष्य से भेंट हुई, जो गुरु जी के लंगर में कुछ कार्य करने जा रहा था। उस शिष्य ने बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहना को उस कमरे में जाने का संकेत किया, जहाँ गुरु नानकदेव विराजमान थे। बाबा लहना बताए हुए कमरे में घुसे। वहाँ का दृश्य देखकर वे चक्कर में पड़ गए। उन्होंने देखा कि जिन वृद्ध महाशय ने उन्हें रास्ता बताया था, वे ही गुरु नानकदेव के रूप में यहाँ विराजमान हैं। उन्होंने यह विचार किया कि मैंने गुरु महाराज से अत्यन्त अशिष्टता का व्यवहार किया। वे वृद्ध होते हुए भी पैदल आए और मैं घोड़े पर सवार होकर आया। इस विचार से वे अपने ही ऊपर परम खिन्न और क्षुब्ध हुए। वे ग्लानि और पश्चात्ताप से भरकर पानी-पानी हो गए। गुरु नानकदेव ने उनकी मनोदशा तुरन्त ताड़ ली और बाबा लहना को इस प्रकार सान्त्वना दी, 'अरे भाई, परेशान मत हो। तुम यहाँ अतिथि होकर मेरे पास आए। साथ ही इस स्थान से और यहाँ के लोगों से अपरिचित थे। इसी लिए मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। अतः तुम क्षुब्ध और खिन्न मत हो।' बाबा लहना कुछ बोल न सके। गुरु नानकदेव ने उन्हें अपने पास बैठाकर पूछा, 'भाई तुम्हारा नाम क्या है ?'

उन्होंने उत्तर दिया, 'मेरा नाम लहना है। मैं खडूर का निवासी हूँ।'

गुरु जी महाराज ने कहा, 'बहुत ठीक, मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ। आखिरकार, तुम अपना वह 'लहना' लेने मेरे पास आ ही गए, जो मुझ पर था। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।' इसके अनन्तर गुरु जी ने बाबा लहना को परमात्मा का वास्तविक स्वरूप समझाया और यह भी बताया कि उसके और उसकी सृष्टि के प्रति मनुष्य के क्या कर्त्तव्य हैं। परिणाम यह हुआ कि बाबा लहना ने उन घुँघुरुओं को उतार फेंका, जो उन्होंने अपने टखनों और कलाइयों में पहन रखे थे। उन घुँघरुओं की सुमधुर ध्वनि की लय पर वे देवी के सम्मुख नृत्य किया करते थे। उन्हें अब उनकी असार्थकता ज्ञात हो चुकी थी। उन्होंने अपने साथियों के पास जाकर ज्वालामुखी देवी के दर्शन से अपनी छुट्टी माँग ली। बाबा लहना ने अपने को मनसा, वाचा, कर्मणा गुरु नानकदेव के चरणों में समर्पित कर दिया था, अतः उन्हें अब देवी के पास जाने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। उन्होंने गुरु नानकदेव में अपनी आत्मा और परमात्मा का दर्शन कर लिया। इससे उनकी सारी दौड़-धूप समाप्त हो गई। गुरु नानकदेव के चरणों का स्पर्श, उनके मुखमण्डल की दिव्य प्रभा एवं उनकी रहस्यभरी और गंभीर चितवन तथा मीठी वाणी से बाबा लहना को आध्यात्मिक सान्त्वना प्राप्त हो गई। यह गुरु महाराज और बाबा लहना के बीच का अर्द्ध-विस्मृत सम्बन्ध सदैव के लिए जुड़ गया। बाबा लहना का हृदय अलौकिक आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण हो गया।

इसके बाद गुरु महाराज ने बाबा लहना को राय दी, 'अब तुम अपने घर

१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाकर परिवार, इष्ट-मित्रों से मिल आओ।' उन्होंने महाराज की आज्ञा शिरोधार्य कर ली। किन्तु खडूर में केवल एक दिन रुकने के बाद, वे गुरु महाराज की सेवा में पुनः उपस्थित हुए, क्योंकि वे अपना मन और हृदय यहीं छोड़कर गए थे। उन्होंने इसे भली-भाँति निरीक्षण कर लिया था कि गुरु नानकदेव के पवित्र उपनिवेश में उनके सभी शिष्यगण किस प्रकार परस्पर मिलजुल कर आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वहाँ वे अपने जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ करने वाले थे। इसी भावना से प्रेरित होकर बाबा लहना ने अपने सिर पर नमक का भारी बोझा लादकर, सारा रास्ता पैदल ही तय किया। उस बोझे के ले जाने के लिए, न तो उन्होंने कोई कुली ही किया और न अपने आराम के लिए किसी घोड़े की ही सवारी की। बाबा लहना के सिर पर नमक के इतने वजनी गट्ठर को देखकर सारे सिक्खों की वृद्धा माता सुलक्खनी देवी अत्यधिक द्रवीभूत हुई। उन्होंने बाबाजी के साथ पुत्रवत् व्यवहार किया और उनकी सेवा-परिचर्या की।

गुरु नानकदेव को अपने सिक्खों के निमित्त खेत में स्नेहपूर्वक कार्य करते हुए सुनकर बाबा लहना तुरंत उनके पास उपस्थित हुए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि गुरु जी महाराज अपने सिक्खों को लेकर धान का खेत निरा रहे हैं। उन्होंने सबसे पहले गुरु महाराज को साष्टांग प्रणाम किया तथा औरों की भाँति वे भी निराने के काम में जुट गए। निराने में उनके सारे कीमती रेशमी वस्त्रों पर धब्बे पड़ गए। किन्तु उन्हें अब वस्त्रों के खराब होने की तनिक भी फ़िक्र न थी। अब उन्होंने सेवा को मूलमंत्र मान लिया था। थोड़ी देर बाद गुरु जी ने बाबा लहना को आदेश दिया, 'भाई लहना, निराना बन्द करो। घास-फूस का गट्ठर पशुओं के चारे के लिए ले चलो।' बाबा ने गुरु जी की आज्ञा शिरोधार्य की। गुरु जी के आदेशानुसार गीले कीचड़ से सने घास-फूस का एक गट्ठर बाबा लहना के सिर पर लाद दिया गया। कीचड़ से भरी घास के गट्ठर से कीचड़ गिरने से उनकी कीमती वेशभूषा में स्थान-स्थान पर धब्बे पड़ गए। पर वेशभूषा खराब होने का ध्यान उनके मन में शेष ही न रह गया था। उन्हें तो सर्वत्र गुरु और परमात्मा का दर्शन हो रहा था। वे सेवा को ही परम धर्म मान बैठे थे। माता सुलक्खनी ने बाबा लहना को दुबारा भारी बोझ लाते हुए देखा और यह भी देखा कि गीली घास के गट्ठर से मिट्टी गिरने से उनके कीमती वस्त्रों पर धब्बे पड़ गए हैं।

शाम को जब गुरु जी महाराज खेतों पर काम करके लौटे, तब माता सुलक्खनी ने बाबा लहना की ओर संकेत करके कहा, 'महाराज, आपने इस सुकुमार नवयुवक का कितने अजीब ढंग से स्वागत किया है। यह बेचारा खडूर से नमक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का इतना भारी गट्ठर अपने सिर पर लादकर लाया है। थोड़ी देर भी नहीं बीतने पाई कि आपने गीले कीचड़ से सनी घास का भारी बोझ इसके सिर पर दुबारा लाद दिया। जरा आप देखें तो, गीले कीचड़ से इसके कीमती वस्त्र खराब हो गए हैं।'

गुरु नानकदेव ने उत्तर दिया, 'आप भूल कर रही हैं। लहना अपने सिर पर नमक और घास का भारी बोझ लादकर नहीं लाया है, बल्कि इसने मानवता के दुःखों का भारी बोझा अपने सिर पर लादा है। ये कीचड़ के धब्बे नहीं हैं, बल्कि पवित्र कुंकुम के ऐसे चिह्न हैं, जो इसे परमात्मा का चुना हुआ विशेष व्यक्ति सिद्ध करते हैं। इन कीचड़ के धब्बों द्वारा दुःखी आत्माओं के रक्षक के रूप में इसका राज्याभिषेक किया गया है।'

बाबा लहना ने कर्त्तारपुर में गुरु नानकदेव और उनके सिक्खों की निष्काम भाव से सेवा की। उनका जीवन सिक्ख धर्म का प्रत्यक्ष और जीवन्त उदाहरण माना गया। उन्होंने मनसा, वाचा, कर्मणा अपने को गुरु की सेवा में समर्पित कर दिया। वे विश्वास और प्रेम के साक्षात् प्रतिरूप माने जाने लगे। उन्होंने गुरु और परमात्मा के अभेद का दर्शन किया। उन्होंने अपनी दृष्टि, मन, वाणी, क्रिया, विचार और भावना सभी से गुरु को परब्रह्म के रूप में माना। उन्होंने गुरु के सम्बन्ध में अपना विचार इस प्रकार अभिव्यक्त किया, 'परमात्मा का सच्चा सेवक वही कहा जा सकता है, जिसने अपने को गुरु के अलौकिक प्रेम में पूर्णतया विलीन कर दिया है।'

प्रेम की इसी उत्कट भावना से बाबा लहना ने गुरु नानकदेव की सेवा की। इसी भावना से उन्होंने गुरु की कही और अनकही आज्ञाओं का पालन किया। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं, भावनाओं, विचारों एवं क्रियाओं को गुरु की मर्जी में समाहित कर दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि बाहरी रूप बाबा लहना का अपना था, पर भीतरी रूप से वे गुरु नानकदेव के स्वरूप ही हो गए थे। गुरु नानकदेव के भ्रू-संचालन मात्र से उनके मन का भाव पूर्ण रूप से समझ जाते थे। अन्य व्यक्तियों की दृष्टि में जो कार्य अत्यन्त कठिन, असम्मानजनक और घृणास्पद प्रतीत हो सकते थे, उन्हें बाबा लहना आनन्दपूर्वक आनन-फानन में कर डालते थे। उनका जीवन अपना जीवन नहीं रह गया, बल्कि गुरु की 'मर्जी' का जीवन हो चुका था। इसी अलौकिक प्रेम के कारण गुरु नानकदेव बाबा लहना को अपने पुत्रों से भी अधिक प्रेम करते थे। कुछ दिनों के बाद गुरु नानकदेव और बाबा लहना एक हो गए। गुरु जी ने बाबा लहना को अपना अंग माना और उन्हें 'अंगद' नाम से संबोधित किया।

गुरु नानकदेव का नाम समीप और सुदूर के प्रदेशों में घर-घर में व्याप्त हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। जहाँ-जहाँ गुरु महाराज ने अपने पूर्ववर्ती जीवन में यात्राएँ की थीं, उपदेश दिए थे, सिक्ख बनाए थे, वहाँ-वहाँ के सिक्ख समय-समय पर आकर गुरु जी के चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित करते थे। एक उदाहरण देना असंगत न होगा। गुरु नानकदेव के सिक्खों में अनेक सूफी फकीरों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। मुल्तान के पीर बहाउद्दीन गुरु नानकदेव के शिष्य और अनन्य भक्त थे। वे वृद्ध हो चुके थे। उन्हें प्रतीत हुआ कि उनके देहान्त का समय पास आ गया है। उन्हें मृत्यु का भय नहीं था, क्योंकि गुरु नानकदेव पीर साहब को मृत्यु के भय से पहले ही मुक्ति दे चुके थे। किन्तु एक भय से वे बहुत परेशान होने लगे कि गुरु का वियोग वे किस प्रकार सहन कर सकेंगे? इस विचार से वे अत्यधिक दुखी और निराश थे। पीर साहब ने अपने अनुयायियों में एक अत्यन्त प्रिय को गुरु नानकदेव के पास भेजा। पीर साहब के अनन्य भक्त ने गुरु जी के पास जाकर उनकी प्रार्थना सुनाई, 'ओ, सच्चे गुरु, मैंने अपना माल-असबाब लाद लिया है। मैं अब दूसरे लोक में यात्रा करने वाला हूँ। पर इस विचार से मैं अत्यधिक दुखी और हताश हूँ कि आप मेरे साथ नहीं रहेंगे। मेरी यात्रा के लिए कुछ ऐसा प्रबन्ध कर दीजिए, जिससे मुझे किसी प्रकार की चिन्ता न रहे। यदि आपका पल्ला पकड़कर मुझे परलोक जाना पड़े, तो कितना सुन्दर हो!'

गुरु महाराज ने पीर साहब की प्रार्थना सुनकर उनके पास सान्त्वनापूर्ण उत्तर भेज दिया। इस उत्तर में पीर साहब के अज्ञात भय का गुरु जी ने निराकरण करके उन्हें ढाढ़स बँधाया था—'जिस व्यक्ति ने इस संसार में सेवा, प्रेम और भक्ति का जीवन व्यतीत किया है, परमात्मा के अखण्ड ध्यान में अपनी चित्तवृत्तियों को समाहित किया है, उसे किस प्रकार भय हो सकता है? ऐसा व्यक्ति मरता नहीं। वह अपने सच्चे और शाश्वत निवासस्थान में प्रतिष्ठा के साथ जाता है, वह परमात्मा में विलीन हो जाता है। अतः ऐसे व्यक्ति को किसी प्रकार का भय नहीं होना चाहिए। मैं भी जल्द ही आने वाला हूँ, क्योंकि मेरी संसार यात्रा भी समाप्त हो चुकी है। छः सप्ताह के भीतर मैं भी इस संसार से कूच करूँगा।'

पीर ने गुरु जी के पत्र को बड़ी श्रद्धा से अपने मत्थे पर चढ़ा लिया, जिसमें प्रेम और आशा का सन्देश था। उसने बार-बार कर्त्तारपुर की ओर प्रणाम किया और पत्रवाहक को अनेक आशीर्वाद दिया। तब उसने अपने अनुयायियों से इस प्रकार कहा, 'चालीस दिनों का वियोग और सहन करना पड़ेगा। मैं कितना अधिक प्रसन्न हुआ होता, यदि गुरु महाराज भी मेरे साथ चलते और परलोक में मेरा मार्ग-प्रदर्शन करते।'

गुरु महाराज ने भलीभाँति समझ लिया कि परमात्मा के शाश्वत मिलन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन समीप आ रहा है। उन्होंने बाबा लहना—गुरु अंगददेव को गुरु-गद्दी पर प्रतिष्ठित किया। बाबा बुड्ढा ने केशरिया तिलक उनके मस्तक पर लगाकर उन्हें अभिषिक्त किया। गुरु नानकदेव ने पाँच पैसे और एक नारियल समर्पित कर बाबा लहना का गुरु अंगददेव के रूप में अभिनन्दन करके, उनके चरणों में प्रणाम किया। इस प्रकार गुरु नानकदेव की अन्तरज्योति गुरु अंगददेव में विराजमान हुई। गुरु नानकदेव गुरु अंगद में प्रविष्ट होकर दूसरे नानक हुए। इस भाँति गुरु नानकदेव ने बाबा लहना से कहा हुआ अपना 'लहना' चुकाया। गुरु नानकदेव ने गुरु अंगददेव को अपना ज्ञान प्रकाश एवं भक्ति प्रदान करके, उन्हें लोगों का आध्यात्मिक मार्ग-निर्देशक नियुक्त किया। आश्विन वदी पंचमी, संवत् १५९६ विक्रमीय को गुरु अंगददेव को गुरु-गद्दी प्रदान की गई।

गुरु महाराज के संसार से विदा होने का समय समीप आ गया। वे स्वच्छ और आरामदेह विस्तर पर लेट गए। वे पति-परमात्मा से मिलने के उत्सुक थे। प्रियतमा, प्रियतम के गले लगने जा रही थी। उन्होंने अपने एकत्र शिष्यों को एक गीत सुनाया, जिसका भाव निम्नलिखित है—

'प्रियतम से मिलने का संवत् और शुभ दिन पहले से लिखा रहता है, अर्थात् इस संसार से विदा होने का समय पास आ गया है। हे सज्जनो, आप सभी मिलकर तेल चुवाइए और आशीर्वाद दीजिए कि मेरा अपने साहब—प्रियतम से मिलन हो।' (कन्या के अपने पति के घर में प्रवेश करते समय, मित्र सम्बन्धी आदि द्वार पर तेल चुवाते हैं और सुहाग के गीत गाते हैं।)

'व्याह का बुलावा घर-घर में नित्य पहुँचता रहता है। तात्पर्य यह कि मौत के बुलावे लोगों तक नित्य पहुँचते रहते हैं। नानक कहते हैं कि हमें बुलाने वाले—परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, क्योंकि पति से मिलन का दिन बिलकुल पास पहुँच गया है।'[1]

इस प्रकार ज्योती ज्योति में समाहित होते समय भी गुरु नानकदेव अपने मधुर कण्ठ से गान करते गए और लोगों को उपदेश देते गए। गुरु अंगददेव को गुरु-गद्दी पर बैठाने के ठीक पाँच दिन बाद गुरु जी ज्योती ज्योति में लीन हुए। यह घटना आश्विन वदी १०, संवत् १५९६ विक्रमीय को घटित हुई।

गुरु नानकदेव के ज्योती ज्योति में मिलने पर सभी सिक्ख शोकाकुल हो उठे। गुरु अंगददेव के शोक की सीमा न रही। गुरु महाराज के विछोह में वे निराश-भाव में करुण चीत्कार कर उठे। उनका शोकोद्गार इस प्रकार है—

---

१. संवति साहा....दिह आवंनि—गउड़ी दीपकी, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जिस पिआरे सिउ नेहु तिसु आगे मरि चलिए।
धृगु जीवणु संसारि, ताकै पाछै जीवणा ॥'[1]

भावार्थ यह है, 'जिस अनन्य प्रेमी से सच्चा स्नेह हो जाय, उसके जीते-जी (स्वयं) मर जाना श्रेयस्कर है। उस प्रेमी के संसार से चले जाने के बाद, जीवित रहना धिक्कार योग्य है।'

किन्तु गुरु नानकदेव की अन्तिम सीख से सबने उस महान् शोक में धैर्य धारण करने का प्रयास किया।

गुरु नानकदेव की सभी प्रचलित जीवनियों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि उनके देहावसान के पूर्व हिन्दू और मुसलमान दोनों सिक्खों में इस बात के लिए संघर्ष हुआ कि उनका शव जलाया अथवा दफनाया जाय। हिन्दू सिक्ख अपने पूर्व संस्कारानुसार उनका शव जलाना चाहते थे और मुसलमान सिक्ख दफनाना। मामला गरम होने देखकर उनमें से एक सिक्ख ने सलाह दी, 'इस मामले को गुरु महाराज द्वारा ही क्यों न निर्णय करा लिया जाय?' सब लोग निर्णय के लिए गुरु महाराज के पास पहुँचे। गुरु महाराज ने उनका समाधान इस प्रकार किया, 'दोनों पक्ष के लोग मेरी दाईं और बाईं ओर पृथक्-पृथक् ताजे फूल रक्खें। सबेरे जिस पक्ष का फूल ताजा पाया जाय, उसे यह अधिकार होगा कि मेरे शव का अन्तिम संस्कार अपने विधानानुसार करे।'

गुरु जी के आदेश का पालन दोनों वर्ग के सिक्खों ने किया। दूसरे दिन प्रातः-काल गुरु महाराज के शरीर पर से चादर हटाई गई, तो उनका शरीर गायब था। प्रकृति की गुप्त रहस्यमयी शक्ति ने गुरु जी के शरीर को पंचभूतों में मिला दिया था। दोनों पक्षवालों के फूल जैसे के तैसे ताजे निकले। अतः दोनों पक्ष-वालों का उन फूलों पर समान अधिकार था। एक पक्षवालों ने उन फूलों को दफना दिया और दूसरे पक्षवालों ने उनका अग्नि-संस्कार किया। उस स्थान पर दोनों ने गुरु नानकदेव की स्मृति में दो स्मारकों का निर्माण कराया। किन्तु रावी नदी ने उन स्मारकों को अपने में मिला लिया। कुछ समय के पश्चात् एक भक्त शिष्य द्वारा दूसरा स्मारक बनवाया गया। यह अब भी स्थित है और बाद में गुरु नानकदेव के एक प्रपौत्र ने रावी नदी के बाएँ तट पर एक दूसरा स्मारक निर्मित कराया और इसका नाम रक्खा---'देहरा बाबा नानक।'

इस प्रकार सत्तर वर्ष, पाँच महीने और सात दिन सेवामय, कर्म प्रधान, भक्ति-संयुक्त जीवन व्यतीत करने के अनन्तर, परमात्मा का वह वरद् पुत्र, पर-मात्मा में विलीन हो गया। गुरु नानकदेव ने अपने समस्त गुण और अपनी

---

१. सिरी राग की वार, महला २

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समस्त विशेषताएँ—त्याग, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, निष्काम कर्म साधना, सहज समाधि, सेवा, प्रेम, मानवता, सहिष्णुता, सहृदयता, दया, करुणा, ममत्व—गुरु अंगददेव में प्रतिष्ठित कर दीं। अपने अन्तःकरण की प्रचण्ड ज्योति से उनके अन्तःकरण को प्रज्वलित कर दिया। गुरु नानकदेव ने बार-बार उद्घोषित किया था, 'अनन्त, अखण्ड, सत्य, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान् परमात्मा ही मेरा गुरु और उपदेशक है।' जब अत्यन्त परिश्रमपूर्ण जीवन व्यतीत करने के अनन्तर अपने गुरु—परमात्मा से एक हो गए, तो बाबा लहना अपनी कठोर साधना, अनन्य भक्ति एवं गुरु तथा परमात्मा की कृपा से अपने गुरु के साथ एक हो गए, बल्कि गुरु नानक ही हो गए। अतएव वे द्वितीय गुरु नानक के रूप में अवतीर्ण हुए। उन्होंने गुरु नानकदेव के समस्त कार्यों का जीवनपर्यन्त संपादन किया और मानव सेवा के माध्यम से लोगों में आध्यात्मिक जागरण किया। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय पैंतीस

गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व की झाँकी

हम गुरु नानकदेव के जीवन में यह देख चुके हैं कि परमात्मा के पावन आदेश से वे किस प्रकार जगत्-कल्याण में प्रवृत्त हुए और किस प्रकार उन्होंने मृतप्राय मानवता में नव जीवन का संचार किया। जो व्यक्ति घृणा, द्वेष, अविश्वास और निराशा की प्रबल अग्नि में दग्ध हो रहे थे, उन्हें गुरु जी ने किस प्रकार अपने अलौकिक प्रभाव से उस अग्नि से निकालकर, प्रेम, सहृदयता, सद्भावना, विश्वास और आशा का अमृत पिलाया। गुरु जी ने देश-देशान्तरों में भ्रमण कर लोगों के आध्यात्मिक भाव को जगाकर, उन्हें सच्चा आदर्श मानव बनाया। उन्होंने 'ईश्वर से भयभीत प्रजातंत्रवाद' का सच्चा आदर्श जगत् के सम्मुख रक्खा। वे अपने जीवन की अन्तिम साँसों तक जगत् के अन्याय, अत्याचार, तमोगुण, स्वार्थपरायणता, संकीर्णता, पाखण्ड, रूढ़िवादिता, शोषण-प्रवृत्ति से जूझते रहे। परमात्मा की मर्जी में उन्होंने अपनी इच्छा, क्रिया, भावना को मिला दिया। संसार में कोई पृथक् का 'अहं' शेष नहीं रह गया। उनकी सारी क्रियाएं जगत् के कल्याण के निमित्त थीं। अब हमें गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व की उस झाँकी पर दृष्टि उठानी चाहिए जिसके बल पर उन्होंने नृशंस और क्रूर बादशाहों, ठगों, नर-भक्षकों, विद्वानों, दार्शनिकों एवं धार्मिकों को अपने वशीभूत किया।

सद्गुरु

गुरु नानकदेव परमात्मा द्वारा नियुक्त जन्मजात सद्गुरु थे। वे संसार के लोगों को परमात्मा के ऐश्वर्य, महत्ता, सर्व-व्यापकता, सर्व-शक्तिमत्ता, अंतर्यामित्व का संदेश देकर, उन्हें उसके सान्निध्य के आनन्द की अनुभूति कराना चाहते थे। गुरु नानक महाराज का सदैव परमात्मा में निवास था और इससे उनकी वाणी, शिक्षा और उपदेश, परमात्मा की वाणी, शिक्षा और उपदेश बन गए थे। जो गुरु आचरणयुक्त होता है, उसकी शिक्षा पात्र के हृदय में तीर-सी लगती है। गुरु नानकदेव के आचरण और व्यवहार से उन सभी लोगों को झुकना पड़ा, जो उनके सम्पर्क में आए। उन्होंने लोगों को परमात्म-रस का आस्वादन कराके सांसारिक प्रलोभनों एवं वासनाओं से उन्हें मुक्ति दिलाई। एक बार परमात्म-रस का सच्चा आस्वादन जिसने कर लिया, उसे संसार के सभी रस नीरस और फीके प्रतीत होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव की शिक्षाएँ और उपदेश सम्प्रदाय विशेष तक ही सीमित नहीं थे, प्रत्युत् वे समस्त संसार और सारी मानवता के लिए थे। वे सारे जगत् के थे और सारा जगत् उनका था। भाई गुरदास ने अपनी 'वारां' के एक 'वार' में संकेत किया है कि परमपिता परमात्मा से आज्ञा पाकर गुरु नानक जगत् के कल्याण और उद्धार में प्रवृत्त हुए। जिस समय गुरु नानक पंजाब में अवतीर्ण हुए थे, उस समय यात्रा करना अत्यन्त कठिन और भयावह था। अधिकतर यात्राएँ पैदल की जाती थीं। उन यात्राओं में चोरों, डकैतों, खूनियों और हिंसक जानवरों का प्रतिपल भय बना रहता था। पर गुरु नानकदेव ने इस भय की चिन्ता किए बिना चीन, ब्रह्मा, लंका, अरब, मिस्र, तुर्किस्तान, रूसी तुर्किस्तान, और अफगानिस्तान की विस्तृत यात्राएं कीं। उन्होंने प्रेम, सेवा, मानवता, सहृदयता, सहानुभूति और भक्ति का दिव्य संदेश उन सभी देशवासियों को दिया, जिन देशों में उन्होंने यात्राएँ कीं। प्रत्येक स्थान में उन्होंने आध्यात्मिकता की ज्योति लोगों के अंतःकरण में प्रज्वलित की। लोगों ने उन्हें सद्गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया। राजा-रंक, ठग-साधु, बाल-वृद्ध-युवा, स्त्री-पुरुष सभी उनके उपदेश से अनुप्राणित हुए। सभी उनके गुरुत्व के सम्मुख नतमस्तक हुए और सभी ने उन्हें अपना सगा अनुभव किया। जब गुरु महाराज ने उनके स्थान से विदा ली, तब उन लोगों ने उनकी प्रतिमा अपने हृदयों में बसा ली और अत्यन्त श्रद्धा तथा भक्तिभावना से उसकी आराधना की। वे लोग गुरु जी के उच्च आध्यात्मिक एवं भक्तिपूर्ण पदों द्वारा प्रेरणा ग्रहण करने लगे। साथ ही अपने जीवन में उनका प्रयोग करने में तत्पर हुए। इस प्रकार गुरु नानकदेव ने अपने अनेक शिष्यों की आत्माओं को परमात्मा से संयुक्त किया। गुरु नानक ने स्थान विशेष के शिष्यों को उन्हीं की मातृभाषा में उपदेश दिए, जिससे वे सब उनके निजी अंग बनकर उनके संघ में मनसा, वाचा, कर्मणा सम्मिलित हुए। गुरु महाराज के संघ में सभी को समान स्थान था। वहाँ न कोई बड़ा था, न छोटा, न कोई ऊँचा था, न नीचा।

एक दूसरी दृष्टि से भी गुरु नानकदेव के सद्गुरुत्व का बहुत बड़ा महत्त्व है। उनकी शिक्षाएँ युग विशेष अथवा काल विशेष तक सीमित नहीं रहीं। वे सर्वकालीन हैं। उनकी शिक्षाएँ वैज्ञानिक होने के कारण, सभी युगों और कालों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। जैसे-जैसे विज्ञान की उन्नति और प्रगति होती जा रही है, वैसे-वैसे गुरु नानकदेव की शिक्षाओं का महत्त्व और अधिक बढ़ता जा रहा है। इस दृष्टि से भी गुरु नानक महाराज के सद्गुरुत्व की विशेष महत्ता है कि उनकी वाणी साक्षात् परमात्मा की वाणी है, क्योंकि उन्होंने पूर्ण ब्रह्म, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामिन्, सर्वप्रेरक, परमात्मा को ही अपना गुरु माना है। स्थान-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान पर इस बात का संकेत भी किया है। अतएव उस परमात्मा के प्रत्यक्ष आदेशानुसार वे अपनी वाणी का उच्चारण करते थे। ऐसी स्थिति में उनकी वाणियाँ एकदेशीय, एकजातीय किस प्रकार हो सकती थीं? इसीलिए गुरु नानकदेव सभी के अपने थे, और आज तक सभी धर्म और सम्प्रदाय के लोग उन्हें प्रेम करते हैं और उन्हें सम्मान देते हैं।

दार्शनिक और पैगम्बर

गुरु नानकदेव के धार्मिक जीवन में हमें अप्रतिम पूर्णता का दर्शन होता है। धार्मिक जीवन में पैगम्बर और दार्शनिक दोनों का सामंजस्य बहुत ही कम लोगों में पाया जाता है। पैगम्बरों में अपने धर्म के प्रति अपार आग्रह और प्रचण्डता पाई जाती है। वह अपने को परमात्मा के प्रतिनिधि के रूप में देखकर उसी के आदेशानुसार अपने धर्म का प्रतिपादन कर, उसका प्रचार और प्रसार करता है। पैगम्बर को संसार का भाव नहीं रहता। उसके कानों में परमात्मा यह सदैव बताता रहता है कि उसे किस प्रकार बोलना और किस प्रकार कार्य करना चाहिए। पैगम्बरों के कार्यों में तेजस्विता विशेष रूप से पाई जाती है।

दार्शनिक कोटि के धार्मिक व्यक्ति में शान्त भाव और स्थिरता विशेष रूप से पाई जाती है। वे शान्त भाव का आश्रय लेकर परमात्मा के भाव में निमग्न रहते हैं। दार्शनिक विश्वास और शक्ति से परिपूर्ण रहता है। वह सर्वशक्तिमान् परमात्मा में अपने को पूर्णरूपेण समर्पित कर देता है और अपनी प्रत्येक इच्छा और क्रिया को उसकी मर्जी पर छोड़ देता है। वह परमात्मा में पूर्ण विश्वास करता है और सारे कार्यों का ठीक-ठीक एवं विधिवत सम्पादन करता है। सच्चे धार्मिक जीवन के लिए यह अनिवार्य है कि मनुष्य अपने समस्त विचारों, भावनाओं और क्रियाओं के लिए परमात्मा के प्रति पूर्ण जिम्मेवार होता है। पर इसके साथ ही यह भी अनिवार्य है कि ऐसे व्यक्ति में यह भी चेतना रहती है कि वह सर्वशक्तिमान् परमात्मा के सम्मुख अपने को शक्तिहीन और पंगु मानता है, क्योंकि उसका समस्त जीवन प्रभु के अधीन रहता है।

जब हम गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व पर दृष्टि डालते हैं, तो हमें यह पूर्णतया ज्ञात होता है कि उनके जीवन में पैगम्बर और दार्शनिक दोनों तत्त्वों का विलक्षण सामंजस्य मिलता है। यदि हम गुरु जी के प्रकृति और मनुष्य-विषयक काव्य का अध्ययन करें, तो हमें भलीभाँति ज्ञात हो जाता है कि गुरु जी की कितनी शान्त और निरपेक्ष दृष्टि थी। संसार के समस्त व्यापारों और क्रियाकलापों में उनकी असंग दृष्टि थी। वे साक्षी की भाँति उन्हें देखते थे। वर्षा ऋतु में बादलों की सघनता और श्यामलता, समस्त वनस्पतियों का आह्लाद, पशुओं की असीम प्रस-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न्नता; सारंग—चातक पक्षी की स्वाती नक्षत्र की जलबूंद के लिए प्रियतम से करुण पुकार का निरपेक्ष भाव से चित्रण करते हैं। चन्द्रमा, सूर्य, सितारों भरी रात का एवं प्रकृति के विभिन्न आकर्षक रूपों का साक्षी की भाँति अवलोकन करते हैं। पति-वियोगिनी नारी अपने पति के वियोग में किस प्रकार तड़पती है और उससे मिलने के लिए कितनी आतुर रहती है, इसकी अनुभूति गुरु महाराज अपने हृदय में स्वयं करते हैं। इसी प्रकार पक्षियों का आकाश में उड़ना, मछलियों का जल में क्रीड़ा करना तथा जल से अलग किए जाने पर तड़पना, बगुले का किसी जलाशय के किनारे एक पैर पर ध्यानस्थ होकर खड़े रहना, पर साथ ही अपने शिकार के प्रति सतत सजग रहना आदि व्यापारों का गुरु महाराज हृदयग्राही चित्रण करते हैं। कहने का तात्पर्य है कि उनके नेत्र, श्रवण और हृदय जीवन के समस्त व्यापारों और क्रियाकलापों के प्रति सदैव खुले रहते हैं। वे संसार की जो वस्तु देखते हैं अथवा संसार का जैसा अनुभव करते हैं, उसमें उन्हें यही प्रतीत होता है कि इन सब के भीतर ईश्वरीय इच्छा विराजमान है। परमात्मा की शक्ति में उनका पूर्ण और अटूट विश्वास है। बिना उसकी मर्जी के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। सभी कार्य उसके निर्देश से होते हैं। उसकी मर्जी और इच्छा से जगत् के सारे कार्य संचालित होते हैं। उसकी आज्ञा का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता। सभी के ऊपर उसका 'हुक्म' है। उसके हुक्म में बाह्य और अन्तर्प्रकृति, दोनों ही अपने-अपने कार्य में रत रहती हैं। परमात्मा के भय से सभी मर्यादा में रहते हैं। ये सारी बातें उनके शान्त भाव और स्थिरता के प्रमाण हैं। यह उनके व्यक्तित्व का दार्शनिक पक्ष है।

परन्तु गुरु महाराज के व्यक्तित्व का एक दूसरा पहलू भी है। अनेक अवसरों पर उन्हें हम जगत् के भावों में पूर्णतया निमग्न पाते हैं। परिणाम-स्वरूप वे जगत् के कल्याण के निमित्त पूर्णरूप से जागरूक और चेष्टाशील प्रतीत होते हैं। वे अपने में इतना अधिक रम जाते हैं कि सांसारिक लोग उन्हें विक्षिप्त अथवा पागल समझने लगते हैं। बाबर तो उन्हें गम्भीर ध्यानावस्था में देखकर मरा हुआ समझ लेता है। पर वास्तविकता यह है कि ऐसे अवसरों पर गुरु महाराज परमात्मा से एक हो जाते हैं। जब वे अन्तर्दशा से बाह्य दशा में आते हैं, तो हम उन्हें और अधिक शान्त, स्थिर और क्रियाशील पाते हैं।

इस प्रकार हम गुरु नानकदेव के व्यक्तित्व में पैगम्बर तत्त्व और दार्शनिक तत्त्व, दोनों का पूर्ण विकास पाते हैं, साथ ही दोनों तत्त्व दूध और पानी की भाँति मिले हुए दिखाई पड़ते हैं। उनके पूर्ण व्यक्तित्व से किसी तत्त्व को पृथक् नहीं किया जा सकता। इसी कारण उन्होंने योगियों, फकीरों, पण्डितों और मुल्लाओं पर विजय पाई और उनके आतंक से सामान्य जनता को मुक्ति दिलाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दार्शनिक विचारों, तर्क-वितर्कों और शास्त्रार्थ में गुरु महाराज उपर्युक्त लोगों से बढ़ कर निकले । उन्होंने अपनी अलौकिक तर्क-शक्ति एवं प्रत्युत्पन्नमति से सबको पराजित किया । उन सबको अपनी विद्या एवं साधना का भयंकर अहंकार था । इस प्रकार वे सब अपने और परमात्मा के बीच में अहंकार की सुदृढ़ दीवार निर्मित कर लिए थे । घटघटव्यापी परमात्मा उन सब के भीतर विराजमान था, पर वे सब अपनी बहिर्मुखता और अहंकार के कारण उसे अन्यत्र ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे थे । वे सब परमात्मा से मिलने के लिए अपने अन्तःकरण को शुद्ध करने की अपेक्षा बाह्य साधनों के सम्पादन में अधिक चेष्टाशील थे । गुरु महाराज ने उनकी अन्तरात्मा में ज्ञान की अग्नि प्रज्वलित की । उन्होंने उन सबों को अपनी गलती मानने को बाध्य कर दिया । परिणाम यह हुआ कि उन लोगों ने परमात्मा की सर्वव्यापकता और सार्वभौमिकता की अनुभूति की । सृष्टि के सारे प्राणियों को परमात्मा की सन्तान माना और अपनी हठधर्मिता का परित्याग कर, उनके साथ प्रेम का व्यवहार किया । गुरु महाराज ने उन लोगों को परमात्म-प्राप्ति की सच्ची विधि सिखाई । इसी सच्ची आराधना, प्रेम, सेवा, करुणा और सहानुभूति से परमात्मा की प्राप्ति होती है, घृणा, ईर्ष्या तथा वैर भाव से नहीं ।

इस प्रकार गुरु जी दार्शनिक और पैगम्बर दोनों थे । उन्होंने अपनी अनन्य भक्ति, निष्काम कर्म, सहजयोग से जो अमृत प्राप्त किया, उसे मुक्तहस्त से लोगों में बाँट दिया । उन्होंने जाति-पाँति, धर्म-सम्प्रदाय, राजा-रंक, अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं रखा । पैगम्बर की हैसियत से उन्होंने परमात्मा के आदेशानुसार अपने सिद्धान्तों का निर्भयतापूर्वक प्रचार किया । दार्शनिक की भाँति तर्क-वितर्क, शास्त्रार्थ के सहारे उन्होंने अन्य मतावलम्बियों पर अपनी विजय स्थापित की । इस प्रकार गुरु महाराज की दार्शनिक पृष्ठभूमि पैगम्बरी अनुभूतियों पर अवलम्बित है ।

योगी और गृहस्थ

गुरु नानक के व्यक्तित्व में योगी और गृहस्थ के पूर्ण स्वरूप का अद्भुत सम्मिलन पाया जाता है। प्राचीन युग में राजा जनक इसके उदाहरण माने जाते थे । गुरु महाराज भी पूर्ण योगी और आदर्श गृहस्थ थे । अनन्य भक्ति के माध्यम से उन्होंने योग की सिद्धियाँ सहज रूप में प्राप्त की थीं । यदि हम उनके सम्पूर्ण जीवन पर विचार करें, तो उनमें योग की कुछ सिद्धियाँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती हैं । उन सिद्धियों में त्राटक सिद्धि (दृष्टि सिद्धि), स्पर्श सिद्धि, वाणी सिद्धि, अन्तर्यामित्व आदि के उदाहरण हमें उनके जीवन में अनेक स्थलों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर मिलते हैं। गुरु जी के नेत्रों में वह अलौकिक शक्ति थी कि हिंसक पशु भी उनके नेत्रों को देखकर पूँछ दबाकर उन्हें मार्ग दे देता था। वे उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाते थे। इसी प्रकार क्रूर से क्रूर व्यक्ति उनकी त्राटक-सिद्धि से उनके वशीभूत हो जाता था। स्पर्श-सिद्धि के भी अनेक उदाहरण उनके जीवन-प्रसंगों में प्राप्त होते हैं। उनके चरण-स्पर्श से अनेक मोहान्ध प्राणियों में आध्यात्मिक भावों का संचार हो जाता था, उनके शरीर, मन, हृदय और आत्मा में नवीन परिवर्तन हो जाता था। उनकी वाणी में अद्भुत शक्ति थी। उन्होंने इसके माध्यम से अनेक नृशंस-क्रूर व्यक्तियों को वशीभूत किया और उनकी अहंभावना, दम्भ, पाखण्ड का नाश किया। उनमें त्रिकालज्ञता की शक्ति भी पूर्ण रूप में विराजमान थी। भविष्य में घटित होनेवाली अनेक घटनाएँ उन्हें प्रत्यक्ष दिखाई पड़ जाती थीं। बाबर के आक्रमण की घटना गुरु महाराज ने बहुत पहले जान ली थी। किन्तु यहाँ एक बात का स्पष्टीकरण परम आवश्यक है कि गुरु नानकदेव ने उन सिद्धियों का प्रयोग कभी अपनी प्रसिद्धि अथवा यश-प्राप्ति के लिए नहीं किया। उन सिद्धियों के होते हुए भी, उन्होंने उन्हें परमात्मा की ही विभूति मानी। अपने को सदैव दीन ही समझते रहे।

पूर्ण योगी होने के नाते, उनका त्याग सहज त्याग था। उनके त्याग में न किसी प्रकार का आग्रह था और न जोर-जबर्दस्ती थी। गुरु महाराज ने त्याग का भी त्याग कर दिया था। उनके मन के किसी कोने में त्याग का अहंकार नहीं आने पाया। उन्हें जब यह भली-भाँति बोध हो गया कि त्यागपूर्ण जीवन की अवधि समाप्त हो चुकी है, तो वे सहज भाव से गृहस्थ जीवन में आ गए।

आवश्यकतानुसार वे परिभ्रमणशील त्यागपूर्ण जीवन का परित्याग कर 'त्यागी गृहस्थ' का जीवन व्यतीत करने लगे। उन्होंने जीवनपर्यन्त इस बात की शिक्षा दी थी कि मनुष्य को संसार में गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी, जल में कमल के पत्ते के समान निर्लिप्त और असंग रहना चाहिए। इसलिए संसार के लोगों के सम्मुख जीवन्त उदाहरण रक्खा कि किस प्रकार संसार में गृहस्थी में रहते हुए उसके प्रलोभनों और आकर्षणों से बचा जाय। संसार की भाषा में वे दो पुत्रों के पिता थे, पर वास्तव में वे संसार के सभी लोगों, सभी जातियों के पिता थे। वे ऐसे महान् गृहस्थ थे कि समस्त मानवों को पुत्र की भाँति स्नेह करते थे। वे अपने पुत्रों की शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए खेतों में कठोर परिश्रम करते थे। वे अपने पुत्रों की आध्यात्मिक उन्नति पर अत्यधिक ध्यान देते थे। उन्होंने उनकी आध्यात्मिक क्षुधा की शान्ति के लिए परमात्मा के नाम का बीज उनकी हृदय-भूमि में बोया। इस प्रकार उन्होंने अपने पुत्रों की शारीरिक और आध्यात्मिक क्षुधा को शान्त किया। उन्होंने अपने पुत्रों के शरीर, मन और आत्मा सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भरण-पोषण किया। इस प्रकार उन्होंने पूर्णयोगी और आदर्श गृहस्थ का ज्वलन्त उदाहरण अपने सिक्खों के सम्मुख रखा।

क्रान्तिकारी सुधारक

गुरु नानकदेव जन्मजात एवं दूरदर्शी सुधारक थे। उन्होंने अपनी अल्पायु में ही मानवता मात्र में उस रोग को देख लिया था, जो सारी मानवता में घुन की भाँति लगकर उसे खाए जा रहा था। उन्होंने उस रोग का बड़ी बारीकी से निदान किया और उसके उपचार की रामबाण औषधि भी ढूंढ़ निकाली। उन्होंने उस औषधि का प्रयोग बड़े मनोयोग, धैर्य और दूरदर्शिता से किया। जिन सुधारों का गुरु नानकदेव ने प्रतिपादन किया, वे बीसवीं शताब्दी के इस वैज्ञानिक युग में आदर्श रूप में सोचे जा रहे हैं। यूरोपीय आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सिद्धान्तों की कसौटी पर गुरु नानक द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त बिलकुल खरे उतरते हैं। जिस सामाजिक संगठन की ओर गुरु महाराज का लक्ष्य था, उसे पिनकाट ने 'ईश्वर से भयभीत प्रजातंत्र का भ्रातृभाव' की संज्ञा दी है। गुरु महाराज द्वारा निर्मित समाज में सभी को समान भाव से जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। इस समाज में जन्म, जाति, धर्म, लिंगभेद के कारण किसी व्यक्ति को अन्य लोगों पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए कोई स्थान नहीं है। समाज के सभी व्यक्तियों को प्रत्येक की सुविधा और कल्याण की भावना रखनी चाहिए। समाज के इस सुन्दर स्वरूप को युद्ध, शोषण, दमन, अत्याचार, कुशासन, भ्रष्टाचार, कालाबाजार, कूटनीति, स्वार्थपरायणता, विदेशी आधिपत्य आदि द्वारा कुत्सित और विकृत न बनाया जाना चाहिए। गुरु नानकदेव द्वारा स्थापित समाज में परमात्मा का सर्वोपरि स्थान था। परमात्मा के भय से लोग अपनी दुर्भावना और कुप्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करते थे। उसका प्रेम प्राप्त करने के निमित्त लोग मानव मात्र की सेवा में प्रवृत्त होते थे। मानवता को प्रेम करना परमात्मा से प्रेम करना समझा जाने लगा। इस प्रकार परमात्मा के भय और प्रेम से लोग शुभाचरण में प्रवृत्त हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों की आन्तरिक बुराइयाँ अपने आप छूटने लगीं। सद्‌गुणों के विकास से समाज का स्तर अपने आप ऊँचा उठने लगा।

गुरु जी द्वारा निर्मित समाज में ईश्वर-साक्षात्कार और आत्मोपलब्धि सब से ऊँचे आदर्श माने गए। ईश्वर-साक्षात्कार के लिए आत्मनियंत्रण और सद्‌गुणों के विकास आवश्यक अंग माने गए। बिना इसके ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करना, हवा में किले बनाने के समान कठिन समझा गया। परमात्मा की प्राप्ति के आनन्द की आशा में लोग स्वभावतः आत्मसंयमी बनकर समाज के मुखों-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःखों को अपना सुख-दुःख समझने लगे। जिस समाज में दूसरों की भावनाओं का लोग आदर करने लगेंगे, वहाँ के पाप, ताप, दुःख-दोष, ईर्ष्या-द्वेष, दम्भ-पाखण्ड अपने आप समाप्त हो जाएँगे। ऐसे समाज में न कोई किसी के ऊपर शासन करेगा, न जोर-जुल्म बरतेगा और न अन्याय-उत्पीड़न करने का साहस करेगा। वहाँ तो सेवा, सहृदयता, सहानुभूति, प्रेम आदि का ही बोलबाला होगा। दूषित से दूषित एवं स्वार्थी से स्वार्थी व्यक्ति अपनी स्वार्थपरायणता और दूषित भावनाओं का परित्याग करने के लिए बाध्य हो जाएगा। उस समय सारा भूतल स्वर्ग बन जाएगा। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को मिटाने की न सोचेगा, एक धर्म दूसरे को हेय दृष्टि से नहीं देखेगा, एक जाति दूसरे को निगलने की चेष्टा नहीं करेगी। वहाँ तो सभी राष्ट्र, सभी धर्म, सभी वर्ग, सभी जाति, सभी मनुष्य समान माने जाएँगे। गुरु नानकदेव ने इसी प्रकार के समाज की संस्थापना की।

उपर्युक्त आदर्शों की पूर्ति के निमित्त गुरु नानकदेव ने अपने सिक्खों की एक बस्ती कर्त्तारपुर में बसाई। यह बस्ती उनके आदर्श की पूर्ति का उदाहरण मानी जा सकती है। यहाँ प्रत्येक को अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करना पड़ता था। गुरु जी महाराज और उनकी सहधर्मिणी भी अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करती थीं। कोई व्यक्ति अकर्मण्य नहीं रह सकता था। प्रत्येक व्यक्ति को सबके कल्याण के लिए और सबको प्रत्येक व्यक्ति के उत्थान के लिए कार्य करना पड़ता था। साठ वर्ष की आयु के होते हुए और इतने प्रतिष्ठित होते हुए भी गुरु नानकदेव खेतों में हल चलाते थे अथवा इसी प्रकार के अन्य कार्य करते थे। उस बस्ती में कार्य करना सम्मान समझा जाता था। वहाँ कर्म को उपासना का रूप दे दिया गया था। जाति, वर्ण और धर्म के भेद किए बिना प्रत्येक व्यक्ति या तो खेतों में अथवा गुरुद्वारा में अथवा रसोईघर में कार्य करते हुए पाया जाता था। सभी भाई-भाई थे, सभी समान थे। ऐसे आदर्श समाज की रूपरेखा गुरु नानकजी ने लोगों के सम्मुख प्रस्तुत की।

कवि

गुरु नानकदेव जन्मजात नैसर्गिक कवि थे। नौ अथवा दस वर्ष की अल्पायु में उन्होंने अपने शिक्षा-गुरुओं को कविता द्वारा समझाने का प्रयास किया। काव्य की इस ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा ने जीवन पर्यन्त उनका साथ दिया। कविता द्वारा वे मनुष्य के अन्तःकरण पर सीधी चोट करते थे। कविता से ही वे मनुष्य में भय, आशा, प्रसन्नता, आह्लाद, आनन्द, सहानुभूति, सहृदयता आदि का संचार तीव्रता से करते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोटे रूप से काव्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है---(१) धार्मिक काव्य, (२) लौकिक काव्य और (३) लौकिक-धार्मिक काव्य। उसमें गुरु नानकदेव का काव्य पूर्ण रूप से धार्मिक काव्य है। उनके काव्य में यत्र-तत्र सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का संकेत मिल जाता है। पर ऐसे स्थल कम हैं। उनकी वाणी में परमात्मा के स्वरूप, सृष्टिक्रम, परमात्मा के हुकम, अहंकार के स्वरूप, उसके भेद, अहंकार के परिणाम, माया एवं उसके स्वरूप, उसकी प्रबलता एवं व्यापकता, जीव, मनुष्य, आत्मा, मनुष्य-योनि की श्रेष्ठता, मनुष्य जीवन की विविध अवस्थाएँ मनुष्य का परमात्मा से वियोग एवं उसके कारण, मनुष्य में परमात्मा के मिलन के उपादान, आत्मोपलब्धि के साधन, मन के स्वरूप और उसके विभिन्न रूप, मनोमारण का महत्त्व, मनोमारण की विधि, हरि प्राप्ति के विभिन्न मार्ग---कर्ममार्ग, योगमार्ग, ज्ञानमार्ग और भक्तिमार्ग--सद्‌गुरु और नाम आदि का विशद चित्रण मिलता है। अतएव उनका काव्य विशुद्ध धार्मिक काव्य है।

काव्य के प्रकारों की दृष्टि से उनकी वाणी 'मुक्तक' अथवा 'गीत' के अंतर्गत रखी जा सकती है। गुरु नानक की अधिकांश रचनाएँ काव्योचित गुणों से परिपूर्ण हैं। उन्होंने भावावेश में पदों का उच्चारण किया। वे पद या तो उनके आन्तरिक प्रेम की अभिव्यक्ति हैं, या किसी के निमित्त सदुपदेश के रूप में हैं। उनके अधिकांश पद भावयुक्त हैं। यही कारण है कि उनकी वाणी में अधिकांश रसों का समावेश हुआ। वे रस बड़े स्वाभाविक रूप में पाठकों अथवा श्रोताओं का हृदय रस से आप्लावित कर देते हैं। उनकी वाणी में शान्त, शृङ्गार, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, बीभत्स, अद्‌भुत और हास्य सभी रस मिल जाते हैं।[1]

गुरु महाराज के काव्य में रूपकों के प्रयोग का बाहुल्य है। इन रूपकों के प्रयोग में वे अत्यधिक सजग और सचेष्ट रहे। उनके सभी रूपक कवित्व युक्त हैं। उन्होंने जीवन के सामान्य व्यापारों के माध्यम से अपने रूपकों का चयन किया है। उन रूपकों में अपूर्व आध्यात्मिकता, सांकेतिकता और गम्भीरता पाई जाती है। रूपकों के माध्यम से उन्होंने अध्यात्म के गूढ़ातिगूढ़ एवं सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों को सुलझाने का प्रयास किया है।[2] इन रूपकों में उनके पांडित्य, अनुभव एवं कल्पना की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।

गुरु नानक की कविता में प्रकृति-चित्रण का उत्कृष्ट रूप पाया जाता है।

---

१. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, नानक वाणी---डॉ० जयराम मिश्र, पृ० २० से ३१ तक

२. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, वही, पृ० ३२ से ३५ तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसका प्रमुख कारण यह है कि वे प्रकृति की गोद में पले थे। प्रकृति की अनेकरूपता के सहारे उन्होंने परमात्मा की महत्ता बतलाई। उस हरी द्वारा निर्मित प्रकृति जब इतनी मोहक है, तो उसका निर्माता कितना सुन्दर और आकर्षक होगा। यही कारण है कि विस्तृत नीलाकाश, उन्हें प्रभु की आरती का थाल, चन्द्र-सूर्य उस आकाश रूपी थाल में दीपक एवं तारागण उस थाल के मोती प्रतीत होते हैं। मलय पवन उस आरती की धूप तथा समस्त पुष्पराशि उस आरती के निमित्त पुष्प हैं। वायु, नदियाँ, अग्नि, पृथ्वी, इन्द्र, धर्मराज, सूर्य, चन्द्रमा, सिद्ध, बुद्ध, देवतागण, आकाश सभी परमात्मा के भय में स्थित हैं।

उन्होंने परमात्मा के प्रेम की प्रगाढता का वर्णन वन-विहारिणी हरिणी, अमराइयों में आनन्द मनानेवाली कोयल, जल को जीवन समझनेवाली मछली तथा धरती में धँसी रहनेवाली सर्पिणी के माध्यम से किया है। उन्होंने कहीं-कहीं पर प्रकृति के उपमानों द्वारा परमात्मा के प्रेम की प्रगाढ़ता की समता की है—'हे मन हरि से ऐसी प्रीति कर, जिस प्रकार कमल जल से प्रीति करता है, मछली नीर से, चातक बादल से और चकवी सूर्य से।'[1]

उन्होंने तुखारी राग में बारहमासा में वर्ष के बारहों महीनों का बड़ा सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है। प्रकृति का जैसे चित्र-सा खींच दिया है। उदाहरणार्थ सावन महीने के चित्रण में---सावन की झडी, बिजली का चमकना, जलाशयों का भर जाना, अँधेरी रात का सूनापन और भयंकरता, मेढ़क, मोर और पपीहों का बोलना, साँपों का काटना, मच्छरों का डसना आदि में—प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण ज्ञात होता है। यह तो हुआ प्रकृति के वाह्य पक्ष का चित्रण।

गुरु नानकदेव अन्तर्प्रकृति के पूर्ण ज्ञाता थे। इसी से उन्होंने काव्य में मानवी प्रकृति का भी सफल चित्रण किया है। उन्होंने अहंकारियों के अहंकार, साधुओं की साधुता, गुणवती एवं सुहागिन स्त्रियों के गुणों, पातिव्रत धर्म के अपार प्रेम, सुहागिन स्त्रियों के दुर्गुणों एवं उनको अहंमन्यता, पाखण्डियों के पाखण्ड, आक्रमणकारियों की क्रूर-भावना, मुल्लाओं, काजियों, पण्डितों, ब्राह्मणों, योगियों, जैनियों के आडम्बर-भाव, तत्कालीन राजाओं और जागीरदारों की नृशंसता एवं क्रूरता का बड़ा सजीव और आकर्षक चित्रण प्रस्तुत किया है। अतएव गुरु नानकदेव रससिद्ध कवि हैं।

---

१. नानक वाणी, डॉ० जयराम मिश्र, सिरी रागु, असटपदी १६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगीतज्ञ

कवि के साथ ही गुरु नानकदेव महान् संगीतज्ञ थे। उन्होंने बार-बार अपने को परमात्मा का चारण कहा है। उन्होंने कहा है, 'मैं प्रभु का चारण हूँ। उनके द्वारा इस संसार में उनकी महिमा का गीत लोगों को सुनाने के लिए भेजा गया हूँ, ताकि लोग उसे सुनकर उस कृपालु परमात्मा के पास जाएँ, जो अपने दोनों हाथ फैलाकर उन्हें अपनी गोद में लेने के लिए उत्सुक है।' उनके संगीत में अद्भुत आकर्षण था। उसे सुनकर बड़े-बड़े हिंसक पशु मोहित होकर पालतू-से बन जाते थे; नृशंस से नृशंस राजा उसकी माधुरी से द्रवीभूत हो जाते थे। बड़े-बड़े अभिमानियों और हठधर्मियों के हृदय की दहकती अग्नि उनके संगीत के प्रभाव से बुझ जाती थी। क्रूरकर्मी ठगों ने भी उनके संगीत के प्रभाव से अपना पेशा छोड़कर आध्यात्मिक जीवन अपना लिया। गुरु महाराज की जीवन-घटनाओं से हमें सहज रूप से ज्ञात हो जाता है कि कितने लोग उनके संगीत द्वारा सदैव के लिए जीत लिए गए थे, उनके जीवन के ढंग में एकदम परिवर्तन हो गया था। सच्ची बात तो यह है कि परमात्मा के ही शब्द गुरु महाराज की वाणी के रूप में हृदयग्राही संगीत के रूप में बन गए थे। इसीलिए उनमें इतनी अधिक शक्ति, इतना अधिक प्रभाव और आकर्षण था।

आज तक गुरु महाराज के संगीतमय पद अनन्य साधकों के ऐसे पंख बने हैं, जिनके सहारे वे उड़कर परमात्मा तक पहुँचने में समर्थ होते हैं। आज तक गुरु जी के संगीतमय पद उनके सिक्खों में अद्भुत आशा, बल, पौरुष, कर्मठता, भक्ति, ज्ञान का संचार करते रहते हैं। शान्ति अथवा युद्ध, हर्ष अथवा विषाद, संयोग अथवा वियोग, जीवन की सभी परिस्थितियों में वे पद उनके सिक्खों के संबल बनते हैं!

देशभक्त

गुरु नानक सच्चे देशभक्त थे। वे उस युग में इस प्रकार के पहले देशभक्त हैं जिन्होंने देश की दुर्दशा पर सभी पहलुओं से विचार किया। भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दुर्दशा को देखकर उनका हृदय रो पड़ा। वे करुणा से आर्द्र हो उठे। उन्होंने लोगों में फैली दूषित भावनाओं का साकार चित्रण अपनी वाणी में किया। अत्याचारी राजाओं के अत्याचार का निरूपण करके, उसके प्रति अपनी करुणा, रोष और क्षोभ प्रकट किया, काजियों के रिश्वत के बोलवाले की तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने शासकों की क्रूरता और अत्याचार तथा प्रजा का असहायावस्था का उलाहना परमात्मा से दिया। आध्यात्मिक क्षेत्र में जिन गुरु महाराज ने स्थान-स्थान पर यह स्वीकार किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है कि परमात्मा की मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता, उन्हीं गुरु नानक ने व्यावहारिक क्षेत्र में देश के ऊपर होनेवाले अत्याचारों और अनाचारों को ईश्वर की मर्जी मानकर नहीं टाल दिया। उनकी देशभक्ति की भावना मुखरित हो उठी और उन्होंने परमात्मा को इस बात के लिए उलाहना दिया। साथ ही तत्कालीन शासकों की अकर्मण्यता की तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने उन शासकों को उनके कर्त्तव्यों का निर्देश किया।

गुरु नानकदेव अपने जीवनपर्यन्त यह प्रयास करते रहे कि शासन के सूत्र का ठीक-ठीक संचालन हो। उन्होंने देशवासियों का आह्वान किया कि वे सब जागें और देश की स्वतंत्रता-प्राप्ति में कटिबद्ध हों ! वे अपने को पवित्र बनाएँ और अपना आचरण ऊँचा करें, जिससे देश का नैतिक स्तर ऊँचा हो। [illegible] समानता और भ्रातृत्व के सिद्धान्तों के प्रचार करने के कारण गुरु जी महाराज सिकन्दर लोदी के कर्मचारियों द्वारा गिरफ्तार किए गए। उनकी शिक्षाएँ दिल्ली की सल्तनत के लिए खतरनाक समझी गईं। पर गुरु जी महाराज अपनी गिरफ्तारी से न तो तनिक भी भयभीत हुए और न अपने सिद्धान्तों से रंचमात्र विचलित हुए। वे सिकन्दर लोदी से मिले और उन्होंने बादशाह को परमात्मा के पितृत्व और मनुष्यों के भ्रातृत्व का रहस्य समझाया। उसे यह अनुभव कराया कि राजा का प्रजा के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। अन्त में सिकन्दर लोदी ने यह प्रतिज्ञा की कि वह न्यायी, मेहरबान और प्रजापालक शासक बनने की भरसक चेष्टा करेगा।

बाबर के आक्रमण के अत्याचारों से क्षुब्ध होकर, उनकी देशभक्ति प्रबल रूप में जाग पड़ी। उन्होंने परमात्मा को उलाहना दिया—

'हे परमात्मा, बाबर ने खुरासान पर शासन किया, किन्तु खुरासान को तो अपना समझकर, तू ने उसे बचा रक्खा और बेचारे हिन्दुस्तान को बाबर के आक्रमण द्वारा आतंकित किया। हे कर्त्ता, तू इन सब खेलों का जिम्मेदार है। पर अपने ऊपर दोष न लेने के लिए मुगलों को यम रूप में बनाकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण कराया। इतनी मारकाट हुई कि लोग करुणा से चिल्ला उठे, किन्तु हे प्रभु, तुझे क्या जरा भी दर्द नहीं उत्पन्न हुआ ?'[1]

यह सम्पूर्ण पद एवं बाबर के आक्रमण से सम्बन्धित अन्य पदों में देशभक्ति का अत्यन्त उज्ज्वल स्वरूप दिखाई पड़ता है। ऐसी काव्य-रचना कदाचित् ही कहीं मिल सकती हो। गुरु महाराज ने देशवासियों के दुःख में हिस्सा बँटाया। बाबर के कैदी बने। पर उन्होंने अपनी आध्यात्मिक शक्ति से बाबर के क्रूर

१. खुरासान खसमाना...रागु आसा, महला १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृदय को परिवर्तित किया। उन्हीं की प्रेरणा से बाबर ऐसा क्रूर और अत्याचारी शासक अत्यन्त उदार शासक के रूप में परिवर्तित हुआ।

हम इस बात की भली-भाँति कल्पना कर सकते हैं कि यदि गुरु नानकदेव के पास सेना होती, तो वे क्या कर गुजरते। पर अभी उसका समय नहीं था। उस समय की परिस्थिति में जो कुछ भी संभव था, गुरु जी महाराज ने देश के हित में किया। उन्होंने पददलित भारतवासियों को एकता, स्वतंत्रता और समानता की महत्ता बताई। उन्होंने इस बात का भलीभाँति अनुभव कर लिया था कि यदि लोगों का चरित्रबल ऊँचा हो जाएगा, तो एक न एक दिन वे अपने अधिकारों को लेकर रहेंगे।

विश्व-बन्धु

मातृभूमि के प्रति गुरु नानकदेव का प्रेम असीम और प्रगाढ़ था, पर वह संकीर्ण नहीं था। उनकी देशभक्ति मानव प्रेम से अनुप्राणित थी। गुरु महाराज का मानव-प्रेम विश्वव्यापी था। इस दृष्टि से उनकी गणना विश्व के नागरिकों में की जा सकती है। वे केवल अपनी मातृभूमि के मनुष्यों को ही सुखी, समृद्ध, सच्चरित्र, ईश्वर-परायण नहीं देखना चाहते थे, बल्कि समस्त संसार के मनुष्यों के प्रति उनकी यही उदार भावना परिलक्षित होती है। इसी भावना से उन्होंने ब्रह्मा, लंका, तिब्बत, चीन, रूसी, तुर्किस्तान, अरब, मिस्र, एशिया माइनर, तुर्की, ईराक, फारस आदि देशों की यात्राएँ कीं, यदि संभव होता, तो वे अपने मिशन पर अन्य देशों में गए होते। उन्होंने सभी देशों के दुखी और शोषित मनुष्यों के प्रति अपना असीम प्यार और सहानुभूति प्रदर्शित की, जो सत्तारूढ़ थे और अपने ही भाइयों पर जुल्म ढा रहे थे, उनकी तीव्र भर्त्सना की। सभी देशों के लोगों को उन्होंने प्रेमपूर्वक रहने की शिक्षा दी। परमात्मा के पितृत्व और मनुष्यों के बन्धुत्व का संदेश सभी देशों के लोगों को दिया। इसके साथ प्रेम, सेवा, निष्काम कर्म, त्याग, परोपकार, ईश्वर-भक्ति की सीख उन्हें दी। अतएव उनका प्यार समस्त देशों के लोगों के प्रति समान था। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि सभी देशों के लोग समान रूप से सांसारिक अभ्युदय और पारमार्थिक निश्रेयस् की प्राप्ति करें, सभी समान रूप से प्रेमपूर्वक रहें, सब में पारस्परिक सौहार्द की भावना बढ़े। इस प्रकार वे समस्त संसार को स्वर्ग बनाना चाहते थे। गुरु नानकदेव सारे संसार के हितैषी एवं विश्व-बंधु थे।

अनुपम-प्रेमी

गुरु महाराज महान् प्रेमी थे। वे संसार के सभी मनुष्यों में मानवीय और ईश्वरीय प्रेम भर देना चाहते थे। उनकी प्रेमभावना बहुत ही विशाल और सर्व-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यापिनी थी। प्रेम खिलवाड़ नहीं है। उसमें अपने आप को मिटा देना पड़ता है। त्याग, आत्मसमर्पण भाव और सेवा से सच्चे प्रेम की प्राप्ति होती है। सच्चे प्रेम की प्राप्ति से मनुष्य की अहंभावना निर्मूल हो जाती है। गुरु महाराज ने अपने समस्त जीवन को प्रेममय बना लिया था। इसी उदात्त प्रेम का संचार वे मानव मात्र में करना चाहते थे। उनकी धारणा थी कि परमात्मा प्रेमस्वरूप है। प्रेम के माध्यम से प्रेमस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति होती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु नानकदेव के प्रेम के इस आदर्श को सभी सिक्ख गुरुओं ने अपने जीवन में एवं जन-जीवन में कितना अधिक व्यवहृत किया।

वीर और निर्भय

गुरु नानकदेव के जीवन पर दृष्टिपात करने से हमें ज्ञात होता है वे अत्यन्त वीर, पराक्रमी और निर्भीक थे। परमात्मा की अन्तर्प्रेरणा से जब उन्होंने जगत्-कल्याण का कार्य अपने हाथों में लिया, तो वे निर्भय भाव से अपने मिशन की पूर्ति में तत्पर हुए। अपने उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त गुरु जी महाराज ने हिमालय के विकट बर्फानी मार्ग को पार किया, अरब और मिस्र के रेगिस्तान की खाक छानी, भयानक जंगलों में हिंसक पशुओं का सामना किया, किन्तु वे अपने उद्देश्य से डिगे नहीं। उन्होंने राजाओं के आलीशान महलों से लेकर गरीबों की जीर्ण-शीर्ण झोपड़ियों तक में प्रवेश किया, नृशंस और क्रूर आक्रमणकारी बाबर के शिविर में गए, सिकन्दर लोदी के जेल के सीखचों के भीतर बन्दी बने, बड़े-बड़े ठगों की भयानक माँदों में घुसे, नरभक्षकों की प्रज्वलित अग्नि में तपे, नूरशाह ऐसी जादूगरनी के जादूगृह में विचरे, किन्तु आत्मस्थित होने के कारण, परमात्मा की अनन्य भक्ति में निमग्न रहने के कारण गुरु जी अपनी मनस्थिति से रंचमात्र न तो विचलित हुए और न भयभीत। उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पूर्ण निष्ठा से पालन किया। वे मृत्यु से तनिक भी भयभीत नहीं हुए। उन्होंने मृत्यु का भय अपने शिष्यों के अन्तःकरण से भी दूर किया, 'बहादुर के लिए मरना परम शोभनीय और सम्मान की वस्तु है, हाँ यदि वह मृत्यु किसी अच्छे कार्य के लिए हो।' जो व्यक्ति मृत्यु को इस प्रकार चुनौती देता फिरे, उसे भय किस बात का हो सकता है ?

उस समय की परिस्थितियों पर जरा ध्यान दीजिए, जिनके बीच गुरु नानकदेव को रहकर अपना कार्य करना पड़ा। दिल्ली के सिंहासन पर ऐसा बादशाह आरूढ़ था, जो अत्यधिक धर्मान्ध और नृशंस था। उसने बुद्धन पंडित का केवल इतना कहने पर सिर कटवा दिया कि अन्य धर्म उतने ही अच्छे हैं जितना कि इस्लाम मजहब। जातिव्यवस्था इतनी अधिक संकीर्ण हो चली थी कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोटे से छोटे अपराध के लिए लोग जाति से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिए जाते थे। गुरु जी महाराज राजनीतिक और सामाजिक आतंकों से भली-भाँति विज्ञ थे। किन्तु वे अपने सत्य मार्ग से जरा भी नहीं भटके। वे अपने सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार जीवनपर्यन्त करते रहे। इसके लिए उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, बड़े-बड़े संकट झेलने पड़े, परन्तु उन्होंने न कभी उनसे अपना मुँह मोड़ा और न कभी अपनी पीठ दिखलाई। अन्यायों और अत्याचारों के सामने वे कभी झुके नहीं। अपने अलौकिक प्रेम से उन पर विजय प्राप्त की।

सवर्ण हिन्दुओं ने उन्हें 'कुराहिया'---पथभ्रष्ट की संज्ञा दी, पर गुरु महाराज ने इसकी चिन्ता नहीं की और वे अपने सिद्धान्त पर डटे रहे। भ्रातृभाव, एकता, समानता के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते समय, वे दिल्ली में गिरफ्तार हुए। पर इस गिरफ्तारी से वे जरा भी सशंकित नहीं हुए। जेल में भी वे अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते रहे। उनकी इसी सच्चाई, निर्भयता और भगवद्-भक्ति के कारण सिकन्दर लोदी जैसे धर्मान्ध बादशाह को भी झुकना पड़ा। कहने का तात्पर्य यह है कि उन्होंने भीषण से भीषण परिस्थिति का अत्यंत वीरता और निर्भीकता से सामना किया और अपने लक्ष्य पर डटे रहे।

विनम्र और मृदु

इतने वीर, पराक्रमी, साहसी और निर्भीक होते हुए भी, गुरु नानकदेव ने अपनी विनम्रता एवं मृदुता कभी नहीं खोई। उन्होंने विनम्रता को मनुष्य के चरित्र का आभूषण माना। जीवनपर्यन्त उन्होंने इन गुणों का आग्रह और निष्ठा-पूर्वक पालन किया। वे अपने आचरण अथवा भाषण में कभी कटु नहीं हुए। बड़े-बड़े नराधमों से वार्ता करते हुए भी, उन्होंने मृदुता बरती। नीच कर्मों की भर्त्सना अवश्य की, नीच व्यक्तियों की नहीं। उनकी मृदु मुस्कान क्रूर से क्रूर व्यक्ति के हृदय में तीर की भाँति घुसकर, उस व्यक्ति को एकदम परिवर्तित कर देती थी। उन्होंने जीवनपर्यन्त पापियों और दुष्कर्मियों पर अपने प्रेम और मृदु व्यवहार से ही विजय प्राप्त की। यही कारण है कि वे पापी और दुष्कर्मी भी अत्यन्त प्रेमी हो गए। प्रेम और मृदुता की विजय चिरस्थायी होती है। प्रेम की विजय से अन्तःकरण पर पूरा अधिकार कर लिया जाता है और विजित व्यक्ति जीवनपर्यन्त क्रीतदास से भी बढ़कर हो जाता है। विनम्र और मृदु होने के कारण ही गुरु नानक महाराज ने अपने सिक्खों के अन्तःकरण पर राज्य किया। इसी विनम्रता के कारण बाबा लहना उनके संकेत पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को उद्यत थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव विनम्रता की साक्षात प्रतिमा थे। अपने पदों में उन्होंने किसी स्थल पर यह नहीं कहा है कि मैं ही एकमात्र परमात्मा का पैगम्बर अथवा प्रिय पुत्र हूँ। वे अपने को परमात्मा का तुच्छ चारण और गुलामों का गुलाम बताते हैं। वे अपने को 'नीच' और 'निकम्मा' की संज्ञा देते हैं। उन्होंने यह दम्भ नहीं किया कि उन्हीं का मार्ग सत्य परमात्मा के पाने का एकमात्र मार्ग है। उन्होंने यह भी कभी नहीं कहा, 'जो कुछ मैं कहता हूँ, उसमें विश्वास करो, नहीं तो नरक की शाश्वत आग में जलोगे। जो मुझमें विश्वास करते हैं, वे स्वर्ग में जाएँगे और जो नहीं करते, वे सबके सब नरक जाएँगे। जो मुझमें अन्धविश्वास करते हैं, उनके लिए मैं परमात्मा के सिंहासन के समीप, न्याय-दिवस के अवसर पर खड़ा रहकर और उन्हें पापों से मुक्ति दिलाऊँगा और स्वर्ग में जाने की आज्ञा दिलाऊँगा।' गुरु महाराज ने इस प्रकार की वाणी का कभी उच्चारण नहीं किया। वे तो अपने सम्बन्ध में इस प्रकार की बात कहा करते थे, 'मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। परमात्मा की इच्छा का मैं यंत्र मात्र हूँ। जो कुछ वह कहने की आज्ञा देता है, मैं उसी को कहता हूँ। भगवान् के यहाँ कोई जाति विशेष प्यारी नहीं होती। उसके यहाँ सभी समान रूप से प्यारे हैं। कोई मध्यस्थ तुम्हें स्वर्ग नहीं दिला सकता। अपनी करनी से ही तुम्हारा उद्धार होगा; अपनी करनी से ही तुम भवसागर में चक्कर लगाओगे। इसलिए अपने विचार, भाव और कार्य पर पूरी चौकसी रक्खो। कथनी और करनी को एक बनाओ। गुरु तुम्हें केवल परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग बता सकता है। चलना तुम्हीं को है। ईश्वर का साक्षात्कार तुम्हारे ही शुभ कर्मों से होगा। जाति अथवा धर्म की बातें काम न आएँगी। तुम्हारा आचरण और तुम्हारा व्यवहार सब कुछ होगा। अतएव परमात्मा में विश्वास करो और अच्छे कर्म करो।'

उन्होंने अपने सिक्खों को सहिष्णु, विनीत और मृदु बनने की शिक्षा दी। जिस प्रकार के वे स्वयं थे, उसी प्रकार अपने सिक्खों को बनाना चाहते थे। उन्होंने अपने सिक्खों को मना कर दिया कि बल से, जबर्दस्ती से अपने सिद्धान्तों को दूसरों पर मत लादो। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु नानक के बाद होनेवाले गुरुओं ने भी उनके आदर्शों का पालन किया। गुरु महाराज का संदेश प्रेम और सहिष्णुता का सन्देश था। उन्होंने धर्मान्धता की न कभी शिक्षा दी और न उसका कभी प्रचार किया।

दृढ़ संकल्पी और कर्मठ

गुरु जी महाराज अत्यन्त कर्मठ और संकल्प के व्यक्ति थे। उनकी दृष्टि में धर्म केवल एकान्त में बैठकर कुछ भजन-पूजन, ध्यान-समाधि और स्वाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर लेना मात्र नहीं था। उन्होंने स्वानुभूत धर्म को सेवा और प्रेम के माध्यम से व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उन्होंने धर्म के सिद्धान्त और व्यवहार पक्ष के बीच अद्वितीय सामंजस्य स्थापित किया। शासकों की मनमानी और शासितों के दुःख से वे उदासीन न रह सके। उनकी आत्मा कराह उठी! लोगों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए गुरु नानकदेव ने बीड़ा उठाया। इस कार्य में अनेक बाधाएँ और कठिनाइयाँ थीं। उन्होंने 'बहुजनहिताय' और 'बहुजनसुखाय' को अपने जीवन का मूल मंत्र समझ कर, अपने व्यक्तिगत सुखों और सुविधाओं को तिलांजलि दे दी। वे जानबूझ कर बर्बर और नृशंस बाबर के सैन्य-शिविर में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर अपनी अलौकिक व्यावहारिक और आध्यात्मिक शक्ति से बन्दी देशवासियों को बन्धन-मुक्त कराया। वे किसी बात पर केवल चिन्तन और मनन मात्र ही नहीं करते थे, बल्कि सोची और मनन की गई बात पर क्रिया करते थे। अपनी क्रिया-शक्ति से उन्होंने सिद्धान्त को व्यवहार का स्वरूप दिया। उनकी सहन-शक्ति, संकल्प-शक्ति और कार्य-शक्ति अद्वितीय थी। उन्हें जब मानवता के उद्बोधन के लिए परमात्मा की प्रेरणा प्राप्त हुई, तो स्त्री-पुत्र का मोह, माता-पिता का स्नेह, बहिन-बहनोई का प्रेम, इष्ट-मित्रों का प्यार, धनी-मानियों का प्रलोभन, व्यक्तिगत सुख और सुविधा की वस्तुएँ उन्हें बाँध न सकीं। उनका संकल्प अडिग था। उस संकल्प के आगे सभी को झुकना पड़ा। उनके संकल्प में पर्वतों को चूर्ण करने की, समुद्रों को पाटने की अद्भुत शक्ति थी। अपने उद्देश्य और लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्हें अनेक कष्ट उठाने पड़े, पर उन्होंने मुस्कराते हुए उन कष्टों का मुकाबला किया। गुरु नानकदेव के चेहरे पर शिकन नहीं आई। उनके तेजस्वी मुखमण्डल की श्री और कान्ति सुख और दुःख, हर्ष और विषाद में समान रूप से दमकती रही।

गुरु नानकदेव ने कर्म को आराधना का स्वरूप दे दिया। उन्हें प्रत्येक कर्म में परमात्मा की उपासना की अनुभूति होती थी। उनका कर्म जड़ नहीं था। परमात्मा के चिन्तन और उपासना से मिश्रित होने के कारण उसमें अपूर्व चेतना आ गई थी। गुरु नानकदेव ऐसे धार्मिक कर्मठ बहुत कम पाए जाते हैं। अनेक कष्टमय यात्राएँ उनकी कर्मठता और संकल्पशक्ति के प्रमाण हैं। हमारी धारणा है कि कदाचित् किसी भी धर्म-संस्थापक ने गुरु नानकदेव के समान व्यापक यात्राएँ नहीं कीं। लगभग एक चौथाई शताब्दी का समय उन्होंने विभिन्न यात्राओं में व्यतीत किया। ऐसी स्थिति में उनकी मनःस्थिति ज्यों-की-त्यों बनी रही। इससे हम सहज ही में उनके उत्साह, स्फूर्ति, धैर्य, साहस और कर्मठता का अनुमान लगा सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुभाषाविद्

गुरु नानकदेव की एक विशेषता और भी उल्लेखनीय है। उनका अनेक भाषाओं पर अधिकार हमें आश्चर्य में डाल देता है। जिन-जिन देशों और प्रांतों की उन्होंने यात्रा की, उन-उन देशों और प्रान्तों की भाषा अथवा बोली में वहाँ के लोगों को उन्होंने अपना सन्देश सुनाया। वे मनोरंजन अथवा सुख के लिए यात्रा नहीं कर रहे थे। उनका कार्य तो लोगों को प्रेम, सेवा, सहानुभूति, सहृदयता का संदेश सुनाना था। यदि वे उस देश अथवा प्रान्त की भाषा न जानते होते, तो वे अपने उद्देश्य में किस प्रकार सफल हुए होते ? वे मूक निरीक्षक मात्र नहीं थे, बल्कि महान् उपदेशक थे। यदि वे देश विशेष की भाषा में अपना उपदेश न दिए होते, तो उनकी बातों पर कोई भी ध्यान न देता। इससे सिद्ध होता है कि गुरु नानकदेव अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे और उनका सफल प्रयोग करने में भी दक्ष थे।

विनोदी और प्रत्युत्पन्नमतिसम्पन्न

गुरु नानकदेव की प्रत्युत्पन्नमति और विनोदी प्रकृति उल्लेखनीय है। अनेक अवसरों पर उन्होंने उन्हीं के सहारे लोगों को हैरानी में डाल दिया। कुछ देर तक तो लोग इस विनोद को उनका मानसिक असन्तुलन समझ लेते थे, पर सारे प्रसंग की समाप्ति के अनन्तर लोग उनकी चमत्कारिणी बुद्धि का लोहा मान लेते थे। इस सम्बन्ध में उनके जीवन से सम्बन्धित अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं—हरिद्वार में जब सारे तीर्थ यात्री पूर्व दिशा में जल दे रहे थे, उस समय उनका पश्चिम की ओर जल उलीचना, काबा की ओर पैर पसार कर लेटना, सूर्यग्रहण के अवसर पर मांस पकाना, जगन्नाथजी की आरती से पृथक् होकर एकान्त में बैठ जाना आदि बातें उनकी विनोदी वृत्ति और प्रत्युत्पन्नमति पर प्रकाश डालने वाली हैं।

गुरु महाराज के व्यक्तित्व की झाँकी उपर्युक्त विवेचन से हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाती है। किन्तु उनका व्यक्तित्व इतना पूर्ण और साथ ही इतना असाधारण है कि उसके सम्बन्ध में जो भी कहा जाय, वह अल्प ही होगा। सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने गुरु नानक के सम्बन्ध में अपनी धारणा इस प्रकार अभिव्यक्त की थी, 'गुरु नानकदेव परमात्मा की प्रतिमा थे, बल्कि साक्षात् परमात्मा ही थे।' उनके व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से समझने के लिए उन्हीं के समान महान् गुणों से विभूषित होना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय छत्तीस

गुरु नानकदेव के दार्शनिक सिद्धांत

परमात्मा

सृष्टि के अधिकांश धर्मों में परम तत्त्व परमात्मा को ही स्वीकार किया गया है। तर्क के द्वारा परमात्मा की अनुभूति होना असंभव है। परमात्मा की अनुभूति में श्रद्धात्मक भावना का बहुत बड़ा महत्त्व है। गुरु नानकदेव ने अनुभूति एवं श्रद्धा के बल पर अपने मूलमंत्र अथवा बीजमंत्र में परमात्मा के स्वरूप की इस भाँति व्याख्या की है।

'१ ओंकार सतिनामु करतापुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि।'[1]

मोहनसिंह जी ने मूलमंत्र की व्याख्या इस ढंग से की है—

'वह एक है, शब्द अथवा वाणी है और इसी के द्वारा सृष्टि रचता है। वह सत्य है, नाम है। उसके अस्तित्व का वाचक केवल नाम है और वही सत्य है और शेष जितने नाम हैं, उसके गुणों के वाचक हैं। उसके प्रत्यक्ष गुण ये हैं— 'वह कर्त्तार है, पुरियों का निर्माण करके उनके बीच निवास करने वाला है, महान् पौरुष और महान् शक्तियुक्त है। वह समस्त शक्तियों का स्वामी है।'— परमात्मा के निषेधात्मक गुण ये हैं—'वह भय से रहित है, वैर से रहित है, मूर्तिमान् है, काल से रहित है, योनि के अन्तर्गत नहीं आता, त्रिपुटी से परे है।'—इस प्रकार प्रत्यक्ष गुणों से प्रारम्भ करके, फिर प्रत्यक्ष गुणों में अन्त करते हैं।' वह स्वयंभू है। वह प्राप्त होने वाला है और उसकी प्राप्ति गुरु-कृपा से होती है।'[2]

वास्तव में बीजमंत्र अथवा मूलमंत्र का अत्यधिक महत्त्व है। यदि हम गुरु नानक की समस्त वाणी को इसी बीजमंत्र का भाष्य कहें, तो कुछ अनुपयुक्त न होगा।[3]

---

१. सिक्खों का मूलमंत्र, नानक-वाणी, पृष्ठ १

२. पंजाबी भाखा विगिआन अते गुरमति गिआन, मोहनसिंह, पृ० २१, २२, २३

३. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, श्री गुरु-ग्रंथ दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० ६१-७५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपासक की चित्तवृत्ति एवं मन की अवस्था के अनुसार परमात्मा के गुण भी उपनिषदों और श्रीमद्भगवद्गीता में भिन्न-भिन्न कहे गए हैं। गुरु नानक में भी उपासक की आन्तरिक वृत्ति के अनुकूल ब्रह्म के स्वरूप का निरूपण तीन प्रकार का मिलता है—(१) निर्गुण ब्रह्म, (२) सगुण ब्रह्म और (३) सगुण-निर्गुण दोनों से मिश्रित --उभय विधि।

१. निर्गुण ब्रह्म—

निर्गुण ब्रह्म का वर्णन तो असंभव है, क्योंकि वहाँ तक न मन पहुँच सकता है, न वाणी, न इन्द्रियाँ। उसका केवल संकेत मात्र किया जा सकता है। ब्रह्म प्रतिपादन के लिए दो शैलियों का प्रयोग होता है—एक तो विधि शैली और दूसरी निषेधात्मक शैली। गुरु नानकदेव ने निर्गुण ब्रह्म के निरूपण में निषेधात्मक शैली का सहारा लिया है और सगुण ब्रह्म के प्रतिपादन में विधि शैली का।

उन्होंने निर्गुण ब्रह्म का प्रतिपादन बड़ी ही रोचक और मौलिक शैली में किया है---

'अरबद नरबद धुँधूकारा।.........
बेद कतेब न सिमृत सासत। पाठ पुराण उदै नहीं आसत।'
(गुरु ग्रंथ साहिब, मारू सोलहे १५)

निर्गुण ब्रह्म के सूक्ष्मत्व का उल्लेख गुरु नानक में बहुत पाया जाता है। 'जपु जी' में एक स्थल पर उन्होंने कहा है---

'ता कीआ गलीआ कथीआ न जाहि।
जो को कहै पिछै पछुताइ॥
(गुरु ग्रन्थ साहिब, जपु जी, पउड़ी ३६)

उस निर्गुण ब्रह्म में जल, थल, धरती और आकाश कुछ भी नहीं है। वह स्वयंभू अपने आप में प्रतिष्ठित है। वहाँ न माया है, न छाया है, न सूर्य है, न चन्द्रमा और न अपार ज्योति ही—

जल थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार॥२॥
ना तदि माइआ मगनु न छाइआ न सूरज चन्द न जोति अपार॥
(गुरु ग्रन्थ साहिब, गूजरी, असटपदी २)

श्री गुरु नानकदेव एवं उपनिषदों की निर्गुण-प्रतिपादन-शैली में असाधारण साम्य है।

२. सगुण ब्रह्म—

सांख्य मतावलम्बी सृष्टि-रचना में प्रकृति का बहुत बड़ा हाथ मानते हैं। उनके अनुसार बिना प्रकृति की सहायता के सृष्टि-रचना हो ही नहीं सकती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परन्तु गुरु नानकदेव ने स्पष्ट रूप में इस बात को माना है कि 'निर्गुण ब्रह्म ने बिना किसी अवलम्बन के अपने आपको सगुण रूप में प्रकट किया'--

आपै आपु उपाइ निराला ॥

(मारू, सोलहे १६)

जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥

(मारू, सोलहे १)

आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ।

(मारू, सोलहे ३)

परमात्मा के सगुण स्वरूप का वर्णन गुरु नानक ने दो प्रकार से किया है (क) परमात्मा के विराट् स्वरूप के माध्यम द्वारा (ख) परमात्मा के अन्य गुणों के चित्रण द्वारा ।

विराट् स्वरूप का गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर चित्रण किया है । उस विराट् स्वरूप के चित्रण में प्रभु का सगुण स्वरूप व्यंजित है । उदाहरणार्थ---

'गगनमै थालु रवि चन्दु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ।
धूपु मलआनलो, पवण चवरो करे, सगल बनराइ फूलंत जोती ॥

(धनसरी, सबद ६)

विराट् स्वरूप के निरूपण में अनेक स्थलों पर यह कहा गया है कि प्रभु ही सब कुछ है । उदाहरणार्थ-- 'परमात्मा आप ही पवन, जल और वैश्वानर है । इनका मेल भी प्रभु ही करता है । आप ही शशि और आप ही पूर्ण सूर्य हैं'''वह आप ही भ्रमर है, वही वृक्ष है और वही उस वृक्ष का फूल और फल है । वह आप ही मच्छ-कच्छ की करणी करता है और उसका रूप कुछ समझ में नहीं आता । इस प्रकार वह स्वयं दिन और रात बना हुआ है ।'

(मारू, सोलहे १)

जिस प्रकार निर्गुण ब्रह्म अनन्त है और उसका कथन नहीं किया जा सकता, उसी भाँति सगुण ब्रह्म का विराट्-स्वरूप भी कथन की सीमा से परे है । तभी तो गुरु नानकदेव ने 'जपु जी' में कह दिया है ।

'अंतु न जापै कीता आकारु । अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि । ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंत न जाणै कोइ । बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥

(जपु जी, पउड़ी २४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव ने परमात्मा को स्थान-स्थान पर सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामिन्, सर्वशक्तिमान्, दाता, भक्त-वत्सल, पतितपावन, परम कृपालु, सर्वप्रेरक, शीलवन्त, सखा, सहायक, माता-पिता, स्वामी, शरणदाता आदि विशेषणों से युक्त कर उसके सगुण स्वरूप को अभिव्यक्त किया है। हाँ, उन्होंने स्थान-स्थान पर अवतारवाद का खण्डन किया है, यथा---

मन महिं झूरे रामचन्दु सीता लक्षमणु जोगु।

(सलोक वारां ते वधीक)

अंधुलै दहसिरि मूंड कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥

....

आगै अंतु न पाइओ ताका कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥

(आसा राग, सबद ७)

गुरु नानक ने रामादिक अवतारों के सम्बन्ध में एक स्थान पर कहा है कि एक परमात्मा ही निर्भय और निरंकार है, रामादिक तो धूल के समान तुच्छ हैं---

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥

(आसा की वार)

उन्होंने स्थान-स्थान पर जोरदार और स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मेरा परमात्मा एक ही है। यही बात उपनिषदों में भी पाई जाती है। इस्लाम का एकेश्वरवाद तो प्रसिद्ध ही है। गुरु नानक की उक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं--

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है ॥

(आसा राग, सबद ५)

साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई ॥

(आसा-काफी, असटपदीआं १८)

३. निर्गुण और सगुण : उभय स्वरूप--

परमात्मा के निर्गुण और सगुण स्वरूपों के अतिरिक्त गुरु नानकदेव ने स्पष्ट रूप से उसके उभय स्वरूपों को माना है। उनके विचार में ब्रह्म निर्गुण भी है और सगुण भी। इसके साथ ही साथ वह निर्गुण और सगुण दोनों ही एक साथ है। गुरु नानकदेव ने 'सिद्ध गोष्ठी' में कहा है कि परमात्मा ने अव्यक्त निर्गुण से सगुण ब्रह्म को उत्पन्न किया और वह दोनों आप ही है---

अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥

(रामकली, सिध गोसटि, पउड़ी २४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सृष्टिक्रम

सृष्टि-क्रम भी अद्भुत पहेली है। विभिन्न दार्शनिकों और तत्त्ववेत्ताओं ने इस समस्या को अपने-अपने ढंग से सुलझाने का प्रयास किया। परन्तु फिर भी वह ज्यों की त्यों बनी रही। गुरु नानकदेव ने सृष्टि-रचना के सम्बन्ध में एक ऐसे समय की कल्पना की है, जब सृष्टि का नामनिशान तक नहीं था। वे कहते हैं, 'अगणित युगों पर्यन्त महान् अन्धकार था। न तो पृथ्वी थी और न आकाश था। प्रभु का अपार हुक्म मात्र था। न दिन था, न रात थी। न तो चन्द्रमा था, न सूर्य।......पाठ-पुराण तथा सूर्योदय और सूर्यास्त भी न थे। वह अगोचर, वह समर्थ स्वयं अपने को [illegible] कर रहा था।'

(मारू, सोलहे १७)

गुरु नानकदेव की उपर्युक्त विचारावली एवं ऋग्वेद के नासदीय सूक्त की विचारधारा में असाधारण साम्य है।[1] तैत्तिरीय ब्राह्मण, छान्दोग्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् आदि में भी इसी प्रकार की कल्पना है।[2]

गुरु नानकदेव ने परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को कहीं-कहीं शून्य कहा है और इसी से सब सृष्टि की उत्पत्ति मानी है।[3] पर इस शून्य का अर्थ 'कुछ नहीं' नहीं है। शून्यावस्था का तात्पर्य उस स्थिति से है, जब संसार की उत्पत्ति से पूर्व सारी शक्तियाँ एकमात्र निर्गुण ब्रह्म में केन्द्रीभूत थीं।

सृष्टि के मूलारम्भ के इस परम तत्त्व को गुरु नानकदेव ने 'ओंकार' की संज्ञा से भी प्रतिष्ठित किया है और इसी 'ओंकार' को ब्रह्मादिक तथा सृष्टि की उत्पत्ति का कारण माना है।[4]

गुरु नानकदेव परमात्मा को ही सृष्टि का निमित्त और उपादान कारण मानते हैं---

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥

(आसा की वार)

सांख्य मतानुसार सृष्टि-रचना के मूल कारण पुरुष और प्रकृति हैं। पर गुरु नानक को यह मत मान्य नहीं। वे परमात्मा को ही सृष्टि का मूल कारण मानते हैं।

---

१. ऋग्वेद मण्डल १०, १२९ सूक्त, ऋचा १ और २

२. वृहद् विवेचन के लिए देखिए, श्री गुरुग्रन्थ-दर्शन, डा० जयराम मिश्र (सृष्टि-क्रम), पृ० ९६-११९

३. 'सुन कला अपरंपरि धारी।' आदि, मारू सोलहे १७

४. गुरुग्रंथ साहिब, 'ओंअंकारि ब्रहमा उतपति', रामकली दखणी ओंअंकारु॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानक के अनुसार संसार की उत्पत्ति परमात्मा के 'हुक्म' से होती है। यह 'हुक्म' अनिर्वचनीय है—

हुक्मी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई।
....
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकुम न कोइ॥

(जपु जी, पउड़ी २)

गुरु नानकदेव ने 'हुक्म' की महत्ता का मारू राग में विशद चित्रण किया है—

हुकमे आइआ हुकमि समाइआ
....
हुकमे सिध साधिक वीचारे॥

(मारू, सोलहे १६)

सृष्टि-रचना का समय अज्ञात और अनिश्चित है। पंडित, काजी इत्यादि कोई भी सृष्टि-रचना का समय नहीं जानते। जिसने सृष्टि-रचना की है, वही इन सब बातों को जान सकता है—

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवणु थिति कवणु वारु॥
....
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई॥

(जपु जी, पउड़ी २१).

इसी प्रकार 'सिध गोसटि' (रामकली) की २३वीं पउड़ी में यह बतलाया है कि सृष्टि-रचना के प्रारम्भ में विचार करना आश्चर्यमय है।

सृष्टि के अनन्त विस्तार परमात्मा के एक वाक्य से होते हैं—

'कीता पसाउ एको कवाउ'

(जपु जी, पउड़ी १६)

ज्योंही 'हुक्म' की उत्पत्ति होती है, त्योंही हउमैं (अहंकार) की उत्पत्ति होती है। यही 'हउमै' जगत् की उत्पत्ति का मुख्य कारण है—

'हउमै विचि जगु उपजै'

(सिध गोसटि, पउड़ी ६८)

यही हउमैं बाह्य और आन्तरिक सृष्टि की उत्पत्ति का कारण है। तीनों गुण हउमैं में ही क्रियाशील होते हैं और वे ही समस्त सृष्टि के कारण होते हैं। गुरु नानकदेव के अनुसार परमात्मा 'अफुर अवस्था' में तो सबसे परे और अव्यक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, किन्तु वही 'सफ़ुर अवस्था' में सर्वव्यापी और सर्वान्तरात्मा है।[1]

योगवासिष्ठ के अनुसार भी अहंकार ही स्थूल और सूक्ष्म सृष्टि का कारण है।[2]

गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि सृष्टि की उत्पत्ति जिस परमात्मा से होती है, उसी परमात्मा में वह विलीन भी हो जाती है। निम्नलिखित उदाहरणों से इसकी पुष्टि होती है—

जिसते उपजै तिसते बिनसै।

(सिरी रागु, सबद १६)

जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई।।

(आसा, सबद २१)

तुझ ते उपजहि तुझ माहिं समावहि।।

(मारू, सोलहे १४)

मुण्डकोपनिषद् में भी सृष्टि-रचना और लय का कारण परमात्मा ही बताया गया है (मुण्डक २, खंड १, मंत्र १ तथा मुण्डक १, खंड १, मंत्र ७)।

गुरु नानक के अनुसार सृष्टि अनन्त है—

असंख नाव असंख थाव। अगंम अगंम असंख लोअ।।

(जपु जी, पउड़ी १९)

इसी प्रकार जपु जी के 'ज्ञान खण्ड' में सृष्टि की अनन्तता का विशद चित्रण किया गया है। सृष्टि की अनन्तता पर उन्होंने आश्चर्य भी प्रकट किया है—

विसमादु नादु, विसमादु वेद

....

विसमादु रूप विसमादु रंगु। आदि

(आसा की वार)

गुरु नानक ने वेदान्तियों की भाँति जगत् को मिथ्या नहीं माना है और न इसे भ्रम कहा है। उन्होंने जगत् को स्थान-स्थान पर सत्य कहा है—

सचे तेरे खंड सचे ब्रह्मंड। सचे तेरे लोअ सचे आकार।।

(आसा की वार)

उन्होंने जहाँ कहीं सृष्टि को झूठा अथवा मिथ्या कहा है, उसका यही अभिप्राय है कि वह नश्वर और क्षणभंगुर है, शाश्वत नहीं। अन्त में परमात्मा में ही यह सृष्टि लय हो जाती है—

तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई।।

(रागु आसा, सोदरु)

---

१. फिलासफी आफ सिक्खिज्म, शेरसिंह, पृ० १८६
२. द योगवासिष्ठ, बी० एल० आत्रेय, पृ० १६०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हउमै (अहंकार)

'अफुर' ब्रह्म में परमात्मा के 'हुक्म' से क्रियाशीलता उत्पन्न होती है और यही क्रियाशीलता सगुण ब्रह्म बन जाती है। 'हुकम' की उत्पत्ति के साथ ही साथ हउमै (अहंकार) की उत्पत्ति होती है। यही हउमै अहंकार की उत्पत्ति का मुख्य कारण है—

हउमै विचि जगु उपजे।

(रामकली, सिध गोसटि)

योगवासिष्ठ में भी अहंकार को ही सृष्टि-उत्पत्ति का मूल कारण माना गया है।[1]

'हउमै' इतना भयानक रोग है कि मनुष्य भर ही इस रोग के वशीभूत नहीं हैं, बल्कि पवन, पानी, वैश्वानर, धरती, सातों समुद्र, नदियाँ, खण्ड, पाताल, षट्-दर्शन सभी पर इसका प्रभुत्व है। यहाँ तक कि त्रिदेव भी इससे मुक्त नहीं हैं—

नानक हउमै रोग बुरे।
....
रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका॥

(भैरउ, असटपदी १)

गुरु नानक द्वारा वर्णित अहंभाव की प्रवृत्तियों तथा श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में वर्णन की गई आसुरी प्रवृत्तियों में अत्यधिक साम्य है। सांसारिक पुरुषों के सारे कार्य अहंकार ही में हुआ करते हैं। जन्म-मरण, देना-लेना, लाभ-हानि, सत्य-असत्य, पुण्य-पाप, नरक-स्वर्ग, हँसना-रोना, शौच-अशौच, जाति-पाँति, ज्ञान-अज्ञान, बन्धन-मोक्ष आदि सब कुछ 'हउमै' के द्वारा होते हैं। उनकी अन्य क्रियाएँ भी 'हउमै' के द्वारा ही होती हैं। गुरु नानकदेव ने 'आसा की वार' में इसका चित्रण किया है—

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ।
....
हउमै करि करि जंत उपाइआ॥

(आसा की वार)

सारांश यह कि 'हउमै' जीवात्मा की सांसारिक यात्रा का प्रमुख कारण है। रजोगुण, तमोगुण एवं सत्वगुण के संयोग से नाना भाँति की सृष्टि-रचना होती है। अनेक प्रकार के जीव उत्पन्न होते हैं। अनेक प्रकार के कर्म इसी

१. द योगवासिष्ठ, बी० एल० आत्रेय, पृ० १८८

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हउमै' के कारण किए जाते हैं। इन कर्मों के प्रभाव और संस्कार जीवात्मा को सूक्ष्म शरीर द्वारा बाँधे रहते हैं। इस प्रकार जीव अनेक योनियों में भटकता रहता है और जीव का आवागमन निरन्तर जारी रहता है।[1]

जिस प्रकार मनुष्य की वासनाएँ अनन्त हैं, उसी प्रकार हउमै के भेद भी अनन्त हो सकते हैं ? फिर भी स्थूल दृष्टि से गुरु नानक की वाणी में हउमै के निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं—

(१) धार्मिक अथवा आध्यात्मिक अहंकार—

'मैं ध्यानी हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, मैं तपस्वी हूँ, मैं योगी हूँ, मैं ब्रह्मचारी हूँ'—यही धार्मिक अथवा आध्यात्मिक अहंकार है। यह अहंकार साधक को नीचे गिरा देता है। गुरु नानकदेव ने स्पष्ट कर दिया है, 'लाखों भलाइयाँ, लाखों पुण्य, कर्म, तीर्थों में लाखों तप, जंगलों में योगियों का सहज योग आदि-आदि यदि अहंभाव से किए गए हैं, तो वे सब मिथ्या बुद्धि से किए गए हैं।'

लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुनां परवाणु
....
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥

(आसा की वार)

(२) विद्यागत अहंकार—

विद्यागत अहंकार आध्यात्मिक प्रगति में बहुत बड़ा बाधक है। गुरु नानक की पैनी दृष्टि इस पर थी। उन्होंने कहा है, 'यदि पढ़-पढ़कर काफिले भर दिए जायँ, पढ़-पढ़कर नावें लाद दी जायँ, पढ़-पढ़कर गड्डे भर दिए जायँ और अध्ययन में ही सारे वर्ष, सारे मास, सारी आयु, सारी साँसें व्यतीत कर दी जायँ, फिर भी नानक के हिसाब से यही बात ठीक है कि अध्ययन-सम्बन्धी सारे अहंकार सिर खपाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं।'

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि.........आदि

(आसा की वार)

(३) कर्मकाण्ड और वेश-सम्बन्धी अहंकार—

बहुत से साधक इन्हीं के बल पर संसार में अपनी ख्याति चाहते हैं। किन्तु उन्हें आन्तरिक शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती—

वहु भेख कीआ देही दुखु दीआ
....
रहे बेबाणी मड़ी मसाणी। अंधु न जाणै फिरि पछुताणीं

(आसा की वार)

---

१. गुरमति दर्शन, शेरसिंह, पृ० २५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव ने ऐसे वेशादिक अहंकार की विस्तार के साथ विवेचना की है। योगियों के भगवा-वेश, कंथा, झोली, तीर्थ-भ्रमण, विभूति-धारण, धूनी रमाना, संन्यासियों के मूड़ मुड़ाने तथा कमण्डल धारण करने आदि वाह्य-वेशों एवं तद्-गत अहंकारों की तीव्र भर्त्सना की है—

घोली गेरू रंग चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी।

....

इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ परनारी॥

(मारू, असटपदी ७)

(४) जाति-सम्बन्धी अहंकार—

'मैं ब्राह्मण हूँ, मैं क्षत्रिय हूँ, मैं कुलीन हूँ' आदि का अहंकार मनुष्यों के बीच में ऐसी खाई खोद देता है कि वह शताब्दियों तक नहीं पटती। गुरु नानकदेव ने जाति-सम्बन्धी अहंकार को दूर करने के लिए अपने विचार इस भाँति प्रकट किए हैं—'जीव मात्र में परमात्मा की ज्योति समझो। जाति के सम्बन्ध में प्रश्न न करो, क्योंकि आगे किसी भी प्रकार की जाति नहीं थी।'

जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे।

(आसा, सबद ३)

अगै जाति न जोरु है, अगै जीउ नवे॥

(आसा की वार)

जाति महि जोति, जोति महि जाता, अकल कला भरपूरि रहिआ॥

(आसा की वार)

(५) धन-सम्पत्ति सम्बन्धी अहंकार—

धन-सम्पत्ति सम्बन्धी अहंकार मनुष्य को एकदम वैभवान्ध बना देते हैं। धन-सम्बन्धी अहंकार के वशीभूत होकर मनुष्य राक्षसी-कर्म करने में प्रवृत्त होता है। उसके सामने सम्पत्ति के अतिरिक्त कोई आदर्श नहीं रहता। उसे सदैव महर, मलूक, सरदार, राजा, बादशाह, चौधरी, राउ कहलाने की वासना सताती रहती है। किन्तु ऐसे मनमुख अहंकारी की दशा ठीक वैसी ही होती है, जो दावाग्नि में पड़कर तृण-समूह की होती है—

सुइना रूपा संचीऐ मालु जालु जंजालु।

....

सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि॥

(सिरी रागु, असटपदी १६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोने-चांदी का कितना ही संग्रह क्यों न किया जाय, किन्तु यह सब कच्चा है, विष है, क्षार है—

सुइना रूपा संचीऐ धनु काचा विखु छारु ॥

(रामकली, दखणी ओअंकारु, पउड़ी ४८)

(६) परिवार-सम्बन्धी अहंकार—

परिवार सम्बन्धी अहंकार प्रबल मोह के हेतु हैं। गुरु नानकदेव कहते हैं कि जो सांसारिक व्यक्ति 'बहिन, भौजाई, सास, फूफी, नानी, मौसी' आदि में अहं-बुद्धि रखते हैं, वे सचमुच ही मूर्ख हैं। स्मरण रखना चाहिए कि संसार का कोई भी सम्बन्ध अंत में हमारी सहायता नहीं कर सकता—

ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ।

....

मामे तै मामणीआ भाइर बाप न माउ ॥

(मारू-काफी, सबद १०)

जितने भी सांसारिक सम्बन्ध हैं, सभी बंधन के हेतु हैं—

बंधन मात पिता संसारि । बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥

(आसा, असटपदी १०)

(७) रूप-यौवन सम्बन्धी अहंकार—

यह अहंकार सार्वभौमिक है। यह अहंकार धनी से लेकर दरिद्र तक में समान रूप से व्याप्त है। निर्धन से निर्धन और कुरूप से कुरूप व्यक्ति भी अपने रूप और यौवन पर अभिमान करता है। गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर इस अहंकार की प्रबलता बतलाई है। उन्होंने एक स्थल पर बतलाया है कि पाँच ठग संसार में अत्यन्त प्रबल हैं। वे हैं राज, माल, रूप, जाति और यौवन। इन पाँचों ठगों ने सारे संसार को ठग लिया है। उन्होंने किसी की भी लज्जा नहीं छोड़ी...

राज मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ।
एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥

(मलार की वार)

उन्होंने यह भी बतलाया है कि रूप और काम का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। इन दोनों की प्रगाढ़ मैत्री है—

रूपै कामै दोसती

(मलार की वार)

अहंकार के कारण बड़े-बड़े दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं। सद्गुरु ही 'हउमै' के बन्धनों को तोड़ सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हउमै बन्धन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ।

(मारू, सोलहे ८)

माया

सृष्टि के प्रारम्भकाल में अव्यक्त और निर्गुण परब्रह्म जिस देशकाल आदि नामरूपात्मक सगुण शक्ति से व्यक्त अर्थात् दृश्य-सृष्टि रूप-सा देख पड़ता है, उसी को वेदान्त-शास्त्र में 'माया' कहते हैं। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अनुसार नाम, रूप और कर्म ये तीनों मूल में एक स्वरूप ही हैं। हाँ, उनमें विशिष्टार्थक सूक्ष्म भेद किया जा सकता है, कि 'माया' एक सामान्य शब्द हैं और उसके दिखावे को नाम, रूप तथा व्यापार को कर्म कहते हैं।[1]

वेदान्तियों की भाँति गुरु नानकदेव को माया का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार नहीं है। उन्होंने स्पष्ट रूप से यह बतलाया है कि माया की रचना परमात्मा ने ही की—'निरंजन परमात्मा ने स्वयं अपने आपको उत्पन्न किया है और समस्त जगत् में वही अपना खेल बरत रहा है। तीनों गुणों एवं इनसे सम्बद्ध माया की रचना उसी परमात्मा ने की। मोह की वृद्धि के साधन भी उसी ने उत्पन्न किए।'

आपीं आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ।
आपीं खेलु रचाइओनु सभु जगत सबाइआ ।
त्रगुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ।

(सारंग की वार)

गुरु नानकदेव ने माया का 'कुदरत' नाम भी स्वीकार किया है—

कुदरति कवण कहा वीचारु ।

(जपु जी, पउड़ी १६)

आपणि कुदरति आपे जाणै ॥

(सिरी रागु, असटपदी १)

माया की अति मोहिनी शक्ति है। इसी से इसका प्रभुत्व सारे संसार में व्याप्त है। यह नाना रूपों में व्याप्त है—

माइआ मोहि सगलु जगु छाइआ ।
कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥
सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥१॥२॥

(प्रभाती-विभास, असटपदी २)

गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर इस बात का संकेत किया है कि ब्रह्मा,

---

१. गीता-रहस्य अथवा कर्मयोगशास्त्र, बाल गंगाधर तिलक, पृ० २६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विष्णु, महेश माया से उत्पन्न हुए हैं और वे त्रिगुणात्मक माया में बँधे हैं—

एका माई जुगति बिआई तिनि चेले परवाणु।
इकु संसारी, इकु भंडारी, इकु लाए दीवाणु॥

(जपु जी, पउड़ी ३०)

उन्हों माया की प्रबलता स्थान-स्थान पर रूपकों द्वारा प्रदर्शित की है। एक स्थल पर गुरु नानकदेव ने माया को उस बुरी सास के रूप में माना है, जो जीवात्मा रूपी वधू को पति परमात्मा से मिलने नहीं देती—

सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी॥

(आसा, सबद २२)

एक स्थल पर उन्होंने माया को ऐसी सर्पिणी माना है, जिसके विष के वशीभूत सारे जीव हैं—

इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा।

(सिरी रागु, असटपदी १५)

गुरु नानकदेव ने कहा है कि माया की सारी रचना धोखा है। इसमें कुछ सार नहीं है—

बाबा माइआ रचना धोहु॥१॥ रहाउ॥

(सिरी रागु, सबद ३)

सत्-संगति, सद्गुरु-प्राप्ति, नाम-जप, प्रेमाभक्ति आदि से माया के बंधन कट जाते हैं और परमात्मा की प्राप्ति होती है।

जीव, मनुष्य और आत्मा

जीव परमात्मा की सृष्टि की सबसे चेतनशील शक्ति है; इसमें सुख-दुःख अनुभव करने की अद्भुत शक्ति तथा चेतना है। गुरु नानकदेव के अनुसार जीव परमात्मा के 'हुक्म' से उत्पन्न होते हैं—

हुकमी होवनि जीअ

(जपु जी, पउड़ी २)

'गउड़ी राग' के एक सबद में भी यही बात स्वीकार की गई है कि जीव परमात्मा के 'हुक्म' से अस्तित्व में आते हैं और 'हुक्म' से ही फिर उसी में लीन हो जाते हैं—

हुकमे आवै हुकमे जाइ। आगे पीछै हुकमि सकाइ।

(गउड़ी, सबद २)

जीव परमात्मा से उत्पन्न होते हैं और उनके अंतर्गत परमात्मा का निवास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं, इसीलिए गुरु नानकदेव ने अपनी वाणी में स्थान-स्थाम पर जीव को अमर माना है—

देही अंदरि नामु निवासी । आपे करता है अविनासी ॥
न जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई है ॥१३॥६॥

(मारू, सोलहे ६)

न जीउ मरै, न डूबै, तरै ॥

(गउड़ी, सबद २)

जीव अनन्त हैं—

तिनके नाम अनेक अनंत ।

(जपु जी, पउड़ी ३७)

जीवों का स्वामी परमात्मा है। उसी के अधीन समस्त जीव हैं—

जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी ।

(मलार, असटपदी २)

जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी ।

(रागु आसा, सबद ७)

जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ।

(सिरी रागु, सबद ३१)

गुरु नानक जी के अनुसार जीवों को उत्पन्न करके परमात्मा ही उनके भोजन आदि का प्रबन्ध करता है—

जीअ उपाइ रिजकु दे आपे ॥

(मारू, सोलहे २२)

किन्तु जीव जब अहंकारवश अपनी पृथक् सत्ता समझने लगता है, तो उसकी बड़ी दुर्दशा होती हैं—

जह जह देखा तह तू है, तुझते निकसी फूटि मरा ॥

(सिरी रागु, सबद ३१)

मायाग्रस्त होने के कारण जीव अनेक योनियों में भटकते रहते हैं। कभी रूख-वृक्ष की योनि धारण करनी पड़ती है, कभी पक्षियों की योनि में जाना पड़ता है और कभी सर्पयोनि में जन्म धारण करना पड़ता है—

केते रूख बिरख हम चीने, केते पसू उपाए ।
केते नाग कुली महि आए, केते पंख उडाए ॥

(गउड़ी-चैती, सबद १७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारांश यह कि जिस भाँति जल में मछली पकड़ी जाती है, उसी भाँति मनुष्य भी माया के जाल में जकड़ा रहता है—

जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥

(सिरी रागु, असटपदी ४)

अंत में जीव साधन-सम्पन्न होकर परमात्मा में ही विलीन हो जाता है—

तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ।

(मारू, सोलहे १४)

मनुष्य

इस लोक की जीव-सृष्टि का मनुष्य ही सर्वाधिक चेतनशील प्राणी है। बड़े भाग्य से मानव जन्म प्राप्त होता है।

माणसु जनमु दुलंभ गुरमुखि पाइआ ।

गुरु नानकदेव ने मानव-जीवन की आयु को—गर्भावस्था, बाल्यावस्था, यौवनावस्था, वृद्धावस्था, अति वृद्धावस्था, मरणावस्था में—विभाजित करके यह बतलाया है कि उसकी सारी आयु व्यर्थ ही नष्ट हो रही है।[1]

एक स्थल पर गुरु नानकदेव ने सारी आयु का निचोड़ निम्नलिखित ढंग से रक्खा है, 'मनुष्य की दस वर्ष तक तो बाल्यावस्था रहती है। बीस वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते रमण की अवस्था आ पहुँचती है। तीस वर्ष तक सौन्दर्य अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है। चालीस वर्ष तक प्रौढ़ावस्था आ जाती है और पचास वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते पैर खिसकने लगते हैं। साठ वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते वृद्धावस्था आ जाती है। सत्तर वर्ष की अवस्था में मनुष्य मतिहीन हो जाता है। अस्सी वर्ष में वह व्यवहार के योग्य नहीं रह जाता। नब्बे वर्ष में वह मसनद का सहारा ले लेता है और सर्वथा शक्तिहीन हो जाने के कारण किसी भी वस्तु को नहीं जान पाता है।

दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुन्दर कहावै ॥...आदि

(मलार की वार)

मनुष्य में परमात्मा के वियोग और मिलन के उपादान दोनों ही विद्यमान रहते हैं। कमल वृत्तिवाले मनुष्य परमात्मा से मिल जाते हैं और मेढक वृत्ति-वाले विषय रूपी सिवार का ही भक्षण करते हैं—

विमल मझारि बससि निरमल जल पदमनि जावल रे ॥ आदि ॥

(मारू, सबद ५)

---

१. पहिले रैणि के वणजारिआ मित्रा...। आदि, सिरी रागु, पहरे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्य अपनी मनसुखी और शाक्त वृत्तियों के कारण ही परमात्मा से विमुख हो जाता है—

जग सिउ झूठ प्रीति मनु वेधिआ जनसिउ वादु रचाई।
....
जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥
(सोरठि, सबद ३)

मनुष्य यद्यपि प्रकाश और अन्धकार वृत्ति का अपूर्व सम्मिश्रण है, पर गुरु नानकदेव ने मनुष्य की आध्यात्मिक शक्ति जगाने के लिए स्थान-स्थान पर बड़े जोरदार शब्दों में कहा है कि मनुष्य की काया परमात्मा के रहने का निवास-स्थान है—

काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि।
साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥
(मारू, सोलहे १३)

परमात्मा रूपी अमृत मनुष्य के घट के भीतर ही है। उसे वाहर ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं है—

मन रे थिरु रहु, मतु कत जाही जीउ।
वाहरि ढूँढ़त बहुत दुखु पावहि घरि अंमृतु घट माही जीउ ॥
(सोरठि, सबद ८)

शरीर के भीतर ही परमात्मा की अपार ज्योति रखी हुई है—

काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार।
(मलार, सबद ५)

परमात्मा की अपार ज्योति का अपने में साक्षात्कार करना हो मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है।

आत्मा

वास्तव में आत्मा में परमात्मा और परमात्मा में आत्मा का निवास है। वेदान्तवादी इसी से आत्मा परमात्मा में अभिन्नता प्रदर्शित करते हैं। गुरु नानक देव ने भी आत्मा और परमात्मा में अभिन्नता प्रदर्शित की है—

आतम महि रामु, राम महि आतमु।
(भैरउ, असटपदी १)

आतम रामु, रामु है आतम
(मारू, सोलहे १०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी से आत्मा सत्, चित् आनन्द-स्वरूप, अजर, अमर, नित्य, शाश्वत है। मनुष्य का परम पुरुषार्थ आत्मा-परमात्मा के एकत्व-दर्शन में ही है—

आतमा परमात्मा एको करै।

(धनासरी, सवद ४)

आत्मोपलब्धि में गुरु का बहुत बड़ा हाथ है—

आतम महि राम, राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा।

(भैरउ, असटपदी १)

आत्म-साक्षात्कार कर लेने पर मनुष्य निरंकार परमात्मा ही हो जाता है—

आतमु चीन्हि भए निरंकारी।

(आसा, असटपदी ८)

आत्मोपलब्धि के आनन्द वर्णनातीत हैं।

मन

जिसके द्वारा मनन करने का कार्य सम्पादित किया जाय, वह मन है। उपनिषदों, श्रीमद्भगवद्गीता, योगवासिष्ठ में मन के स्वरूप की व्याख्या मिलती है।[1] भक्तिकाल के अधिकांश कवियों ने मन की डाटने-फटकारने, फुसलाने-पुचकारने की चेष्टा की है।

गुरु नानकदेव ने मन की उत्पत्ति पंच-तत्त्वों से मानी है—

इहु मनु पंच-ततु से जनमा।

(आसा, असटपदी ८)

गुरु नानकदेव ने मन के दो रूप माने हैं—(१) ज्योतिर्मय अथवा शुद्ध-स्वरूप मन ओर (२) अहंकारमय अथवा माया से अच्छादित मन।

इस ज्योतिर्मय मन में आध्यात्मिक धन निहित है—

मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु॥

(सिरी रागु, सवद २१)

अहंकारमय मन हाथी, शाक्त और अत्यन्त दीवाना है। ऐसा मन माया के वनखण्ड में मोहित तथा हैरान होकर फिरता रहता है और काल के द्वारा इधर-उधर प्रेरित किया जाता रहता है—

मन मैगलु साकतु देवाना।
वनखंडि माइआ मोहि हैराना॥
इत उत जाहि काल के चापे॥

(आसा रागु, असटपदी ८)

---

१. देखिए : श्री गुरु ग्रंथ-दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० १८६-८७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहंकारयुक्त मन काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, खोटी बुद्धि तथा द्वैतभाव के वशीभूत है। बिना इसके मारे आध्यात्मिक पथ में उन्नति नहीं होती।

ना मनु मरै न कारजु होइ।
मनु वसि, दूता दुरमति दोइ॥

(गउड़ी-गुआरेरी, असटपदी ३)

जब तक मन नहीं मरता, माया भी नहीं मरती—

ना मनु मरै न माइआ मरै।

(प्रभाती-विभास, असटपदी १)

सांसारिक विषयों में वैराग्य भावना, दुष्ट जनों की संगति का त्याग, सत्याचरण, गुरुकृपा द्वारा अहंकारयुक्त मन ज्योतिर्मय मन के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। मन-निरोध से अनिर्वचनीय सुख प्राप्त होता है। गुरु नानकदेव ने मन-निरोध के परिणामों का विशद चित्रण किया है—'हरि के बिना मेरा मन कैसे धैर्य धारण कर सकता है ? करोड़ों कल्पों के दुःख का नाश हो गया। परमात्मा ने सत्य को दृढ़ करा दिया और हमारी रक्षा कर ली। क्रोध समाप्त हो गया। अहंकार और ममत्व जल कर भस्म हो गए। शाश्वत और सदैव रहने वाले प्रेम की प्राप्ति हो गई...मन अत्यंत अनुरागी और निर्मल हो गया। मन को मार कर निर्मल पद को पहचान लिया और हरि-रस में शराबोर हो गया। ...मन से मन मान गया, जिससे वह शान्त और निश्चल हो गया, उसकी सारी दौड़ समाप्त हो गई।'—

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई।
....
तह ही मनु जह ही राखिआ ऐसी गुरमति पाई॥

(सारंग, असटपदी १)

हरि-प्राप्ति-पथ

जो दिव्य ज्योति परमात्मा ने हमारे अन्तर्गत रखी है, उसी का साक्षात्कार करना, उसी के साथ मिलजुल कर एक हो जाना, मानव जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य है। सारांश यह कि जिस निरंकार से हम उपजे हैं और जो सदैव हमारे साथ रम रहा है, किन्तु अज्ञानता और मोहवश, जिसे हम नहीं समझ पाते, उसी के साथ साधनों के बल पर एक हो जाना ही हरि-प्राप्ति-पथ है। मनुष्य की मानसिक अवस्था, संस्कार, योग्यता, क्षमता आदि को ध्यान में रखते हुए परमात्म-साक्षात्कार के भिन्न-भिन्न मार्ग निकाले गए। मोटे रूप से हरि प्राप्ति के चार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रधान मार्ग हैं—(क) कर्म मार्ग, (ख) योग मार्ग, (ग) ज्ञान मार्ग और (घ) भक्ति मार्ग।

(क) कर्म मार्ग—

कर्म 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'करना' होता है। व्यष्टि एवं समष्टि के समस्त क्रिया-कलाप कर्म के अंतर्गत रखे जा सकते हैं। व्यष्टि कर्म व्यक्तिपरक है। मोटे रूप से इसके तीन भेद हैं, शारीरिक कर्म, मानसिक कर्म और आध्यात्मिक कर्म। मनुष्य के शरीर के समस्त व्यापार—हँसना, बोलना, उठना, बैठना, गमन करना, देखना, सुनना, खाना-पीना, साँस लेना आदि शारीरिक कर्म के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। मनुष्य का सोचना, स्मरण करना, तर्क-वितर्क करना, कल्पना करना आदि मानसिक कर्म के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। समस्त जड़-चेतन के अन्तर्गत एक अविनाशी सत्ता अथवा सत्-चित्-आनन्द ब्रह्म की अनुभूति के निमित्त किस कर्म आध्यात्मिक कर्म हैं। समस्त मानव-जाति के महान् पुरुषों द्वारा की गई साधनाएँ आध्यात्मिक कर्म के अन्तर्गत रखी जा सकती हैं। ज्ञान-योग, भक्तियोग, हठयोग, राजयोग, प्रेमयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कर्मयोग सभी आध्यात्मिक कर्म के अन्तर्गत समाविष्ट हैं।

समष्टि कर्म का तात्पर्य सृष्टि के सामूहिक कर्म से है। ग्रह-नक्षत्रों, चन्द्रमा, सूर्यादिकों का बनना-बिगड़ना, ब्रह्मा, विष्णु, महेश का उत्पन्न-स्थित और लय होना, वायु का चलना, अग्नि का जलना, सूर्य का तपना आदि समष्टि कर्म हैं।

गुरु नानक के अनुसार निर्गुण ब्रह्म अथवा 'अफुर ब्रह्म' से ही कर्मों की उत्पत्ति हुई—

सुंनहु उपजे दस अवतारा। स्रसटि उपाइ कीआ पासारा॥
देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ करम कमाइदा॥

(मारू, सोलहे १७)

मनुष्य के संस्कारों एवं देह के संयोग से कर्मों के अभ्यास की शृङ्खला चलती रहती हैं—

देह संजोगी करम अभिआसा॥

(मारू, सोलहे १७)

श्रीमद्भगवद्गीता में भी कर्मों की उत्पत्ति ब्रह्म से ही मानी गयी है—

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि[1]

गुरु नानकदेव ने समष्टिगत कर्म का बड़ा ही सुन्दर निरूपण किया है।

---

१. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय ३, श्लोक १५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके अनुसार सृष्टि के समष्टि कर्म परमात्मा के भय अथवा उसके द्वारा स्थापित मर्यादा के अन्तर्गत होते रहते हैं--

'इसी निर्भय (परमात्मा) के भय से सैकड़ों ध्वनि उत्पन्न करनेवाली वायु बहती है। इसी के भय से लाखों नद बहते रहते हैं और अपनी-अपनी मर्यादा का अतिक्रमण नहीं कर सकते। इसी के भय से वशीभूत होकर अग्नि बेगार करती है। इसी के भय से पृथ्वी भार से दबी रहती है.........।'

मैं विचि पवणु बहै सद वाउ।
....
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥

(आसा की वार)

तैत्तिरीयोपनिषद्[1], कठोपनिषद्[2] तथा बृहदारण्यकोपनिषद्[3] में भी प्रायः इसी प्रकार का भाव पाया जाता है।

मनुष्य व्यक्तिपरक कर्म ही करने का अधिकारी है और वे कर्म पूर्वजन्म के संस्कारों के परिणाम हैं। गुरु नानकदेव ने भले और बुरे दो प्रकार के कर्मों को माना है--'कर्म कागज है और मन दवात है। इनके संयोग से बुरी और भली दो प्रकार की लिखावटें लिखी गई हैं। अपने-अपने पूर्वजन्मों के किए हुए कर्मों से निर्मित स्वभाव (बुरे अथवा भले कर्म) द्वारा हम चलाये जाते हैं--

करणी कागदु मनु मसवाणी, बुरा भला दुइ लेख पए।
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥

(मारू, सबद ३)

गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर संकेत किया है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, किन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। उनके विचार से मनुष्य यदि अपने किए हुए शुभ कर्मों का सुख भोगता है अथवा अशुभ कर्मों का दुःख भोगता है, तो उसे किसी को दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि वह स्वयं कर्मों को करनेवाला है। अतः यदि उसे अच्छे कर्मों का सुख मिलता है अथवा बुरे कर्मों का दुःख मिलता है, तो उसे 'काल-कर्म' पर मिथ्या दोष नहीं लादना चाहिए, बल्कि उसे उन कर्मों के फल को भोगना चाहिए--

सुखु दुखु पुरब जनम के कीए
सो जाणै जिनि दातै दीए ॥

---

१. तैत्तिरीयोपनिषद्, वल्ली २, अनुवाक ८, मंत्र १
२. कठोपनिषद् अध्याय २, वल्ली ३, मंत्र ३
३. बृहदारण्यकोपनिषद्, अध्याय ३, ब्राह्मण ८, मंत्र ९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किस कउ दोसु देहि तू प्राणी, सहु अपणा कीआ करारा हे ।

(मारू, सोलहे १०)

यह भावना कि कर्म बिना किसी चेतन-शक्ति के सहयोग से स्वतः फल देते हैं, नितान्त भ्रामक और त्रुटिपूर्ण है। गुरु नानक के अनुसार सारे कर्म-धर्म परमात्मा के हाथ में हैं। वह परमात्मा अत्यन्त निश्चिन्त है और उसका भाण्डार अनन्त है।

करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ।
वेपरवाह अखुट भंडारै ॥

(मारू, सोलहे १३)

कर्म दो प्रकार के हैं—(१) बन्धनप्रद कर्म और (२) मोक्षप्रद कर्म। बन्धनप्रद कर्म वे हैं, जो अहंकार से किए जाते हैं और मोक्षप्रद कर्म वे हैं, जो निष्काम-भावना से परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त किए जाते हैं।

बन्धनप्रद कर्मों को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है।[1]—(क) कर्मकाण्डयुक्त कर्म, (२) अहंकारयुक्त कर्म और (३) त्रैगुणी त्रिविध कर्म।

गुरु नानकदेव ने कर्मकाण्डयुक्त कर्मों का विस्तृत व्यौरा निम्नलिखित पद में दिया है—

वाचहि पुसतक वेद पुरानां ।
....

पाखंड धरमु पीति नही हरि सिउ गुर सबद महारसु पाइआ

(मारू, सोलहे २२)

अहंभाव में फँसकर 'मैंपन' की भावना से ही अहंकारयुक्त कर्मों के संपादन होते हैं। अहंकारी व्यक्ति सदैव यही सोचता है कि 'मैंने अमुक कर्म किया है, अमुक करूँगा' आदि। ऐसे अहंकारी पंडितों को गुरु नानकदेव ने चेतावनी दी है, 'कर्मकाण्डी पण्डित अहंभावना से प्रेरित होकर शास्त्रों और वेदों को बकते हैं अवश्य, किन्तु उनके सारे कर्म सांसारिक हुआ करते हैं, अर्थात् आसुरी भाव से युक्त रहते हैं। उनके सारे कर्म पाखण्डयुक्त होते हैं। परिणाम यह होता है कि आन्तरिक मल की निवृत्ति उन अहंकारयुक्त कर्मों से नहीं होती।'

सुणि पंडित करमाकारी ।
....

---

१. गुरमति अधिआतम करम फिलासफी, रणवीर सिंह, मुखबन्ध (त्रिलोचन सिंह द्वारा लिखित), भाग ३

F 18/2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥

(सोरठि, असटपदी २)

सारा जगत् माया-मोह के वशीभूत है। अतएव सारे सांसारिक प्राणी माया-मोह के वशीभूत होकर त्रिगुणी कर्म ही करते हैं। गुरु नानक ने एक स्थल पर कहा है, 'तीनों गुणों से प्रेम करने वाला बार-बार जन्मता और मरता है'—

जनमि मरै त्रैगुण हितकारु ॥

(गउड़ी, सबद १२)

यह तो हुई बन्धन-प्रद कर्मों की बात। अब मोक्षप्रद कर्म पर आइए। गुरु नानक के अनुसार मोक्षप्रद कर्मों का विभाजन तीन भागों में किया जा सकता है—(अ) हरि-कीरत कर्म, ।(आ) अध्यात्म कर्म और (इ) हुकम-रजाई कर्म।

हरि कीरत कर्म को समझने के पूर्व 'किरत' कर्म को समझ लेना आवश्यक है। किरत कर्म वे अच्छे अथवा बुरे कर्म हैं, जो जीव ने पिछले जन्मों में किए हैं। बारम्बार उन्हीं कर्मों के कारण आदत पड़ जाती है। उसी आदत के वशीभूत होकर, जो पुरुष कर्म करता है, वह किरत कर्म कहलाता है। किरत कर्म भोगने ही पड़ते हैं, मिटते नहीं। कर्मों के भोग के लिए कर्मों की किरत भाग्य में लिख दी जाती है।[1]—

आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ।
पूरबि लिखिआ किस मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥

(सिरी रागु, असटपदी १०)

किरत-कर्म की दुरूहता मेटने में यदि कोई समर्थ है, तो वह है 'हरि-कीरत-कर्म'। यह कर्म सभी कर्मों में श्रेष्ठ है। परमात्मा के नाम का गुण-गान 'किरत-कर्म' के सारे मलों को धो देता है। गुरु नानक 'हरि-कीरत कर्म' की प्रशंसा करते हुए एक स्थल पर इस भाँति कहते हैं, 'सद्‌गुरु, जिसके अन्तर्गत सत्य की प्रतिष्ठा करता है, उसी को सच्चे योग की युक्ति के मूल्य का वास्तविक ज्ञान होता है। उसके लिए गृह और वन समान हो जाते हैं। चन्द्रमा की शीतलता एवं सूर्य की उष्णता में भी ऐसे व्यक्ति की बुद्धि समान हो जाती है। कीरति रूपी करणी उसका नित्य का अभ्यास हो जाता है'—

जिसकै अन्तरि साचु वसावै। जोग जुगति की कीमति पावै।
रवि ससि एकौ गृह उदिआनै। करणी कीरति करम समानै ॥

(गउड़ी-गुआरेरी, असटपदी ६)

---

१. गुरमति अधिआतम करम फिलासफी, रणधीरसिंह, पृ० २६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आध्यात्मिक कर्म वे हैं, जो जीवात्मा और परमात्मा के बोध और उनसे एकता का सम्बन्ध स्थापित करते हैं। गुरु नानकदेव ने आध्यात्मिक कर्मों को सच्चा माना है। इन्हीं कर्मों के द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार होता है। गउड़ी राग में आध्यात्मिक कर्म के अन्तर्गत निम्नलिखित साधन बताए हैं—पंच कामादिकों को मारना, सच्चाई धारण करना, परमात्मा की अखण्ड ज्योति सर्वत्र देखना, गुरु के शब्द पर आचरण करना, परमात्मा का भय मानना, आत्म-चिंतन में निमग्न रहना, गुरु की कृपा में दृढ़ विश्वास रखना, गुरु की सेवा सर्वभाव से करना, अहंकार कों मारना, एकमात्र परमात्मा को जप, तप, संयम समझना—

अधिआतम करम करे ता साचा।

....

कहु नानक अपरंपर मानु ॥८॥

(गउड़ी, असटपदी ६)

आध्यात्मिक कर्मों की सीमा निर्धारित करनी कठिन है। हमारी राय में आत्म-साक्षात्कार सम्बन्धी वे सभी कर्म, सभी उपासनाएँ और सभी आचार-व्यवहार जो अहंभावना से रहित होकर परमात्म-साक्षात्कार के निमित्त किए जाते हैं, आध्यात्मिक कर्म हैं।

'हुकम रजाई' कर्म वे हैं, जो परमात्मा की प्रेरणा, आज्ञा, मर्जी अथवा इच्छा से होते हैं। ये कर्म गुरु की महान् कृपा एवं परमात्मा की प्रेरणा से होते हैं। शुद्ध अन्तःकरण में जब परमात्मा की अन्तर्ध्वनि सुनाई पड़ती है, तभी ऐसे कर्म का होना संभव है, अन्यथा नहीं—

हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥

(जपु जी, पउड़ी १)

ताकउ बिघन न लागई चलै हुकम रजाई।

(आसा, असटपदी २०)

हुकमि रजाई जो चले, सो पवै खजाने ॥

(ख) योग मार्ग—

योग भारतवर्ष का सबसे प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण साधन है। शुक्ल यजुर्वेद, उपनिषदों, श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भागवद् गीता, योगवासिष्ठ आदि प्राचीन ग्रन्थों में योग का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।[1] पातंजलि-योगदर्शन तो योग का पृथक् ग्रन्थ ही है। इसमें हठयोग के अष्टांग साधनों की विस्तृत चर्चा की गई है।[2]

---

१. विस्तृत विवेचन के लिए, देखिए—गुरु ग्रंथ-दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० २२९

२. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए—वही, पृ० २३१-३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव की वाणी में हठयोग की शब्दावलियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। 'दस दुआरि', 'उलटिओ कमल', 'अंमृत धारि', 'गगनि',' अंमृत रस', 'अलिपत गुफा', 'अनहद सबद', 'सुंन समाधि', 'सुंन मंडल', 'सहज गुफा' आदि शब्द स्थान-स्थान पर प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ—

उलटिओ कमलु ब्रहमु बीचारि।
अंमृत धार गगनि दस दुआरि॥
(गउड़ी, सबद ८)

अनदिनु जागि रहे लिव लाई।
....
तजि हउ लोभा एको जाता॥
(रामकली, असटपदी ३)

अनहदो अनहदु वाजे रुण झुण कारे राम।
नानक नामि रते वैरागी अनहद रुण झुण कारे॥
(आसा, छंद २)

इस स्थल पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि योग के प्रति गुरु नानकदेव की अपार श्रद्धा अवश्य है, पर उन्हें हठयोग की सारी क्रियाएँ मान्य नहीं। बिना भक्ति के हठयोग त्याज्य है। उनकी दृष्टि में प्राणायाम, नेवली आदि क्रियाएँ बिना भक्ति के शारीरिक व्यायाम मात्र हैं। भक्तिहीन योग निष्प्राण और तत्वहीन है—

चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै।
निउली करम खटु करम करीजै॥
राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै॥
(रामकली, असटपदी ५)

गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर वेशधारी योगियों की तीव्र भर्त्सना की है।[1] उन्होंने कुछ आध्यात्मिक रूपकों द्वारा स्थान-स्थान पर वास्तविक योग के प्रति अपने उदात्त विचार प्रकट किए हैं। उदाहरणार्थ—

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति॥
(जपु जी, पउड़ी २८)

'शून्य शब्द का योग में बहुत महत्त्व है। गुरु नानकदेव के अनुसार 'शून्य' वह शब्द है, जो समस्त सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण है। इस शून्य में मन नियोजित करना उनकी दृष्टि में सबसे बड़ा योग है।[2] गुरु नानकदेव का शून्य

---

१. रामकली, असटपदी २
२. 'अंतरि सुनि' आदि, रामकली, सिध गोसटि, ५१, ५२ और ५३ पउड़ियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'कुछ नहीं है' वाला शून्य नहीं है, बल्कि उनका शून्य वह शून्य है, जो सर्वभूतान्तरात्मा है, घट-घटव्यापी है और निरंकार ज्योति के रूप में सभी के अन्तर्गत व्याप्त है।

गुरु नानकदेव ने 'दशम द्वार' का भी स्थल-स्थल पर वर्णन किया है। हमारे अन्तःकरण में जहाँ निरंकारी ज्योति का निवास है, वही 'दशम द्वार' है। किन्तु 'दशम द्वार' के सिलसिले में दो बातें उल्लेखनीय हैं। पहली तो यह कि हठयोग के अनुसार तो योगी दशम द्वार में पहुँचने के पूर्व ही अनाहत शब्द सुनता है, पर गुरु नानकदेव के अनुसार अनाहत शब्द का रस 'दशम' द्वार में पहुँचने पर प्राप्त होता है। दूसरी बात यह है कि उनके अनुसार 'दशम' द्वार नामजप से खुलता है।[1]

गुरु नानकदेव ने 'सहज योग' के प्रति अपनी प्रगाढ़ आस्था प्रकट की है। उन्होंने 'सहज' शब्द का विभिन्न अर्थों में प्रयोग किया है।[2]

(ग) ज्ञान मार्ग—

ज्ञान का शाब्दिक अर्थ 'किसी प्रकार का ज्ञान' होता है। किन्तु वेदान्त शास्त्र में ज्ञान का अभिप्राय 'ब्रह्मज्ञान' से है। अन्य ज्ञान 'मौखिक ज्ञान' अथवा 'चंचु ज्ञान' मात्र हैं। अद्वैत ब्रह्म की अनुभूति ही ब्रह्मज्ञान है। बिना ब्रह्म के साक्षात्कार के सारे प्राणी अज्ञान में भटकते रहते हैं और वे इस बात को नहीं जानते कि सत्य परमात्मा सभी में रम रहा है—

गिआन विहूणी भवै सबाई।
साचा रवि रहिआ लिव लाई॥

(मारू, सोलहे १४)

जिसने ब्रह्म के अद्वैतभाव की अनुभूति कर ली, उसके समस्त कर्म निरर्थक सिद्ध हो जाते हैं—

जे जाणसि ब्रहमं करमं। सभि फोकट निसचउ करमं॥

(आसा की वार)

ब्रह्मज्ञान में अद्वैतभाव की अनुभूति आवश्यक है। अद्वैत ज्ञान की घनीभूतता ही ब्रह्मज्ञान है। ब्रह्मज्ञानी वही है, जो सर्वत्र ब्रह्म का दर्शन करता हो। गुरु

---

१. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, गुरुग्रंथ दर्शन, डॉ० जयराम मिश्र पृ० २४३-२४८

२. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, नानक वाणी, डॉ० जयराम मिश्र परिशिष्ट (ख) 'सहज'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नानक देव में यह भावना पूर्णरूप से पाई जाती है—

आपे पटी कलम आपि उपरि लेख भी तू ।
एकौ कहीऐ नानका दूजा काहे कू ।।

(मलार की वार)

गुर परसादी दुरमति खोई । जह देखा तह एको सोई ।।

(आसा, सबद २८)

सरब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ।।

(आसा, सबद २८)

शेरसिंह ने अपनी पुस्तक 'फिलासफी आफ़ सिक्खिज्म' में गुरु नानक की रचनाओं में अद्वैतवाद नहीं स्वीकार किया है और इसके लिए उन्होंने निम्न-लिखित तर्क उपस्थित किए हैं[1]—

१. उन्होंने जीव ब्रह्म की एकता नहीं स्वीकार की ।
२. ब्रह्म और सृष्टि में भी एकता नहीं स्वीकार की ।
३. सोऽहं आदि अद्वैत शब्दावली नहीं पाई जाती ।
४. शंकर के अद्वैतवाद में भक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है ।

किन्तु हम शेरसिंह जी के चारों तर्कों से सहमत नहीं हैं । गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर जीव ब्रह्म की एकता स्वीकार की है । उदाहरणार्थ—

सागर महि बूँद, बूँद महि सागरु ।

(रामकली, सबद ६)

आतम महि रामु, राम महि आतम चीनसि गुर बीचारा ।

(भैरउ, असटपदी ६)

इतना ही नहीं उन्होंने आत्मा-परमात्मा की एकता की अनुभूति के साधन पर भी बल दिया है—

आतमा परातमा एकौ करै ।
अंतरि दुबिधा अंतरि मरै ।।

(धनासरी, सबद ४)

गुरु नानकदेव के पदों में ब्रह्म और सृष्टि की एकता भी स्थापित की गई है ।

आपीन्है आपु साजिऔ आपीन्है रचिओ नाउ ।।

(आसा की वार)

अर्थात् 'परमात्मा ने अपने आपको सृष्टि के रूप में साजा है और आप ही ने उसका नाम रचा है ।' नाना नाम-रूप, रंग-वर्ण प्रभु के ही स्वरूप हैं ।

---

१. फिलासफ़ी आफ़ सिक्खिज्म, शेरसिंह, पृ० ८२, ८३ और ८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव की वाणी में एकाध स्थल पर सोऽहं की शब्दावली भी पायी जाती है—

ततु निरंजन जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥

(सोरठि, सबद ११)

नानक सोहं हंसा जपु जापहि त्रिभवण तिसे समाहि ॥

(मारू की वार)

शेरसिंह का चौथा तर्क कि शंकराचार्य में भक्ति नहीं पाई जाती, भी त्रुटि-पूर्ण है। उन्होंने 'चर्पटपंचरिका' में भक्तिभाव के ऊपर बहुत बल दिया है—

'भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते।'

गुरु नानक की वाणी में ज्ञान-प्राप्ति के निम्नलिखित साधन प्राप्त होते हैं—

(१) विवेक—नानक वाणी में कदाचित् ही कोई पृष्ठ ऐसा हो जिसमें विवेक के प्रति हमारी आस्था न उत्पन्न की गई हो। इसी विवेक से साधक ज्ञानमार्ग में आगे बढ़ता है।

(२) वैराग्य—सांसारिक विषयों में वैराग्य-भावना ज्ञान-प्राप्ति का साधन है। धन-सम्पत्ति, पद, ऐश्वर्य, नाम, यश सभी के प्रति गुरु नानकदेव ने वैराग्य भावना प्रदर्शित की है। गुरु नानकदेव ने सांसारिक सम्बन्धों के प्रति वैराग्य भावना दिखलाते हुए कहा है कि सभी सम्बन्ध नश्वर हैं और साथ निभाने वाले नहीं हैं।[1]

(३) श्रद्धा—गुरु नानक के पदों में श्रद्धा, विश्वास और भक्ति की जो त्रिवेणी प्रवाहित हुई है, वह बहुत कम ग्रन्थों में पायी जाती है। इसी श्रद्धा के बल पर साधक अध्यात्म के सभी पथों पर सरलतापूर्वक आगे बढ़ सकता है। उदाहरणार्थ गुरु के प्रति गुरु नानकदेव ने इसी प्रकार की श्रद्धा प्रदर्शित की है।

(४) श्रवण—ज्ञान-प्राप्ति के लिए श्रवण परमावश्यक है। गुरु नानकदेव ने 'जपु जी' की ८वीं, ९वीं, १०वीं पउड़ियों में श्रवण के माहात्म्य का विशद वर्णन किया है।

(४) मनन एवं निदिध्यासन—श्रवण के आगे की स्थिति का नाम मनन है। अद्वितीय ब्रह्म का तदाकार भाव से चिन्तन ही मनन है। व्यवधान-रहित ब्रह्माकार वृत्ति की स्थिति ही निदिध्यासन है। गुरु नानकदेव ने निदिध्यासन का पृथक् नाम नहीं दिया है। पर मनन की परिपक्वावस्था निदिध्यासन का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार निदिध्यासन का स्वरूप मनन ही में अन्तर्निहित है।

---

१. मारू-काफी, असटपदी, १०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जपु जी' की १२वीं, १३वीं, १४वीं और १५वीं पउड़ियों में मनन की महत्ता का हृदयग्राही चित्रण प्राप्त होता है।

(६) अहंकार-त्याग--अहंकार का विस्तृत विवेचन पीछे किया जा चुका है।

(७) गुरु-कृपा एवं परमात्म-कृपा—गुरु नानकदेव ने ज्ञान के सभी साधनों में गुरु-कृपा एवं परमात्म-कृपा को सर्वोपरि साधन माना है। बीजमंत्र अथवा मूलमंत्र में ही इसकी महत्ता प्रदर्शित भी की गई है—'गुरु प्रसादि।'[1] गुरु नानकदेव जी का कथन है कि गुरु-कृपा से जब यह अद्वैत बुद्धि और ब्रह्ममयी दृष्टि साधक को प्राप्त होती है, तब वह सत्य-स्वरूप परमात्मा में समाहित हो जाता है—

गुरु परसादी दुरमति खोई। जह देखा तह एको सोई॥

(आसा, सबद ८)

ज्ञान-प्राप्ति परमात्मा की असीम कृपा से ही संभव है—

गिआनु न गलीई ढूढीऐ, कथना करड़ा सारु।
करमि मिलै ता पाईऐ, होर हिकमति हुकमु खुआरु॥

(आसा की वार)

ज्ञानोपलब्धि के पश्चात् साधक परमात्मा का स्वरूप हो जाता है—

जिनी आतम चीनिआ परमातमु सोई॥

(आसा, असटपदी २०)

गुरु नानकदेव ने वाह्य त्याग पर कभी नहीं बल दिया। उन्होंने गृहस्थ धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना है। नाम, दान तथा स्नान पर श्रद्धा भाव से आरूढ़ रहने पर ईश्वर की भक्ति अवश्य जगती है--

इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे।
नामु दानु इसनानु दृड़ हरि भगति सु जागे॥

(आसा-काफी, असटपदी १४)

(घ) भक्ति मार्ग---

भक्ति का सिद्धान्त बहुत ही प्राचीन है। उपनिषदों, श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीमद्भागवत, नारद-भक्ति-सूत्र आदि ग्रन्थों में भक्ति की विशद व्याख्या की गई है।[2] मोटे रूप से भक्ति के दो प्रधान भेद हैं--(१) वैधी भक्ति तथा (२) रागा-

१. गुरु ग्रन्थ साहिब, बीजमंत्र, पृ० ८
२. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए : श्री गुरु-ग्रन्थ-दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० २८२-२८३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्मिका भक्ति अथवा प्रेमा भक्ति। वैधी भक्ति अनेक विधि-विधानों से युक्त होती है। इसका उद्देश्य रागात्मिका भक्ति को उद्दीप्त करना है। अतः परमेश्वर में निरतिशय और निर्हेतुक प्रेम ही रागात्मिका भक्ति है। तीव्र श्रद्धालु साधकों के लिए रागात्मिका भक्ति है।

भक्ति की अबाध मंदाकिनी गुरु नानक के प्रायः प्रत्येक पद में प्रवाहित हुई है। गुरु नानक द्वारा निरूपित सभी पथ—कर्म मार्ग, योग और ज्ञान मार्ग भक्ति की धारा से सिंचित हैं। बिना परमात्मा की रागात्मिका भक्ति के कर्म पाखण्डपूर्ण और आडम्बरयुक्त हैं, ज्ञान चंचु-ज्ञान मात्र है और योग शरीर का व्यायाम मात्र है।

गुरु नानकदेव ने स्थान-स्थान पर वैधी भक्ति का खण्डन किया है। उन्होंने वैधी भक्ति के विधि-विधानों—तिलक, माला आदि की निस्सारता स्थान-स्थान पर प्रदर्शित की है—

गलि माला तिलकु ललाटं। दुइ धोती बसत्र कपाटं॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं। सभि फोकट निसचउ करमं॥

(आसा की वार)

प्रेमा भक्ति में मिलन के आनन्द और विरह की तड़पन—दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। गुरु नानकदेव ने विरह की तड़पन का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है—

नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा।

(तुखारी, बारहमाहा, पउड़ी १२)

गुरु नानकदेव का 'एक घड़ी घट मासा' मीरांबाई के 'भई छमासी रैन' की स्मृति दिलाता है।

उन्होंने एक स्थल पर कहा है—

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढढोले बाँह।
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि॥

(मलार की वार)

मीरांबाई के 'कलेजे की करक' भी भोला वैद्य नहीं जान सका था।

गुरु नानक की प्रेमा भक्ति प्रेम के अनेक माध्यमों द्वारा व्यक्त हुई है—

(१) अपने को पुत्र तथा परमात्मा को पिता समझ कर उपासना करना।
(२) स्वामी-सेवक भाव की आराधना।
(३) परमात्मा को अपना सुहृद और सखा समझना।
(४) अपने को भिखारी तथा परमात्मा को दाता समझना।
(५) अपने को पत्नी तथा परमात्मा को पति समझना।[1]

---

१. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए. श्रीगुरु ग्रन्थ दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० २८८-९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परमात्मा के विस्मरण से भयानक कष्ट होते हैं। परमात्मा की विस्मृति भयानक रोग है—

इकु तिलु पिआरा वीसरै रोग वडा मन माहि ॥
(सिरी रागु, सबद २०)

वैसे तो भक्ति के अनेक उपकरण गुरु नानक द्वारा वर्णित हैं, पर जिनके ऊपर उनकी व्यापक दृष्टि गई है, वे निम्नलिखित हैं---

(१) सद्गुरु की प्राप्ति और उसकी कृपा तथा उपदेश।
(२) नाम।
(३) सत्संगति तथा साधु-संग।
(४) परमात्मा का भय और उसका हुक्म।
(५) दृढ़ विश्वास।
(६) आत्म-समर्पण भाव।
(७) दैन्य भाव।
(८) परमात्मा का स्मरण और कीर्तन।
(९) भगवद्-कृपा।[1]

प्रेमा भक्ति के उपर्युक्त उपकरणों के आधार पर परमात्मा का शाश्वत मिलन होता है।

गुरु नानक की वाणी में सद्गुरु और नाम की महत्ता

(अ) सद्गुरु—

भारतीय धर्म-समाज में गुरु का स्थान बड़ा उच्च, गौरवपूर्ण और समादृत रहा है। उपनिषदों और श्रीमद्भगवद्गीता में गुरु की अपूर्व महत्ता मानी गयी है। तंत्र-साधकों, योगियों, नाथपंथियों, सहजयानियों, वज्रयानियों तथा परवर्ती संतों ने गुरु की महिमा का अपार गुणगान किया है।

गुरु नानक की दृष्टि में सद्गुरु का स्थान धार्मिक साधना में सर्वोपरि है। मूलमंत्र में 'गुरि प्रसादि' से यह बात सिद्ध हो जाती है। कुछ विद्वानों की यह धारणा है कि सद्गुरु की आवश्यकता पर गुरु नानकदेव के पश्चात् अन्य गुरुओं के द्वारा बल दिया गया, पर यह धारणा निर्मूल और निराधार है। गुरु नानक ने स्थान-स्थान पर गुरु की महत्ता स्वीकार करके उसकी महिमा का गुणगान किया है। उदाहरणार्थ—

नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ।
एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥

---

१. विस्तृत विवेचन के लिए देखिए : श्रीगुरु ग्रंथ-दर्शन, डा० जयराम मिश्र, पृ० २९१ से ३१२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सतिगुर जेवडु दाता को नहीं सभि सुणिअहु लोक सबाइआ।
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ. जिन्हीं विचहु आपु गवाइआ॥
जिनि सचा सचु बुझाइआ।

(आसा की वार)

गुरु नानकदेव ने कर्म मार्ग, योग मार्ग, ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग सभी में गुरु का महत्त्व माना है। उन्होंने अपनी वाणी में स्थान-स्थान पर सद्गुरु और परमात्मा में अभिन्नता दिखाई है। उदाहरणार्थ----

ऐसा हमरा सखा सहाई।
गुर हरि मिलिआ भगति दृड़ाई॥

(आसा, सबद २४)

करि अपराध सरणि हम आइआ।
गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ॥

(रामकली, असटपदी ४)

किन्तु गुरु नानकदेव ने असद् गुरु की तीव्र भर्त्सना की है। उनका कथन है कि 'ऐसे असद् गुरु झूठ बोलते हैं और हराम का खाते हैं। उनके स्वयं तो ऐसे आचरण हैं, फिर भी दूसरों को उपदेश देते हैं। ऐसा गुरु स्वयं तो नष्ट ही होता है, पर अपने साथ ही दूसरों को भी नष्ट करता है। ऐसे असद् गुरु संसार में अगुआ (गुरु) के नाम से प्रसिद्ध होते हैं'----

कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ।
अवरी नो समझावणि जाइ॥
मुठा आपि मुहाए साथै।
नानक ऐसा आगू जापै॥

(माझ की वार)

ऐसे अंधे गुरु एवं उनके शिष्य को ठौर-ठिकाना नहीं प्राप्त हो सकता--

गुरु जिना का अंधुला चेलै नाहीं ठाउ।

(सिरी रागु, असटपदी ८)

अंधा गुरु जो दूसरों को राह दिखाता है, सभी को नष्ट करता है---

नानक अंधा होइ कै दसै राहै सभसु मुहाए साथै।

(माझ की वार)

असद्गुरु से बचने के लिए इसीलिए गुरु नानकदेव ने सद्गुरु के लक्षण स्थान-स्थान पर बताए हैं---

सो गुरु करउ जि साचु दृड़ावै।
अकथु कथावै सबदि मिलावै॥

(धनासरी, असटपदी २)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानकदेव के अनुसार गुरु और शिष्यों का सम्बन्ध समुद्र और नदियों के प्रेम के समान अन्योन्याश्रित है—

गुरु समंदु नदी सभ सिखी ॥

(माझ की वार)

गुरु नानकदेव ने गुरु के 'सबद' की महत्ता पर बहुत अधिक बल दिया है। 'सबद' का तात्पर्य 'वचन', 'उपदेश' अथवा 'शिक्षा' आदि से है। गुरु नानकदेव का कथन है कि 'जो व्यक्ति गुरु के सबद में मरता है, वह ऐसा मरता है कि उसे फिर मरने की आवश्यकता नहीं पड़ती। बिना गुरु के 'सबद' के सारा जगत् भटक कर इधर-उधर घूमता फिरता है। बार-बार मरता है और जन्म लेता है'—

सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी बार।
सबदै ही ते पाईऐ हरिनामे लगै पिआरु ॥
बिनु सबदे जगु भूला फिरै मरि जनमै वारोवार ॥

(सिरी रागु, असटपदी ८)

सद्गुरु में बिना आत्मसमर्पण भाव किए आध्यात्मिक प्रगति नहीं होती। सद्गुरु में आत्मसमर्पण भाव मौखिक नहीं होना चाहिए, बल्कि अपना तन और मन गुरु को बेच देना चाहिए और यदि आवश्यकता पड़े तो सिर के साथ मन भी सौंप देना चाहिए।

तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥

(सिरी रागु, सबद १७)

बड़े भाग्य से गुरु की सेवा का अवसर प्राप्त होता है। गुरु और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है। इसलिए गुरु की सेवा परमात्मा की ही सेवा है।

बड़े भाग गुरु सेवहि अपुना, भेदु नाही गुर देव मुरार ॥

(गूजरी, असटपदी २)

जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै।
राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥

(भैरउ, सबद ८)

गुरु सेवा से प्राप्त होने वाले फल असंख्य हैं। उनकी गणना की ही नहीं जा सकती। उन फलों में ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति ही सर्वोपरि है—

कहु नानक गुरि ब्रहमु दिखाइआ।
मरता जाता नदरि न आइआ ॥

(गउड़ी, सबद ४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) नाम—

मध्ययुग के लगभग सभी सन्तों ने नाम के प्रति अपूर्व श्रद्धा दिखलाई है। इस युग के सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार के संतों ने नाम की महिमा खूब गाई है। नाम-माहात्म्य भागवत आदि प्रायः सभी पुराणों में पाया जाता है, पर मध्ययुग के भक्तों में इसका चरम विकास हुआ है।[1] कबीर, दरियादेव, दूलनदास, सहजोबाई, गरीबदास, पलटू साहब आदि ने नाम के प्रति अपनी असीम श्रद्धा, भक्ति और विश्वास अभिव्यक्त किया है। सगुणवादी कवियों—सूरदास, तुलसी-दास आदि—में भी यही विश्वास पाया जाता है।

गुरु नानकदेव ने नाम के प्रति अपार श्रद्धा अभिव्यक्त की है। उनकी दृष्टि में नाम, नामी का प्रतीक है। सतिनामु ही कर्त्तापुरुष, एक और ओंकार है। सारी सृष्टि की रचना नाम द्वारा ही हुई है। नाम ही समस्त स्थान बना हुआ है। अतः नाम के बिना स्थान का कोई महत्त्व नहीं है।

जेता कीता तेता नाउ। विणु नावै नाही को थाउ॥

(जपु जी, पउड़ी १९)

गुरु नानक की दृष्टि में नाम ही जप, तप, एवं संयम का सार है।[2] लाखों-करोड़ों कर्म और तपस्याएँ नाम के सदृश नहीं।[3] सच्चे नाम की तिल मात्र बड़ाई भी वर्णनातीत है। चाहे कथन करते-करते थक भले ही जायँ, परन्तु नाम की कीमत का वर्णन नहीं हो सकता।

साचे नाम की तिलु वडिआई। आखि थके कीमति नहीं पाई॥

(रागु आसा, सबद २)

नामविहीन यज्ञ, होम, पुण्य, तप, पूजा आदि सब व्यर्थ हैं। इनसे शरीर दुःखी रहता है और नित्य दुःख सहना पड़ता है। नाम के बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती।

इसी प्रकार राम नाम के बिना न तृप्ति होती है और न शान्ति है। राम नाम के बिना योग की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती।

नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदे वीचारे।

(रामकली, सिध गोसटि, पउड़ी ६८)

---

१. हिन्दी साहित्य की भूमिका, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पृ० ९२

२. अहिनिसि राम रहहु रंगि राते, एहु जपु-तपु संजमु सारा हे।

—मारू-सोलहे १०

३. हरिनामे तुलि न पुजई जे लख कोटी करम कमाइ॥ आदि

—सिरी रागु, असटपदी १४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु नानक ने परमात्मा के 'निर्गुण' और 'सगुणी' दोनों नामों के प्रयोग अपनी वाणी में किए हैं। 'परब्रह्म', 'निरंकार', 'अयोनि', 'अकालमूर्त्ति', 'स्वयंभू', 'निरंजन' आदि 'निर्गुणी' नाम प्रयुक्त हुए हैं। सगुणी नामों में 'माधव', 'मोहन', 'राम', 'मुरारी', 'केशव', 'गोविन्द', 'हरि' आदि नामों के व्यवहार हुए हैं। किन्तु इनका अर्थ 'अवतारवाद' के अर्थ में नहीं है। उन्होंने कहीं-कहीं 'अलाह', 'कादिर', 'करीम', 'रहीम' आदि मुसलमानी नामों के प्रयोग भी किए हैं।

अलाहु अलखु अगंम कादरु करणहारु करीमु।
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु॥
(सिरी रागु, असटपदी १७)

किन्तु यहाँ एक बात स्पष्ट कर देनी है कि गुरु नानकदेव की वृत्ति प्रायः 'हरि' और 'राम' नाम में सबसे अधिक रमी है।

'वाहिगुरु' नाम सिक्खों में बहुत प्रचलित है। खालसा-निर्माण के साथ 'वाहिगुरु' नाम अधिक व्यापक हो गया और यह परमात्मा का विशिष्ट नाम समझा जाने लगा। परन्तु गुरु नानकदेव का कदाचित् यह तात्पर्य नहीं था कि 'वाहिगुरु' को 'परमात्मा' का विशिष्ट नाम बताया जाय। वास्तव में 'वाहिगुरु' नाम में नाम की उतनी अधिक भावना नहीं है, जितनी की आश्चर्यमयी अनुभूति की।[1] किसी आश्चर्यमयी वस्तु की अनुभूति में 'वाह-वाह' का निकलना अवश्यम्भावी है। इस प्रकार 'वाहिगुरु' बिलकुल नवीन शब्द है और यह सिक्ख की आन्तरिक अवस्था का प्रतीक है।

गुरु नानक की वाणी को ध्यानपूर्वक देखने से उसमें नाम-जप के तीन प्रकार मिलते हैं—१. साधारण जप, २. अजपा जप, ३. लिव जप।

(१) साधारण जप : जिह्वा से होता है। जहाँ-जहाँ जप की चर्चा की गई है, वहाँ-वहाँ जिह्वा-जप से अभिप्राय है। पहले पहल नाम-अभ्यास साधना में इसी जप का सहारा लेना पड़ता है। साधारण जप ही 'अजपा' एवं 'लिव' जप की नींव है।

(२) अजपा जप : जब साधारण जप अथवा जिह्वा-जप का पूरा-पूरा अभ्यास हो जाता है, तब 'अजपा जप' प्रारंभ होता है। अजपा जप में जिह्वा का नाम समाप्त हो जाता है और श्वास-प्रश्वास की संचालन-गति के आधार पर जप प्रारम्भ हो जाता है। गुरु नानकदेव ने इस जप पर बहुत अधिक बल दिया है—

अजपा जापु जपै मुखि नाम॥
(बिलावलु, थिती, पउड़ी १६)

१. गुरमुति दरशन, शेरसिंह, पृ० १६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) लिव जप : लिव जप, जप-साधना का अन्तिम सोपान है। लिव जप में वृत्ति द्वारा जप होने लगता है। इस जप में शरीर, जिह्वा और मन एकनिष्ठ हो जाते हैं। यह जप अनुभूति मात्र है—

गुरमखि जागि रहे दिन राती।
साचे की लिव गुरमति जाती॥

(मारू, सोलहे ५)

यह जप परम दुर्लभ है और करोड़ों में किसी विरले ही साधक को प्राप्त होता है।

नाम-प्राप्ति के अनन्त फल हैं। सांसारिक और पारमार्थिक दोनों प्रकार के फल प्राप्त होते हैं। संक्षेप में यह कि नामजप से 'विस्माद' अवस्था की प्राप्ति होती है। यह 'विस्माद' अवस्था अद्वैत स्थिति की द्योतिका है। इस अवस्था में ब्रह्म, जीव और सृष्टि सभी 'विस्माद' हो जाते हैं। सभी के बीच एकता स्थापित हो जाती है। गुरु नानकदेव को वेद, नाम, जीव, जीवों के विभेद, अनेक रूप-रंग, पवन, पानी, अग्नि और अग्नि के अनेकारूपात्मक खेल, खण्ड-ब्रह्माण्ड, संयोग-वियोग, भूख-भोग, सिफति-सलाह, राह-कुराह, नेड़े-दूरि आदि में विस्माद—आश्चर्य दिखलाई पड़ता है—

विसमादु नादु विसमादु वेद
....
नानक बुझणु पूरे भागि।

(आसा की वार)

उपर्युक्त 'विस्माद अवस्था'—आश्चर्यमयी अनुभूति 'नाम-जप' का ही परिणाम है।

• • •

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

डा० सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह
बुद्धा कालोनी - पटना द्वारा प्रदत्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon